“21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों का अनुशीलन”

हिंदी विषय में पी–एच.डी.

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

शोध छात्रा

अजिता

पंजीकरण सं. MUIT0119038105

शोध निर्देशक

डॉ. मनोज कुमार सिंह

सहायक आचार्य

हिंदी विभाग

महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्विद्यालय, लखनऊ

सीतापुर रोड, पो.महर्षि विद्या मंदिर, लखनऊ–226013

सितम्बर, 2024

घोषणा पत्र

मैं एतद्द्वारा घोषणा करती हूँ कि इस शोध प्रबंध में प्रस्तुत कार्य जिसका शीर्षक "**21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों का अनुशीलन**" है, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ के हिन्दी विभाग में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि प्रदान करने की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रस्तुत किया गया है, मेरे द्वारा स्वयं किए गए शोध कार्य का प्रामाणिक अभिलेख है, जो **डॉ. मनोज कुमार सिंह,** सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग के पर्यवेक्षण में किया गया है।

मैं यह भी घोषणा करता हूँ कि वर्तमान शोध प्रबंध में निहित कार्य-

i) मेरा मौलिक कार्य है तथा इसे किसी पत्रिका/शोध प्रबंध/पुस्तक से कॉपी नहीं किया गया है; तथा

ii) इसे मेरे द्वारा किसी विश्वविद्यालय/संस्थान की किसी अन्य उपाधि या डिप्लोमा के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

अजिता
शोध-छात्रा

हिन्दी विभाग

महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ

पर्यवेक्षक का प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **अजिता** ने आवश्यक शैक्षणिक अर्हताओं को पूर्ण कर लिया है तथा उनके द्वारा प्रस्तुत किया गया शोधपत्र मेरे मार्गदर्शन एवं पर्यवेक्षण में किया गया एक प्रामाणिक मौलिक कार्य है। उन्होंने महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ के हिन्दी विभाग में "**21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों का अनुशीलन**" विषय पर कार्य किया है।

दिनांक:

डॉ. मनोज कुमार सिंह
सहायक आचार्य

प्रथम अध्याय

21वीं सदी की प्रमुख महिला कहानीकारों का परिचय (व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

आभार

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सर्वप्रथम मैं ईश्वर को धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिनकी कृपा–दृष्टि के कारण ही मुझे शोध–कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। माँ शारदा को नमन करती हूँ, जिन्होंने प्रत्येक परिस्थिति में अज्ञान के तिमिर से ज्ञान के प्रकाश की ओर उन्मुख किया। "21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों का अनुशीलन" पर आधारित प्रस्तुत शोध में कई महानुभावों और विद्वानों का योगदान है।

सर्वप्रथम मैं अपने शोधनिर्देशक डॉ. मनोज कुमार सिंह जी, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके कुशल निर्देशन, मार्गदर्शन तथा सकारात्मक व्यवहार तथा समय–समय पर आवश्यक सहयोग एवं आशीर्वाद से मैं यह शोध कार्य पूर्ण कर पायी हूँ।

मैं महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ के कुलपति प्रो. (डॉ) भानु प्रताप सिंह जी का अन्तःस्थल से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके कुशल मार्गदर्शन तथा आत्मीय सहयोग एवं आशीर्वाद से यह शोध–कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर हो सका है।

आभार की इस श्रृंखला में अपने सहयोगियों एवम् परिजनों में विशेषकर डॉ. गौतम वीर, प्राचार्य, बी.एस.एम. पी.जी. कॉलेज, रुड़की एवम् डॉ. अखिलेश कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पट्टी, प्रतापगढ़, के प्रति विशेषरूप से आभारी हूँ, जिनके विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन से यह शोध–कार्य एक स्तरीय स्वरुप ग्रहण कर सका है।

मैं अपने पति डॉ. बिपिन कुमार मिश्र (आई.ए.एस.) के प्रति विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने शोध से सम्बंधित सोच को सही दिशा प्रदान की। पुलकित, आकाश, नमिता, शिवा शुक्ला, आराधना पाण्डेय, प्रज्ञा का भी शोध कार्य पूर्ण करने में मुझे बौद्धिक सहयोग मिलता रहा, आप सब के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

मेरा शोध कार्य श्रद्धेय पिताजी स्व. लक्ष्मी कान्त शुक्ल (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.) के बौद्धिक और वैचारिक उत्प्रेरणों के साथ आदरणीय माताजी श्रीमती सुशीला शुक्ला के आशीर्वाद से पूर्ण हो सका, मैं आप दोनों का हृदय से वंदन करती हूँ। साथ ही सास–ससुर श्रीमती सुशीला मिश्रा, श्रीमती उर्मिला मिश्रा एवम् श्री देवेन्द्र प्रसाद मिश्र, श्री द्विजेन्द्र मिश्र का सतत स्नेह व

आशीर्वाद मिलता रहा। साथ ही साथ मेरे पुत्र अविरल व पुत्री अर्यमा के प्रेम व सहयोग ने भी मुझे शोध कार्य हेतु निरन्तर प्रेरित किया। दोनों ने अध्ययन एवम् लेखन के अनुकूल वातावरण बनाने में मेरा पूरा सहियोग किया।

मै उन सब के प्रति आभारी हूँ, जिनका नाम देना तो सम्भव नहीं है, परन्तु जिन्होने बड़े स्नेह व तत्परता के साथ इस शोध–प्रबन्ध को पूर्ण करने में मुझे पूर्ण सहयोग प्रदान किया, जिससे मेरा यह शोध–प्रबन्ध पूर्ण हो सका है। मेरे पास शब्द नहीं कि मैं उन सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करूँ।

स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पट्टी, प्रतापगढ़ के हिंदी विभाग में आचार्य के पद पर कार्यरत डॉ. मिथिलेश कुमार त्रिपाठी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं इसलिए अपना नैतिक दायित्व समझती हूँ कि उन्हीने अनेक स्थानों पर टंकणगत त्रुटियों को रेखांकित करके शोध–प्रबंध को निर्दोष स्वरुप प्रदान करने में यथोचित सहियोग किया।

अन्ततः मैं आशा करती हूँ कि मेरा शोध–प्रयास स्त्री लेखन के प्रति चिन्तन–मनन में रुचि रखने वाले अध्याताओ, जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

शोधकर्त्री

(अजिता)
हिंदी विभाग,
महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ.प्र.)

प्राक्कथन

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में 21वीं सदी को महिला लेखिकाओं की सदी कहा जाता है। ऐतिहासिक रूप से, महिलाओं को पुरुषों के अधीन माना जाता रहा है, जो समाज के अलग और अक्सर दमनकारी नियमों के अधीन हैं। पुरुषों ने पारंपरिक रूप से कई तरह की स्वतंत्रता का आनंद लिया है, जबकि महिलाओं को गुलामी, अन्याय और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा है। यह पितृसत्तात्मक परंपरा सदियों से चली आ रही है, जिसने जीवन के कई क्षेत्रों में लैंगिक असमानताओं को कायम रखा है।

अपनी असहमति व्यक्त करने वाली अग्रणी महिला लेखकों में कृष्णा सोबती, चंद्रकांता, ममता कालिया, सूर्यबाला, चित्रा मुद्गल और नासिरा शर्मा आदि शामिल हैं। इन लेखिकाओं ने हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, खासकर कहानी की शैली के माध्यम से, जिसे साहित्यिक अभिव्यक्ति के सबसे पुराने और सबसे गहन रूपों में से एक माना जाता है।

प्रथम अध्याय में विभिन्न लेखिकाओं के साहित्यिक योगदानों का वर्णन किया गया है। लेखिकाओं ने उपन्यास, कहानियाँ, नाटक और संस्मरण जैसी विभिन्न लेखन शैलियों में रचनात्मक कार्य किया है, जिसमें समाजिक मुद्दों और व्यक्तिगत अनुभवों को दर्शाया गया है। इसके साथ ही, लेखिकाओं को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए कई पुरस्कारों और सम्मानो से नवाजा गया है, जो उनके लेखन की संवेदनशीलता और गहरायी को दर्शाते हैं।

द्वितीय अध्याय में विभिन्न कहानियों के माध्यम से मानव भावनाओं और सामाजिक मुद्दों की गहरायी को दर्शाया गया है। इस अध्याय में अकेलेपन, प्रेम, और क्षमा की आवश्यकता को उजागर किया गया है, इससे पात्रों को अपने जीवन में खोई हुई चीजों की तलाश करता है। कहानियों में तलाक और माफी के विषय पर संवाद भी शामिल हैं, जो रिश्तों की जटिलताओं को दर्शाते हैं। इसके अलावा, विभिन्न पात्रों के अनुभवों के माध्यम से यह दिखाया गया है कि कैसे समाज की अपेक्षाएँ और व्यक्तिगत संघर्ष एक–दूसरे से जुड़े होते हैं। यह अध्याय न केवल

व्यक्तिगत भावनाओं की गहराई को उजागर करता है, बल्कि यह भी बताता है कि कैसे जीवन की कठिनाइयाँ और रिश्तों की जटिलताएँ हमें आकार देती हैं। यह एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो पाठकों को सोचने पर मजबूर करता है और उनके अपने अनुभवों से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है।

तृतीय अध्याय में 21वीं सदी मकी महिला लेखिकाओं द्वारा रचित कहानियों में सामाजिक चिंतन और जागरूकता का महत्वपूर्ण स्थान है। इन लेखिकाओं ने सामाजिक असमानताओं, लैंगिक भेदभाव, जातिगत और धार्मिक तनाव, और पर्यावरणीय मुद्दों जैसे विषयों पर अपनी रचनाओं के माध्यम से गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान की है। उनकी कहानियाँ न केवल मनोरंजन करती हैं, बल्कि आलोचनात्मक सोच को भी प्रेरित करती हैं। इन लेखिकाओं ने साहित्य को सामाजिक सुधार और जागरूकता बढ़ाने वाले शक्तिशाली उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया है, जिससे समाज के मूल्यों और मानकों पर विचार करने और एक समावेशी और न्यायपूर्ण भविष्य की कल्पना करने के लिए पाठकों को प्रेरित किया गया है।

चौथा अध्याय 21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में दर्शाए गए आर्थिक सरोकारों की पड़ताल करता है। इसकी शुरुआत भारतीय दृष्टिकोण से 'अर्थ' (धन) की अवधारणा पर चर्चा करके होती है, जिसमें मानव जीवन और समाज में इसके महत्व पर जोर दिया जाता है। अध्याय इस बात पर गहराई से चर्चा करता है कि धन सामाजिक व्यवहार, व्यक्तिगत कल्याण और सामाजिक प्रगति को कैसे प्रभावित करता है। यह आधुनिक समाज में धन की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है, यह देखते हुए कि आर्थिक स्थिरता जीवन के सभी पहलुओं की नींव बनाती है। फिर, अध्याय इस बात की जांच करता है कि मंजू भगत, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, कृष्णा अग्निहोत्री और अन्य जैसी महिला लेखिकाएँ अपनी कहानियों में आर्थिक मुद्दों की जटिलताओं को कैसे आलोचनात्मक रूप से चित्रित करती हैं। ये लेखिकाएँ आर्थिक आकांक्षाओं के जाल में फंसे व्यक्तियों के संघर्ष, अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई और मुख्य रूप से वित्तीय उद्देश्यों से प्रेरित समाज के परिणामों को उजागर करती हैं।

इसके अतिरिक्त, यह अध्याय इन महिला लेखिकाओं के कार्यों में केंद्रीय विषयों के रूप में सामंती शोषण के खिलाफ प्रतिरोध, श्रम का महत्व और आत्मनिर्भरता की वकालत पर चर्चा करता है। यह इस बात पर जोर देते हुए समाप्त होता है कि कैसे ये आख्यान समकालीन आर्थिक विचारधाराओं को चुनौती देते हैं और पाठकों को समाज में धन, समृद्धि और प्रगति के गहरे निहितार्थों पर चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

अध्याय पाँच में 21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में राजनीति के प्रभाव और उसकी अभिव्यक्तियों का विश्लेषण किया गया है। यह अध्याय बताता है कि कैसे राजनीतिक माहौल ने इन लेखिकाओं की रचनाओं को प्रभावित किया और उनके साहित्य में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक पहलुओं का समावेश किया। इन लेखिकाओं ने अपने समय की राजनीतिक परिस्थितियों, सत्ता संघर्ष, सामाजिक असमानताओं, और सांप्रदायिक तनावों को अपने लेखन के माध्यम से उजागर किया। उनका लेखन इस बात पर केंद्रित है कि राजनीति कैसे व्यक्तिगत और सामूहिक अनुभवों को आकार देती है और सामाजिक न्याय, आर्थिक असमानता, और सांस्कृतिक पहचान के मुद्दों को कैसे प्रभावित करती है।

अध्याय छः में 21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में स्त्री विषयक राजनीति के प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। इसमें बताया गया है कि साहित्य में नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण कैसे पुरातन काल से लेकर आधुनिक समय तक होता आया है। इस अध्याय में यह भी उजागर किया गया है कि किस प्रकार से पितृसत्तात्मक समाज और सामाजिक रीति–रिवाजों ने स्त्रियों का शोषण किया और उनके जीवन को प्रभावित किया है। महिला लेखिकाओं ने अपने लेखन में नारी के उत्पीड़न, दासता, और समाज में उनके संघर्षों को प्रमुखता से उकेरा है। इसके अलावा, इस अध्याय में आधुनिक समाज में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों, विशेषकर कार्यक्षेत्र में उत्पीड़न, आर्थिक स्वावलंबन की चाह, और दाम्पत्य जीवन की जटिलताओं को भी विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। इन कहानियों के माध्यम से, लेखिकाओं ने समाज में नारी की स्थिति, उनके संघर्ष, और उनकी आकांक्षाओं को प्रभावी ढंग से सामने

लाने का प्रयास किया है। यह अध्याय नारीवादी चिंतन और समकालीन साहित्य में नारी विमर्श के महत्व को रेखांकित करता है।

अध्याय सात 'उपसंहार' है, जिसमें 21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं के साहित्य में स्त्री विषयक राजनीति और सामाजिक मुद्दों के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। यह अध्याय दर्शाता है कि किस प्रकार इन लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से समाज में स्त्रियों की स्थिति, उनके संघर्ष, और उनके अधिकारों की मांग को उजागर किया है। लेखिकाओं ने पारंपरिक समाज में महिलाओं के साथ होने वाले अन्याय और उत्पीड़न का प्रतिरोध करते हुए साहित्य को एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया है। उन्होंने नारीवाद, सामाजिक न्याय, और आत्मनिर्भरता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया है और उनकी रचनाओं ने साहित्य को समृद्ध करने के साथ–साथ पाठकों के विचारों को भी प्रेरित किया है। इस अध्याय का उद्देश्य 21वीं सदी की महिला लेखिकाओं की कृतियों के माध्यम से समाज में बदलाव लाने और महिलाओं के अधिकारों की ओर ध्यान आकर्षित करना है।

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियाँ स्त्री विषयक चिंतन को एक गहरी और व्यापक दृष्टि प्रदान करती हैं। जया जादवानी, मालती जोशी, चन्द्रकान्ता, सूर्यबाला, मेहरुनिशा परवेज, नाशिरा शर्मा, और अलका सरावगी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री के जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। इन लेखिकाओं ने स्त्री के आत्म–संघर्ष, सामाजिक बाधाओं, विविधता, आध्यात्मिकता, और भावनात्मक अनुभवों को अपनी कहानियों में बखूबी प्रस्तुत किया है। उनके कार्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि साहित्य न केवल एक कला है, बल्कि यह समाज में परिवर्तन और जागरूकता का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। इन लेखिकाओं के योगदान से भारतीय साहित्य को स्त्री विमर्श की एक नई दिशा मिली है, और उनके कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर के रूप में प्रस्तुत होंगे।

अनुक्रमणिका

अध्याय–1

21वीं सदी की प्रमुख महिला कहानीकारों का परिचय (व्यक्तित्व एवं कृतित्व)..1

1.1 चित्रा मुदगल 4

1.2 मृदुला गर्ग 10

1.3 ममता कालिया 15

1.4 जया जादवानी 20

1.5 उर्मिला शिरीष 24

1.6 मंजुल भगत 28

1.7 राजी सेठ 31

1.8 मेहरुन्निसा परवेज़ 35

1.9 मधु कांकरिया 40

1.10 अलका सरावगी 43

1.11 नासिरा शर्मा 47

1.12 सुधा अरोड़ा 51

1.13 चंद्रकांता 56

1.14 कृष्णा अग्निहोत्री 60

1.15 मालती जोशी 66

1.16 सूर्यबाला 71

1.17 निष्कर्ष 75

अध्याय–2

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों का परिचय 79

2.1 प्रस्तावना 79

2.2 चित्रा मुदगल 84

2.3 मृदुला गर्ग 93

2.4 ममता कालिया 101

2.5 जया जादवानी 107

2.6 उर्मिला शिरीष 112

2.7 मंजुल भगत 117
2.8 राजी सेठ........ 121
2.9 मेहरुन्निसा परवेज़ 126
2.10 मधु कांकरिया........ 134
2.11 अलका सरावगी........ 140
2.12 नासिरा शर्मा 147
2.13 सुधा अरोड़ा........ 154
2.14 चन्द्रकान्ता 158
2.15 कृष्णा अग्निहोत्री........ 164
2.16 मालती जोशी 169
2.17 सूर्यबाला........ 175
2.18 निष्कर्ष........ 183

अध्याय–3

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में सामाजिक चिन्तन 185

3.1 समाज से आशय 187
3.2 समानता और स्वतंत्रता का समर्थन 192
3.3 दलित ,जाति एवम् वर्ग भेद भाव का विरोध........ 201
3.4 पारिवारिक मूल्यों पर संकट से उत्पन्न चिंता........ 206
3.5 युवावर्ग की सकारात्मक दृष्टि 215
3.6 निष्कर्ष........ 220

अध्याय–4

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में आर्थिक चिंतन .. 222

4.1 सामंती शोषण का विरोध 225
4.2 श्रम के मूल्य की प्रतिष्ठा........ 229
4.3 स्वावलम्बन की पक्षधरता........ 232
4.4 लघु एवं कुटीर उद्योग को बढ़ावा 236
4.5 बेरोजगारी........ 241
4.6 निष्कर्ष........ 246

अध्याय–5

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में राजनीतिक चिंतन 248
5.1 सिद्धान्तहीन राजनीति तथा प्रजातांत्रिक व्यवस्था.......................... 252
5.2 सांप्रदायिक परिदृश्य में बदलाव.................................. 260
5.3 आतंकवाद और हिंसा 266
5.4 भ्रष्टाचार 272
5.5 निष्कर्ष.. 277
अध्याय–6
21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में स्त्री विषयक चिंतन 279
6.1 कामकाजी नारियों का दुःख दर्द 282
6.2 दाम्पत्य जीवन की विसंगतियाँ.. 287
6.3 आर्थिक स्वावलम्बन की ललक... 292
6.4 दहेज और अनमेल विवाह 295
6.5 देह मुक्ति का प्रश्न.. 300
6.6 प्राचीन रुढियो का विरोध 305
6.7 निष्कर्ष.. 309
अध्याय–7
उपसंहार 311
सन्दर्भ सूचि 329

अध्याय–1

21वीं सदी की प्रमुख महिला कहानीकारों का परिचय (व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

साहित्य एक ऐसी महत्वपूर्ण साधना है जो किसी भी समाज की प्रवृत्तियों को प्रभावित और परिवर्तित कर सकती है। इसकी विशेषता यहाँ उजागर की जा रही है, कहानियों के माध्यम से साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान जो किसी समाज में गहरी गहराई तक प्रभाव डाल सकते हैं।

साहित्य का असर बहुत गहरा होता है। यह एक रूपक भी हो सकता है जो समाज की समस्याओं और परिस्थितियों को दर्शाने का काम करता है। इसके माध्यम से कहानियाँ पाठकों के दिलों और दिमागों में समर्थ असर छोड़ सकती हैं। इससे लोगों की सोच बदल सकती है। यह नयी दिशाएँ देखने को मजबूर कर सकती है। साहित्य के द्वारा जाते हुए संदेशों और अनुभवों का महत्वपूर्ण योगदान होता है जो सामाजिक परिवर्तन में मदद कर सकता है।

कहानियों की महत्वपूर्ण भूमिका साहित्य में हमेशा से ही अद्वितीय रही है। यह लोगों को नया दृष्टिकोण देने में सक्षम होती है। कहानियाँ सामाजिक मुद्दों, जीवन के अद्वितीय पहलुओं, और विभिन्न संघर्षों को बेहतर ढंग से समझाती हैं। इसके माध्यम से लोग अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त कर सकते हैं और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित हो सकते हैं।

साहित्य का प्रभाव लोगों की सोच और विचार में उत्कृष्ट बदलाव ला सकता है।

यह लोगों को नई दिशाओं में सोचने के लिए प्रेरित कर सकता है और उन्हें समस्याओं के समाधान के लिए मदद कर सकता है। साहित्य के माध्यम से लोगों को समाज में हो रहे बदलाव को समझने का मार्ग भी मिलता है।

स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में एक नई चेतना का जन्म हुआ था। साहित्य के माध्यम से लोगों को समाज में हो रहे परिवर्तनों को समझने में मदद मिली। कहानियों के जरिए साहित्यकारों ने समाज की समस्याओं को उजागर किया और लोगों को इसे समझने के लिए प्रेरित किया।

21वीं सदी की कहानियाँ साहित्य में एक नया आयाम प्रदान करती हैं। इस युग में हो रहे समाजिक विवादों, सपने के टूटने, आँधी–बारिश, और समाज में विभिन्न विचारों का जाल कहानियों के माध्यम से उजागर होता है। इन कहानियों ने हिन्दी कथा साहित्य को एक नया आयाम दिया है और लोगों को आधुनिक समाज की स्थिति को बेहतर समझने में मदद की है।

इस प्रकार, साहित्य और कहानियों का महत्वपूर्ण योगदान है जो समाज को प्रेरित करते हैं, सोचने के लिए मजबूर करते हैं, और उसे बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। इनके माध्यम से हम समाज में हो रहे परिवर्तनों को समझ सकते हैं और उन्हें समर्थन दे सकते हैं।

आज के समय में, हिंदी साहित्य में विचार और अनुभूति की साझेदारी का महत्वाकांक्षी विकास हो रहा है। इसका अध्ययन विशेष रूप से महिला लेखन के प्रस्थान पर केंद्रित है, जिसने हिंदी साहित्य को एक नया आयाम दिया है। पिछले कुछ दशकों में, महिला लेखकों का प्रकाशन कार्य सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तनों के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत बना है। एक महत्वपूर्ण पहलू यहां यह है कि महिला लेखन ने साहित्यिक

विश्व में स्त्री के दृष्टिकोण को सुनिश्चित किया है। यहां हमें एक संघर्ष के साथ महिला लेखन का विकास दिखाई देता है, जो सामाजिक सत्ताओं और धार्मिक परंपराओं के खिलाफ खड़ा हुआ है। इससे साहित्यिक विकास में नयी दिशा और गहराई आई है।

महिला लेखन के इस नए प्रस्थान का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह समाज में स्त्री की आवाज को सुनने का माध्यम बन गया है। बहुत सी लेखिकाएँ जैसे कि मृदुला गर्ग, ममता कालिया, मंजुल भगत, चित्रा मुद्गल, जया जादवानी, उर्मिला शिरीष, राजी सेठ, मेहरुन्निसा परवेज़, अलका सरावगी, नासिरा शर्मा, सुधा अरोड़ा, मालती जोशी और सूर्यबाला, ने अपने विचारों और अनुभवों को साझा करने के लिए इस वाहक का उपयोग किया है। उनके द्वारा बताए गए कहानियों में समाजिक और व्यक्तिगत विरोधाभास का सामना किया गया है।

महिला लेखन के इस समृद्धिशील प्रस्थान का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इससे नए और अद्वितीय शैली में लेखन का विकास हुआ है। पुरानी परंपराओं को छोड़कर, ये लेखिकाएँ नए साहित्यिक उदाहरणों की स्थापना करने में सफल रही हैं। उन्होंने साहित्यिक रूपांतरण में नये और दृष्टिकोणपूर्ण माध्यमों का उपयोग किया है; जैसे कि अलंकार, रंगमंच, और साक्षात्कार। महिला लेखन के इस प्रस्थान के विकास से आधुनिक हिंदी साहित्य में एक नया उत्थान हुआ है। इसे समाज की सच्चाई और अस्मिता के खिलाफ खड़े होने का एक माध्यम माना जा सकता है। इस समृद्ध प्रस्थान से हिंदी साहित्य को गहराई और विशालता मिली है।

एक और महत्वपूर्ण पहलू यहाँ यह है कि इन लेखिकाओं ने अपने कामों में अंधविश्वास, अज्ञानता, जड़ता, साम्प्रदायिकता और जातिवाद के खिलाफ उठे हुए आधुनिक और सकारात्मक विचारों का समर्थन किया है। इससे उनकी कृतियों में मानवीय और सामाजिक समस्याओं के प्रति उनका संवेदनशील और सकारात्मक दृष्टिकोण दिखाई

देता है।

इन सभी पहलुओं के माध्यम से महिला लेखन का यह नया प्रस्थान हिंदी साहित्य के नए अध्याय का प्रारंभ है। यह लेखन क्षेत्र में नयी ऊर्जा और गति लाता है, जो साहित्यिक और सामाजिक उत्थान के लिए महत्वपूर्ण है। इस प्रक्रिया में, इन लेखिकाओं के योगदान ने हिंदी साहित्य को एक नयी दिशा दी है, जिससे हम समाज में स्थानीय और विश्वव्यापी उत्थान का मार्गदर्शन कर सकते हैं।

21वीं सदी की जिन प्रमुख महिलाओं की कहानियों का अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबंध में किया जाएगा, उनका व्यक्तित्व एवम् कृतित्व इस प्रकार है–

1.1 चित्रा मुदगल

➢ व्यक्तित्व

चित्रा मुद्गल जी का जन्म 10 दिसंबर 1944 ई० को चेन्नई स्थित एगमोर नामक स्थान पर हुआ था।[1] उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा विले पारले (मुम्बई) के रूड्या हाई स्कूल एवं अपने ग्राम निहालीखेड़ा के निकट भरतीपुर के कन्या पाठशाला से प्राप्त की। हायर सेकेन्ड्री के पश्चात चित्रा जी ने शेष पढ़ाई मुम्बई विश्वविद्यालय से पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से की। चित्राजी लेखन कार्य में रुचि रखने के साथ साथ चित्रकला में भी अत्यधिक रुचि रखती थीं। उन्होंने अपनी पढ़ाई के साथ–साथ ही भरतनाट्यम् की शिक्षा भी ग्रहण की।

चित्रा जी के लेखन का आरम्भ 1994 ई० में ही हो गया था, इनकी सफलता को पंख तब लगे जब इनकी कहानी *'सफेद अनारा'* नवभारत टाइम्स की कहानी प्रतियोगिता

में पुरस्कृत हुई और प्रकाशित हुई।[2] इसके पश्चात इनका लेखन क्रम चलता ही गया।

चित्रा जी ने हिन्दी कथा साहित्य में अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त की। इनके प्रमुख उपन्यासों में से एक उपन्यास *'आवां'* है, जो मुंबई के टेक्सटाइल मिलों के कामगारों के जीवन को उत्पीड़न, असमानता, और सामाजिक न्याय के मुद्दों के साथ प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास को साहित्यिक दृष्टिकोण से एक महान कृति के रूप में माना जाता है और यह हिंदी साहित्य में एक उत्कृष्ट कृति के रूप में खड़ा है।

चित्रा जी को 2000 में *'आवां'* के लिए *'इंदु शर्मा अंतरराष्ट्रीय कथा सम्मान'* मिला, जो उनके लेखन की उत्कृष्टता प्रदान करता है। 2003 में उन्हें बिरला फाउंडेशन द्वारा *'व्यास सम्मान'* भी प्रदान किया गया, जो भारतीय साहित्य में उनके योगदान की महत्ता को दर्शाता है। 2018 में उन्हें उनके उपन्यास *'पोस्टबॉक्स नंबर २०३, नालासोपारा'* के लिए *'साहित्य अकादमी पुरस्कार'* भी मिला, जो उनके साहित्यिक योगदान को विशेष रूप से सम्मानित करता है।[3]

चित्रा जी की साहित्यिक क्षमता उन्हें भारतीय साहित्य समुदाय में एक महान लेखिका के रूप में प्रस्तुत करती है, तथा उनकी रचनाएं साहित्यिक क्षेत्र में आधुनिकता और समाज में परिवर्तन की दिशा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। चित्रा जी के लेखन का मुख्य उद्देश्य समाज को जागरूक और सकारात्मक बनाना है, जिससे मानवीय अनुभवों की गहराई को समझा जा सके। उनकी कथाएँ समाज के विभिन्न मुद्दों पर विचार करने की प्रेरणा देती हैं और साहित्य के माध्यम से समाज को सकारात्मक बदलाव की दिशा में प्रेरित करती हैं।

चित्रा मुद्गल जी का जीवन और लेखन–कौशल समाज में विशेष महत्व रखता है और उनके साहित्यिक योगदान ने भारतीय साहित्य में एक महान नायिका के रूप में उन्हें मान्यता प्रदान

की।

➢ कृतित्व

चित्रा मुद्गल ने लगभग सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलायी। इन्होंने उपन्यास, कहानी, बाल–साहित्य एवं नाटक लिखे हैं।[4]

- **उपन्यास**

1. एक अपनी जमीन
2. आवां
3. गिलिगडु
4. नाला सोपारा

- **कहानी संग्रह**

1. जहर ठहरा हुआ (1980)
2. लाक्षागृह (1982)
3. अपनी वापसी (1993)
4. इस हमाम में एवं ग्यारह लम्बी कहानियाँ (1987)
5. जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं (1993)
6. जिनावर (1996)
7. भूख (2001)
8. लपटें (2002)
9. सफेद सेनार
10. पेंटिग अकेली है

- **बालकथा संकलन**

1. जंगल का राजा
2. देश–देश की लोक कथाएँ
3. नीति कथाएँ
4. दूर के ढोल
5. काँच की किरच
6. देश विदेश

- **बाल उपन्यास**

1. मधिमेखलौ
2. जीवक
3. माधवी कन्नगी

- **कथात्मक रिपोर्ताज**

1. तहखानों में बन्द अक्स

- **लेख संकलन**

1. बयार उनकी मुट्ठी में
2. विचार संग्रह

- **नाटक संग्रह**

1. पंच परमेश्वर तथा अन्य नाटक
2. सद्गति तथा अन्य नाटक

3. बूढ़ी काकी

- **संपादन**

1. असफल दाम्पत्य की कहानियाँ
2. टूटते परिवारों की कहानियाँ
3. दूसरी औरत की कहानियाँ
4. भीगी हुई रेत
5. पुरस्कृत कहानियाँ
6. देह–देहरी
7. प्रेमचन्द की प्रेम कहानियाँ

इनके अतिरिक्त चित्रा मुद्गल द्वारा रचित और भी अनेक अनुवाद, अनूदित रचनाएँ, पाठ्यक्रम विषयक रचनाएँ हैं।

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

चित्रा मुदगल, भारतीय साहित्य के महान कथाकारों में से एक हैं। उन्होंने अपनी अद्वितीय रचनाओं के माध्यम से समाज के मुद्दों और उनके विभिन्न पहलुओं को साहित्यिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। उनकी लेखनी में साहित्यिक गहराई और भावनात्मक अभिव्यक्ति की विशेषता है।

चित्रा मुदगल का व्यक्तित्व उनकी रचनाओं में प्रकट होता है। सन् 1986 में उन्हें राष्ट्रीय एकता और सद्भावना के लिए *'प्रज्ञा सम्मान'* से सम्मानित किया गया था। उनकी कहानी संकलन *'इस हमाम में'* को सन् 1986–87 के लिए हिंदी अकादमी का *'साहित्यिक कृति'* पुरस्कार मिला। वर्ष 1986–87 में ही बाल कथा संकलन *'जंगल का राज'* के लिए

हिंदी अकादमी के *‘बाल साहित्य पुरस्कार’* से पुरस्कृत किया गया एवम् *‘ग्यारह लम्बी कहानियों’* के संकलन के लिए वर्ष 1987 में बिहार राज भाषा का *‘राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह पुरस्कार’* भी प्रदान किया गया।[5]

समय के साथ, चित्रा मुदगल ने कई उपन्यास और कहानियों की रचना की, जिन्हें विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उनका उपन्यास *'एक जमीन अपनी'* के लिए ग्रामीण संगठन, मुंबई द्वारा सन् 1994 में *'फणीश्वरनाथ रेणु साहित्य पुरस्कार'* मिला। इसके बाद, उन्हें वर्ष 1995 में हिंदी अकादमी की ओर से *'साहित्यकार सम्मान'* भी प्रदान किया गया।[6]

चित्रा मुदगल की अन्य एक महत्त्वपूर्ण रचना *'आवां'* है, जो बहुचर्चित उपन्यास है। इसे सन् 2000 में हिंदी अकादमी, दिल्ली के *'साहित्यिक कृति सम्मान'* से सम्मानित किया गया। वर्ष 2000 में ही उन्हें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की ओर से भी *'साहित्य भूषण सम्मान'* दिया गया। उपन्यास *'आवां'* के लिए वर्ष 2002, 2003 एवम 2007 में क्रमशः मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी की ओर से अखिल भारतीय ‘वीर सिंह जूदेव’, के.के. बिडला का प्रतिष्ठित *‘व्यास सम्मान’* एवम् हिमांचल का प्रतिष्ठित *‘शिखर सम्मान’* प्रदान किया गया[7] तथा उपन्यास *‘गिलिगडु’* के लिए वर्ष 2005-06 मध्य प्रदेश का *‘चक्रधर सम्मान’* तथा *‘श्रीमती रत्नी देवी गोयनका सम्मान’* प्रदान किया गया।[8]

चित्रा मुदगल का लेखन भारतीय साहित्य में एक अमूल्य योगदान है। उनकी रचनाओं में भावनाएं, समाज और साहित्य सदेव सजीव होते हैं, जो पाठकों को साहित्यिक दुनिया में ले जाते हैं। उनकी साहित्यिक यात्रा उनके प्राप्त सम्मानों से प्रमाणित होती है, जो

उन्हें समृद्ध और सम्मानित साहित्यकार के रूप में उच्च स्थान पर स्थापित करती हैं।

1.2 मृदुला गर्ग

➢ व्यक्तित्व

मृदुला गर्ग का जन्म 25 अक्टूबर 1938 को कोलकाता में हुआ था, [9] परन्तु वह मूलतः उत्तर प्रदेश की है। उनके पिता का नाम वीरेन्द्र प्रसाद जैन था और माता का नाम रविकांता था। मृदुला गर्ग का बचपन दिल्ली में बीता, जहां उनकी शिक्षा–दीक्षा पूरी हुई।

मृदुला गर्ग की लेखनी में विशेष रुचि थी, और वे स्कूल के दिनों से ही नाटकों में अभिनय करने लगी थीं। उन्होंने कई नाटकों में अभिनय किया और कई पुरस्कार भी जीते। इसके बाद, उन्होंने अपने लेखनी का रुझान भी बदला और साहित्यिक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने का संकल्प लिया।

मृदुला गर्ग ने दिल्ली विश्वविद्यालय के दिल्ली स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया, परन्तु इनका रुझान हिंदी विषय में था। इसके बाद, सन 1960 से 1963 तक, उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से एफिलेटेड इंद्रप्रस्थ कॉलेज और जानकीदेवी कॉलेज में प्राध्यापिका के रूप में अध्यापन कार्य किया। 1963 में मृदुला जी का विवाह आनंदप्रकाश गर्ग जी के साथ हुआ। विवाहोपरांत उन्हें अर्थशास्त्र के पढ़ाने में दिलचस्पी नहीं रही और उन्होंने नौकरी छोड़ दी और अपने आपको परिवार और लेखन के क्षेत्र में रमा लिया तथा अपनी शिक्षा और अनुभव को अपनी रचनात्मक यात्रा के लिए उपयोगी बनाया। मृदुला जी के लेखन में और उनके व्यवहार में एक विशिष्टता और गम्भीरता की भावना उभरती है। उनकी बातचीत और लेखन की स्वभाविकता उनकी शैली को अद्वितीय बनाती है, जो उनकी बौद्धिक और विचारशीलता को दर्शाती हैं। मृदुला जी की विविधता और उनके विचारों में गहरायी उन्हें एक प्रतिष्ठित लेखिका बनाती हैं। उनके सहज और गम्भीर लेखन

का महत्वपूर्ण योगदान हिंदी साहित्य में स्थापित हो गया है।

मृदुला जी ने कई कहानियों और कविताओं को अंग्रेजी भाषा में लिखी थी, किन्तु हिंदी साहित्य में मृदुला जी की पहचान की नींव उनकी पहली कहानी *'रुकावट'* है, जो 1971 में *'सारिका'* पत्रिका में कमलेश्वर जी के सम्पादन में छपी थी।[10] इसके पश्चात *'सारिका'* पत्रिका में उनकी कई कहानियाँ और कविताएँ प्रकाशित हुई; जैसे *'हरी बिंदी'*, *'लिली ऑफ वैली'*, *'दूसरा चमत्कार'* आदि। इसके साथ-साथ, 1972 में उनकी *'कितनी कैदें'* कहानी को पत्रिका ने पुरस्कृत किया।[11]

1974 में, मृदुला जी का पहला उपन्यास *'उसके हिस्से की धूप'* प्रकाशित हुआ। 1984 से 1989 तक, मृदुला जी ने *'रविवार'* पत्रिका में नियमित स्तंभ-लेखन भी किया। अपने स्तंभों में, उन्होंने परिवार, परिवेश, और पर्यावरण से जुड़े कई चुनौतीपूर्ण मुद्दे अपनी लेखनी के माध्यम से उठाए। इन्होंने देश-विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में सांस्कृतिक, सामाजिक, और साहित्यिक विमर्श, और पर्यावरण पर व्याख्यान भी दिये। इनके निबंध देश-विदेश की प्रमुख पत्रिकाओं में लगातार प्रकाशित होते रहे। इससे पहले भी, इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से हिंदी साहित्य को अपने विशेष रूप में पेश किया। । उनकी रचनाएं समाज में गहरे मुद्दों को उजागर करती हैं और साहित्य को समुन्नत करते हुए नई धाराओं को जन्म देती हैं। मृदुला जी का योगदान हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अविस्मरणीय है। उनके लेखन की गुणवत्ता और महत्वपूर्ण भूमिका ने उन्हें एक उच्च स्थान पर बैठाया है।

➢ कृतित्व

मृदुला गर्ग का कथा साहित्य शिल्प के अनूठे प्रयोग के लिए जाना जाता है। भाषा की लय और गति इनकी रचनाओं को सहज ही पठनीय बनाती हैं। मृदुला जी के रचना-संसार में उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, यात्रा-साहित्य, स्तम्भ-लेखन, व्यंग्य,

संस्मरण तथा अनुवाद आदि सभी गद्य विधाएँ सम्मिलित हैं।

- **उपन्यास**

1. उसके हिस्से की धूप (1975)
2. वंशज (1976)
3. चितकोबरा (1979)
4. अनित्य (1980)
5. मैं और मैं (1984)
6. कठगुलाब (1996)
7. मिलजुल मन (2009)

- **कहानी संग्रह**

1. कितनी कैदें (1975)
2. टुकड़ा–टुकड़ा आदमी (1976)
3. डैफोडिल जल रहे हैं (1978)
4. ग्लेशियर से (1980)
5. उर्फ सैम (1986)
6. शहर के नाम (1990)
7. चर्चित कहानियाँ (1993)
8. समागम (1996)
9. मेरे देश की मिट्टी अहा (2001)
10. संगति–विसंगति (2003)
11. जूते का जोड़, गोभी का तोड़ (2006)

12. छत पर दस्तक (2006)

13. दस प्रतिनिधि कहानियाँ (2007)

14. मंजूर नामंजूर (2007)

15. मृदुला गर्ग की यादगारी कहानियाँ (2010)

16. स्त्री मन की कहानियाँ (2010)

17. मृदुला गर्गा की संकलित कहानियाँ (2012)

18. कथा यात्रा (2012)

19. प्रतिनिधि कहानियाँ (2013)

20. हर हाल बेगाने (2014)

- **नाटक**

1. एक और अजनबी (1978)
2. जादू का कालीन (1993)
3. तीन कैदें (मंचित) (1996)
4. साम दाम दंड भेद (बाल नाटक) (2011)
5. कैद दर कैद (2013)

- **निबन्ध**

1. रंग–ढंग (1995)
2. चुकते नहीं सवाल (1995)
3. कुछ अटके कुछ भटके (यात्रा संस्मरण– 2006)
4. कर लेंगे सब हजम (व्यंग्य – 2007)
5. खेद नहीं है (व्यंग्य– 2010)

6. कृति और कृतिकार (संस्मरण– 2013)

मृदुला गर्ग के उपन्यास और कहानियाँ अंग्रेजी, चैक, जापानी आदि विदेशी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित हैं।

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

1975 में *'उसके हिस्से की धूप'* के उपन्यास के लिए इन्हें मध्य प्रदेश साहित्य परिषद *'महाराज वीरसिंह अखिल भारतीय'* पुरस्कार मिला। 1978 में *'एक और अजनबी'* नाटक को आकाशवाणी का प्रथम पुरस्कार मिला। हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा 1988 में *'साहित्यकार सम्मान'*। 1993 में *'जादू का कालीन'* नाटक को मध्य प्रदेश साहित्य परिषद, *'सेठ गोविन्द दास अखिल भारतीय पुरस्कार'* प्राप्त हुआ।[12] 2001 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा *'साहित्य भूषण'* मिला। 2001 में ह्यूमन राइट्स वॉच न्यूयार्क से *'हैल्मन–हैमट ग्रान्ट'* प्राप्त हुआ। 2003 में सूरीनाम में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में इन्हें *'आजीवन साहित्य सेवा सम्मान'* से सम्मानित किया गया। वर्ष 2003 एवम् 2004 में क्रमशः *'कठगुलाब'* उपन्यास के लिए ज्ञानपीठ का *'वाग्देवी सम्मान'* एवम् *'व्यास सम्मान'* प्राप्त हुआ। 2010 में *'स्पंदन वरिष्ठ साहित्यकार सम्मान'* मिला। 2013 में *'मिल जुल मन'* उपन्यास के लिए *'साहित्य अकादमी सम्मान'* प्राप्त हुआ।[13]

मृदुला गर्ग की कहानियाँ अपनी भावबोधगम्यता और संवेदनशीलता के कारण विशिष्ट है। इसी वैशिष्ट्य भाव के कारण ही ये अपने समकालीन साहित्यकारों की श्रेणी में अलग दिखाई देती हैं। इनकी कहानियाँ हिन्दी कहानी के युग को आगे बढ़ाती है। मृदुला जी के पास विचार, कथा, भाषा तीनों की गतिमूलकता है और अपने जीवन–दर्शन के लिए

आस्था और संकल्प है, साथ ही स्पष्ट दृष्टि है।

1.3 ममता कालिया

➢ व्यक्तित्व

संवेदनशील और समर्थ रचनाकार को पहचानना और उनकी रचनाओं की ताकत और क्षमता को समझना बहुत जरूरी है। इसके लिए उनके जीवन के बचपन, युग, और परिवेश का महत्व होता है, जो उनकी सोच और कल्पना को प्रभावित करता है। *"रचना के गठन में निहित रचनाकार का अपना निज का एकांत है- चिंतन है, उसका चितंन, उसकी सोच है जो गहरे में उसकी मानिसकता की जड़ो से उभरी है। वही उसके पिरवेश और मूल्यों से जुड़ी है। उनमें रसी–बसी है।"*[14]

कथाकार ममता कालिया का जन्म 2 नवंबर 1940 को ऐतिहासिक और धार्मिक नगरी मथुरा के निकट वृन्दावन में हुआ था। उनका बचपन आगरा और मथुरा में बीता, जिसके विषय में वह कहती है– *"बचपन की यादों के बारे में कहना हो तो मुझे मथुरा की शिलाओ के समान लगनेवाले कछुए बहुत याद आते है।"*[15]

इनके पिता का नाम विद्याभूषण अग्रवाल तथा माता का नाम इन्दुमति था। ममता जी के पिता शम्भूदयाल कालेज गाजियाबाद में प्रिंसिपल थे और बाद में उन्होंने आकाशवाणी में नौकरी की। ममता जी के चाचा भारत भूषण अग्रवाल अपने समय के प्रख्यात साहित्यकार थे। ममता जी के स्कूली जीवन का आरम्भ गाजियाबाद से हुआ। आकाशवाणी में कार्यरत इनके पिता का तबादला लगभग हर दो वर्ष बाद हो जाता था जिसके कारण इनकी शिक्षा नागपुर, इन्दौर, मुंबई, पुणे, दिल्ली के विद्यालय व विश्वविद्यालय

में हुई। दिल्ली विश्वविद्यालय से 1963 ई० में इन्होंने एम०ए० (अंग्रेजी) उत्तीर्ण किया।

आगे चलकर ममता जी ने शिक्षण कार्य को अपना कर्म क्षेत्र बनाया। इलाहाबाद के महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज की प्राचार्य के रूप में सन् 1973 से 2001 तक सेवाएँ दी। इसके पश्चात भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता में निदेशक के रूप में भी इनका योगदान रहा।

ममता जी का विवाह 1965 ई० को दिल्ली में समानधर्मी रचनाकार रवीन्द्र कालिया जी से हुआ। विवाह के पश्चात आरम्भिक कुछ वर्षों तक इन्हें परिस्थितियों से संघर्ष करना पड़ा। परन्तु बाद में इनका पारिवारिक जीवन सुखमय रहा। इनके दो बेटे हैं– अनिरुद्ध और प्रबुद्ध।

ममता जी को बचपन से ही साहित्यिक परिवेश प्राप्त हुआ था। ममता जी के पिता साहित्य के प्रति उन्हें प्रेरणा एवं सहयोग प्रदान करते थे। लेखिका ने कहा है– *"मैं किताब लाती, मुझसे पहले पापा उसे चट कर जाते। पहले उसे उठाकर देखते, सूँघते, उलटते-पलटते, फिर पढ़ना शुरू कर देते। जहाँ कोई बात काम की नजर आती वहाँ लाल पेंसिल से रेखांकित कर देते। जब मैं पढ़ती तब ये लाल निशान मेरे प्रकाश स्तम्भ बन जाते।"*[16] इनके चाचा एक प्रख्यात कवि थे, इन्होंने भी इनको लिखने के लिए प्रेरणा प्रदान की– *"तुम कवि बनना चाहती हो तो दसों दिशाओं में क्या हाथ पाँव फेंकती रहती हो। चुपचाप अपने कमरे में बैठ किताबें पढ़ो। मन में कुछ आए तो लिखो और फाड़ो, गोष्ठियों में अभी से जाने की क्या जल्दी मची है। कहीं रचना भेजनी है तो सम्पादक को चिट्ठी लिखने की जरूरत नहीं। बस रचना पर लिखो 'प्रकाशनार्थ'। बीस पैसे का टिकट लगाओ और बुक पोस्ट कर दो। इस ढर्रे से तुम जीरो रह जाओगी, जीरो।"* [17] इस तरह ममता जी कदम दर कदम आगे बढ़ती चली गयी। पीछे मुढ़कर उन्होंने कभी नहीं देखा। विविध पुरस्कार एवं सम्मान से वह

विभूषित हुईं।

➢ कृतित्व

ममता कालिया ने कई विधाओं में साहित्य सृजन किया है। उपन्यास, कहानी, एकांकी, बाल साहित्य, कविता, संस्मरण आदि।

- **उपन्यास**

1. बेघर (1971)
2. नरक दर नरक (1975)
3. प्रेम कहानी (1980)
4. लड़कियाँ (1987)
5. एक पत्नी के नोट्स (1997)
6. दौड़ (2000)
7. दुक्खम–सुक्खम (2009)
8. अँधेरे का ताला (2010)
9. कल्चर–वल्चर
10. सपनों की होम डिलिवरी

- **कहानी संग्रह**

1. छुटकारा (1969)
2. एक अदद औरत (1975)
3. सीट नम्बर छह (1976)
4. प्रतिदिन (1983)

5. उसका यौवन (1985)
6. जाँच अभी जारी है (1998)
7. बोलने वाली औरत (1998)
8. मुखौटा (2003)
9. निर्मोही (2004)
10. पच्चीस साल की लड़की (2006)
11. थियेटर रोड के कौव्वे (2006)
12. काके दी हट्टी (2010)
13. खुशकिस्मत (2010)
14. थोड़ा सा प्रगतिशील (2014)

- **काव्य**

1. ए ट्रिब्यूट टू पापा एण्ड अदर पोयम्स (1978)
2. खाँटी घरेलू औरत (2004)
3. कितने प्रश्न करूँ

- **नाट्य संग्रह**

1. आत्मा अठन्नी का नाम है (1977)
2. आप न बदलेंगे (1989)
3. यहाँ रोना मना है (1989)
4. आपकी छोटी लड़की
5. जान से प्यारा

- **संस्मरणात्मक संग्रह**

1. कितने शहरों में कितनी बार

2. कल परसों के बरसों

- **लेखात्मक संग्रह**

1. भविष्य का स्त्री विमर्श

- **बाल साहित्य**

1. ऐसा था बजरंगी

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

सन् 1963 में साप्ताहिक हिन्दुस्तान की ओर से तथा 1976 में सरस्वती प्रेस की ओर से सर्वश्रेष्ठ कहानीकार एवं कहानी का पुरस्कार मिला। *'उसका यौवन'* कहानी संग्रह पर उ०प्र० हिन्दी संस्थान का *'यशपाल'* नामित पुरस्कार मिला। अभिनव भारती की ओर से समग्र कथा साहित्य पर 1990 में *'रचना सम्मान'* प्राप्त हुआ।

रोटरी क्लब इलाहाबाद की ओर से समग्र साहित्य पर *'वोकेशनल पुरस्कार'* मिला। वर्ष 1998 में *'एक पत्नी के नोट्स'* उपन्यास पर उ०प्र० हिन्दी संस्थान का *'महादेवी वर्मा'* नामित पुरस्कार मिला।

1999 में *'बोलने वाली औरत'* कहानी संग्रह पर *'सावित्री बाई फूले पुरस्कार'* मिला। मानव संसाधन मंत्रालय ने इन्हें सृजनात्मक लेखन–हेतु वर्ष 2000 से 2002 के लिए वरिष्ठ अध्येता वृत्ति प्रदान की। उ०प्र० हिन्दी संस्थान का *'साहित्य भूषण सम्मान'* 2002 में प्राप्त हुआ।

'दुक्खम सुक्खम' उपन्यास के लिए 2013 में *'लोहिया साहित्य सम्मान'* प्राप्त हुआ।

2017 में के०के० बिड़ला फाउंडेशन का 27वाँ *'व्यास सम्मान'* प्राप्त हुआ। ममता कालिया की अन्य उपलब्धियाँ इस प्रकार है– *"सदस्य परामर्शदाता समिति इग्नू, दिल्ली। निर्णायक मण्डली की सदस्य, साहित्य अकादमी हिन्दी समिति 1988–91, 2006। निर्णायक मण्डल की सदस्य, साहित्य अकादमी हिन्दी अनुवाद समिति 1994, सदस्य, अकादमिक व कार्यकारी समिति, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, मध्य प्रदेश साहित्य परिषद के मैथिलीशरण गुप्त सम्मान के निर्णायक मंडली की अध्यक्ष 2001, सदस्य, कार्यकारिणी समिति, दीक्षा उ०प्र० राज्य तकनीकी परिषद्, लखनऊ 96 से निरन्तर। हरिश्चन्द्र पत्रकारिता पुरस्कार, भारत सरकार, निर्णायक मण्डल की अध्यक्ष 1998–99। देश–विदेश में तीन दर्जन से अधिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के व्याख्यानों में उल्लेखनीय सहभागिता, वक्ता, अतिथि, मुख्य अतिथि के रूप में रही, कई आयोजनों में अग्रणी भूमिका रही।"* [18]

1.4 जया जादवानी

➢ व्यक्तित्व

जया जादवानी हिन्दी साहित्य की सुप्रसिद्ध रचनाकार हैं। इनका जन्म 1 मई 1959 को कोतमा, जिला – शहडोल (मध्य प्रदेश) में हुआ। इनके पिता का नाम रामदास धावानी और माता का नाम लक्ष्मी है। बंटवारे के कारण इनके पिता सिंध से निर्वासित होकर कोतमा आ गये। तकलीफ भरे दिन इन्होंने कैम्प में बिताए। कोतमा में आकर इनके परिवार ने आटा मिल और आयल मिल लगाई। जया जी की दादी और माँ दोनों मशीन चलाने का काम करती थीं। कपड़े सिलकर वे दोनों घर की जरूरतें पूरी करती थीं। इसी कारण जया जी को भी काम का महत्व पता चला और काम करने की प्रेरणा मिली।

ग्यारहवीं के बाद जया जी का विवाह प्रकाश जादवानी से हुआ, जो रायपुर में रहते

थे। इन्होंने विवाह के पश्चात हिन्दी और फिर मनोविज्ञान में एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इनके घर में जब बिटिया का जन्म हुआ तो उसका नाम स्मृति रखा, फिर बेटा आकाश और सबसे छोटा बेटा मृदुल।

पठन–पाठन में रुचि जया जी को प्रारम्भ से ही थी। आठवीं तक वह हिन्दी उपन्यास, कहानियाँ और कविताएँ पढ़ना शुरू कर चुकी थी। इन किताबों को पढ़कर वह हिन्दी के तमाम रचनाकारों से परिचित हुई। अमृता प्रीतम, शिवानी, रवीन्द्रनाथ टैगोर को वह अधिक पढ़ती थी। वे कुछ बनना चाहती थी इसीलिए माँ से कहा– *"माँ मेरी बात सुनो। मैं घर का सारा काम कर दूँगी, सारी बंडियाँ भी सिल दूंगी, – जो–जो आप कहेंगी – कर दूँगी, – बस मेरी शादी मत करो। मुझे पढ़ना है – मुझे कुछ और करना है।"* [19] कृतियों को पढ़ते समय उन्हें महसूस होता था कि वह भी कुछ लिख सकती हैं और यह अहसास उन्हें सबसे पहले गीतांजलि पढ़कर हुआ, वहीं से ही उन्होंने पहले कविताएँ लिखी, फिर कहानियाँ फिर उपन्यास लिखे। पर उन्हें सम्भाल कर नहीं रखा। इन सब बातों की उस समय न समझ थी न ही हुनर।

जया की कुछ कविताएँ *'लोकल न्यूज पेपर'* में छपीं। धीरे–धीरे उन्हें छपवाने की समझ पैदा हुई। 1992 में पहली बार उनकी कहानी *'हंस'* के साथ *'मनोरमा'* में भी भेजी गयी। फिर तो उनकी अनेक कहानियाँ *'हंस'* में छपने लगीं। इन्हीं कहानियों की विशिष्टता से इनको राजेन्द्र यादव के कई पत्र आये जिनमें अक्सर इनकी कहानियों की प्रशंसा ही होती थी।

➢ कृतित्व

जया जादवानी ऐसी लेखिका है, जिन्होंने समाज के हर वर्ग को अपनी रचनाओं के माध्यम से दूसरों तक पहुँचाने का काम किया है। इनकी रचनाओं में रूमानियत, सूक्ष्मता,

माहौल की सजीवता, किरदारों का आम व्यवहार प्राप्त होते हैं जो उनकी विशेषता को दर्शाते हैं।

- **उपन्यास**

1. तत्वमसि

2. कुछ न कुछ छूट जाता है

3. मिठों पाणी खारो पाणी

- **कहानी संग्रह**

1. अंदर के पानियों में कोई सपना कांपता है (2002)
2. मुझे होना है बार–बार (2002)
3. उससे पूछो (2008)
4. मैं अपनी मिट्टी में खड़ी हूँ कांधे पर अपना हल लिये (2009)
5. समुन्दर में सूखती नदी (2000)
6. अनकहा आख्यान

- **काव्य संग्रह**

1. मैं शब्द हूँ
2. अनंत संभावनाओं के बाद भी
3. उठाता है कोई एक मुट्ठी ऐश्वर्य

जादवानी जी की कृतियों में मनुष्य और समाज की वह संवेदनशील और सजग

विचारधारा उभर कर सामने आती है जो मानवीय मूल्यों पर आधारित है।

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

जया जादवानी का लेखन नित नयी ऊंचाइयों की ओर बढ़ता रहा है। हिंदी साहित्य में उनके योगदान के कारण उन्हें कई सम्मानों और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। *‘मुक्तिबोध सम्मान’* एक महत्वपूर्ण सम्मान है, जो साहिति्य के क्षेत्र में किये गए उत्कृष्ट कार्यो के लिए दिया जाता है। जया जादवानी ने इस सम्मान को प्राप्त किया है, जो उनके लेखन के प्रति समाज में जागरूकता और स्त्रीकृति को प्रकट करता है।

2017 में जया जादवानी को *‘कुसुमांजलि सम्मान’* से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उनके उत्कृष्ट उपन्यास *‘मिठो पाणी खारो पाणी’* के लिए था, जो समाज में जागरूकता और साहित्यिक महत्व को प्रस्तुत करता है।[20]

उनकी उत्कृष्ट कथाओं के लिए 2017 में ही उन्हें *‘कथा क्रम सम्मान’* भी मिला। इस सम्मान से स्पष्ट होता है कि जया जादवानी की कहानियाँ सामाजिक विषयों पर आधारित होती हैं और समाज को जागरूक करने का काम करती हैं।[21]

इस प्रकार, जया जादवानी के सम्मानों और पुरस्कारों से प्रकट होता है कि उनका लेखन समाज में कितना महत्वपूर्ण और प्रभावी है। उन्हें सम्मानित करने से उनकी मेहनत,

साहित्यिक योगदान, और साहित्यिक विचारधारा को प्रकट किया जा रहा है, जो साहित्य समुदाय के लिए एक बड़ी संपत्ति है।

1.5 उर्मिला शिरीष

➢ <u>**व्यक्तित्व**</u>

उर्मिला शिरीष का जन्म मध्य प्रदेश में दतिया जिले के आसरे नामक गाँव में 19 अप्रैल 1959 को हुआ। उर्मिला शिरीष का जन्म एक सुसंस्कृत तथा परंपरागत जीवन–शैली जीनेवाले एक प्रतिष्ठित संभ्रांत उच्च कोटि के सनाड्य ब्राह्मण परिवार में हुआ। उर्मिला शिरीष एक प्रसिद्ध लेखिका हैं जो अपनी दिलचस्प कहानियों के लिए प्रसिद्ध हैं, जिन्हें पढ़ने में आनंद आता है। इनकी कहानियों की खास बात यह है कि वे बिना किसी का पक्ष लिए गहरी भावनाओं और मुद्दों पर बात करते हुए पाठकों के मन पर गहरी छाप छोड़ती हैं।

उनकी कहानियाँ प्रासंगिक हैं और भावनात्मक रूप से वास्तविक जीवन की समस्याओं को दिखाती है। उर्मिला जी का लेखन समाज की समस्याओं और उनसे निपटने के तौर–तरीकों और उसके प्रति उनकी समझ को भी दर्शाता है। वह अक्सर आज की महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करती हैं, जिससे पाठकों को उनके जीवन की बेहतर समझ मिलती है।

उर्मिला शिरीष जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव दतिया में हुई। बाद में वे ग्वालियर और भोपाल में पढ़ने लगीं। सन् 1997 में गुरुनानक देव युनिवर्सिटी, अमृतसर में इन्होंने "*मोहन राकेश के साहित्य में नारी पात्रों का अध्ययन*" पर पी–एच.डी की उपाधि प्राप्त की थी।[22] भोपाल के शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में इन्होंने

अध्यापन कार्य किया।

अपने लेखक होने की प्रक्रिया के बारे में उन्होंने लिखा हैं– *“मेरा बचपन गाँव के बहुत ही खूबसूरत वातावरण में गुजरा है, हरे–भरे खेत, पलाश के जंगल, त्योहारों के रंग, लोक–गीतों, भजनों और फागों की गूँजें आज भी मेरे कानों में गूँज रही हैं। वहाँ के लोगों के साथ जो रिश्ता था, वह अत्यन्त आत्मीयता से भरा और अन्तरंग था। वे लोग पात्र बनकर मेरी कहानियों में आये हैं, पर अभी भी बहुतों को आना है। घर में पढ़ने का माहौल था। किताबों से कमरा भरा रहता था। बच्चों की पत्रिकाएँ, उस समय की सभी पत्र–पत्रिकाएँ तथा किताबें मेरे आसपास रहती थीं। मेरे साथ की लड़कियाँ जब खेलती थीं, तब मैं स्वयं को किताबों के बीच उनके साथ, उन पात्रों के साथ रखती थी। लेखक बनने की प्रक्रिया में दो कहानियों का प्रभाव मुझ पर था। एक ‘हार की जीत’, दूसरी ‘काबुलीवाला’। इन कहानियों ने मुझे बहुत ज्यादा प्रभावित किया था। दूसरा, मेरे हिन्दी के अध्यापक जिन्होंने कोई विषय कहानी लिखने के लिए दिया था, तब मेरी कहानी पढ़कर उन्होंने कहा था कि तुम्हें कहानी लिखनी चाहिए ..... यही मेरे लेखक बनने की प्रक्रिया है। मेरे जीवन में*

साहित्य हमेशा सबसे श्रेष्ठ और प्रिय विषय रहा है।”[23]

➢ कृतित्व

उर्मिला जी ने लेखन–क्षेत्र में लगभग सभी विधाओ में उत्कृष्ट कार्य किये है।

- <u>**कहानी संग्रह**</u>

1. वे कौन थे (1983)
2. मुआवजा(1985)
3. केंचुली (1990)
4. सहमा हुआ कल (1991)
5. शहर में अकेली लड़की (1998)
6. रंगमंच (2001)
7. निर्वासन (2003)
8. पुनरागमन (2005)
9. कुर्की और अन्य कहानियाँ (2012)
10. ग्यारह लंबी कहानियाँ (2013)
11. दीवार के पीछे (2016)
12. बिवाईयाँ तथा अन्य कहानियाँ
13. उर्मिला शिरीष की श्रेष्ठ कहानियाँ
14. मेरी प्रिय कथाएँ
15. लकी तथा अन्य कहानियाँ

- <u>**जीवनी**</u>

1. बयावाँ में बहार (गोविन्द मिश्र)

- **साक्षात्कार**

1. शब्दों की यात्रा के साथ

- **संपादन**

1. खुशबू
2. धूप की स्याही
3. प्रभाकर श्रोत्रिय: आलोचना की तीसरी परम्परा
4. हिन्दी भाषा एवं समसामयिकी
5. सृजनयात्रा: गोविन्द मिश्र

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

उर्मिला शिरीष के कहानी संग्रह 'शहर में अकेली लड़की' को चार प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। वर्ष 1999 में, उर्मिला जी को *'समर स्मृति साहित्य पुरस्कार'*, *'वागीश्वरी पुरस्कार'*, और 2004 में *'डॉ. बलदेव मिश्र पुरस्कार'* से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, उन्हें करवट कला परिषद द्वारा *'रत्न–भारती पुरस्कार'* और अभिनव कला परिषद द्वारा *'शब्द शिल्पी सम्मान'* से सम्मानित किया गया। साल 2000 में इसी कहानी संग्रह के लिए उन्हें *'काशीबाई मेहता पुरस्कार'* भी मिला। 2005 में, उन्हें उनके कहानी संग्रह *'निर्वासन'* के लिए *'भागवत प्रसाद साहित्य सम्मान'*, *'निर्मल पुरस्कार'* और 2006 में उनके कहानी संग्रह *'पुनरागमन'* के लिए *'विजय वर्मा कथा सम्मान'* मिला। 2013 में, उर्मिला शिरीष को *'ओजस्विनी सम्मान'*, *'कृष्ण प्रताप कथा सम्मान'* और

'शैलेश मटियानी कथा सम्मान' से सम्मानित किया गया था।

उनकी कहानी *'पत्थर की लकीर'* को दूरदर्शन (राष्ट्रीय टेलीविजन) द्वारा एक टेलीफिल्म में रूपांतरित किया गया है, और उनकी कहानी *'धरोहर'* पर आधारित नाटक *'जो पीछे रह जाते हैं'* का मंचन बैंगलोर में कल्याण संगठन द्वारा किया गया था। उर्मिला जी *'शब्द योग'* पत्रिका के सह–संपादन से भी जुड़ी हुई हैं।

उर्मिला शिरीष विभिन्न राष्ट्रीय पुरस्कारों और सम्मानों के लिए चयन समितियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। उन्हें भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय, मानव संसाधन विकास विभाग द्वारा फेलोशिप से सम्मानित किया गया है।

1.6 मंजुल भगत

➢ व्यक्तित्व

हिन्दी साहित्य जगत की प्रसिद्ध लेखिका मंजुल भगत साहित्य जगत में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनके व्यक्तित्व में भारतीय नारी के दर्शन होते हैं। कमल किशोर गोयनका के अनुसार– *"हिन्दी की प्रख्यात लेखिका मंजुल भगत को मैंने कुछ गोष्ठियों में बोलते सुना और संवाद भी किया तो पाया कि वे भारतीय स्त्री की प्रतिरूप हैं। उनमें भारतीय स्त्री के गहरे संस्कार हैं। उनसे मिलना भारत की एक आधुनिक स्त्री से मिलना था। यह स्त्री भारत की संस्कृति और यहाँ की मिट्टी की उपज थी, जिसमें गहरा अस्तित्व बोध एवं स्त्री स्वातंत्र्य की चेतना थी।"* [24]

मंजुल जी का जन्म 22 जून 1936 को उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में हुआ। इनके पिता का नाम श्री वीरेन्द्र प्रसाद जैन व माता का नाम श्रीमती रविकान्ता था। मंजुल जी का बचपन भरे–पूरे परिवार में व्यतीत हुआ। इनकी चार बहनें मृदुला गर्ग, चित्रा जैन, रेणु जैन

व अचला बंसल हैं। एक भाई राजीव जैन हैं। मृदुला गर्ग, अचला व राजीव लेखन के क्षेत्र में सक्रिय है। उनकी छोटी बहन मृदुला गर्ग ने कहा – *"हम सब पाँच बहने हैं जिनमें सबसे बड़ी मंजुल भगत थी।"* [25]

मंजुल जी के पिता जी सभी बच्चों को साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा दिल्ली और कलकत्ता में हुई। दिल्ली विश्वविद्यालय से इन्होंने अंग्रेजी में एम०ए० भी किया। मंजुल जी ने ललित भगत जी से प्रेम विवाह किया। 1960 में मंजुल भगत जी के जुड़वा बच्चे हुए। बेटी पूनम और बेटा शरद। विवाह के कुछ समय बाद इनके पति का एक्सीडेंट हो गया। इस कारण इन्हें काफी आर्थिक तंगी झेलनी पड़ी। पति की नौकरी छूट जाने पर इन्होंने बिरला इंस्टीट्यूट में लाइब्रेरियन की नौकरी की।

मंजुल जी का व्यक्तित्व सभी को अपनी ओर आकर्षित करता था। वह सभी के साथ गर्मजोशी से मिलती थी। मंजुल भगत ने अपने जीवन में अपनी मान्यताओं से कभी समझौता नहीं किया। अगर किसी विषय पर उनकी सहमति नहीं है तो उसे बदलना नामुमकिन सा हो जाता है। अपनी इच्छा से वह किसी के आगे भी झुक सकती थी, किन्तु बलपूर्वक उन्हें झुकाना सम्भव नहीं था। 31 जुलाई 1998 को मंजुल जी का देहावसान हो गया। मंजुल जी अल्प जीवन काल में ही साहित्य को बहुत कुछ दे गई।

➢ कृतित्व

मंजुल भगत की लेखन–कला के बारे में डॉ० मैना ने लिखा है– *"उन्होंने अपनी साहित्य–रचना के लिए कभी भी अलग से समय नहीं निकाला। खाना बनाते–बनाते, यात्रा करते हुए तथा अन्य कुछ भी काम करते समय जब भी उन्हें मौका मिला, वे लिखने बैठ जातीं। उनकी एक और विशेषता यह थी कि अतिव्यस्त तथा गुंजन माहौल में ही उन्हें अधिकतर कहानियों के विषय सूझते तथा पात्र और घटनाएँ उनके सामने उपस्थित हो जाते*

और कहानी खुद–ब–खुद बन जाती।” [26] मंजुल जी का कथा साहित्य इस प्रकार है–

- **<u>उपन्यास</u>**

1. लेडीज क्लब (1975)
2. टूटा हुआ इंद्रधनुष (1976)
3. अनारो (1976)
4. बेगाने घर में (1978)
5. खातुल (1983)
6. तिरछी बौछार (1984)
7. गंजी (1994)
8. जख्म जितने थे

- **<u>कहानी संग्रह</u>**

1. गुलमोहर के गुच्छे – 1974
2. क्या छूट गया – 1976
3. आत्महत्या से पहले – 1978
4. कितना छोटा सफर – 1980
5. बावन पन्ने और एक जोकर – 1982
6. सफेद कौआ – 1986
7. दूत – 1992
8. चर्चित कहानियाँ – 1994
9. बूँद – 1998
10. आखरी चोट – 2004

11. अंतिम बयान – 2001

मंजुल जी ने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से साहित्य जगत में अलग जगह बनायी।

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

मंजुल जी को उनके साहित्य के लिये अनेक सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हुए। *'अनारों'* उपन्यास को यशपाल प्रतिष्ठान व उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है। इस उपन्यास पर दूरदर्शन पर धारावाहिक भी बन चुका है। *'सम्भव'* द्वारा मंच पर इस उपन्यास की नाट्य प्रस्तुति दी गई। *'खातुल'* उपन्यास के लिए इन्हें हिन्दी अकादमी दिल्ली का *'कृति पुरस्कार'* प्राप्त हुआ। *'दूत'* कहानी संग्रह को *'प्रियदर्शिनी सम्मान'* से सम्मानित किया गया। इनकी कहानी *'कबाड़'* पर फिल्म बनी जो दूरदर्शन पर प्रसारित की गई।

1996 में इन्हें *'साहित्यकार–सम्मान'* से सम्मानित किया गया। मंजुल जी के बारे में गोयनका जी ने लिखा है– *"मंजुल भगत की स्त्री भरा–पूरा समाज है। वह पूरे समाज को जीती हैं। उनके स्त्री पात्र सम्बन्धों की मधुरता की अपेक्षा कटुता और विसंगतियों में जीते हैं और हर परिस्थितियों में अपनी जीवटता एवं जिजीविषा को बनाए रखते हैं।"* [27]

1.7 राजी सेठ

➢ व्यक्तित्व

राजी सेठ हिन्दी कथा साहित्य में जाना–माना नाम है। राजी जी सभी विधाओं में लिखती हैं। इसकी प्रसिद्धि इस बात से आंकी जा सकती है कि इनकी पुस्तकें कई विश्वविद्यालयों में एम०ए० के पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाती हैं। इनकी कृतियों पर कई शोध ग्रंथ लिखे जा चुके हैं। शोधार्थियों की प्रेरणास्त्रोत राजी सेठ का जन्म 4 अक्टूबर 1935 में नौशेरा

छावनी (अविभाजित भारत) में हुआ।[28] राजी सेठ के जन्म के बाद का समय देश के विभाजन के कारण तनाव से भरा था। विभाजन की अराजकता ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया था इसलिए लेखन कार्य इन्होंने जीवन के उत्तरार्ध में प्रारम्भ किया। 1947 में, विभाजन की उथल–पुथल भरी परिस्थितियों के बीच, उनके परिवार को लाहौर से प्रस्थान करना पड़ा और अपने विस्तारित परिवार के साथ, उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर में बसना पड़ा।

इनकी पहली कहानी 1975 में अज्ञेय द्वारा सम्पादित *'नया प्रतीक'* में छपी थी। तब से इनकी लेखन–यात्रा का प्रारम्भ हो गया। इन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम०ए० किया। इन्होंने तुलनात्मक धर्म और भारतीय दर्शन में गुजरात विद्या पीठ से विशेष अध्ययन भी किया। राजी जी का साहित्य आन्तरिक भाव और संवेदना को अति सूक्ष्मता से रेखांकित करता है। इनके शिल्प में भाषा, शैली, शब्द एक साथ उभरते हैं।

राजी सेठ की कृतियों के बहुत सी भारतीय और यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हुए। दक्षिण एशियन अध्ययन केन्द्र शिकागो विश्वविद्यालय में 30 कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद भी हुआ है। 9 वर्ष तक राजी जी ने साहित्यिक पत्रिका 'युगसाक्षी' का सह सम्पादन भी किया है।

➢ कृतित्व

सन् 1975 से राजी जी ने लिखना प्रारंभ किया है। तब से आज तक वह निरंतर लेखन कार्य में रत हैं। उनका लेखन बहुमुखी है। उनके कहानी, उपन्यास, कविता, संस्मरण साहित्य में अंग्रेजी शब्दों का अधिकतर प्रयोग पाया जाता है। साथ ही उन्होंने पंजाबी, उर्दू,

अंग्रेजी साहित्य का हिंदी में अनुवाद किया है।

- **<u>उपन्यास</u>**

1. तत–सम
2. निष्कवच

- **<u>कहानी संग्रह</u>**

1. अंधे मोड़ से आगे (1979)
2. तीसरी हथेली (1981)
3. यात्रा–मुक्त (1987)
4. दूसरे देशकाल में (1992)
5. यह कहानी नहीं (1998)
6. किसका इतिहास (2002)
7. गये–हयात ने मारा (2006)
8. खाली लिफाफा (2007)
9. मार्था का देश (2009)
10. यहीं तक (2010)
11. यादगारी कहानियाँ (2011)
12. रूको, इंतजार हुसैन (2012)
13. प्रतिनिधि कहानियाँ (2013)
14. वह कौन है (2013)
15. चुनी हुई कहानियाँ (2013)
16. राजी सेठ – चुनी हुई कहानियाँ (2015)

17. राजी सेठ की श्रेष्ठ कहानियाँ (2015)
18. सात लंबी कहानियाँ (2015)
19. सदियों से (संचयन)

- **साक्षात्कार**

1. पगडंडियों पर पाँव

- **साहित्यिक संस्मरण**

1. जहाँ से उजास

- **सम्पादन**

1. परत–दर–परत

- **संचयन**

1. स्त्री हूँ इसलिए
2. मोर्चे से हटकर

- **अनुवादित कृतियाँ**

1. मेरे लई मई, पंजाबी कहानी संग्रह
2. अगेंस्ट मायसेल्फ एंड अदर स्टोरीज
3. मीलों लंबा पुल, उर्दू कहानी संग्रह
4. अनार्ड, अंग्रेजी उपन्यास
5. डॉ. आर्लीन जाइड द्वारा तीन कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद
6. अंध शिक्षा केंद्र

- **अनुवाद कार्य**

1. पत्र युवा कवि के नाम, रिल्के के पत्रों का अनुवाद
2. रिल्के के प्रतिनिधि पत्रःसृजन–वृत्ति को लेकर पत्रों का चयन और अनुवाद
3. 'पल्लवी परणी गई' दिनेश शुक्ल के त्रिअंकी नाटक का गुजराती से हिंदी अनुवाद
4. ऑत्काविया पाज (अंग्रेजी से काव्यानुवाद)
5. सुरेश दयाल (गुजराती से काव्यानुवाद

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

राजी जी को उनके श्रेष्ठ लेखन के लिए अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए। 1993 में *'अनंत गोपाल शेवडे हिंदी कथा पुरस्कार'* प्रदान किया गया। 1986 में *हिंदी अकादमी सम्मान* प्राप्त हुआ। 1985 में भारतीय भाषा परिषद द्वारा पुरस्कृत हुई। 2001 में *'वाग्मणि सम्मान'* प्रदान किया गया। 1985 में *'कथा साहित्य रचना पुरस्कार'* प्रदान किया गया। 1986 में हिंदी निदेशालय द्वारा *'हिंदीतर भाषी लेखकीय पुरस्कार'* प्राप्त हुआ। 1991 में *'हिंदी प्रतिनिधि सम्मान'* प्राप्त किया। 1991 में *'संसद साहित्य परिष सम्मान'* प्राप्त किया। 2009 में *'अक्षरम साहित्य सम्मान'* प्राप्त हुआ। 2010 में *'गमे हयात ने मारा'* के लिए दक्षिण कोरिया द्वारा स्थापित *'प्रथम टैगोर लिटरेरी अवार्ड'* से सम्मानित किया गया।

1.8 मेहरुन्निसा परवेज़

➢ व्यक्तित्व

हिन्दी की महिला कथाकारों में मेहरुन्निसा परवेज़ का स्थान विशिष्ट है। इन्होंने अपने कथा साहित्य में जीवन की विविध समस्याओं और उसमें बदलते मूल्यों का यथार्थवादी

चित्रण किया है। मेहरून्निसा जी का जन्म मुस्लिम परिवार में 10 दिसम्बर 1944 में चलती बैलगाडी मे हुआ। इसलिए घर के सदस्य *'नदिया'* के नाम से जानते हैं। इतिहास प्रसिद्ध नूरजहाँ (मेहरून्निसा) का जन्म भी यात्रा के दौरानं हुआ था। जन्म घटनाओं की समानता के कारण गाँव के मौलाना ने उनका नाम भी मेहरूनिसा रखा।[29] इनका बचपन आम बच्चों की तरह शांतिपूर्वक नहीं बीता, क्योंकि माता–पिता के दाम्पत्य–सम्बन्धों की कटुता ने इन पर असर डाला। स्वयं इन्होंने लिखा है–

"हर दिन, हर रात, हर बात पर घर में झगड़े होते और झगड़े भी ऐसे कि सारे मोहल्ले में आवाज गूँजती और हम दो भाई–बहन घर के किसी सूने कमरे में, अँधेरे में एक दूसरे से चिपटे हुए रोते रहते। जब से होश सम्भाला अपने घर में शीशे के टुकड़े, खून और आँसू ही देखे। औरों के घर से हमारे घर का वातावरण इतना भिन्न क्यों हैं, समझ में नहीं आता।" [30]

पिता के प्रशासनिक विभाग में कार्यरत होने के कारण मेहरून्निसा को कई शहरों में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। इनकी शिक्षा पर इसका प्रभाव पड़ा। विवाह हो जाने के कारण इनकी पढ़ाई बीच में ही छूट गयी। फिर कई सालों के बाद टुकड़ों में इन्होंने एम०ए० पूरा किया। अपने अथक परिश्रम और संघर्ष के परिणामस्वरूप वह आगे बढ़ती चली गयी।

मात्र 15 वर्ष की आयु में इनका विवाह हो गया। इनके पति उर्दू के प्रसिद्ध शायर थे। वैचारिक भिन्नता के कारण यह सम्बन्ध टूट गया। बाद में डॉ० भगीरथ प्रसाद से इन्होंने अंतर्जातीय विवाह किया। इनके तीन बच्चे हैं– सलीम, सिमाला और समर। पुत्र समर का अल्प आयु में ही देहान्त हो गया। इस दुःख से उबरने के लिए उन्होंने अपने दिवंगत पुत्र की स्मृति में *'समर लोक'* त्रैमासिक की स्थापना की।

मेहरून्निसा जी को अपने बचपन तथा शादीशुदा जीवन में घुटन, तकलीफ, दुःख के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला। लेखिका ने अपने साहित्य में समाज में व्याप्त अनाचार,

दिनोंदिन टूटते जीवन मूल्य और आर्थिक विपन्नता का सजीव चित्रण किया है। नारी के पीड़ा भरे जीवन के प्रति लेखिका को गहरी सहानुभूति है। अपने साहित्य में इन्होंने नारी की व्यथा–कथा को दर्शाया है।"*उसमें एक नई मूल्यपरक दृष्टि का विकास हुआ और उसके तटस्थ एवं निर्वैयक्तिक दृष्टि से समाज की ज्वलन्त समस्याओं, परिवर्तनशीलता केसूक्ष्म से सूक्ष्म तत्त्वों एवं मनुष्य की विकृतियों–विशेषताओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया।*"[31]

वर्ष 1974 में ये बाल विवाह एवं परिवार कल्याण परियोजना जिला बस्तर की अध्यक्षा रहीं। आदिवासी एवं महिलाओं की सामाजिक समस्याओं के प्रति इनकी विशेष रुचि रही। ये आकाशवाणी की सलाहकार समिति की सदस्य रहीं। 1977 में बस्तर जिले की ओर से समाज कल्याण परिषद की सदस्य रहीं। "*छोटे–छोटे सुख को जी लेना, छोटे–छोटे दुःख में रो लेना और फिर घुले हुए चेहरे लेकर नयी सुबह को आँख खोलना ही शायद जिंदगी है। मुझे तो कभी वक्तव्य देना नहीं आया। मेरी कहानियाँ यदि अपना परिचय खुद न दे पायी, तो समझूँगी, मैंने जो जिया, जो पाया सब झूठ के सिवा कुछ भी नहीं।*"[32]

समाज में परिवार की समस्याओं, आदिवासी जीवन की विषमताओं, पारिवारिक तनाव, महानगरीय संक्रमण, आर्थिक विपन्नता, नारी विषयक समस्याओं, नारी के बदलते स्वरूप, प्रेम के प्रति बदलते दृष्टिकोण आदि विषयों पर इन्होंने अपनी लेखनी चलायी है।

➢ कृतित्व

मेहरून्निसा परवेज की पहली कहानी 1963 में साप्ताहिक '*धर्मयुग*' में प्रकाशित हुई। तब से ये लगातार उपन्यास एवं कहानियाँ लिख रही हैं। इनकी रचनाओं में आदिवासी जीवन की समस्याएँ जीवन के अभाव और नारी जीवन की दयनीय स्थिति का चित्रण

मिलता है।

- **उपन्यास**

1. आंखों की दहलीज
2. उसका घर
3. कोरजा
4. अकेला पलाश
5. समरांगण
6. पासंग

- **कहानी संग्रह**

1. आदम और हव्वा (1972)
2. टहनियों पर धूप (1977)
3. गलत पुरुष (1978)
4. फाल्गुनी (1978)
5. कोई नहीं (1982)
6. अंतिम चढ़ाई (1982)
7. ढहता कुतुबमीनार (1983)
8. एक और सैलाब (1990)
9. सोने का बेसर (1991)
10. अयोध्या से वापसी (1991)
11. रिश्ते (1992)
12. अम्मा (1997)

13. समर (2002)

14. कानी बाट

मेहरुन्निसा जी की कुछ कहानियाँ मध्य प्रदेश, दिल्ली, आगरा, केरल के शिक्षा मंडल विश्वविद्यालय द्वारा पाठ्यक्रम में शामिल की गई हैं। प्रायः इनकी सभी रचनाएं भारतीय भाषाओं में अनूदित हुई हैं। इनकी कहानी *'झूठन'*, *'सोने का बेसर'*, *'फाल्गुनी'* पर दिल्ली दूरदर्शन ने धारावाहिक का निर्माण किया। *'वीरांगना रानी अवंतीबाई'* पर धारावाहिक का निर्माण हुआ।

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

मेहरुन्निसा जी ने साहित्य के क्षेत्र में अत्यंत व्यापक कार्य किये, जिसके अंतर्गत बांछडा जाति पर शोधकार्य कर उसे *'धर्मयुग'* पत्रिका में 29 मई 1983 के अंक में प्रकाशित भी किया और लेख भी लिखे। इस कार्य के लिए मेहरूजी को अनेक सम्मान तथा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

1980 में आपको *'कोरजा'* उपन्यास पर मध्यप्रदेश सरकार का *'अखिल भारतीय महाराजा वीर सिंह जूदेव राष्ट्रीय पुरस्कार'* प्रदान किया गया। तथा *'कोरजा'* उपन्यास पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा पुरस्कार दिया गया। महात्मा गाँधी के 125 वें जन्म वर्ष पर क्रियाशील लेखन एवं जनजाति–सेवा के लिए वर्ष 1995 में दुर्ग में आयोजित छत्तीसगढ़ सम्मेलन मे सन्मानित किया गया। वर्ष 1995 में उत्तर हिन्दी संस्थान द्वारा *'साहित्य भूषण सम्मान'* से अलंकृत किया गया। 1995 मे चरारे शरीफ में हिंसा के समय वे गाँधी शांति मिशन मंच के तहत सांप्रदायिक सद्भाव यात्रा मे कश्मीर गयी। उन्हें *'भारत भाषा भूषण सम्मान'* जून 2003 में प्राप्त हुआ। सर्व–श्रेष्ठ साहित्यक पत्रिका *'समरलोक'* के सुसंपादन के लिये 19 जून 2003 को *'श्री रामेश्वर गुरु पुरस्कार'* से सम्मानित किया गया।

सितंबर 1999 में लंदन में अयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में राष्ट्रभाषा स्वर्ण जयंती के अवसर पर हिन्दी भाषा एवं साहित्य की विशिष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। वर्ष 2005 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा उन्हें *'पद्मश्री'* से सम्मानित किया गया तथा 2016 में *'डॉ० राही मासूम रज़ा साहित्य सम्मान'* से अलंकृत किया गया।

1.9 मधु कांकरिया

➢ व्यक्तित्व

मधु कांकरिया हिन्दी कथा साहित्य में जाना माना नाम है। इन्होंने अपनी रचनाओं में समाज में फैली बुराइयों, असुरक्षित युवा वर्ग में बढ़ती नशे की आदत, लाल बत्ती क्षेत्र की व्यथा का अत्यन्त सजीव एवं मार्मिक वर्णन किया है। अपने संवेदनशील लेखन द्वारा लेखिका ने समाज में जागरूकता लाने का प्रयास किया है।

मधु जी का जन्म कलकत्ता के एक मध्यवर्गीय जैन व्यवसायी परिवार में 23 मार्च 1957 में हुआ। इनके पिता का नाम ध्यानचंद वर्डिया तथा माँ का नाम अक्षयदेवी था। स्वरचित एक आलेख में मधु कांकरिया ने लिखा– *"मेरा जन्म पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में हुआ, लेकिन झारखण्ड को मैं एक तरह से अपनी दूसरी जन्मभूमि मानती हूँ, वहाँ के आदिवासी इलाकों में मैं बहुत ज्यादा रही हूँ, इसलिए मेरे लेखन में आदिवासी हैं और काफी ज्यादा है, इसलिए कह सकते हैं कि लेखक ने जो जिया है, वह उसके लेखन में झलकता है, पहले मेरी दुनिया एक मारवाडी परिवार तक सीमित थी, तो कहानियाँ उसी प्रकार की थी,मैं उससे बाहर निकली, तो मेरे लेखन में सामाजिक सरोकार बहुत खुलकर सामने आये।"*[33]

बचपन से ही मधु जी को साहित्य की नई–नई किताबें पढ़ने में विशेष रुचि है। इसके

बारे में उनका कथन है– *"मुझे हर नई पुस्तक अच्छी लगती है, जो सिर्फ समय ही नहीं मेरे मन को भी भरे। शुरूआत प्रेमचंद, टैगोर, शरतचन्द्र, नांगर, मन्नू भण्डारी, गार्की, पर्ल बक, हेमिंग्वे, ओ हेनरी, टॉलस्टाय जैसे लेखकों से की थी, पर आज कल कहानी, उपन्यास से ज्यादा गम्भीर आलेख आकर्षित करते हैं।"* [34] कॉलेज के दिनों में इन्होंने छोटी–छोटी कहानियाँ लिखना प्रारम्भ कर दिया था। आगे चलकर मधु जी ने जीविका–अर्जन के लिए कम्प्यूटर सेंटर शुरू किया। मधु जी ने बी०ए० और एम०ए० (अर्थशास्त्र) कलकत्ता के लेडी बेटन कॉलेज से किया तथा कम्प्यूटर विज्ञान में डिप्लोमा भी किया।

मधु जी विवाह नहीं करना चाहती थी परन्तु पिता की इच्छा के आगे झुककर इन्होंने रणजीत कांकरिया से विवाह कर लिया जो कि डॉक्टर थे। इनका वैवाहिक जीवन कल्पनाओं से परे था। पुत्र को जन्म देने के उपरान्त वह सदैव के लिए अपने मायके चली गयी। मधु जी ने माँ और पिता दोनों का फर्ज निभाया। अपना और अपने पुत्र की जिम्मेदारी इन्होंने कभी भी अपने पिता या भाई पर नहीं डाली। इसलिए इन्होंने जगह–जगह नौकरी की। मगर जीवन के संघर्षों से कभी हार न मानी। अर्थशास्त्र की जानकारी होने के कारण ये लेखन–कार्य के साथ–साथ अपने भाइयों की कम्पनी में कामकाज भी मेहनत से पूरा करती हैं। मधु कांकरिया लिखती है– *"पढ़ी–लिखी होकर भी नौकरी नहीं कर सकती थी, बाद में विवाह भी असफल रहा, तब जाकर नौकरी करनी ही पड़ी, इन पारिवारिक स्थितियों का असर लेखन पर भी पड़ा मैं काफी देर से लेखन में आयी, पहली प्राथमिकता थी कि अपने पैरों पर खड़ी हो जाऊँ, दूसरी, बच्चे ठीक से पढ़–लिख जाए। लेखन तो सबसे अन्त में रहा। हमेशा एक तरह से पार्टटाइम ही रहा, आज लेखन प्राथमिकता में है।"* [35]

➢ कृतित्व

मधु जी ने हिन्दी की अनेक विधाओं; जैसे कविता, उपन्यास, संस्मरण, कहानी में

अपनी लेखनी चलाई। उनकी सभी रचनाओं में संवेदना तथा विचार का सुंदर समन्वय मिलता है।

- **उपन्यास**

1. खुले गगन के लाल सितारे (2000)
2. सलाम आखिरी (2002)
3. पत्ताखोर (2005)
4. सेज पर संस्कृत (2008)
5. सूखते चिनार (2012)
6. हम यहाँ थे (2018)

- **कहानी संग्रह**

1. बीतते हुए (2004)
2. और अन्त में ईशू (2006)
3. भरी दोपहरी के अँधेरे (2007)
4. चिड़िया ऐसे मरती है (2011)
5. दस प्रतिनिधि कहानियाँ (2013)
6. युद्ध और बुद्ध (2014)
7. स्त्री मन की कहानियाँ (2015)
8. जलकुम्भी (2020)
9. नंदीग्राम के चूहे
10. पाँच बेहतरीन कहानियाँ

- **<u>सामाजिक विमर्श</u>**

1. अपनी धरती अपने लोग (2012)

- **<u>यात्रा वृत्तान्त</u>**

1. बादलों में बारूद (2014)

तेलुगू, मराठी आदि कई भाषाओं में इनकी रचनाओं के अनुवाद प्रकाशित हुए।

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

मधु जी को अपने संवेदनशील कृतित्व के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 2009 में *'मारवाड़ी समाज गौरव पुरस्कार'* से सम्मानित किया गया। 2009 में *'हेमचंद आचार्य साहित्य सम्मान'* प्रदान किया गया। 2008 में *'कथाक्रम' सम्मान'* से पुरस्कृत किया गया। 2012 में *'विजय वर्मा कथा सम्मान'* प्राप्त हुआ। 2015 में *'शिव कमार मिश्र स्मृति कथा सम्मान'* से पुरस्कृत हुई। 2018 में *'प्रेमचन्द स्मृति कथा सम्मान'* प्राप्त किया। 2018 में *'रत्नीदेवी गोयनका वाग्देवी सम्मान'* से पुरस्कृत हुई। 2019 में *'मीरा स्मृति सम्मान'* प्राप्त किया। 2020 में *'शरत चन्द्र साहित्य सम्मान'* से पुरस्कृत हुई। 2020 में *'कर्तृत्व समग्र सम्मान'* भारतीय भाषा परिषद की तरफ से प्राप्त हुआ।

1.10 अलका सरावगी

➢ व्यक्तित्व

अलका सरावगी 21वीं शती के हिन्दी साहित्य की उन जागरूक और संवेदनशील कथाकारों में है; जिन्होंने अपनी कृतियों में समकालीन परिस्थितियों का सशक्त, निष्पक्ष,

निर्भीक तथा जीवन्त चित्रण किया है।

अलका जी का जन्म 17 नवम्बर 1960 में कोलकाता शहर के एक मध्यवर्गीय मारवाड़ी परिवार में हुआ। इनका बचपन वहीं बीता। अलका जी स्वयं लिखती हैं– *"कलकत्ते में पैदाइश और परवरिश के कारण मैंने कलकत्ते को ही अपना देश माना था।"* [36] लड़कियों की शिक्षा के प्रति मारवाड़ी समाज में पारम्परिक दृष्टिकोण रहा है। अलका जी ने इस सम्बन्ध में कहा है– *"मारवाड़ी समाज का आज भी यही यथार्थ है। मेरी माँ छठीं या सातवीं कक्षा तक पढ़ी होंगी। उसके बाद उनकी शादी हो गयी। मैं ग्रेज्युएट थी, लेकिन शादी के पहले मुझे उसके आगे बिल्कुल पढ़ने नहीं दिया गया, क्योंकि मैं पढ़ती तो मेरे लिए लड़का खोजना मुश्किल होता। यह हमारी रियलिटी थी, तो आप किस संघर्ष की बात करते हैं? जो नहीं है, उसके न होने की वजह है।"*[37]

1988 में विवाह के बाद अलका जी दो बच्चों की माँ बनी। इसके पश्चात हिन्दी साहित्य में एम०ए० करने हेतु विश्वविद्यालय गयीं और अपने प्रथम दिन के अनुभव के विषय में अलका जी कहती है– *"मैं जब विश्वविद्यालय गई और मैंने व्याख्यान सुनें, तो मुझे लगा कि ये तो बिल्कुल एक अद्भुत दुनिया है और मैं कैसे इस दुनिया के बाहर, मतलब कि मेरे इस दुनिया का कोई मतलब ही नहीं था। तो वो एक बहुत ही सुन्दर अनुभव था बिल्कुल ऐसे लग रहा था कि जैसे मैं हवा में उड़ रही हूँ, इस तरह का एक अनुभव था।"* [38] अपने आत्मविश्वास और मेहनत के बल पर एम०ए० प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। इसके बाद इन्होंने कोलकत्ता विश्वविद्यालय से पी.एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। इनकी रुचि कथा लेखन के साथ–साथ पत्रकारिता में भी थी, इसलिए इन्होंने पत्रकारिता को समाज की विषमता के साथ जूझने का हथियार मानकर पत्रकारिता का डिप्लोमा कोर्स भी किया। इन्होंने अपनी शिक्षा के लिए बचपन से ही बहुत संघर्ष किया है। मंजुरानी ने इस सम्बन्ध में लिखा है– *"आगे पढ़ने की उनमें सच्ची चाहत जगी थी, पर परिस्थितियाँ प्रतिकूल थीं। वह नियमित*

विश्वविद्यालय में जाकर पढ़ाई करें, परिवार में ऐसी छूट नहीं थी।"[39]

इनके जीवन का सफर बहुत ही संघर्षशील रहा है, अपने शारीरिक रूप से अपाहिज बेटे के लिए ये अनेक वर्षों तक संघर्षरत रही हैं। इनके जीवन में घटित अनेक घटनाओं से स्पष्ट होता है कि इनका व्यक्तित्व मेहनती और संघर्षशील रहा है। अपनी ससुराल में अलका जी संयुक्त परिवार की बहू रही हैं। उनके मन में अपने परिवार के प्रति नितांत प्रेम और निष्ठा है।

लेखन के क्षेत्र में अलका जी का कथा–साहित्य नित्य समृद्धि की ओर अग्रसर है। इनके साहित्य में अभी नारी विमर्श, शहरी विमर्श, आधुनिकता बोध तथा अन्य साहित्यकारों के तुलनात्मक अध्ययन जैसे विषयों पर शोध के नये सन्दर्भ निहित हैं।

➢ कृतित्व

किसी भी साहित्यकार का कृतित्व उसके व्यक्तिगत जीवन से कहीं न कहीं अवश्य जुड़ा होता है। बचपन के संस्कार एवं जीवन व्यतीत करने का परिवेश साहित्य में अवश्य परिलक्षित होता है। अलका सरावगी ने जितना भी लिखा उत्कृष्ट कोटि का लिखा है, इसीलिए उनकी रचनाओं में मानव–मन को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। वे कहती हैं– *"बिना 'व्यष्टिवादी' हुए कोई भला समष्टि को क्या समझेगा? यदि एक व्यक्ति का आर्त्त अनुभव, उसका कष्ट, उसका पल–पल उद्वेलन, उसकी असहाय छटपटाहट–कुल मिलाकर उसकी असाधरणता ही साहित्य में नहीं आती, तो हम किस साधारण आदमी के साहित्य की बात*

करते हैं?" [40]

- **<u>उपन्यास</u>**

1. कलि–कथा: वाया बाइपास
2. शेष कादम्बरी
3. कोई बात नहीं
4. एक ब्रेक के बाद
5. जानकीदास तेजपाल मैनशन
6. एक सच्ची–झूठी गाथा

- **<u>कहानी संग्रह</u>**

1. कहानी की तलाश में (1996)
2. दूसरी कहानी (2000)

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

अलका सरावगी को उनके साहित्यिक सृजनात्मकता के लिए कई प्रमुख पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उनकी प्रमुख कृतियों में से एक *'कलि–कथा: वाया बाइपास'* उपन्यास को वर्ष 1998 में *'श्रीकांत वर्मा पुरस्कार'* से सम्मानित किया गया। वर्ष 2001 में पुनः इसी उपन्यास के लिए *'साहित्य अकादमी पुरस्कार'* मिला। उपन्यास *'शेष कादम्बरी'* के लिए वर्ष 2006 में के. के. बिरला फाउंडेशन का *'बिहारी पुरस्कार'* भी मिला। इन्हें उपन्यास *'जानकीदास तेजपाल मैनशन'* के *'अन्तरराष्ट्रीय इन्दु शर्मा कथा सम्मान'* मिला।

इनके उपन्यासों को इटली सरकार ने भी स्त्रीकार किया है। इनके तीन उपन्यास के इतालवी भाषा में प्रकाशित होने पर उन्हें *'आर्डर ऑफ द स्टार ऑफ इटली–कैवेलियर*

सम्मान' से सम्मानित किया गया है। उपन्यास *'कुलभूषण'* के लिए वर्ष 2021 में कलिंग साहित्य महोत्सव द्वारा *'सर्वश्रेष्ठ हिन्दी किताब का बुक ऑफ द ईयर अवॉर्ड'* इन्हें मिला। वर्ष 2021 में इसी उपन्यास को *'वैली ऑफ वर्ज, देहरादून'* का *'हिन्दी फिक्शन का पुरस्कार'* भी प्राप्त हुआ।

अलका सरावगी की सृजनात्मकता और उनके उपन्यासों में दर्शायी गयी गहराई ने उन्हें साहित्यिक जगत में एक महान प्रतिष्ठा दिलाई है। उनकी कहानियाँ और कल्पनाएँ न केवल भारतीय पाठकों के बीच महत्वपूर्ण हैं, बल्कि विदेशी भाषाओं में भी इनका प्रकाशन होने से उनकी वैश्विक पहचान में वृद्धि हुई है। इसी तरह, उन्होंने अपने क्षेत्र में अद्वितीय स्थान हासिल किया है और उन्हें पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जो उनकी मेहनत और समर्पण की सराहना करते हैं।

1.11 नासिरा शर्मा

➢ व्यक्तित्व

नासिरा शर्मा आधुनिक महिला साहित्यकारों में विशिष्ट स्थान रखती हैं। इनका जन्म 22 अगस्त 1948 को इलाहाबाद में एक मुस्लिम परिवार में हुआ। इनके पिता उर्दू के प्रोफेसर होने के साथ–साथ उच्च कोटि के कवि थे। अतः कह सकते हैं कि साहित्य–पठन तथा लेखन की प्रतिभा इन्हें विरासत में मिली। परिवार के संदर्भ में नासिरा जी का मंतव्य है, *"मेरा खानदान केवल पढ़ा–लिखा नहीं था, बल्कि शायरों का एक सिलसिला रखता था। घर के मर्दों के लिखे कसीदे, परिदे, नौहे और गजलें औरतों द्वारा पढ़ी और सराही जाती थी।"*[41] नासिरा जी का पारिवारिक जीवन बेहद सुखद रहा। बचपन में ही पिता के देहावसान के उपरान्त उनकी माँ ने अपने पाँचों बच्चों का लालन–पालन बड़ी दक्षता से किया। नासिरा जी के बड़े भाई सैयद मुहम्मद हैदर अंग्रेजी साहित्य में अध्यापन के कार्य से

जुड़े थे। दूसरे भाई सैयद मजहर हैदर एक प्रतिष्ठित पत्रकार हैं। इनकी बड़ी बहन फात्मा उर्दू की जानी मानी लेखिका हैं।

इलाहाबाद में नासिरा जी ने अध्यापन किया और बाद में जे०एन०यू० के स्कूल ऑफ़ इन्टरनेशनल स्टडीज में प्रोफेसर के पद पर आसीन हुई। नासिरा जी ने फारसी भाषा और साहित्य में एम०ए० किया। अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी तथा पशतो भाषा पर नासिरा जी की अच्छी पकड़ है। इन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। तीन वर्षों तक जामिया मिलिया इस्लामिया में इन्होंने अध्यापन–कार्य किया।

इनका जीवन धर्मनिरपेक्षता का पर्याय है। शिया मुस्लिम होते हुए भी इन्होंने हिन्दू परिवार की बहू बनना स्वीकार किया। अपने विवाह के संदर्भ में उन्होंने लिखा है, *"यदि इन्सानियत पर विश्वास हो, धर्म के प्रति उदात्त भाव हो तब यह विवाह करना चाहिए वरना नहीं।* [42] नासिरा जी का विवाह डॉ० रामचंद्र शर्मा जी से हुआ। नासिरा जी की दो संताने हैं पुत्री अंजुम और पुत्र अनिल। नासिरा जी अपने बच्चों के साथ मंदिरों में भी जातीं, पूजा–पाठ आदि में हिस्सा लेती। ये सर्व धर्म समभाव की हिमायती रही हैं।

➢ कृतित्व

नासिरा जी ने साहित्य को श्रेष्ठतम रचनाएँ प्रदान की हैं। इनकी पहली कहानी *'राजा भैया'* तब प्रकाशित हुई, जब वे महज सातवीं कक्षा में थीं। इन्होंने साहित्य की अनेक

विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है।

- **<u>उपन्यास</u>**

1. सात नदियाँ एक समंदर
2. शाल्मली
3. ठीकरे की मंगनी
4. जीरो रोड़
5. जिन्दा मुहावरे
6. अक्षयवट
7. कुइयांजान
8. पारिजात
9. अजनबी जजीरा
10. कागज की नाव

- **<u>कहानियाँ</u>**

1. पत्थर गली (1986)
2. संगसार (1993)
3. इब्ने मरियम (1994)
4. शामी कागज (1997)
5. शबीना के चालीस चोर (1997)
6. खुदा की वापसी (1999)
7. इस्सानी नस्ल (2000)

8. दूसरा ताजमहल (2002)

9. जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं (2003)

10. बुतखाना (2008)

- **<u>बाल साहित्य</u>**

1. संसार अपने–अपने (हिन्दी भाषा में)
2. अपनी–अपनी दुनिया (उर्दू भाषा में)
3. किससाए गुससाए मा (फारसी भाषा में)
4. मरमेड एंड ब्रोकन जार (अंग्रेजी भाषा में)

- **<u>संपादन और अनुवाद</u>**

1. क्षितिज पार
2. ईरानी क्रान्तिकारी विशेषांक – सारिका
3. ईरानी क्रान्तिकारी विशेषांक – पुनश्च
4. वर्तमान साहित्य का महिला विशेषांक
5. प्रवासी हिन्दी लेखकों का कहानी संग्रह
6. मेरे वारिस

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

नासिरा शर्मा एक प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं, जिन्हें उनके उत्कृष्ट साहित्यिक योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्हें हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा *'अर्पण सम्मान'* से सम्मानित किया गया है। उन्हें मध्य प्रदेश साहित्य परिषद द्वारा *'गजानन माधव*

मुक्तिबोध पुरस्कार' भी दिया गया है, जो साहित्य में उनके योगदान की प्रशंसा करता है। बिहार सरकार ने भी उन्हें *'महादेवी वर्मा पुरस्कार'* से सम्मानित किया है। वर्ष 2016 में *'साहित्य अकादमी पुरस्कार'* और वर्ष 2019 में *'व्यास सम्मान'* जैसे प्रतिष्ठित सम्मान भी उन्हें मिले चुकें हैं, जो उन्हें साहित्य समाज में उच्च स्थान प्रदान करते हैं। इन सम्मानों से उनकी प्रतिभा और योगदान को अभिवृद्धि मिली है और वे समाज में एक प्रतिष्ठित साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

1.12 सुधा अरोड़ा

➢ व्यक्तित्व

कथा साहित्य में सुधा अरोड़ा एक चर्चित नाम है। इनका जन्म लाहौर (पाकिस्तान) में 1946 में हुआ। सुधा जी ने अविभाजित भारत की धरती पर जन्म लिया था। इनके पिता का नाम श्री रामलुभाया अरोड़ा तथा माता का नाम वीणा देवी था, जिन्होंने साहित्य रत्न की उपाधि ली थी। सुधा जी के माता–पिता दोनों ही साहित्य प्रेमी थे।

सुधा अरोड़ा जी की सम्पूर्ण शिक्षा–दीक्षा कलकत्ता में पूरी हुई। इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम०ए० (हिन्दी) की उपाधि ली। इन्होंने बी०ए० और एम०ए० की परीक्षा में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। सुधा जी का विवाह डॉ० जितेन्द्र भाटिया जी से हुआ। सुधा जी की दो बेटियाँ हैं गरिमा और गुंजन। जितेन्द्र जी भी सुधा जी की तरह एक कथाकार, चिंतक और अनुवादक हैं। वे पेशे से केमिकल इंजीनियर हैं। जितेन्द्र जी ने तीन उपन्यास, छहः कहानी संग्रह और तीन नाटकों की रचना की है।

पत्नी और पति दोनों ही साहित्यकार हैं। इस विषय पर सुधा जी कहती हैं– *"हमारी*

टकराहट में लेखक से लेकर खाने और कार पार्क करने तक के मुद्दे शामिल हैं। आमतौर पर समान धर्मा पति–पत्नी एक जंग के आदी हो जाते हैं। इस जंग के बिना निजात नहीं है। यह हमारी जिन्दगी का हिस्सा बन जाती है। हम दोनों के रोजमर्रा के महाभारत के बीच कहीं एक जबरदस्त अंडरस्टैडिंग भी मौजूद रहती है। लेखन हम दोनों के बीच एक सीमेंटिंगैटर है। एक दूसरे की हर रचना के हम पहले पाठक और क्रिटिक्स होते हैं और एक दूसरे की राय को बेहद गंभीरता से लेते हैं।"[43]

सुधा जी पठन–पाठन के अतिरिक्त अन्य क्षेत्र में भी विशेष रूझान रखती है। इन्हें फिल्में देखना, बेहद साधारण तरीके का जीवन यापन करना, नाटक और भारतीय शास्त्रीय संगीत और चित्रकला में भी विशेष रुचि है। सुधा जी की कहानियाँ लगभग सभी भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त कई विदेशी भाषाओं में अनूदित हैं। इन्होंने भारतीय महिला कलाकारों की आत्मकथा के दो संकलन दहलीज को लाँघते हुए और पंखों की उड़ान तैयार किए हैं।

➢ कृतित्व

सुधा अरोड़ा जी की पहली कहानी *'मरी हुई चीज़'* ज्ञानोदय में सितम्बर 1965 में

प्रकाशित हुई थी। तभी से इनके लेखन का प्रारम्भ हुआ।

- **उपन्यास**

1. यही कही था घर (2010)

- **कहानी संग्रह**

1. बगैर तराशे हुए (1967)
2. युद्धविराम (1977)
3. महानगर की मैथिली (1987)
4. काला शुक्रवार (2004)
5. कांसे का गिलास (2005)
6. रहोगी तुम वही (2007)
7. 21 श्रेष्ठ कहानियाँ (2009)
8. एक औरत तीन बटा चार (2011)
9. मेरी प्रिय कथाएँ (2012)
10. प्रतिनिधि कहानियाँ (2013)
11. बहुत जब बोलते हैं (2015)
12. मेरी तेरह कहानियाँ
13. चुनी हुई कहानियाँ

- **स्त्री विमर्श**

1. आम औरत:.जिन्दा सवाल (2008)
2. एक औरत की नोटबुक (2010)

3. स्त्री समय संवाद – (साक्षात्कार) (2016)

4. सांकल सपने और सवाल (2018)

- **संपादन**

1. औरत की कहानी (2008)
2. मन्नू भण्डारी: सृजन के शिखर (2010)
3. करतूते मरदां
4. मन्नू भंडारी का रचनात्मक अवदान (2012)
5. मन्नू भंडारी की चुनी हुई कहानियाँ
6. स्त्री संवेदना: विमर्श के निकष (दो खंडों में)

- **काव्य संकलन**

1. रचेंगे हम साझा इतिहास (2015)
2. कम से कम एक दरवाजा (2015)

- **स्तम्भ लेखन**

1. 1977–78 में सारिका में नियमित लेखन।
2. 1997–98 में जनसत्ता में प्रिय साप्ताहिक कालम 'वामा' में लेखन।
3. 2004–09 तक कथादेश में लेखन।
4. 2013 में कथादेश में स्तम्भ

- **टेलीफिल्म**

1. सुधा अरोड़ा की कहानियों युद्धविराम, दहलीज पर संवाद, इतिहास दोहराता है तथा जानकीनामा पर लघु फिल्में निर्मित हुई।
2. दूरदर्शन के 'समांतर' कार्यक्रम के लिए कुछ लघु फिल्मों का निर्माण।
3. पाकिस्तानी चैनल पर 'रहोगी तुम वही' कहानी पर धारावाहिक का निर्माण और प्रसारण।

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

सुधा आरोड़ा को उनके उत्कृष्ट लेखन के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। 1978 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने उन्हें विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया, जो उनके लेखन कौशल की प्रशंसा करता है। 2008 में उन्हें साहित्य क्षेत्र का *'भारत निर्माण सम्मान'* मिला, जो उनके साहित्यिक योगदान को मान्यता देता है। 2010 में उन्हें *'प्रियदर्शिनी सम्मान'* से सम्मानित किया गया। 2011 में उन्हें *'वीमेंस अचीवर अवार्ड'* और केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा पुरस्कृत किया गया। 2012 में महाराष्ट्र साहित्य अकादमी ने भी उन्हें पुरस्कृत किया, जो उनके साहित्यिक क्षमताओं को दर्शाता है।

2014 में उन्हें राजस्थान का *'वाग्मणि सम्मान'* और *'मुंशी प्रेमचंद कथा सम्मान'* भी प्राप्त हुआ, जो उनकी लेखनी की उच्चता को दर्शाता है। 2016 में उन्हें *'मीरा स्मृति सम्मान'* से सम्मानित किया गया, जो उनकी साहित्यिक प्रतिभा को सराहता है। *'आचार्य रामचंद्र शुक्ल सम्मान'* 2020 में भी उन्हें प्राप्त हुआ।

इन पुरस्कारों ने सुधा आरोड़ा की योग्यता, प्रतिभा, और साहित्यिक योगदान को मान्यता और प्रोत्साहन दिया है। वे एक उत्कृष्ट साहित्यकार हैं जो अपने लेखनी के माध्यम

से समाज में अच्छे परिवर्तन लाने का प्रयास करती हैं।

1.13 चंद्रकांता

➢ व्यक्तित्व

चंद्रकांता हिन्दी साहित्य की प्रतिभा संपन्न लेखिका है। वे स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों में एक श्रेष्ठ कहानीकार हैं। इनका जन्म श्रीनगर कश्मीर में सितंबर 1938 ई० में प्रोफेसर रामचंद्र पंडित के घर में हुआ, जो एक अहिन्दी भाषी शिक्षित परिवार था। इनके पिता साहित्य–प्रेमी थे। चंद्रकांता जी जब छः या सात वर्ष की थीं तभी उनकी माँ की मृत्यु हो गयी थी। चंद्रकांता जी की शिक्षा बी०ए०, बी०एड० तक श्रीनगर में अंग्रेजी माध्यम से हुई। एम०ए० हिन्दी उन्होंने पिलानी राजस्थान विश्वविद्यालय से किया। मातृभाषा हिन्दी न होते हुए भी हिन्दी इनका प्रिय विषय रहा। इन्होंने बारह वर्ष की उम्र में पहली कविता 'भर आता जब यह मौन' लिखी। बाद में यह कविता पुरस्कृत भी हुई।

चंद्रकांता जी को बहुत कम आयु में पिता का घर छोड़ना पड़ा। बचपन में माँ का देहान्त होने के कारण पिता ने कम उम्र में ही लड़कियों की शादी कर दी। लेखिका बचपन में ही बहुत कल्पनाशील बन गई। कुछ करने और बनने की जिद उन्हें लगातार बेचैन रखती। उनका विवाह डॉ० विशिन नामक लड़के से हुई। डॉ० विशिन शादी के समय बी०एससी० के छात्र थे। शादी के बाद लेखिका की शिक्षा नियमित रूप से शुरू रही। विवाहोपरांत पिलानी में उन्होंने अध्यापन–कार्य प्रारम्भ किया।

छः वर्ष उपरान्त वह पिलानी से हैदराबाद चली गयीं। हैदराबाद में ही उनका नियमित लेखन आरम्भ हुआ। 1967 में उनकी पहली कहानी 'खून के रेशे' कल्पना पत्रिका में

प्रकाशित हुई और अक्टूबर में *'कैक्टस'*। इस तरह उनकी लेखन–यात्रा प्रारम्भ हो गयी।

चंद्रकांता जी को भारत के और विदेश के कई प्रांतों में रहने का मौका मिला। वहाँ के विशिष्ट लोकरंगों और विश्वासों को इन्होंने अपनी कृतियों में ढाला है। कश्मीर तो इनकी अनेक कहानियों में जीवित हो उठा है।

लगभग छः वर्ष चंद्रकांता जी उड़ीसा में रहीं। इस सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है– *"मैं उड़ीसा में छः वर्ष रही, उड़िया कथा, कहानियों, साबार, कोणार्क और जगन्नाथ का प्रदेश है। यहाँ मुझे वह 'कुनी' मिली जो 'अपने–अपने कोणार्क' उपन्यास लिखने का कारण बन गई। ये कारण महज एक व्यक्ति न होकर जीवन की अनंत स्वभावनाओं में से उठाए गए कुछ जिज्ञासाएँ भी शामिल होती हैं। जिन्हें हम कथा कहानी के माध्यम से प्रिज करते हैं और जो पाठक के छूते ही उनके संवेदन के ताप से बकौल निर्मल वर्मा पिघलकर कहने लगते हैं।"*[44]

चंद्रकांता जी की कहानियों में विविधता, रोचकता, सोद्देश्यता दिखाई देती है। इनकी अधिकांश कहानियाँ दुःखांत हैं। मानव मन की निस्सहाय अवस्था, लाचारी, विवशता, छटपटाहट तथा कमजोरी में कहानियों का अंत है। इन्होंने अपनी कहानियों में मानव–जीवन के ऊँचे उद्देश्य और नैतिक मानदंडों की स्थापना की है।

➢ कृतित्व

आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रतिभा संपन्न लेखिका चंद्रकांता के साहित्य–जीवन का आरम्भ कम उम्र में हुआ था। लेखिका ने अपने बारे में कहा है कि– *"मेरे विषय में सोचा गया, हिन्दी प्रदेशों से दूर एक अनजानी लेखिका, अहिंदी प्रदेश में जन्मी–पली, एक अहिंदी भाषी, हिन्दी लेखिका, नाम भी क्या? चंद्रकांता। न कोई आगे उपसर्ग न पीछे कोई*

प्रत्यय, सिर के ऊपर गुंबद भी नहीं, न किसी गुट में न खेमे में, फिर भी कल्पना में छपी।"[45]

- **कविता संग्रह**

1. यहीं कहीं आसपास

- **उपन्यास**

1. अर्थांतर
2. अंतिम साक्ष्य
3. बाकी सब खैरियत है
4. ऐलान गली जिंदा है
5. यहाँ वितस्ता बहती है
6. अपने–अपने कोणार्क
7. कथा सतीसर

- **कहानी संग्रह**

1. सलाखों के पीछे (1975)
2. गलत लोगों के बीच (1984)
3. पोशनूल की वापसी (1988)
4. दहलीज पर न्याय (1989)
5. हे सोनकिसरी (1991)
6. सूरज उगने तक (1994)
7. कोठे पर कागा (1993)
8. काली बर्फ (1996)

9. चर्चित कहानियाँ (1997)
10. प्रेम कहानियाँ (1996)
11. आँचलिक कहानियाँ (1998)
12. अंतिम अपराध

- **<u>कविता</u>**

1. यहीं कहीं आस पास

- **<u>संस्मरण</u>**

1. हाशिये की इबारतें
2. मेरे भोज पत्र
3. प्रश्नों के दिन (साक्षात्कार)

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

चंद्रकांता जी ने साहित्य के क्षेत्र में अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा से कई प्रमुख पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए हैं। जम्मू कश्मीर सांस्कृतिक अकादमी ने उन्हें *'सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार'* के लिए सम्मानित किया, जैसे *'अर्थान्तर'* (1982), *'ऐलन गली ज़िंदा है'* (1986), *'ओ बेटा किसरी'* (1994), और *'कथा सतीसार'* (2006)।

हरियाणा साहित्य अकादमी ने उन्हें भी कई बार सम्मानित किया, जैसे *'अपने अपने कोणार्क'* (1997), *'अब्बू ने कहा था'* (2006), और *'हाशिये की इबारत'* (2011)। मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय ने, सरकार भारत के साथ उनके साहित्यिक योगदान को स्वीकार करते हुए *'बाकी सब खैरियत है'* (1983), *'पोशनूल की वापसी'* (1989),

और *'बदलते हालात में'* (2003–2004) के लिए सम्मानित किया।

उन्हें हिंदी अकादमी, दिल्ली से भी कई पुरस्कार मिले, जैसे *'कथा सतीसार'* (2002)। *'व्यास सम्मान'।* केके बिड़ला फाउंडेशन, दिल्ली ने उन्हें *'कथा सतीसार'* के लिए (2005) सम्मानित किया। *'चंद्रावती शुक्ल पुरस्कार'*, वाराणसी ने उन्हें *'कथा सतीसार'* (2006) के लिए सम्मानित किया।

उन्हें हिंदी साहित्य में उत्कृष्टता के लिए *'कल्पना चावला उत्कृष्टता पुरस्कार'* (2005), हिंदी साहित्य के लिए *'ऋचा सम्मान, दिल्ली'* (2006), *'वाग्मणि सम्मान'* (2007), *'हिंदी अकादमी, दिल्ली साहित्यकार सम्मान'* (2008)। भारत की प्रथम महिला (श्रीमती शर्मा) ने भी उन्हें सम्मानित किया (1996)। *'राष्ट्रीय भाषा गौरव सम्मान'* (2006) भी उन्हें प्राप्त हुआ।

इसके अलावा, अखिल भारतीय कश्मीरी समाज ने भी उन्हें *'सामुदायिक चिह्न पुरस्कार'* (2006) के लिए सम्मानित किया। सौम्य सम्मान, हिंदी संस्थान, उत्तर प्रदेश (2008), *'वाग्देवी पुरस्कार'*, *कमला गोयनका फाउंडेशन* (2011), *'बाल मुकुंद पुरस्कार'*, *हरियाणा साहित्य अकादमी* (2013), *'महात्मा गांधी साहित्य सम्मान, लखनऊ'* (2014), और दक्षिण एशियाई साहित्य के लिए *'डीएससी पुरस्कार'* (2012) भी उन्हें प्राप्त हुए हैं। अंततः वर्ष 2017 में *'सुब्रमण्यम भारती साहित्य सम्मान'* भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया गया।

1.14 कृष्णा अग्निहोत्री

➢ व्यक्तित्व

वरिष्ठ लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री मौलिक विविधता एवं सूक्ष्म कथानकों की मर्मज्ञ कथाकार हैं एवं अपनी सहज–सरल विशिष्ट भाषा शैली व समसामयिक पैनी दृष्टि के कारण

अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। कृष्णा जी का जन्म 4 अक्तूबर 1934 को नसीराबाद राजस्थान में हुआ। दरअसल कृष्णा जी का नाम मोहनी रखा गया था। परंतु उनकी बूआ ने उन्हें कृष्णा नाम दिया। 'कृष्णा' नाम रखने के पीछे इतिहास है। यह नाम लोकगीत और देशभक्ति से जुड़ा हुआ है। कृष्णा जी के शब्दों में– *"राजस्थान में उस समय एक लोकगीत देशप्रेमी कृष्णा कुमारी पर गाया जाता था.... कुछ ऐसा ही था– 'देशप्रेम पर मरनेवाली.... कृष्णा कुमारी तुममें थी।' इस गीत को छोटी बूआ कमला गाया करती थी। इस तरह छोटी बूआ ने मुझे कृष्णा कुमारी नाम दे दिया और धीरे से कुछ बहुत अपनों ने 'किन्ना' भी कहा।"*[46]

पिता के अनुशासनप्रिय व्यक्तित्व और माता की भावुकता का सम्मिश्रित प्रभाव उनके बाल्य मन पर पड़ा। घर का वातावरण आध्यात्मिक होने के कारण इन्होंने बचपन में ही पौराणिक ग्रंथ रामायण, गीता पढ़ डाले थे। बाल्य काल से ही साहित्य लेखन के प्रति इनका रुझान था। प्रेमचंद, यशपाल, रवीन्द्रनाथ टैगोर, शरतचंद्र के साहित्य ने इन्हें प्रभावित किया था। नौ वर्ष की आयु में इनकी लिखी कविता *'बाल विनोद'* नामक पत्रिका में छपी। जिस पर इन्हें पच्चीस रूपये पारिश्रमिक भी मिला था। उन्होने स्वयं आत्मकथा में लिखा है, *"सातवीं कक्षा तक पहुँचते मेरे अंदर की सहमी पनपी भावनाएँ कागज पर आकार लेनी लगीं।"* [47]

चैदह वर्ष की आयु में इनका विवाह श्री सत्यदेव अग्निहोत्री आई॰पी॰एस॰ से सम्पन्न हुआ था। इनका वैवाहिक जीवन असफल रहा। शारीरिक और मानसिक रूप से ये पीड़ित रहीं। पारिवारिक शोषण, घरेलू हिंसा, आत्महंता आदि परिस्थितियों ने कृष्णा जी के मनोबल को और भी दृढ़ बना दिया। इन्होंने अपनी पूरी ऊर्जा उच्च शिक्षा प्राप्त करने में लगा दी। इन्होंने अंग्रेजी साहित्य एवं हिन्दी साहित्य से एम॰ए॰ एवं पीएच॰डी॰ की डिग्री प्राप्त की। भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यक्ति के कारण उनकी रचनाओं में तीखापन आ गया था। नारी

के अभिशप्त जीवन और उसकी अस्मिता की तलाश, संघर्ष और विद्रोह, उसकी अंतहीन लड़ाई और कभी भी हार न मानने वाली अदम्य जिजीविषा उनके साहित्य में रूपायित होने

लगे। कथ्य–वैविध्य की दृष्टि से इनकी रचनाएँ बहुआयामी हैं।

➢ कृतित्व

कृष्णा अग्निहोत्री जी बहुमुखी प्रतिभा–सम्पन्न हैं। इन्होंने कहानी, उपन्यास एवं बाल साहित्य सभी विधाओ में लेखनी चलायी है।

- **उपन्यास**

1. बात एक औरत की (1975)
2. टपरेवाले (1976)
3. कुमारिकाएँ (1978)
4. टेसू की कहानियाँ (1980)
5. बौनी परछाइयाँ (1983)
6. अभिषेक (1984)
7. निष्कृति (1987)
8. नीलोफर (1988)
9. मैं अपराधी हूँ (2001)
10. बित्ता भर की छोकरी
11. जोधा मीरा
12. नानी अम्मा मान जाओ

- **कहानी संग्रह**

1. टीन के घेरे – 1970
2. गलियारे – 1974

3. याही बनारसी रंग बा – 1983

4. जिंदा आदमी – 1986

5. जै सियाराम – 1993

6. सर्पदंश – 1997

7. अपने–अपने कुरुक्षेत्र – 2001

8. जीना मरना – 2010

9. विरासत

10. पारस

11. नपुंसक

12. दूसरी औरत

13. मेरी प्रिय कहानियाँ

14. पंछी पिंजरे के

- **बाल साहित्य**

1. बुद्धिमान सोनू

2. नीली आँखों वाली गुड़िया

3. सतरंगी बौने

- **रिपोर्ताज**

1. भीगे मन रीते तन

- **आत्मकथा**

1. लगता नहीं है दिल मेरा

- ## आलोचना

1. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कहानी

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

रामकिशन चौरासिया ने *'मधुमति'* पत्रिका में अपने लेख में राजेंद्र प्रसाद शुक्ल जी का वक्तव्य दिया हैं – *"कृष्णा जी के साहित्य को विशिष्ट मानते हुए पुरस्कार से ऊपर मानते हैं। वे कहते हैं कि ये जो जीवन की कथा है उसको मैं एक पहाड़ों से इन झाड़ियों से वनों से निर्झरिणी–सी बहती हुई शांत सरल दिखती है। सपाट धरती के नीचे जो सरल, तरल और गरल लावा धधकता है उसकी उष्मा व ताप असहय होता है तो ज्वालामुखी के रूप में परिणत होता है तो उसमें केवल अग्नि शिखाएँ ही नहीं होती। उसमें बहुमूल्य खनिज भी होते हैं। ताप विध्वंस करता है समाज में व्याप्त पाखंड का स्वार्थों और विसंगतियों का। जीवन के उस बाहरी आडंबर का नाश करता है जो उसकी नग्न कुरूपता को ढके हुए है। कृष्णा जी की उस कहानी नारी की कहानी है, जो केवल नारी नहीं है, बल्कि विचारों में, कार्यों में आकांक्षाओं में पुरुषों के भी समकक्ष है। उनको एक ऐसे क्रांतिकारी साहित्यिक दधीचि ने तो अपना सारा जीवन दान दे दिया। के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। हम चाहेगे कि उनका समुचित सम्मान हो। समाज में उनको और स्थान मिले। रूढ़ियों और दकियानूसी विचारों से मुक्ति मिले।"* [48]

कृष्णा जी ने अपने श्रेष्ठ लेखन के लिए कई प्रमुख पुरस्कार प्राप्त किए हैं। उन्हें *'रत्नभारती पुरस्कार'*, *'अक्षरा सम्मान'*, *'वाग्मणि सम्मान'* के साथ–साथ विभिन्न राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है। उन्हें *'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति भोपाल'*, मध्य प्रदेश, लेखक संघ भोपाल, *'अक्षर आदित्य सम्मान'*, *'आंबेडकर सम्मान'*, *'नागरिक सम्मान आजमेर'* से, गांधी साहित्य सम्मेलन भोपाल से, *'रत्नभारती पुरस्कार'*,

'पन्नालाल पुरस्कार' आदि विभिन्न सम्मान प्राप्त हुए हैं।'

1.15 मालती जोशी

➢ व्यक्तित्व

मालती जोशी एक प्रसिद्ध कथा लेखिका है। इन्होंने अपने संवेदनशील दृष्टिकोण से जीवन और संसार के अनुभवों को प्रस्तुत करने में सफलता प्राप्त की है। मालती जी का जन्म 4 जून 1934 को महाराष्ट्र के औरंगाबाद में एक महाराष्ट्रीयन परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम श्री कृष्ण राव और माता का नाम श्रीमती सरला था। मालती जोशी अपने पिता के बारे में कहती है– *"गांधीवादी मतलब पुराने जमाने के गांधीवादी आज कल के गांधीवादी नही कि जैसे कहना चाहिए। सिंपल लिव्हिंग हाय थिकिंग वाली मनोवृत्ति वाले थे। वे बहुत ही ईमानदार किस्म के जज थे।"*[49] अपने माता के बारे में कहती है– *"माँ संगीत की जानकार थीं। वह बहुत अच्छा गाती थी, मुझे उन्हीं से यह संगीत संस्कार मिलें।"* [50]

मालती जोशी का शिक्षा में योगदान महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने लुंगावली, अम्बाह, सॉवेर जैसे छोटे कस्बों में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने आठवीं कक्षा की पढ़ाई मध्यप्रदेश के औद्योगिक शहर इंदौर में मालव कन्या विद्यालय से की और मॅट्रीक की परीक्षा में सफलतापूर्वक पास किया। इंटर की परीक्षा में भी उन्होंने प्राइवेट रूप से पास कर लिया। सभी शिक्षा उन्हें हिंदी माध्यम में मिली। उन्होंने 1956 में होलकर कॉलेज से एम.ए. (हिंदी) द्वितीय श्रेणी में पास किया। एम.ए. के बाद पी. एच. डी करने का मन था पर न कर सकी।[51] उन्होंने अगरा विश्वविद्यालय से स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की।

इनके पति श्री सोमनाथ जोशी भोपाल में इंजीनियर के पद पर कार्यरत थे। इनके दो बेटे हैं। मालती जी एक सफल गृहिणी होने के साथ–साथ एक प्रसिद्ध लेखिका भी हैं।

मालती जी अपने सुखमय वैवाहिक जीवन के बारे में कहती है– *"उन्हें, जिनके साथ रहकर मैं सुखी दाम्पत्य की परिभाषा जान सकी हूँ।"* [52]

➢ कृतित्व

मालती जोशी जीवन की छोटी–छोटी अनुभूतियों को, स्मरणीय क्षणों को अपनी कहानियों में पिरोती हैं। ये अनुभूतियाँ कभी इनकी अपनी होती हैं, कभी इनके अपनों की।

इनकी प्रमुख रचनाएं हैं–

- **उपन्यास**

1. समर्पण का सुख
2. राग–विराग
3. ज्वालामुखी के गर्भ में
4. सहचारिणी
5. चांद अमावस का
6. पाषाण युग
7. निष्कासन
8. गोपनीय
9. ऋणानुबंध
10. पटाक्षेप
11. शोभा यात्रा
12. विस्फोट
13. सहमे हुए प्रश्न
14. परिणय
15. विश्वासगाथा

- **कहानी संग्रह**

1. एक घर हो सपनो का
2. अन्तिम संक्षेप
3. एक सार्थक दिन

4. बोल री कठपुतली
5. महकते रिश्ते
6. बाबुल का घर
7. शापित शैशव
8. मध्यांतर
9. मोरी रंग दी चुनरिया
10. पिया पीर ना जानी
11. औरत एक रात है
12. रहिमन धागा प्रेम का
13. वो तेरा घर ये मेरा घर
14. अपने आँगन की छाव
15. आनंदी
16. दर्द का रिश्ता
17. पूजा के फूल

- **बाल साहित्य**

1. दादी की घड़ी
2. जीने की राह
3. परीक्षा और पुरस्कार
4. स्नेह के स्वर
5. छोटा सा मन बड़ा शा दुःख
6. सच्चा सृंगार

- **<u>मराठी कथा संग्रह</u>**

1. टूटने से जुड़ने तक
2. एक और देवदास
3. पाषाण युग
4. कुहासे

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

मालती जी को हिन्दी व मराठी की विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत किया जा चुका है। 1983 में भारतीय भाषा परिषद कोलकाता द्वारा सम्मानित किया गया। 1984 में महाराष्ट्र शासन द्वारा पुरस्कृत किया गया। 1985 में मध्य प्रदेश के राज्यपाल द्वारा *'अहिन्दी भाषी'* लेखिका के रूप में पुरस्कारदिया गया। 1998 में मध्य प्रदेश का *'भवभूति पुरस्कार'* मिला। 2006 में साहित्य में अवदान के लिए मध्य प्रदेश का *'शिखर सम्मान'* प्राप्त हुआ।

2011 में *'ओजस्विना सम्मान'* एवं *'दुष्यंत कुमार साधना सम्मान'* प्राप्त हुआ। 2017 मध्य प्रदेश द्वारा *'मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय सम्मान'* और *'वनमाली स्मृति सम्मान'* दिया गया। 2018 में *'पद्मश्री'* सम्मान मिला। 2018 में ही महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय द्वारा *'हिन्दी सेवी सम्मान'* प्रदान किया। हिन्दी कहानी परम्परा में मालती

जोशी का अविस्मरणीय योगदान रहा है।

1.16 सूर्यबाला

➢ व्यक्तित्व

कथा साहित्य में सूर्यबाला जी का प्रमुख स्थान है। *"आधुनिक हिंदी जगत की प्रतिष्ठित कथा लेखिका सूर्यबाला का जन्म 25 अक्टूबर 1944 को वाराणसी में हुआ।"* [53] इनका पूरा नाम सूर्यबाला वीरप्रताप सिंह श्रीवास्तव है। इनकी माता का नाम श्रीमती केशर कुमारी तथा पिता का नाम श्री वीर प्रताप सिंह था। इनके माता–पिता दोनों हिन्दी, अंग्रेजी तथा उर्दू भाषा के ज्ञाता थे। इनके पिता जिला विद्यालय में निरीक्षक पद पर कार्यरत थे।

परिवार और माता–पिता के आदर्शों की गहरी छाप सूर्यबाला जी पर दिखाई देती है। इनके पिता ही नहीं बल्कि इनकी माता को भी साहित्य के प्रति विशेष रुचि थी। अपने जन्म स्थान वाराणसी की गलियों, मोहल्लों का इन्होंने अपनी कहानियों में वर्णन किया है जो इनके स्थान विशेष के लगाव को दर्शाता है। इन्होंने अपनी रचना–प्रक्रिया में आंतरिक स्रोतों के संबंध में माना हैं– *"कि बचपन में बनारस में उसके घर के पास से गुजरती हुई अर्थियों के कारण उनके मन–मस्तिष्क पर अधिक गहरा प्रभाव पड़ा था जिसके कारण वह घंटों चुपचाप बैठी अपने आपसे ही पूछा करती थी; कि क्या होता है मरना, कैसे मर जाया जाता है? क्या एक दिन अम्मा, बाबूजी, बड़े भैया, सभी मर जायेंगे? इसी तरह मैं भी एक दिन हम सब में से कोई होगा ही नहीं और जैसे मेरा वहीं सहमा हुआ पहला प्रश्न मुखौटा बदलकर मेरी कलम की नोक पर आकर टिक गया हो।"* [54]

सूर्यबाला जी की तीन बहनें वीरबाला, केसरबाला एवं चंद्रबाला है। इनके भाई का नाम विष्णु प्रताप श्रीवास्तव है। सूर्यबाला जी और उनके भाई बहनों में माता–पिता के

संस्कार, सकारात्मक विचारशीलता स्पष्ट दिखाई देते हैं। सूर्यबाला जी की तरफ उनकी बहनों ने भी एम०ए०, पीएच०डी० किया और सभी भाई बहन शिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

सूर्यबाला जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विद्वान एवं समीक्षक डॉ० बच्चन सिंह के निर्देशन में अपना शोध कार्य पूर्ण किया। सूर्यबाला जी ने स्वंय अपने आत्मकथा में स्पष्ट व्यक्त किया है कि – *"एम.ए प्राइवेट किया। किसी तरह द्वितीय श्रेणी की उम्मीद थी, लेकिन जब उनसठ प्रतिशत मिले तो मुझसे ज्यादा माँ को लोगों ने पीएच.डी के लिए उकसाया। हमारे संदर्भ में हमसे कहीं- कहीं ज्यादा पागलपने की हद तक महत्त्वकांक्षी माँ थी। थोड़ी सी पहचान के बल पर विश्वविद्यालय के प्रवक्ता डॉक्टर बच्चन सिंह ने भी प्रोत्साहित किया, स्वंय अपने निर्देशन में भी लेने के लिए आश्वस्त कर दिया, तो हिम्मत बढ़ी।"* [55]

सूर्यबाला जी का विवाह उच्च शिक्षित श्री आर०के० लाल जी से हुआ। वे मर्चेंट नेवी में चीफ इंजीनियर थे और बाद में उन्होंने अनेक उच्चपदों पर कार्य किया। सूर्यबाला जी अपने पारिवारिक जीवन से बेहद संतुष्ट हैं। वैवाहिक जीवन और पारिवारिक जिम्मेदारियों को सर्वोपरि मान उन्होंने नौकरी छोड़ दी। सूर्यबाला जी के दो बेटे और एक बेटी हैं।

सूर्यबाला जी को साहित्यिक पृष्ठभूमि से ओतप्रोत परिवार उपहार स्वरूप मिला। इन्होंने छठी कक्षा से ही साहित्य लिखने की शुरूआत की। इनकी बड़ी बहन वीरबाला ने

इन्हें साहित्य के लिए प्रेरित किया जो खुद भी प्रतिभाशाली लेखिका है।

➢ कृतित्व

व्यंग्य एवं कथा साहित्य में सूर्यबाला जी की विशिष्ट भूमिका है। इनकी रचनाएं हैं–

- <u>**उपन्यास**</u>

1. मेरे संधिपत्र
2. सुबह के इंतजार तक
3. अग्निपंख
4. यामिनी कथा
5. दीक्षांत

- <u>**कहानी**</u>

1. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम
2. दिशाहीन
3. थालीभर चाँद
4. मुंडेर पर
5. यामिनी कथा
6. गृह प्रवेश
7. कात्यायनी संवाद
8. साझांवती
9. इक्कीस कहानियाँ
10. पाँच लम्बी कहानियाँ

11. मानुष गंध

- **<u>हास्य व्यंग्य</u>**

1. अजगर करे न चाकरी
2. धृतराष्ट्र टाइम्स
3. झगड़ा निपटाकर दफ्तर
4. देश सेवा के अखाड़े में
5. भगवान ने कहा था

➢ सम्मान तथा पुरस्कार

सूर्यबाला जी को उनके श्रेष्ठ लेखन पर अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए। वर्ष 1996 में *'प्रियदर्शनी पुरस्कार'* प्राप्त होने के साथ, सूर्यबाला जी की लेखनी को मान–सम्मान मिला। इस पुरस्कार ने उनकी मेहनत और उत्कृष्टता को साबित किया। *'काव्यायनी संवाद'* कहानी के लिए उन्हें *'घनश्याम सराफ पुरस्कार'* से भी सम्मानित किया गया।

'नागरी प्रचारणी सभा' काशी और *'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा पुरस्कार'* से सूर्यबाला जी को सम्मानित किया गया। मुंबई विश्वविद्यालय आरोही संस्था द्वारा भी उन्हें सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनकी श्रेष्ठ लेखनी और साहित्यिक योगदान की प्रशंसा का प्रतीक है।

उन्हें वर्ष 2008 में *'गोइनका पुरस्कार'* से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही उन्हें *'हरिशंकर परसाई स्मृति सम्मान'* और *'वाग्मणि सम्मान'* भी प्राप्त हुए। इन सम्मानों ने उनकी साहित्यिक महत्वपूर्णता और उत्कृष्टता को और भी उजागर किया है।

सूर्यबाला जी का योगदान हिन्दी साहित्य के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी

लेखनी से सच्चाई, विचारधारा, और साहित्यिक उत्कृष्टता की महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए उन्हें समस्त समाज की ओर से सलामी और सम्मान प्राप्त है। उनकी रचनाओं में साहित्य की अमूल्य धरोहर है, जो हमें जीवन की सही दिशा में ले जाती हैं। इस प्रकार, सूर्यबाला जी ने न केवल हिन्दी साहित्य को बल्कि सम्पूर्ण साहित्य जगत को भी अपनी श्रेष्ठ रचनाओं के माध्यम से प्रेरित किया है।

1.17 निष्कर्ष

इन सभी महिला लेखिकाओं ने हिंदी साहित्य को अपने उत्कृष्ट विषय–चयन एवं श्रेष्ठ कहानियों के कारण शीर्ष पर पहुँचाया हैं। इनकी लेखनी समाज को जागरूक करते हुए, साहित्य के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में मान्यता प्राप्त कर रही हैं। रजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय के अनुसार *"समकालीन हिंदी कथा लेखन के परिदृश्य पर ध्यान केंद्रित करें तो स्त्री कथाकारों की दुनिया एक खास अर्थ में विशिष्ट रूप से चेतना–सम्पन्न दुनिया है ..... एक ओर तो नारी लेखन, नारी की सामाजिक स्थिति में बदलाव को प्रस्तुत करता है, उसके सम्बन्ध में एक निश्चित और सुव्यवस्थित तर्क पद्धति का सहारा लेकर वातावरण निर्मित करता है, दूसरी ओर नए मान–मूल्यों की प्रतिष्ठा के क्रम में कलात्मकता की सुरक्षा का दायित्व भी उस पर होता है।"* [56]

कहानियों में समय के अनुसार परिवर्तन और मनोवैज्ञानिकता की ओर अग्रसरता दिखाने वाली महिला लेखिकाओं की भूमिका ने हिन्दी कथा साहित्य को एक नयी दिशा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में समाज की समस्याओं, विचारों, और आत्मा की गहराईयों को छूने का प्रयास किया है। समय के साथ परिवर्तन यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है और यह स्वाभाविकता के साथ ही महत्वपूर्ण बदलाव लाती है। महिला लेखिकाएँ इस प्रक्रिया में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, क्योंकि उन्हें समाज में स्थानांतरित होने का अनुभव होता है। इन लेखिकाओं की

कहानियों में हमें समय के साथ समाज में होने वाले बदलावों का खुलासा मिलता है।

हमारे समाज को संकुचित सोच ने घेरा हुआ है, लेकिन महिला लेखिकाओं ने समाज की संकुचित सोच को त्याग कर आगे बढ़ने को महत्व दिया है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज को एक नया दर्शन दिया है, जहां नारी की मानसिकता और उसकी सोच का महत्व प्राप्त हुआ है। कहानियों के केंद्र में समस्याओं को रखने वाली महिला लेखिकाएँ समाज में घुट रही समस्याओं को उजागर करती हैं। इनकी कहानियों में हमें नारी की भूमिका, स्थिति, और मानसिकता का गहरा अध्ययन मिलता है। ये नारी की विविधता, उसकी स्थिति के अनुसार समस्याओं के समाधान पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

महिला लेखिकाओं की कहानियों में नारी की सोच और समाज में होने वाले परिवर्तनों का खुलासा होता है। उनकी कहानियों में नारी के जीवन में होने वाले बदलाव का विवरण दिया गया है, जो उसके स्थान में और समाज में बदलाव लाता है। इसके अलावा, वे समाज में होने वाले अन्य परिवर्तनों को भी दर्शाती हैं, जो नारी के स्वाभिमान और आत्म–सम्मान को मजबूत बनाते हैं। महिला लेखिकाओं की कहानियों में हमें नारी की स्थिति, समस्याएं, और उसके स्वतंत्रता के विषय में एक नया दृष्टिकोण मिलता है।

डॉ० रेणु गुप्ता का मानना है– *"भारत की स्त्री अब दयनीय नहीं है। आज की पत्नी मोम की गुड़िया नहीं। बेटी पिता की इच्छा पर बलि होने वाली नहीं। प्रेमिका अपनी इच्छा से प्रेम करने का साहस करती है। इस प्रकार पत्नी, बेटी, बहन, प्रेमिका सभी रूपों में उसमें हमें एक नयापन मिलता है। यही नहीं, कई नये रूप भी उजागर हुए हैं; जैसे सहायिका, सहपाठी, कालगर्ल आदि। नारी के इन सभी रूपों को स्वातंत्र्योत्तर लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में चित्रित किया है।"* [57]

भारतीय हिन्दी साहित्य में कहानी विधा का विशिष्ट स्थान है जिसमें महिला

लेखिकाएँ नई दिशाएं स्थापित कर रही हैं। इन महिला लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में वैयक्तिकता, पारिवारिकता, सामाजिकता, आर्थिकता, और राजनैतिकता जैसे सभी पहलुओं पर विचार किया है। उन्होंने समाज में उत्पन्न विसंगतियों का परिमार्जन किया है और नई विचारधारा की स्थापना की है।

21वीं सदी की महिला लेखिकाएँ समाज के विविध पहलुओं पर अपनी नजर डालती हैं। वे वैयक्तिक स्तर पर अपने किरदारों की भावनाओं और अनुभवों को उजागर करती हैं जो समाज की विभिन्न चुनौतियों और संकटों को दर्शाते हैं। पारिवारिकता के संदर्भ में, उनकी कहानियों में परिवार के अंदर के तनावों, संघर्षों, और प्यार–विश्वास की गहराई को दिखाया गया है। यह भारतीय समाज में विभिन्न वर्गों के बारे में हमें जागरूक करता है।

सामाजिकता के पहलू पर ध्यान केंद्रित करते हुए, ये लेखिकाएँ समाज में चल रहे विवादों, सामाजिक बदलाव, और भूमिका निर्धारित करने की कठिनाइयों पर भी अपनी राय रखती हैं। उन्होंने समाज के सभी वर्गों के लोगों के अधिकारों, स्वतंत्रता, और समानता की महत्वपूर्णता को स्पष्ट किया है।

आर्थिक स्तर पर, ये लेखिकाएँ समाज में आर्थिक संकटों, बेरोजगारी, और विकलांगता के मुद्दों को भी उजागर करती हैं। उन्होंने ऐसे चुनौतीओं को दर्शाया है जो विभिन्न समृद्ध स्तरों में रहने वाले लोगों को प्रभावित करती हैं।

राजनैतिक स्तर पर, ये लेखिकाएँ समाज में राजनीतिक संघर्षों, नेताओं की चालाकी, और सत्ता के मुद्दों को भी उजागर करती हैं। वे समाज के नागरिकों की सांगठनिक गतिविधियों, न्याय प्रणाली, और संविधानिक विकल्पों को भी समझाने का प्रयास करती हैं।

इस प्रकार, महिला लेखिकाओं की कहानियों में हमें नारी की मानसिकता, सोच,

और समाज में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन मिलता है। उनकी रचनाएँ हमें नारी के स्थान, स्त्री अधिकार, और समाज में बदलाव के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। इसके अलावा, वे हमें एक नया दृष्टिकोण देती हैं, जो नारी के स्वाभिमान और स्थिति में बदलाव लाती हैं। इस तरह से, महिला लेखिकाओं की कहानियाँ हमें समाज में नारी के स्थान के प्रति एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती हैं।

अध्याय–2

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों का परिचय

2.1 प्रस्तावना

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में महिलाओं की स्थिति और समाज में उनके प्रति दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन आया है। यह एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक परिवर्तन है, जिसने महिलाओं को नई दिशा दी है और उन्हें समाज में अपनी अद्भुत क्षमताओं को प्रकट करने का मौका दिया है। बीसवीं सदी के अंत में, लोगों की दृष्टि में महिलाओं के प्रति एक नया सकारात्मक दृष्टिकोण आया है। इसका परिणाम यह हुआ कि लोग नारियों को 'इक्कीसवीं सदी की औरत कहकर संबोधित करने लगे।

21वीं सदी में कहानी लेखन में महिलाओं ने निश्चित रूप से एक नया आयाम स्थापित किया है। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज में महिलाओं के अधिकार, स्वतंत्रता, और समानता के बारे में जागरूकता फैलाई है। उन्होंने अपने काम के माध्यम से नारी सशक्तिकरण को बढावा दिया और समाज में आमूलचूल परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। महिलाओं के द्वारा रची गई कहानियों ने समाज को उनकी समस्याओं, अनुभवों, और दृष्टिकोण के माध्यम से समझाने का प्रयास किया है। इन्होंने न केवल महिलाओं की विचारधारा को बढ़ावा दिया है, बल्कि पुरुषों को भी समाज में समानता के प्रति सचेत किया है। इस प्रकार, महिलाओं ने न केवल अपना इतिहास रचा है, बल्कि वे समाज में

उचित परिवर्तन लाने में भी अहम भूमिका निभाई हैं।

इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में नारी–लेखन के परिपेक्ष्य में, कहानियों ने एक नया दर्शन प्रस्तुत किया है, जो व्यापक, संवेदनशील, और मानवीय है। इस युग में, नारी रचनाकारों ने अपनी कल्पना को वास्तविकता में रूपांतरित करते हुए कथाओं को उम्मीद से भी अधिक जीवंत और सामाजिक बनाया है। उन्होंने अपने लेखों में समाज की भिन्न–भिन्न परिस्थितियों को स्थापित किया है, जो आधुनिक युग की चुनौतियों और विभिन्नताओं को सहेजते हैं। इन लेखिकाओं की रचनाओं में महिलाओं की स्थिति, स्वतंत्रता, और समानता की महत्वपूर्ण बातें स्पष्ट रूप से प्रकट होती हैं, जो समाज को सामाजिक, राजनीतिक, और मानवीय मुद्दों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं।

पुराने समय की कथाओं में स्त्री को दोयम दर्जे से देखा जाता था, जो बीसवीं सदी में समाज में परिवर्तन का सूत्र बना। प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी, सुभद्रा कुमारी चैहान, और महादेवी वर्मा ने भी समाजिक समस्याओं और स्त्री के अधिकारों पर अपने लेखन में जोर दिया। बीसवीं सदी के अंत में साहित्यिक चेतना में जो सुदृढ़िता आई, वह स्त्रियों के अधिकारों और समाज में उनकी भूमिका के प्रति जागरूकता फैलाने में मद्दगार रही। स्त्री–लेखन के क्षेत्र में कई नई लेखिकाएँ भी उभर कर सामने आई, जो अपने अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण साहित्यि के माध्यम से अपनी अलग पहचान बना रही हैं। स्त्री–लेखन के माध्यम से समाज में बदलाव और संवर्धन की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। आज के समय में भी स्त्री–लेखन एक महत्वपूर्ण साहित्यिक और सामाजिक आंदोलन का हिस्सा रहा है और समाज में स्त्रियों के अधिकारों और स्थिति को सुधारने का माध्यम बना हुआ है।

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा, मृदुला गर्ग, मेहरुनिस्सा परवेज, चंद्रकांता कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, सूर्यबाला, मैत्रेयी

पुष्पा, सुषमा, कमल कुमार, उर्मिला शिरीष, जया जादवानी, नीलम कुलश्रेष्ठ, कृष्णा अग्निहोत्री , सुधा अरोड़ा, नमिता सिंह, और अन्य कई लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से स्त्री विमर्श का बिगुल बजाया। इनके द्वारा लिखे गए कथानक, कहानियाँ और संग्रह नारीत्व, समाज, पारिवारिकता, और सम्बंधों के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं।

ममता कालिया की कहानियाँ नारी विमर्श के दृष्टिकोण से प्रामाणिक हैं। उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं "छुटकारा," "एक अदद औरत," "सीट नंबर छः," और "उसका यौवन." चित्रा मुद्गल की कहानी "ताशमहल" दो भागों में बँटी नारी की व्यवस्था को अंकित करती है। सुधा अरोड़ा और नमिता सिंह ने विभिन्न समस्याओं पर अपनी कहानियों के माध्यम से चर्चा की, जैसे कि 'बोलो भ्रष्टाचार की जय' और 'गिनी पिग्स'। इन कहानियों में समाज की त्रुटियों और अन्यायों पर आलोचना की गई और स्त्री के पात्रों को विशेष रूप से प्रकट किया गया। सुधा अरोड़ा की ही कहानी 'रहोगी तुम वही' पुरुष समाज में स्त्री को जिस दोयम दर्जे की नजर से देखा जाता है, वे उसी का पर्याय बन गयी थी। जबकि चंद्रकांता की कहानी "बच्चे कब मिलेंगे" बुढ़ापे के दर्द से टीसती नारी की व्यथा को दर्शाती है। इनमें से कई कहानियाँ नारी के अधिकार, समाजिक समस्याओं, पारिवारिक दबाव, और महिला सशक्तिकरण के विषय में हैं। ये कहानियाँ सामाजिक जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

21 वीं सदी के कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन को नई दिशा दी है। इस युग का प्रारंभिक दशक समाज में विभिन्न परिवर्तनों के आरंभ होने का समय था, इन लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में इन समाजिक और राजनीतिक तथ्यों को समाहित किया, जिससे हिंदी कहानी साहित्य को नई दिशा मिली। इस युग में समाज में हो रहे परिवर्तनों की झलक कहानियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इन कहानीकारों की कहानियों में आक्रोश के स्वर तेज होते हैं, जो समाज में हो रही विवादित मुद्दों को उजागर

करते हैं। इन्होंने अपनी कहानियों में विभिन्न पात्रों के माध्यम से समाज में हो रहे परिवर्तनो का वर्णन किया है। इन कहानियों में आधुनिक समाज की विभिन्न स्थितियों को अच्छे से समझाया गया है, जिनमें अधिकतर कहानीकार समाज के विभिन्न पक्षों को देखने और समझने के लिए विभिन्न पात्रों का उपयोग करते हैं।

ये कहानियाँ समाज में हो रही स्त्री–सम्बन्धी समस्याओं, राजनीतिक और सामाजिक कलह, सामाजिक न्याय, और जातिवाद के खिलाफ उठी आवाजों को उजागर करती हैं। इसके अलावा, इन कहानियों में समाज की विभिन्न विषमताओं का सम्मान भी किया गया है, जो साहित्य में एक नई दिशा का संकेत करता है। इन साहित्यकारों ने अपनी कहानियों में समाज की विषमताओं, संघर्षों और तनावों को विविधतापूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। इन कहानियों के माध्यम से समाज की जटिलताओं को समझने में मदद मिलती है और समाज को जागरूक करने का प्रयास किया जाता है। इन कहानियों में सामाजिक और राजनीतिक चुनौतियों का सम्मान किया गया है और उन्हें समझने के लिए एक नई दृष्टिकोण प्रदान किया गया है। ये कहानियाँ साहित्य में नए सोच और विचार की ओर एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

21 वीं सदी की कहानियाँ कहानी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखती हैं। ये पारम्परिक रूढ़ियों को तोड़ती नजर आती हैं। इस युग का परिवेश सामाजिक ताने–बाने में बदलाव के प्रारम्भ का दौर रहा है। समाज विसंगतियों, कलह और विषमता से भरा दिखायी देता है। साहित्यकारों में इस स्थिति को देखकर आक्रोश के स्वर तेज हुए हैं। इस सदी का प्रथम दशक मूलतः समाज में हो रहे परिंवर्तनों का आगाज था। इन्हीं सामाजिक बदलाओं के इर्द–गिर्द कहानीकारों ने अपनी कहानी को बुना है, जिससे हिन्दी कहानी साहित्य को एक नई दिशा मिली है।

इसी कड़ी में रमणीका गुप्ता, मैत्रेयी पुष्पा, मनीषा कुलश्रेष्ठ, सोनाली सिंह व जयश्री राय का नाम लिया जा सकता है। मैत्रेयी पुष्पा ने ग्रामीण स्त्रियों की अनकही बातों को

साहित्य के माध्यम से बहुत सशक्तता से पाठकों के समक्ष लेकर आयी। मनीषा कुलश्रेष्ठ व जयश्री राय अपनी कहानियों में एक मोहक वातावरण रचने में सिद्धहस्त हैं। सीता, द्रौपदी व अन्य पौराणिक स्त्री–चरित्रों की वेदना से भारतीय स्त्रियों का दिल चकनाचूर होता गया, यही कारण है कि जब उसके हाथ में कलम आयी तो इस तकलीफ व विद्रोह को एक आवाज मिल सकी। इसके साथ ही इस सदी की स्त्री–कलम ने पौराणिक आख्यानों में स्त्रियों की दशा की पड़ताल कर स्वयं अपने रास्ते गढे हैं।

यद्यपि पुरुष रचनाकारों ने भी अपनी रचनाओं में नारी–जीवन के गहनतम भावों को चित्रित करने का प्रयास किया है, तथापि हिन्दी महिला लेखकों ने पूरे समाज के साथ ही स्त्री–जीवन को बड़ी सजगता के साथ प्रस्तुत किया है। इन रचनाकारों ने शहरी मध्यवर्ग और उच्च वर्ग की मानसिकता को यथार्थ रूप से दिखाने का साहस अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है क्योंकि अधिकांश महिला साहित्यकार इसी क्षेत्र से संबधित भी रही हैं। मौजूदा व्यवस्था के प्रति स्त्री का दुख, आक्रोश और विद्रोह के स्वर इनकी कहानियों में सर्वत्र दृष्टिगोचर होते हैं। नारी का शोषण, उत्पीडन और विद्रोही मानसिकता का प्रतिपादन इन साहित्यकारों के साहित्य में दिखाई देता है। नारी जीवन की खूबियों और खामियों की बड़े ही सुन्दर ढंग से अभिव्यक्ति की गई है। नारी जीवन के हर पहलू की समकालीन जीवन–परिस्थितियों में विवेचना इस साहित्य में दिखाई देती है। इनकी रचनाओं में बदलते परिवेश के समसामयिक संदर्भों में परिवार, विवाह, तलाक, मातृत्व, काम, प्रेम, मीडिया, विज्ञापन, राजनैतिक चेतना, यौन उत्पीड़न, बलात्कार, अपराध, सांप्रदायिकता आदि सभी विषयों का बखूबी प्रयोग किया गया है।

लेखिकाओं ने सिर्फ नारी जीवन पर ही नहीं लिखा बल्कि जीवन के हर पहलू पर उनकी रचनाएँ अभूतपूर्व सफलता की ओर अग्रसर हैं। सामाजिक जीवन की रूढ़ियों और कुरीतियों से मुक्त हो वैयक्तिक अनुभूति को व्यापक फलक प्रदान किया है। उनकी रचनाओं

में एक नवीन दृष्टि और आस्था के दर्शन होते हैं जिसे बड़े ही सहज और स्वाभाविक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है।

बीसवीं सदी का उत्तरार्द्ध महिला कथा साहित्य के विस्फोट का काल है। इस दौर में कथाकारों ने पारम्परिक पृष्ठभूमि छोड़कर नित नवीन समसामयिक दृष्टि का परिचय दिया है। और इसके साथ ही बड़ी बेबाकी से समाज के अनछुए पहलुओं पर भी खूब लेखनी चलाई है। और इस प्रकार नवीन संदर्भों में समय का पुनर्सृजन किया। इन कहानियों में अनुभव और संवेदना का दायरा बढ़ा है। और नित नये प्रयोग किए जा रहे हैं।

2.2 चित्रा मुदगल

समकालीन भारतीय कहानीकारों में चित्रा मुद्गल का विशिष्ट स्थान है। उनकी रचनाएँ मानवीय सरोकारों और समस्याओं से गहराई से जुड़ी हैं। आज की उपभोक्तावादी संस्कृति में होने वाले नारी शोषण को तो जैसे आवाज देने का कार्य उनके साहित्य ने किया है। आज जबकि अधिकतर कथाकार उपन्यास लेखन में जुड़े हैं, चित्रा जी का कथाकार कहानियों के प्रति विशेष रूप से समर्पित है। उनकी कहानियाँ ऊपरी तौर से भले ही किसी वाद या राजनैतिक प्रतिबद्धता का शोर नहीं करती, पर दरअसल वे मानवीय सरोकारों से गहराई से जुड़ी हैं।

उनकी सृजनात्मकता की धार इन्सान के नारकीय जीवन की व्यथा को प्रकट करने के साथ–साथ पाठकों में भी संवेदना का संचार करती दिखायी देती है। महिला कथाकारों पर जिस तरह के सीमा–संकेत किए जाते हैं, चित्राजी उन सभी सीमाओं का अतिक्रमण सहज रूप से इसलिए कर सकी हैं, कि वे जिस कुशलता से घर, परिवार और संबन्धों को कथात्मक सौन्दर्य में बाँधती हैं, उसी कुशलता से घर के बाहर निकलकर एक्जीक्यूटिव क्लास, विज्ञापन की चकाचैंध भरी दुनिया दफ्तरों और फ्रीलांसरों की जिन्दगी तथा साथ–

साथ निम्न वर्ग की उस दबी–पिसी जिंदगी के आर्थिक दबावों और तनावों को भी रेखांकित करने में सफल हुई हैं, जो अपने आप में स्थितियों में जीने को मजबूर है।

अब तक उनके कई कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं जिनमें भूख, लपटें,अपनी वापसी, ग्यारह लम्बी कहानियाँ, जिनावर, जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं, केंचुल, मेरी प्रिय कहानियाँ आदि प्रमुख हैं।

- **भूख**

'भूख' संग्रह की अधिकतर कहानियों के पात्र भावुकता की तर्कहीन नदी में बहकर आर्थिक दबावों मे यथार्थ को स्वीकार करते हुए ही अधिक प्रभावपूर्ण बनते हैं। आर्थिक दबावों का सीधा प्रभाव आज जिस तेजी से हमारे समाज पर पड़ रहा है, उसे वैविध्यपूर्ण कथ्य और शिल्प के साथ–साथ भाषा के स्तर पर प्रस्तुत करने में चित्रा मुद्गल की सजगता उल्लेखनीय है।

'भूख' कहानी गरीबी का अत्यन्त मार्मिक यथार्थ वर्णन प्रस्तुत करती है। भूख कहानी में महानगर की झोपडी बस्ती में रहने वाली लक्ष्मा अपने तीन बच्चों के साथ निर्धनता में जीवन यापन करने के लिए संघर्ष करते हुए हैरान होती दिखाई देती है। लक्ष्मा का पति एक मिस्त्री था, जो एक पच्चीस माले की इमारत में काम करते वक्त फिसलकर मृत्यु को प्राप्त हो गया था। जिसके यहाँ वह कार्य करता था उसने न तो लक्ष्मा को अधिक मुआवजा दिया और ना ही काम पर रखा, यह कहकर कि वह पेट से है, बैठ कर मजदूरी लेगी, क्योंकि उस समय लक्ष्मा सात माह का गर्भ स्वयं में समेटी थी।

उसकी झोपडी के नजदीक उसकी मित्र सावित्री रहती थी जिसके साथ वह अपना दुखड़ा रो लेती थी। लक्ष्मा सावित्री को अक्का कहती थी। अपनी बेबसी को अक्सर उसके समक्ष रखकर, रोकर काम दिलवाने के लिए हाथ जोड़ती सावित्री भी उसे सहारा देकर सब

ठीक हो जाएगा और उसकी सहायता के लिए तत्पर रहती थी।

“छोटू फिर कुनमुनाया। पर अबकी थपकियाने के बावजूद चौंककर रोने लगा। उसने गोद में लेकर स्तन उसके मुँह में दे दिया। कुछ क्षण चुकरने के बाद बच्चा स्तन छोड़ बिरझाया सा चीखने लगा– "क्या होना आताच नई। " उसने असहाय दृष्टि सावित्री पर डाली।

"कांजी दो। "

"वोईच देती पन. "

"मैं भेजती एक वाटी तांदुला " सावित्री उसका आशय समझ उठ खड़ी हुई..... ” [58]

कहीं काम न मिलने पर हताश लक्ष्मा को देख सावित्री लक्ष्मा के छोटे बेटे छोटू को एक महिला को रोज के लिए उधार पर देने को कहती है कि जिससे उसको दो पैसे भी मिल जायें और छोटू को भी भूख से भी न मरना पड़े।

गरीबी व मजबूरी के होते न चाहते हुए भी लक्ष्मा अपने छोटू को उस भीख माँगने वाली महिला को यह सोचकर दे देती है जिससे उसका छोटू अच्छे से पल जाय तथा उसके दोनों बच्चों के लिए भी भोजन का प्रबन्ध हो जाय।

“जरा ठंडे दिमाग से सोच, लक्ष्मा ! भीख तो वह माँगेगी, छोटू से थोड़े ही मँगवाएगी। बच्चा तो सिर्फ उसकी गोदी में रहेगा। "

"इसमें कोई गलत नईं " कलाबाई ने उसका संकोच तोड़ना चाहा। ” [59]

वह महिला रोज सुबह छोटू को ले जाती थी व शाम को लक्ष्मा को वापस दे जाती। यह सिलसिला चलता रहा एकदिन छोटू के शरारत करने पर जब लक्ष्मा ने हमेशा की तरह उसे डाँटा और मारा तो छोटू बेहोश हो निश्चेत सा हो गया। वह सावित्री के साथ उसे डॉक्टर

के पास ले गयी तो डॉक्टर ने बताया कि भूख के कारण छोटू की सारी आँते सूख गयी हैं।

लक्ष्मा के सारे स्वप्न धराशायी हो गये कि उसका छोटू रंग–बिरंगी दूध की बोतल में दूध पीता है, बिस्किट खाता है, भोजन करता है। अपनी निर्धनता, बेबसी, असहायता पर वह बहुत लाचार होकर बिखर जाती है।

प्रस्तुत कहानी में चित्रा मुद्गल ने गरीबी की भूख के कष्ट व जीवन संघर्षों का अत्यन्त हृदय विदारक यथार्थ का विवेचन किया है।

- **गर्दी**

यह कहानी एक संघर्षपूर्ण दौर को प्रदर्शित करती है, जो पुराने और समकालीन मूल्यों के बीच तनाव को दिखाती है। नायक, जो अपने मित्र के निधन के बाद उसकी पत्नी और बच्चों के साथ जीवन यापन करने का साहस दिखाता है। उसकी सहानुभूति और करुणा की भावना ने उसे समाज में उत्तम मानवीय गुणों का प्रतीक बना दिया है।

माँ द्वारा अपनी बीमारी का झूठा तार देकर उसे गांव बुलाया जाता है और उससे माँ जबरदस्ती अपने सिर पर हाथ रखकर कसम खाने को कहती है– *"मेरे सिर पर हाथ रखकर कसम खा कि तू अब लौटकर उस रांड के पास नहीं जायेगा, अलग कमरा लेकर रहेगा ! अगले महीने मैं बंबई आ रही हूँ.. .."* [60] माँ की तरफ से दर्ज किये गए आरोपों के बावजूद, नायक ने आत्म–समर्पण का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। उसके साहस ने न केवल उसे अपने मित्र की पत्नी के प्रति जिम्मेदारी सहने में मदद की, बल्कि उसे एक उच्च स्तरीय मौलिकताओं और नैतिकताओं के साथ समृद्ध जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। नायक की सहानुभूति और साहस ने उसे उच्च स्तरीय नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी की ओर ले

जाने में मदद की है, जिससे समाज में समरसता और समानता की भावना विकसित हो सके।

• लपटें

'लपटें' कहानी सांप्रदायिक दंगों और समाज पर उसके प्रभावों का मार्मिक वर्णन करती है। जिसमें कई बार पूरे के पूरे परिवार ही नष्ट हो जाते हैं। मुंबई के अंधेरी इलाके में रहने वाले पति–पत्नी और उनकी जुड़वा लडकियाँ और तीसरी कक्षा में पढने वाला एक सामान्य विद्यार्थी मनुवा या राजकिशोर यादव इस कहानी के मुख्य पात्र हैं। वे दहशत के माहौल में दंगाइयों और सांप्रदायिक नेताओं से समझौता करके जी रहे हैं। इस कहानी में लोक–सेवा पार्टी, हिन्दुत्व का समर्थन करती है और हिंसा को आश्रय देती है और केन्द्र की नीति को राज्य में लागू करना चाहती है।

वहीं लोक–सेवा पार्टी वाले सभी घरों से पार्टी के लिए चन्दा एकत्र करते हैं, परन्तु हिन्दी भाषी पति–पत्नी को छोड़ देते हैं। इस कहानी में नेता कहते है–

"अपनी ही धरती पर हम अन्य प्रांतवासियों से शासित, शोषित हो रहे क्यों? बाहरवाले हमारे सोने के अंडे जनने वाली मुर्गी सदृश्य महानगर में बाढ़ के पानी से फैल गए हैं, और पूरे नगर में सडांध फैला रहे हैं। बरसो–बरस पहले रोजी रोटी की तलाश में आए थे ये 'बाहर के लोग', आज हमारे घर में करोड़पति व्यवसायी, बड़े–बड़े अफसर, सिनेमा सुपर स्टार, दुकानदार, ठेकेदार बने हुए बैठे हैं और........." [61]

इससे वे दोनो चिंतित हो जाते हैं। इस पर सहमे भाव से पत्नी अपने पति को चन्दा देने का आग्रह करती है। परन्तु उसका पति इस पार्टी के दोहरे चरित्र को अच्छे से समझता है, और इसकी हकीकत को सबके सामने लाना चाहता है। लोक–सेवा पार्टी ने हिन्दू–मुस्लिम दंगों की आड़ में कई बिहारी और दूसरे राज्यों के लोगों को लूटा है। कहानी भाषायी और जातीय संघर्ष को सामने लाती है और लोक–सेवा की पोल खोलती है। परन्तु पत्नी चाहती

है कि यदि यहाँ सुखपूर्वक रहना है तो हमे चन्दा दे देना चाहिए। जो रूपये उन्होंने अपने बच्चे के लिए बैंक में डालने के लिए रखे थे, वह उन्हीं पैसों को पार्टी के चन्दे में देने के लिए कहती है। उन्हें चिंता है अपने बेटे मनुवा यानि राजकिशोर की, जिसे पूर्व में इन लोगों ने आग की लपटों मे झोंका था। वे पार्टी वालो को चन्दा देने–हेतु घर बुलाने जाते हैं। सामान्य आदमी विवशता, पीडा और अपमान को सहकर भी अपने परिवार को बचाने के लिए अपने सिद्धान्तों से भी समझौता कर लेता है। और इस प्रकार वह परिवार लोक–सेवा पार्टी के आगे घुटने टेक देता है। प्रस्तुत कहानी 1993 के मुंबई विस्फोटों के बाद लोक पार्टी द्वारा की जाने वाली हिंसा और उसके प्रभावों का अत्यन्त मार्मिक विवेचन प्रस्तुत करती है।

- **जिनावर**

यह कहानी समाज में सम्बन्धों के संवेदनहीन और खोखले होते जाने की प्रक्रिया को बड़ी ही निर्ममता से दिखाती है। इसमें रोजी–रोटी की मजबूरियों के चलते असलम तांगे वाला अपनी बृद्ध व बीमार घोड़ी सरवरी को तांगे में जोत देता है और घर लौटते समय वह एक कार से टकराकर मर जाती है। मामला थाने तक जा पहुँचता है और असलम कार चालिका किशोरी शीना के पिता मि० तिवारी से दो हजार रूपये लेकर समझौता कर लेता है। रात के समय अचानक असलम की नींद खुल जाती है और वह फूट–फूट कर रोने लगता है और अंत में अपनी पत्नी जुवैदा को बताता है, *"मैंने उसकी मौत का सौदा कर लिया बीबी....! जानबूझकर उसे गाड़ी से भेड़ दिया..... यही सोचकर अपनी मौत तो वह मरेगी ही आगे पीछे...... किसी गाड़ी से भेड़ दूंगा तो वह मरते–मरते अपनी कीमत अदा कर जायेगी..... ये नोट, नोट नहीं मेरी सरवरी की बोटियाँ हैं, बोटियाँ बीबी...!"* [62] इन मार्मिक संवादों के द्वारा ही कहानी के वास्तविक मर्म को समझा जा सकता है।

- **केंचुल**

'*केंचुल*' नामक कहानी में, कमला एक माँ है जो अपने चार बच्चों की जिम्मेदारी

उठा रही हैं। उनके पति को फैक्ट्री से निकाल दिया गया है, जिसके कारण वह घर के लिए अपने जीविका की चिंता में उलझी हुई हैं। इस स्थिति में, उन्होंने घर में शराब की भट्ठी लगाने का निर्णय लिया है।

एक दिन, उनकी बेटी सरना की प्रेम–कहानी उनके सामने आती है। इससे उन्हें अपने गुजरे हुए दिनों की याद आती है, जब उनके साथ फरेब किया गया था। सरना का बीज बोकर उनका पति नंदू गांव चला गया था और वह वहीं मर गया था।

कमला इससे बहुत परेशान होती हैं। वह चाहती हैं कि सरना उसी गलती को न करें, और वह अपने जीवन को सही राह पर ले चलें। उनकी बातों से यह स्पष्ट होता है कि वह कठोर लेकिन प्रेम करने वाली हैं *"जल्दी कर शादी देर नई मंगता... भरोसा नहीं तेरा कभी मुलक को चला गया तो .... वापस नहीं आयेगा तू... भैया लोगों का ऐतवार नहीं मेरे को।"* [63] उनके शब्दों में समझ में आता है कि वह अपने बच्चों के भविष्य के लिए कितनी ही मेहनत कर रही हैं।

- **चेहरे**

'चेहरे' कहानी में चित्रा जी ने हमारी सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार किया है, विशेषकर नारी शोषण और भिखारियों के शोषण के विषय में। कहानी में, भिखारियों के शोषण का वर्णन किया गया है, जो रेलवे के बड़े अधिकारियों से लेकर पुलिस के सिपाहियों तक सभी को शामिल करता है *"ये भिखारिनें गैंग लीडर हैं। भीख के लिए सस्पर्श गिड़गिड़ा–गिड़गिड़ाकर ये यात्रियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर उन्हें पूरी तरह असावधान बना देती हैं। और इनके गुर्गे 'क्यू' में यात्रियों की शक्ल में धँसे मौका पाते ही लोगों की जेब साफ*

कर देते हैं। यह तो एक पक्ष है– और सुनिए ! अधनंगी बैठ–बैठ ये ग्राहक भी फँसाती हैं। चकला बना रखा है टिकटघरों को इन मक्खियों ने। दो–चार सिपाही टिकटघर के सामने तैनात नहीं कर सकते आप, जो इनपर कड़ी निगरानी, रखें ? बैठना तो दूर, इन्हें घुसने ही न दें?" [64] यह दर्शाता है कि समाज में सुरक्षा और सम्मान का मुद्दा सबके लिए उठना चाहिए, चाहे वह कोई भी हो। यह कहानी दर्शाती है कि समाज में बदलाव के लिए हमें साहस और सामाजिक न्याय की मांग करने की जरूरत है।

- **ब्लेड**

'*ब्लेड*' कहानी में शोषण के दुर्भाग्यपूर्ण प्रभावों को समझाया गया है। यह कहानी बताती है कि कैसे शोषण से जीवन मूल्यों में बदलाव आता है, जैसे बेइमानी, भ्रष्टाचार, नैतिकता की गिरावट, और असहाय स्थिति। कहानी में, एक ड्राइवर रामखिलावन अपने मालिक से अपनी बेटी के एक्सीडेंट के लिए धन की माँग करता है, लेकिन मालिक न तो उसकी सुनता है और न ही उसकी कोई सहायता करता है *"वह साहस कर बोल पड़ा, "कुछ एडवांस चाहिए, साहब।"* क्षण भर पहले के हिम्मत बँधाते चेहरे ने पलक झपकते रंग बदल लिया, *"एडवांस ! भई, तुम भी हद करते हो। मुश्किल से तुम्हें चार–पाँच महीने हुए हैं काम करते। तनख्वाह के अलावा चार सौ रुपए एडवांस ले चुके हो। ये समझाओ कि किस मुँह से हिम्मत पड़ती है फिर से एडवांस माँगने की ?"* [65] इस परिस्थिति में, रामखिलावन अंततः मालिक की गाड़ी की सीट को ब्लेड से काट देता है और मरम्मत के बहाने कमीशन ले लेता है। *"सुबह गाड़ी धोने के बहाने जैसे ही उसने भीतर की सफाई के लिए पिछला दरवाजा खोला, उसका एक हाथ फुरती से अपने कुरते की ऊपरी जेब में यत्न से रखे ब्लेड पर चला गया। ब्लेड निकालकर वह पिछली सीट पर पोंछा मारने की मुद्रा में झुक गया और बड़ी चतुराई से उन जोड़ों पर ब्लेड फिराने लगा, जहाँ पहले से ही सिलाई*

कुछ खिंच रही थी और रेक्सीन के उधड़ जाने की संभावना थी...” [66] इससे साफ़ है कि शोषण के कारण व्यक्ति की नैतिकता और आत्म–सम्मान में गिरावट आती है।

- **इस हमाम में**

चित्रा जी की यह कहानी मध्यवर्गीय एवम् निम्नवर्गीय परिवार में रहने वाली दमित स्त्री की कथा है। इस कहानी में, निम्नवर्गीय स्त्री के विद्रोही जीवन को मध्यवर्गीय स्त्री के दमित और चारदीवारी वाले कैद जीवन के साथ तुलना की गई है। लेखिका ने इस कहानी में स्पष्ट किया है कि निम्नवर्ग या मध्यवर्ग, स्त्री का शोषण और उस पर अत्याचार हर स्तर पर हो सकता है। *“एक शख्स के इतने हिस्से कैसे कर दिए जाते हैं? बेटी, बहू, पत्नी, माँ– नारी पैदा होते ही उसे समझाना शुरू कर दिया जाता है कि उम्र के हर टुकड़े को दूसरों की सुविधाओं के अनुकूल आत्मसात् करके जीने में ही उसका जीना है– एक निर्धारित स्त्रीकार क्यों? आखिर क्यों?”* [67]

कहानी में, निम्नवर्गीय स्त्री के साथ अत्याचार का स्वरूप मारपीट और आर्थिक अभाव की ओर हो सकता है, जबकि मध्यवर्ग में यह मानसिक यातनाओं का हो सकता है। इस प्रकार, लेखिका ने दर्शाया है कि जीवन के अलग–अलग स्तरों पर स्त्री को समाज में अत्याचार का सामना करना पड़ता है।

कहानी में चित्रा जी ने बहुत ही मार्मिक रूप से कहा है कि *“आदमी जगह बदल लेने पर जिंदगी थोड़ी ही बदल जाती है”* [68], जिससे यह स्पष्ट होता है कि समाज के अलग–अलग वर्गों में भी स्त्री पर अत्याचार और उसके प्रति अन्याय तथा दुर्व्यवहार की समस्या

बरकरार रहती है।

2.3 मृदुला गर्ग

वर्तमान परिदृश्य में नारी के प्रति बदलते दृष्टिकोण के साथ लेखन में मृदुला गर्ग का साहित्य परम्परागत नारी–लेखन से भिन्न है। वह नारी के जीवन की बाहरी और आन्तरिक भावनाओं को बड़ी सूक्ष्मता से अपने साहित्य में स्थान देती हैं। मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत कर उन्होंने हिन्दी साहित्य को कई अविस्मरणीय रचनाओं की भेंट दी है। सूक्ष्म संवेदना की पैनी धार उनके साहित्य में सर्वत्र दिखायी देती है। *कितनी कैदें, टुकड़ा–टुकड़ा आदमी, डैफोडिल्स जल रहे हैं, ग्लेशियर से, उर्फ सैम, शहर के नाम, समागम तथा दुनिया का कायदा* उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं।

टुकड़ा–टुकड़ा आदमी, डैफोडिल्स जल रहे हैं, ग्लेशियर से, कितनी कैदें आदि कहानी संकलनों में मृदुला गर्ग ने समाज व पारिवारिक रिश्तों का सूक्ष्मता से विश्लेषण कर समाज की झूठी मान्यताओं और जीवन के अच्छे–बुरे अनुभवों पर करारा व्यंग किया है। बदलते सामाजिक मूल्यों, सैक्स एवं अतृप्ति की भावना, महानगरीय जीवन की घुटन तथा पीड़ा आदि की अभिव्यक्ति उनकी कहानियों में सर्वत्र दिखाई दे जाती है। उनकी कई कहानियाँ तो स्त्री–पुरुष संबन्धों के इर्द–गिर्द ही घूमती हैं। अनुभव की उच्चता और विविधता की गहराई तो उनकी सभी कहानियों में दृष्टिगोचर होती है।

'मेरे देश की मिट्टी आहा' कहानी संग्रह में अलग–अलग विषयों पर लिखी गयी कुल ग्यारह कहानियाँ संग्रहित हैं। इस कहानी संग्रह की कहानियाँ कथ्य की दृष्टि से विविधता से परिपूर्ण हैं। इनमें भिन्न–भिन्न प्रकृति के पात्रों के द्वारा उनकी मनःस्थिति एवं समस्याओं का चित्रण किया गया है। *'मेरे देश की मिट्टी आहा'* कहानी की लल्ली एक निडर तथा स्वतंत्र विचारों वाली पात्र है। जहाँ किस्सा आज का कहानी की वकीलन एक आलसी नारी है

वहीं दूसरी ओर सात कोठरी की बहनें नारी के बलिदानी चरित्र को प्रदर्शित करती हैं। छलावा कहानी का राजा एक लोभी तथा गैरजिम्मेदार व अपने ही सुख में लीन रहने वाला अकर्मण्य नायक है।

'जीरो अक्स' का साजन अहंकारी एवं स्त्रियों के प्रति निम्न विचार रखने वाला व्यक्ति है। पात्रों के संवाद उनके जीवन में घटित घटनाओं को उजागर करने में सफल हुए हैं। इन कहानियों में अंधश्रद्धा, उच्च व मध्य वर्ग की स्त्रियों की बेलगाम इच्छाएँ, दहेज प्रथा के कारण स्त्रियों का त्रासदीय जीवन आदि का सुन्दर चित्रण किया गया है।

- **मेरे देश की मिट्टी आहा**

कहानी एक ऐसी लड़की की कहानी है जो अपने गाँव तथा समाज में सदियों से चली आ रही परम्परा का विरोध करती है। इस कहानी की मुख्य पात्र लल्ली खेड़ी गाँव में अपनी दादी के साथ रहती है। *"अपने गांव के अपनों ने ही लूटा हमें लल्ली, अकेली जानकर क्या–क्या प्रपंच ना कियो। क्या महाजन, क्या ठाकुर, पंडित सब एक जैसे सियार निकलो।"* [69] उसकी दादी अपना और पोती का भरण––पोषण करने के लिए खिलौने बेचा करती है। दादी की मृत्यु के पश्चात लल्ली के एक दूर के रिश्तेदार उसे अपने साथ गुड़गाँव ले जाते हैं तथा उसका एक स्कूल में दाखिला करवा देते हैं। जिस वर्ष लल्ली बारहवीं पास करती है, उसी वर्ष उसके ताऊ की ब्याहता बेटी का देहान्त हो जाता है। बेटी के बच्चों को सौतेली माँ के सहारे न रहना पड़े, इसलिए वे बेटी की तेरहवीं होने के उपरांत ही लल्ली का विवाह पैंतालीस वर्षीय अपने दामाद से तय कर देते हैं। लल्ली का भावी पति हवलदार था। गुड़गाँव में तबादला होते ही जीजा ससुराल में रहने लगा और लल्ली के सामने ही मुजरिमों की पिटाई आदि बातें किया करता, जिसे सुन लल्ली बेहोश हो जाया करती। जीजा के खौफ से लल्ली एक मुसलमान लड़के के साथ भागकर विवाह कर लेती है और ससुराल खेड़ी गाँव आकर

सास–ससुर के साथ रहने लगती है। जहाँ लल्ली के पति की पूर्व पत्नी भी और एक बच्चा रहते है। *"तभी एक राज खुला यह कि पसली, मर्द की डेढ़ हो या ढाई, वह पुलिसीया हो या चाकर बीबी की खाल उधेड़ने का जश्न हर कोई मना सकता है। दो चार दिन के त्यौहार के बाद समझ में आया कि हो न हो शादी इसलिए की पसली चली बीबी की खाल पर जश्न मनाने में कातिल का होने का डर था।"* [70] कहानी के अंतिम भाग में लल्ली के पति से तलाक की मांग की जाती है। इस संदर्भ में कहानी का रचनात्मक ढंग और आगे की दिशा में इसका प्रस्थान भी परंपरागत रूप से अलग है।

- **किस्सा आज का**

कहानी *'किस्सा आज का'* में शिक्षा का व्यावसायीकरण का मुद्दा उठाया गया है। इसके परिणामस्वरूप, उच्च पद–प्राप्ति और उच्च शिक्षा को सिर्फ अभिजात वर्ग की पूंजी माना गया है। पैसे के बल पर उच्च डिग्री खरीदने की यह प्रथा कहानी में आत्महत्याएँ, आर्थिक विपन्नताएँ और घटित घटनाओं के साथ व्यक्त की गई है। *"चले मान लेते हैं। वकील डॉक्टर, कम्प्यूटर इंजीनियर, उद्योगकर्मी, नौकरशाह, सभी आजकल के राजा महाराजा है। पढ़ाई जरूर करते हैं। राजा बनने के लिए, पर पढ़ाई करने का हक बाकायदा पुश्तैनी है।"*[71]

कहानी में इंजीनियरिंग और डॉक्टर बनने के लिए फीस की अत्यधिकता का उल्लेख किया गया है, जो कि उच्च वर्ग के बच्चों के लिए ही उपलब्ध है। इससे पैसों के सहारे पीढ़ी दर पीढ़ी की पढ़ाई को भी पुश्तैनी माना गया है। आजकल, पढ़ाई सिर्फ अमीर लोगों के पल्लू से बंधी हुई है। फीस न भर पाने के कारण एक छात्रा की जान का नुकसान होता है, जो कि कहानी में दिखाया गया है। यह कहानी नए धनिक समाज की बदलती रूपरेखा को भी

दर्शाती है।

दूसरी कहानी में एक धनिक स्त्री के जीवन का चित्रण है, जिसकी अत्यधिक सुख साधने की इच्छा होती है, लेकिन उसका जीवन आलस्यपूर्ण होता है। कहानी की कथा-नायिका बाजारवाद में दलाली करती है और व्यापार करती है। वह जरूरतमंद नौकरों से मिलने का शौक रखती है, जिससे उसे मालकिनों से अधिक अधिकार मिलते हैं। इस कहानी ने बाजारवादी संस्कृति को ध्वस्त करने का प्रयास किया है। *"सफल पुरुष की पूरक होने पर एक पूरा राज (समाज) हाथ आ जाता है। जिसकी सेहत का दारोमदार पूरी तरह दावतशाही पर रहता है। पति के साथ जाम से जाम मिलाकर, तश्तरी भर-भर उसकी जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती है।"*[72]

- **छलावा**

'छलावा' नामचीन वैद्य और हीरे के शौकीन राजा की कहानी है। राजा हमेशा हीरे एकत्र करने में लीन रहता है। राजा के बीमार पड़ने पर राजवैद्य हीरे की अंगूठी जलाकर उसकी भस्म को दस हिस्सों में बाँट देता है और राजा को दूध के साथ उसका सेवन करने के लिए कहा जाता है। अमावस्या की एक रात वैद्य जी के जीवन में एक विचित्र घटना घटित होती है। एक बगुला वैद्य के दरवाजे पर खड़ा हो अपने बेटे के इलाज के बदले उसे पाँच हीरे इनाम के रूप में देता है, और अंतर्ध्यान हो जाता है। वैद्यराज के चार हीरे राजा एक-एक कर हथिया लेता है और पांचवाँ भी हथियाने की फिराक में है। इन हीरों का राज पता चलने पर राजा तमाम सैनिकों व वैद्य के साथ निकल पड़ता है बगुले की खोज में। और इस प्रकार अपनी जिम्मेदारियों से विमुख हो वह अपने सुख के लिए जनता के सुख की भी परवाह छोड़ देता है। *"राजा कविराज भटके सो भटके, देश के तमाम प्रमुख उनके साथ भटक लिए। छलावे की तलाश में आज तक भटक रहे है,। जहाँ कहीं धूल का बगुला चक्कर*

मारता दिख जाता हैं, दौड़ पडते है, उसकी तरफ यहां वहाँ, जहाँ–तहाँ। देश की बाकी जनता राजा और वैद्य के अभाव में जैसे–तैसे दिन काट रही है। बिना मुनासिब इलाज और बिना उचित राज–काज।" [73]

- **कानतोड़ उर्फ़ कर्णवीर**

'कानतोड़ उर्फ कर्णवीर' कहानी का मुख्य पात्र उसूलों का पक्का एक शातिर चोर है। वह चोरी उसी घर में करता है जिस घर में पुरुष मौजूद हों। ऐसे में एक रात वह एक धन्ना सेठ के घर चोरी करने के लिए जाता है, किन्तु धन्ना सेठ की गैरमौजूदगी में वह चोरी नहीं कर पाता। जब धन्ना सेठ घर पहुँचता है तो वह चोरी करने जाता है और अचानक धन्ना सेठ के हाथ में उसका कान आ जाता है सेठ डरपोक है और वह अपनी पत्नी के सामने अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखना चाहता है। इसलिए, वह चालाक चोर से पैसे देकर अपने खोये हुए सामानों की वापसी करवा लेता है। सेठ अपने आप को बहुत शक्तिशाली दिखाता है और धन्ना सेठ कानतोड़ से कर्णवीर कहलाता है। "*उसे शोहरत मिली अपने बयान की वजह से, जो उसने हर अखबार रिसाले में छपवाया। वह यह कि औरत कितनी भी तरक्की पंसद, आजाद ख्याल, रोबदाव वाली क्यों न हो, इज्जत उस मर्द की करती है। जिसमें जिस्मानी ताकत, फुर्ती और मर्दानगी का जज्बा हो जैसा कानतोड़ उर्फ कर्णवीर सेठ में था।*" [74]

- **सात कोठरी**

'सात कोठरी' कहानी धर्म के नाम पर अंधविश्वास में सती हो जाने वाली सात बहनों की कहानी है। दहेज प्रथा के कारण सात बहनों का विवाह नहीं हो पाता। और गाँव में पिछले दो सालों से भयानक सूखा पड़ने से बुजुर्ग उन सात बहनों को ही इस सूखे का कारण घोषित कर देते हैं। *"फिर हुआ यूँ कि उस साल भी पिछले दो सालों की तरह गांव में*

भयानक सूखा पड़ा। जो झरने, ताल, तालाब, पहले बच गये थे वे भी अब सूख गये। गांव में हाय–हाय मच गयी। बड़े–बूढ़े वाले सात–सात जवान कुंआरियाँ छाती पर मूंग दलोगी तो और क्या होगा।" [75], और उन्हें जिम्मेवार बताकर कोसने लगते हैं। सातों बहने स्वयं को शिवजी की ब्याहता मानती थी। वे अमावस्या की रात को खाई में कूदने का निर्णय लेती हैं, जिससे कि धरती से पानी का सोता फूटे और गाँव की समस्या दूर हो जाय। छः बहने तो खाई में कूद जाती हैं, लेकिन सातवीं चरवाहे के बेटे के साथ भाग जाती है। गाँव वाले छः बहनों के बलिदान को प्रणाम करते हैं और सातवीं को कुल्टा बताते हैं। इस कहानी में दहेज प्रथा और अन्धश्रद्धा के कारण स्त्रियों की दुर्दशा का चित्रण किया गया है।

- **नेति–नेति**

'नेति–नेति' कहानी का मुख्य पात्र श्यामल मास्टर एक छोटे से शहर में हिन्दी की क्लास लेने जाता है। बस में बैठे एक साथी से उसकी मुलाकात होती है। वह यात्री श्यामल को मन्दिर चलने के लिए कहता है। अंधविश्वास या पाप लगने के डर से श्यामल मन्दिर जाने के लिए राजी हो जाता है। *"क्षमा करों भगवान उसने सोचा भर नहीं। क्षमा करो, ममता की रक्षा करना। मैं इक्यावन रूपयें का चढ़ावा भेंट दूंगा अभी। वह साथी को ठेल–ठेल कर आगे बढ़ाने लगा। बेमतलब बुदबुदाते हुए चले भाई दर्शन कर लो। शांति मिलेगी मेरे भाई शांति।"* [76] रास्ते में साथी द्वारा भगवान के होने या न होने की बात पूछी जाती है। श्यामल भी इस प्रश्न का उत्तर जानना चाहता है। इस कहानी के माध्यम से अंधविश्वास में फंसे लोगों की मनोदशा का वर्णन किया गया है।

- **जीरो अक्स**

एक स्त्री की ललकार पुरुष के अहम को किस प्रकार चूर–चूर कर देती है तथा इस

टूटे हुए अंहकार का बदला वह पुरुष किस प्रकार लेता है, यह इस कहानी के माध्यम से सामने आता है। इस कहानी के पात्र साजन भाई एक लेखक व सम्पादक के रूप में मशहूर हैं। चर्चित लेखक होने के कारण साजनभाई का साक्षात्कार लेने अखबार वाले व शोधार्थी थे– *"साजन भी और भाई भी यहाँ औरत मर्द को साजन बनाने से पहले भाई ही बनाती है। धर्म भाई। क्या धर्म है यार, एकदम, मनमाफिक। हिन्दू धर्म के अलावा यूँ राखी बाँध कर बाकायदा भाई बनाने का बंदोबस्त कहाँ है? अपने देश में देखा देखी सभी धर्मो ने इसे स्वधर्म बना लिया है।"* [77] वे इस कहानी के दूसरे चरित्र मेधा के द्वारा पूछे गये प्रश्नों से इस कदर क्रोधित होते हैं कि मेधा का गला दबाकर उसे मार डालते हैं। मेधा का गला दबा देने पर भी अंहकारी और स्त्री विरोधी साजन भाई को न कोर्ट कचहरी का डर था और न समाज का। इस कहानी के द्वारा साजन भाई के अहंकार, प्रदर्शनप्रियता और स्त्रियों के प्रति निम्न विचारों आदि का पर्दाफाश किया गया है।

- **मंजूर– नामंजूर**

'मंजूर–नामंजूर' कहानी में दो बहनों के माध्यम से स्त्री की अकथनीय पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया गया है। मंजूर–नामंजूर दोनों बहनों का जन्म एक ही दिन दो अक्टूबर को होता है। बड़ी बहन का नाम मंजूर और छोटी बहन का नाम नामंजूर है। मंजूर का पति बेहतर नौकरी और पैसे की लालच मे बार–बार नौकरी और जगह बदलता रहता है। वहीं नामंजूर का पति स्थायी नौकरी करता है। मंजूर की दिल्ली सड़क दुर्घटना में ब्लू लाईन बस के नीचे आने से मृत्यु हो गई, लेकिन नेताओं को सड़क दुर्घटनाओं की मौतों से बहुत कम चिंता थी। वे विशेष अतिथियों और परिवहन मंत्री से कह रहे थे कि मौत सड़क दुर्घटनाओं के कारण नहीं, बल्कि वाहनों से उत्पन्न प्रदूषण के कारण हो रही है, और इसे ज़्यादा महत्व देना चाहिए। *"बहस में हिस्सा लेने वाले एक पत्रकार ने कहा कि यह सही है कि ब्ल्यू लाईन बसे लोगों को मारती रहती है। पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सड़क दुर्घटनाओ से मरने*

वाले लोगों की संख्या उन लोगों से कम है, जो वाहन–प्रदूषण के कारण प्रत्येक वर्ष जानलेवा बीमारियों की चपेट में। इसीलिए असली मुद्दा वाहन–प्रदूषण है, वाहन दुर्घटनाएँ नहीं" [78] नामंजूर को अब अपने बुढापे का डर सताने लगता है। अन्ततः उसकी भी मृत्यु दो अक्टूबर के दिन ही हो जाती है।

- **साठ साल की औरत**

'साठ साल की औरत' कहानी एक औरत में साठ साल की उम्र में भी प्रणय–भाव की उपस्थिति को दर्शाती है। इस कहानी की नायिका सुरभि घोष के मन में डॉ. चन्द के प्रति आकर्षण और प्रेम उत्पन्न होता है। वास्तव में प्रेम की कोई उम्र नहीं होती। वह किसी भी उम्र में हो सकता है। यही इस कहानी के माध्यम से बताया गया है। साठ की होने पर भी औरत की इच्छाएँ और महत्वाकांक्षाएँ वही रहती हैं। *"साठ की होने पर औरत निरापद हो जाती है। कुछ भी करे लोकापवाद नहीं होता। कितनी बेवकूफी की बात थी; जैसे लोकापवाद का न होना औरत को निरापद करने को काफी हो और जो लोक से इतर अपना– मनोजगत है उसका क्या? पर आग्रह तो साठ की होने पर पता चलेगा ना।"* [79]

- **इक्कीसवीं सदी का पेड़**

'इक्कीसवीं सदी का पेड़' कहानी के माध्यम से बताया गया है कि कैसे एक पेड़ अन्य पेड़ों से अलग होता चला जाता है और धीरे–धीरे एक दिन उसका अस्तित्व खत्म होने की कगार पर आ जाता है। यह कहानी पेड़–पौधों के कटान से पर्यावरण को होने वाले नुकसान की ओर भी पाठकों का ध्यान खींचती है। *"कूडा–कर्कट फैला हो तो हम सुरो में बंधी महीन आवाजे सुन नहीं पाते। शोर और कूड़ा पेड़ों की तान और महक को खतरे में डाल देते हैं। परिंदे–दरिंदे फिर भी सुन सूंघ लेते है असल, दिक्कत इन्सानों की होती है।"* [80]

पशु–पक्षियों को देश–विदेश की बातें सुनाकर इक्कीसवीं सदी का पेड़ अपना जीवन व्यतीत करता रहता है। किन्तु अब पेड़ों की जरूरत न होने की बात सुनकर वह अत्यन्त दुखी होता है। जिस सुबह वह पेड़ अपने प्राण हवा में त्यागने की सोचता है, तभी उसे पेड़ लगााओ, पर्यावरण बचाओ का नारा सुनाई देता है, जिसे देखकर पेड़ पहली बार खुलकर हँसता है।*"जिस रोज पेड़ पहली बार दिन में हँसा, संयोग से वह इक्कीसवीं सदी की पहली सुबह थी।"*[81] इस कहानी के माध्यम से आधुनिक जगत की भागदौड़ में मनुष्य के अकेलेपन को भी दर्शाने का प्रयत्न किया गया है।

- **कलि से सत**

'*कलि में सत*' कहानी में प्रकृति के शोषण और प्रेम के दोनों पहलुओं का विवरण दिया गया है। कहानी में, वर्तमान समय की स्थिति में, '*कलि में सत*' के पात्र स्त्री की विवशता और उसकी चाह को नए आयाम में प्रस्तुत किया गया है। वे पात्रों के माध्यम से संघर्ष और व्यथा को जीवन का अभिन्न अंग बनाते हैं। *"वह जब तक आता था और यही कहता था हर बार नयी व्यथा–कथा सुनने को मिलती। सुने बगैर ही नया था उसका धैर्य वाजिब था।"* [82] हम समाज में रहते हुए अपरिहार्य की मान्यता को अधिकारिक रूप से स्वीकार सकते हैं। समाज एक विशेष परिकल्पना पर आधारित होता है, लेकिन इस परिकल्पना की जीवन में अभिव्यक्ति नहीं होती है। 'कलि में सत' कहानी में, मृदुला गर्ग ने स्त्री की पराधीनता को उजागर किया है, साथ ही उसने अपनी कथा को भी सुझाव दिया है। *"मैं बूढ़ा आदमी ठहरा, नये–नये कानूनों की खोज खबर कहाँ तक रखूँ। औरतों को समझ पाना नामुमकिन है।"* [83]

2.4 ममता कालिया

ममता कालिया एक ऐसी रचनाकार हैं जिन्होंने भारतीय परिवेश की नारी के जीवन

को आधार बनाकर उनकी मानसिकता, घुटन आदि की बड़ी ही सुन्दर अभिव्यक्ति करने का कार्य किया है। उनकी रचना की यही विशेषता है कि उनकी साधारण बात में असाधारण तत्व की उपस्थिति पायी जाती है। उन्होनें अपनी रचनाओं में पति–पत्नी के प्रेमहीन संबन्धों का चित्रण पूरी सच्चाई के साथ प्रस्तुत करने का साहस दिखाया है। उनकी कहानियों के पात्र वैचारिकता के स्तर पर एक नई चेतना और आधुनिकता से युक्त होते हैं। उनकी कहानियों की नायिकाएँ स्त्रियों के लिए बनायी गई अलग सामाजिकता, नैतिकता, मान–मर्यादा का विद्रोह करती नजर आती हैं। घर–परिवार के बीच संघर्ष करती नारी का चित्र भी उनके साहित्य में दिखाई दे जाता है। उनके कहानी संग्रहों में *छुटकारा, सीट नं दो, प्रतिदिन, जाँच अभी जारी है, एक अदद औरत* आदि प्रमुख हैं।

- **मुखैाटा**

इन कहानियों में रचनाकार ने अपने समय और समाज को परिभाषित करने का भरपूर सृजनात्मक जोखिम उठाया है। संग्रह की हर कहानी में ममता कालिया की प्रयोगधर्मिता और संघर्ष–चेतना बोलती है। शीर्षक कहानी *'मुखैाटा'* में छात्र वर्ग में आरक्षण जैसे मुद्दे का यथार्थ तथा रोशनी की मार में दलित चेतना का उभार अपने पूरे तेवर के साथ मौजूद है। यह कहानी मध्यमवर्गीय जीवन के साथ जुड़ी हुई है। एक बेरोजगार व्यक्ति यह कहता है– *"हे भगवान मेरी जात भी ले लो, पात भी ले लो, मेरा खानदानी सरनेम भी ले लो, इस सरनेम से न मुझे दाखिला मिलेगा न नौकरी , यह सरनेम नहीं सरदर्द है।"* [84]

यह कहानी एक युवा पीढ़ी की मानसिक स्थिति का वर्णन करती है, जो आरक्षण के दुष्प्रभावों का सामना कर रही है। एक दिन पाठक सर क्लास में कहते हैं– *"हो तो पिछड़े पर हो तेज। वह पलटकर कह ही देता है कि क्या पिछड़ा पैदा होने से दिल और दिमाग भी पिछड़ा हो जाता है? कहानी की भाषा भी प्रभावित करती है, श्रवण ने बातचीत में ऐसी*

दाब रखी थी ताकि कोई उसकी निजी जिदंगी में घुसपैठ की हिम्मत न करे।" [85]

श्रवण एक ऐसा चरित्र है, जिसने सरकारी नौकरी पाने के लिए तथा अपनी विवशता को छिपाने के लिए सवर्ण से अवर्ण का मुखौटा ओढ़ा था। तभी तो वह सोचता है– *"ये सब क्या उसके संग सुखी रह सकेगी? जब उन्हें पता चलेगा कि वह घोषित पिछडा है। जीवन भर दोहरा झूठ जीने से अच्छा है वह इकहरा सत्य जिये।"* [86] यह कहानी आरक्षण नीति की कमियों को दिखाती है।

- **निवेदन**

इस कहानी में, मिसेज सिंह एवम् वर्मा जी बीटर के चैराहे पर मिलते हैं, जब उनके पुत्र मण्टू उनके साथ होता है। मिसेज सिंह के पुत्र के साथ मिनी के बीच मंत्र होता है, और वर्माजी एक माध्यम के रूप में मण्टू के बहाने निवेदन पर निवेदन करते हुए चले जाते हैं। मण्टू को आइसक्रीम खिलाना, फिर कहना *"अच्छे बच्चे अपनी मम्मी को तंग नहीं करते। अब तो नहीं करोगे।"* [87] वर्मा जी निवेदन करते हैं *"बेटे अपनी मम्मी–पापा के साथ हमारे घर आओ किसी रोज तो हम तुम्हें बिजली का झरना दिखायेंगे तथा मण्ट्र बेटे अपनी ममी को लेकर हमारे घर आना और पापा को भी।"*[88]

इस कहानी में, एक पुरुष के स्त्री से प्रेमालाप पूर्वक निवेदन करने का माध्यम उसके पुत्र के माध्यम से किया गया है। यह कहानी विवाह संबंधों के दायरे में घटित एक घटनाक्रम को विवरणित करती है। पुरुष ने अपने पुत्र को स्त्री के साथ प्रेमालाप के बारे में निवेदन करने का कार्य सौंपा, जिससे कहानी में उसके भावनात्मक संबंधों के परिप्रेक्ष्य को विस्तार से

दिखाया गया है।

- **एक अदद औरत**

यह कहानी एक सामान्य भारतीय नारी के जीवन के संघर्षों और उसकी भारतीय समाज में बदलती सोच को वर्णित करती है। उसे सिर्फ घर–परिवार में ही अपना स्थान और महत्त्व मिलता है, जिसमें वह पति के साथ सहमति और आदर्शता के साथ जीवन जीने की कोशिश करती है। इसे विशेष रूप से पति–पत्नी के संबंधों, परिवार के आदर्शों, और भारतीय समाज की प्रेरणाओं के माध्यम से दिखाया गया है।

नायिका के अपने आप को घर–परिवार के साथ चलाने का इकाई मानना उसकी मान्यता के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, जो उसे एक आदर्श पत्नी बनाने की दिशा में आगे बढ़ने में सहायक होता है। *"उसे अपनी स्थिति में संतुष्टि और सुखी महसूस करने के लिए पति के साथ सहमति में रहने की आवश्यकता होती है, चाहे वह कितना भी दुःखी या अपमान महसूस करे।"*[89]

कहानी में पुरुष प्रधान मानसिकता के समाज में और नायिका की भावनाओं में अंतर को स्पष्ट करने के लिए दो प्रमुख पात्र हैं। नायिका को अपने पति की स्त्री के साथ जीवन बिताने में जिज्ञासा और उत्साह मिलता है, जो उसे सुखी और संतुष्ट बनाने में मदद करता है। कहानी की शुरुआत में, नायिका की भावनाएँ और उसके आंतरिक संघर्ष को बताने के लिए समाज के एक साधारण और स्थिर वातावरण का वर्णन किया गया।[90] वह एक आदर्श और संतुष्ट नारी बनने का प्रयास करती है, जो अपने पति के साथ सहमति में रहने की कोशिश करती है। पति की इच्छाओं और आदर्शों के प्रति उसकी सहमति और निष्ठा को प्रमुखता दी गई है।

नायिका का संघर्ष उसके विचारों और आदर्शों के साथ बने रहने की यात्रा को दर्शाता है, जिसमें वह अपने भारतीय समाज में औरत के स्थान के बारे में सोचती है। उसे

अपने पति के साथ संतुष्ट रहने के लिए दबाव महसूस होता है, लेकिन उसके इस दबाव के बावजूद भी, वह अपने आप को समझती है कि वह अपनी भावनाओं और इच्छाओं को भी साझा करने का हक़ रखती है।

अग्रिम कहानी में भारतीय समाज में औरत के स्थान के प्रति उसकी सोच और दृष्टिकोण को पेश करती है, जहां उसे सिर्फ घर–परिवार में अपना स्थान मिलता है और वह पुरुष के साथ सहमति में रहकर अपने जीवन को आगे बढ़ाने का प्रयास करती है। इसके बाद, कहानी नायिका के द्वारा उसकी संतुष्टि की कीमत पर चर्चा करती है, जो उसे स्त्री के साथ जीवन बिताने के लिए सहमति में रहने के लिए मजबूर करती है।[91]

कहानी को अंतिम चरण में, नायिका का विचार उस भारतीय समाज की एक सामान्य औरत की भावना को प्रतिबिंबित करता है, जिसमें वह अपने अस्तित्व को समझती है और अपने अधिकारों की रक्षा करती है। उसे खुद के लिए समय और स्थान का महत्त्व समझने में मदद मिलती है, जिससे वह अपनी भावनाओं और विचारों को सहजता से व्यक्त कर सके। इस प्रकार, इस कहानी ने भारतीय समाज की एक औरत के संघर्षों और सामाजिक समृद्धि के प्रति उसकी चिंताओं को साहित्यिक रूप से व्यक्त किया है।

- **बिटिया**

यह कहानी एक आम भारतीय समाज की एक विवाह सम्बन्धी समस्या को उजागर करती है, जो दहेज की मांग और इससे जुड़ी सामाजिक दबावों को दर्शाती है। लड़के वाले और लड़की वाले के बीच यहाँ स्थिति ऐसी है कि वे दहेज के सामानों की सूची बनाने के लिए एक–दूसरे के साथ मिलते हैं।

इस कहानी में लड़कियों को देवियाँ कहने का बताया जाता है, जिससे स्पष्ट होता है कि वे समाज में महत्त्वपूर्ण और सम्मानित मानी जाती हैं। लेकिन वे यहाँ दहेज की मांग

के चलते एक बाज़ारु सामान की तरह देखी जाती हैं, जिसे लड़की वालों को पूरा करने में खर्च करना पड़ता है। इसके साथ ही, मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए शादी–विवाह का खर्च दहेज के निर्माण में ही जाता है, जिससे समाज में इसकी माँग को पुष्टि करता है।

कहानी में एक लड़की के पिता का वाक्य बड़े ही प्रभावशाली और विचारशील रूप से प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने विवाह के लिए दहेज की मांग को हासिल करने के लिए लड़के वालों के सामान की लिस्ट बनवाने के लिए सार्थकता का जिक्र किया है, जिसमें वह खुद को और अपनी सम्पत्ति को उनके आदर्शों के साथ संबोधित करते हैं। इससे उनकी इज्जत और सम्मान के प्रति उनकी सहमति का संकेत मिलता है।[92]

लड़की के पिता की यह बातें दहेज की मांग के प्रति आम भारतीय समाज में उत्तरदायित्व और सामाजिक दबाव को दिखाती हैं। वे अपनी बेटी को एक बड़े खर्च से बचने के लिए कई बार अपनी स्त्री के अस्तित्व के साथ बाज़ार में बेचने के लिए तैयार हैं। इससे उन्हें यह स्थिति और समाज में इस प्रकार की प्रथा का खतरा दिखाई देता है।

कहानी दहेज समस्या के माध्यम से एक आम भारतीय औरत की चिंताओं, सामाजिक दबावों और समाज में महिलाओं के स्थान के प्रति समाज की चेतावनी को प्रस्तुत करती है। इसके अलावा, इस कहानी में विवाह सम्बन्धी भ्रष्टाचार और लाचारी को भी प्रकट किया गया है, जो भारतीय समाज में एक महिला के जीवन में असंख्य मुश्किलें पैदा कर सकते हैं।

कहानी में विभिन्न चरित्रों के माध्यम से दिखाया गया है कि दहेज की मांग और इसका आदान–प्रदान समाज में कितना महंगा पड़ सकता है। इसके साथ ही, इस कहानी ने यह भी दिखाया है कि महिलाओं का सम्मान और समानता की आवश्यकता कितनी

जरूरी है।

- ## दूसरा देवदास

यह कहानी हर की पौड़ी हरिद्वार के सायंकालीन आरती के दृश्य को प्रकट करती है, जहां गंगा माता की आरती के समय भक्तों की भीड़ एक अद्वितीय धार्मिक आस्था और समर्पण का साक्षात्कार करती है। इस भीड़ में संभव नामक एक पात्र भी शामिल होता है, जो उसी धार्मिक भावना का प्रतिनिधित्व करता है। वहाँ एक लड़की भी संभव के पास ही खड़ी थी। पुजारी ने कहा– *"साथ ही आना गंगा मैया मनोरथ पूरे करें।"* [93] इस तरह, पारों और संभव के बीच एक भक्त और देवदास की कहानी की पुनरावृत्ति होती है, जिसमें उनका सानिध्य एक धार्मिक अनुभव के माध्यम से संबंधित होता है।

2.5 जया जादवानी

अपने विचारों की आधुनिकता के कारण जया जादवानी समकालीन रचनाकारों में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती हैं। आज का स्त्री–विमर्श पारम्परिक स्त्री–विमर्श से पूर्णतया भिन्न हो चुका है। विकास की दिशा में निरंतर अग्रसर नारी सदा से ही विमर्श का केन्द्र बिन्दु रही है, और इस स्थिति को नारी ने ऐसे ही हासिल नहीं किया, बल्कि निरन्तर संघर्ष और बलिदान से ही हासिल किया है। जया जादवानी का लेखन संक्रमण काल का लेखन है, जहाँ स्त्री अनेक रूपों में इस धरा पर दिखायी देती है। एक ओर स्त्री ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है तो दूसरी ओर पितृसत्तात्मक समाज के दमन का भी शिकार होती दिखायी देती है। जया की कहानियाँ स्त्री–मुक्ति–संघर्ष के निर्माण की कथा–व्यथा कहती दिखायी देती हैं।

जया जी का प्रथम कहानी संग्रह *'मुझे ही होना है बार–बार'* की कहानियाँ स्त्री मन की परतों के साथ ही स्त्री–पुरुष के संबन्धों की सच्चाई को भी समाज के सामने उजागर

करती हैं। अपने अनुभवों के विस्तृत दायरे में ये कहानियाँ स्त्री की नवीन परन्तु वास्तविक छवि गढ़ती हैं।

- **शाम की धूप**

'शाम की धूप' एक लम्बी कहानी है। यह कहानी एक संयुक्त परिवार में एक बूढ़ी स्त्री की कहानी है, जिसने अपना पूरा जीवन पति, बच्चों और घर की सेवा में ही समर्पित कर दिया, लेकिन फिर भी वह आज किसी के लिए जरूरी नहीं है। और वह अपनी इसी दिनचर्या में ढल चुकी है। *"उनकी आँखे गयीं। सब चला गया। घर में टटोलती हुयी घूम लेती, चावल धो देती, दाल भिगो देती। आटा गूंथ देतीं। कोई नहीं छोड़ता। दो रोटियों का हिसाब तो देना ही पड़ेगा..........।"*[94] न जाने कितने समय की पीड़ा उसके मन में दफन है। वह अपने बेटे और बहुओं को कोसती है कि एक दिन जब वे भी बूढ़े हो जाएँगे तब उन्हें बुढापे का दर्द महसूस होगा। और फिर वह उस समय को याद करती हैं कि पति ने भी कभी उसका सम्मान नहीं किया और ना ही अब औलाद अपनी हुयी।

- **वहाँ मैं हूँ**

यह कहानी एक ऐसे पति–पत्नी की है जो सामाजिक रूप से तो बड़े प्रसन्न दिखाई देते हैं लेकिन आन्तरिक तौर पर उनके बीच वो प्रेम नहीं है। उच्च वर्ग या उच्च मध्यम वर्गीय समाज में स्त्री–पुरुष संबन्ध जितने बाहरी तौर पर मधुर दिखाई देते हैं, वे आन्तरिक तौर पर उतने ही प्रेमविहीन होते हैं। प्रेम तो वहाँ बिल्कुल भी नहीं होता, वहाँ बस दिखावा ही होता है, झूठी शान का झूठे प्रेम का। उनकी मुस्कुराहट देख कर कोई भी नहीं कह सकता कि इन्हें कोई भी दुख हो सकता है या इनके बीच प्रेम में जरा भी कोई कमी है। परन्तु उनके भीतर

के अंधेरे को ना ही कोई समझता है और ना ही जानना चाहता है।

इसी हकीकत को बयां करती है यह कहानी। कहानी एक ऐसी ही स्त्री की मानसिक पीड़ा को चित्रित करती है। *"वह गहरी नींद में खर्राटे ले रहा है। मैं अपनी देह के पास आती हूँ। वह गहरी थकान से लस्त–पस्त आँखे फाडे अंधेरे में जाने क्या देख रही है।"* [95] धीरे–धीरे वह स्त्री समझती है कि जब हम किसी को अपने भीतर आने का आमंत्रण देते हैं तो वह वहीं बस, और यही बात सुख और दुख के भाव पर भी लागू होती है। अंततः अब वह अपने तन मन को एकाकार करना चाहती है।

इस कहानी में स्त्री स्वतंत्र होने की जद्दोजेहज में लगी है और अपने स्व को पहचानने का प्रयास कर रही है और अब वह अपनी शर्तों पर जीवन को जीना चाहती है। *"स्त्री और पुरुष प्रकृति के दो रूप हैं, एक दूसरे के पूरक, एक दूसरे के सहायक, इस मानवीय–यात्रा–जीवन–यात्रा के हमसफर। न कम न ज्यादा। ये दो विरोधी खेमों के लोग नहीं, बल्कि एक ही सफर के यात्री हैं। उनमें जीवन साथी का, दोस्ती का, सख्य का संबन्ध होना चाहिए, न कि मालिक–सेविका का।"* [96]

- **जहाँ कोई नहीं जाता**

कहानी एक स्त्री के द्वंद को दर्शाती है जो कि अपने पति से अपनी इच्छाएँ, अपने भाव साझा करना चाहती है, पर उसका पति उन बातों पर ध्यान नहीं देना चाहता। उस स्त्री को लगता है कि उसका पति उसका दोस्त बने, उसका सहचर बने लेकिन उसे अपनी पत्नी

से सिर्फ अपनी सेवा ही चाहिए।

और एक दिन वह उससे कहती है कि–

> *"क्या चाहिए ?*
>
> *तुम ?*
>
> *मैं यहाँ नहीं रहती।*
>
> *कहाँ रहती हो ?*
>
> *जहाँ कोई नहीं जाता।*
>
> *वह लौट रहा है, नहीं वह लौट नहीं रहा, वहीं खड़ा है प्रतीक्षा में...........।*
>
> *उसने दरवाजा बंद कर दिया और नीचे उतर गई। नहीं वह उतरी नहीं है अभी, उतरने की प्रक्रिया में अधूरी खड़ी है।"* [97]

उस स्त्री ने अपनी स्वतंत्रता का चुनाव कर लिया है। उसे प्रतीक्षा करना मंजूर है लेकिन उसने अब अपने मन की करने की ठान ली है।

- **अंदर के पानियों में–कोई सपना काँपता है**

जया जादवानी के दूसरे कहानी संग्रह *'अंदर के पानियों में–कोई सपना काँपता है'* की कहानियों की स्त्री, साहस और चेतना से सम्पन्न अपने जीवन की यात्रा के पथ पर आगे बढ़ती दिखाई देती हैं। अब वह बाधाओं से लड़ती, स्वयं निर्णय लेती और स्वयं अपनी

लड़ाई लड़कर जीतती दिखायी देती है।

यह कहानियाँ समाज में स्त्री की जगह तलाशती हैं और स्त्री नियति के ठिठके स्वरों की सस्फुट गूँज में खत्म नहीं होती है– "कब्र में सोई हुयी औरतों का आदमी मनचाहा इस्तेमाल करता है। औरत भी अपना इस्तेमाल होने देती है। आदमी को तकलीफ सिर्फ तभी होती है, जब वह अपनी कब्र से जाग जाती है। – यह जागना ही स्त्री की असली मुक्ति है।" [98] इस संग्रह की कहानियाँ आज की पढ़ी–लिखी नारी पर केन्द्रित हैं। और उसके प्रश्नों को समाज के सम्मुख रख उनका जवाब तलाशने का प्रयत्न करती हैं।

- **पलाश के फूल**

> *कहानी 'पलाश के फूल' में "कितना गरूर था उसे स्वयं पर, कान्वेंट की एक शानदार सर्विस थी उसके पास। भविष्य में अपना स्कूल चलाने का सपना। महत्वाकांक्षा... कुछ कर सकने की कूवत..... अकेले लड़ते रहने का साहस...... पर यह क्या.....।"* [99]

इस कहानी की नायिका अपूर्वा एक पढ़ी–लिखी, स्वाभिमानी और महत्वाकांक्षी स्त्री है जो अपनी जिंदगी के फैसले स्वयं करना चाहती है। वह अपने पिता की इच्छा के विरूद्ध एक ऐसे व्यक्ति रोहित से शादी करती है जो तीन बच्चों का विधुर बाप है। और इस कड़ी में वह अपनी नौकरी भी छोड़ देती है और रोहित के साथ उसके घर में रहने लगती है। लेकिन हाय री किस्मत ससुराल में उसे वो सम्मान नहीं मिलता जो उसे मिलना चाहिए था। रोहित के बच्चों की उपेक्षा और घरवालो के तिरस्कार के अलावा उस स्त्री को कुछ नहीं मिलता। यहाँ तक कि रोहित भी उसके मन की भावनाओं को नहीं समझ पाता। लेकिन वह पति होने का कर्तव्य हर रात निभाता है, लेकिन आपसी प्रेम के बिना, अपनत्व के बिना। लेकिन मानसिक एकरूपता के बिना अपूर्वा शारीरिक संबन्ध नहीं चाहती। आखिर में उसका

सब्र टूट जाता है और वह रोहित का घर छोड़ने पर मजबूर हो जाती है।

जिस पर रोहित भी उसे खरी खोटी सुनाता है। लेकिन वह मन बना चुकी है और वह इस चुनौती को भी हंसकर स्वीकार करती है। दो महीने की भागदौड़ के बाद वह नौकरी, ट्यूशन करती है। और बैंक से लोन लेकर एक बिल्डिंग की तलाश करती है क्योंकि वह अपना एक स्कूल खोलना चाहती है। अब उसके संघर्ष को पाँच साल होने को आए हैं। लेकिन उसने अपने आप को कभी निराश नहीं होने दिया और लगातार संघर्ष कर अपना एक मुकाम हासिल किया।

> *"और चाहा उसका दर्द विध्वंशकारी नहीं, सृजनात्मक बने। करामाती....। कभी दर्द को वनज की तरह नहीं ढोया, छाती से लगाया... सजाया.... संवारा और अपना दोस्त बना लिया।"* [100]

> *"जया जादवानी की कहानियों में एक जीवंत जीवन का सपना है तो कहीं कहीं उदासियों की हल्की सी लकीर भी शब्दों के आर–पार खिंची दिखती है।"* [101]

जया जादवानी नारी कलम नारी–मन की व्यथा–कथा कहने में सिद्धहस्त है। उनकी लेखनी नारी के अंतरंग भावों को चित्रित करती दिखायी देती है, और इसमें वह पूरी तरह सफल भी रही हैं। उनकी कहानियों में समाज के टूटते जीवन मूल्यों के साथ स्त्री मुक्ति संघर्ष का मौलिक प्रतिपादन हुआ है। नारी के दुखमय जीवन के प्रति उनकी सहानुभूति उनकी कहानियों के माध्यम से उभर कर आती है।

2.6 उर्मिला शिरीष

उर्मिला शिरीष हमारे दौर की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कथाकारों में से एक हैं। उन्होंने

कई कहानियों का सृजन किया और हर वर्ग द्वारा उनकी कहानियों की सराहना की गई। उनकी कहानियों की यही खासियत है कि वह बिना किसी के पक्ष में हुए अपनी संवेदनात्मक बुनावट के चलते एक निष्कर्ष देती हैं, और पाठकों के मन पर गहरी छाप छोड़ने में सफल होती हैं। जीवन की समग्रता को समेटे अपने कहानीपन के साथ पठनीयता और सहजता जैसे अद्भुत गुणों का संगम प्रस्तुत करती हैं। वह हमारे समाज में व्याप्त प्रेम और घ्रणा, संघर्ष और जिजीविषा, राग और द्वेष के बीच बहते जीवन को अपनी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समझ पाठकों के सम्मुख ऐसी सहज अभिव्याक्ति प्रस्तुत करती हैं कि वह चकित हुए बिना नहीं रह सकता। उनकी रचनाओं में कहानी संग्रह *'बिवाईयाँ'* तथा '*अन्य कहानियाँ*', उर्मिला शिरीष की श्रेष्ठ कहानियाँ, *दीवार के पीछे, मेरी प्रिय कथाएँ, ग्यारह लम्बी कहानियाँ, कुर्की* और अन्य कहानियाँ, *लकीर तथा अन्य कहानियाँ, पुनरागमन, निर्वासिन, रंगमंच, शहर में अकेली लड़की, सहमा हुआ कल, केंचुली , मुआवजा, वे कौन थे।*

- **रंगमंच**

यह कहानी एक युवती के बारे में है जिसका दहेज में जलने का विवरण दिया गया है, जिसके कारण वह अस्पताल में भर्ती हो जाती है। उसके जीवन की स्थिति काफी कठिन है और उसके बचने की संभावना बहुत कम है। इस संदर्भ में, उसके पति प्रकाश द्वारा उसके खिलाफ धूर्त तरीके से कदम उठाया जाता है। *"वह उत्साहित हो हाथ जोड़ता हुआ खड़ा हो गया । इस समय वह धूर्त भेड़िये की तरह लग रहा था, जो अपने शिकार को येन–केन प्रकारेण फाँसने में या शिकार स्थल तक ले जाने में कामयाब हो जाता है।"* [102] उसके बच्चों को इस समस्या का सामना करना पड़ता है, जिससे मीना की भावनाएं दुखी होती हैं और वह आंसू बहाती हैं। इन स्थितियों में, समाज की क्रूरता का विवरण दिया गया है, जो समाज की संवेदनहीनता और न्याय व्यवस्था की कमी को उजागर करता है। इस कहानी में सच्चाई और न्याय के लिए कोई जगह नहीं है, क्योंकि यहां सब कुछ पैसे के बल पर ही चलता है।

गवाह, वकील, न्याय – सब कुछ पैसे के खरीद–बिक्री के आधार पर होता है।

- **मुआवज़ा**

इस कहानी में एक युवती पाती छोटी उम्र में ही विधवा हो जाती है। वह अपने चाचा–चाची के घर में रहती है और मित्र सलिल के प्रेरणा से एम.ए. की पढ़ाई करती है। पिता के निधन के बाद वह खुद को अकेली महसूस करती है और बीमार हो जाती है। उसकी बीमारी उसे डॉक्टर शशांक तक पहुंचाती है, जहां उसे शशांक से प्रेम होता है। लेकिन शशांक उसको पसंद नहीं करता है।

चाची के निधन के बाद, युवती फिर चाचा के साथ अपने गावं चली जाती है। उसने पुराने मित्र सलिल से कहकर एक बच्चे को गोद ले लिया, जिसका नाम रखा गया शशांक। यह दिखाता है कि वह अकेली विधवा जीवन नहीं जीना चाहती थी। उसे कई लड़कों से प्रेम होता है, लेकिन उसकी बदकिस्मती से वह लोगों के साथ संकटों का सामना करती है। अंत में, उसे एक बच्चे को गोद लेकर अपना जीवन जीने का निर्णय लेना पड़ता है। *"मैं पहले की तरह गांव जाना चाहती हूँ... यह कैसा भाग्य है मेरा"* [103]

- **जीत**

एक नारी की जीवन की यह कहानी दर्शाती है कि जबकि वह अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती है, उसे अपने बेटे के लिए माँ का ऑपरेशन करवाने का समय नहीं मिल पाता है। इसके बजाय, उसका ध्यान ज्यादा अपने कैरियर और पेशेवर जीवन की ओर मुड़ जाता है। वह अपने क्षेत्र में अग्रणी होने की चाह में उबरती हैं और इसी के चक्कर में माँ के इलाज की परवाह नहीं कर पाती हैं।

इस दौरान, उसके लिए एक नई मित्रता का आरंभ होता है। अस्पताल में एक अन्य

स्त्री ने उसका ध्यान रखा और उसे सहायता प्रदान करने का प्रयास किया। उसकी नई मित्रता ने उसे आत्म–समर्पण और सहानुभूति का अहसास कराया। वह निराश होकर नहीं, बल्कि आत्मविश्वास से भरी हुई वापस उठी। अंत में जब बेटा माँ को लेने आता है तो वह बड़ी दृढ़ आवाज में कहती है *"जब मेरा मन होगा तो मैं आ जाऊंगी अर्थात् उसकी सखी को लगा कि आज उन्होंने अपने हारे मन को जीत लिया है।"* [104]

- **निर्वासन**

यह कहानी एक बुजुर्ग की है जिसने अपना पूरा जीवन अपने बेटों के भविष्य को सँवारने में लगा दिया, लेकिन जब उसके व्यापार में घाटे होने लगे तो उसके बेटे उनसे अलग हो गए। अपने बेटों के अनुचित व्यवहार के कारण बुजुर्ग ने अपने घर को छोड़कर एक अजनबी स्थान में जाने का निर्णय लिया। उन्हें रेलवे स्टेशन और सड़कों पर भीख मांगते हुए अपना जीवन–यापन करना पड़ा। *"जब भीख मांगते हुए वृद्ध पर उसके पोते की नजर पड़ती है तो उस भिखारी को पहचानने में असमंजस हो जाता है। जब उस भिखारी में अपने दादाजी ही नजर आने लगे तो यह बात अपने पिता से बताते हुए अपने दादा के प्रति संवेदना प्रकट करता है।"*[105] पिताजी ने अपने भविष्य की देखभाल करने के लिए उन्हें पुराने संदेशों को भूलकर आगे बढ़ने की सलाह दी, लेकिन उन्होंने इसे नकारा। इसके बाद, वह अपने दादा जी को खोजने का निर्णय लेते हैं।

बहुत सारी जांच पड़ताल और दौड़–धूप के बाद, अंत में पोता ने अपने दादा को एकांत वास से बाहर खींच लाने में सफलता प्राप्त की। इस कहानी के माध्यम से हमें यह सिखने को मिलता है कि संघर्ष और सहानुभूति से, हम किसी भी मुश्किल मोड़ पर खड़े

हो सकते हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

- **सहमा हुआ कल**

यह कहानी मन में उठने वाले अनेक सवालो सी घिरी एक छोटी–सी 11 साल की लड़की की कहानी है, जो उसके मन में उठते हुए प्रश्नों का सार्थक उत्तर प्राप्त करने के लिए परेशान रहती है। वह अपने बड़ों के आगे जाकर बार–बार उनसे प्रश्न करती है। इस आशा में कि उसे एक उचित उत्तर मिल जाएगा जिसकी उसे गहराई से तलाश है। उसकी इन जिज्ञासाओं का कोई सकारात्मक हल नहीं मिलता। उसे लोग यह कहकर टाल देते हैं कि वह अभी बहुत छोटी है। अभी तुम्हारी खेलने की उम्र है। फालतू के सवालों में मकड़ी की तरह उलझने की जरूरत नहीं है। जिससे वह मासूम लडकी तिलमिला जाती है।

- **शहर में अकेली लड़की**

इस कहानी की नायिका लता ने अपनी दीदी पर उसके पति द्वारा किए जा रहे अत्याचारों का सामना किया। उसने अदालत के माध्यम से अपनी दीदी को मुक्ति दिलाने का प्रयास किया और सच्चाई के साथ दीदी को पुनर्विवाह करने के लिए प्रेरित किया। *"वह अकेली रहती है इस शहर में, इस शहर की बड़ी कॉलोनी के एक फ्लैट में। इस खूबसूरत शहर के आधुनिक लोगों की मानसिकता, स्वभाव, आदतों तथा कल्चर के बीच वह स्वयं को अलग–थलग पाती है, इसलिए सबके बीच रहकर भी वह नितान्त अकेली होती है। न कोई दोस्त। न कोई रिश्तेदार। अजनबी। कौतूहल का विषय बनी। उसके लिए कौतूहल तथा आकर्षण दोनों ही हैं।"* [106] इस कहानी में बदलते परिवेश के साथ उत्पीड़न को तोड़ने की प्रेरणा को दर्शाया गया है। लड़की ने अपने धैर्य, साहस और न्यायाधीशों के सहयोग से अपनी दीदी को न्याय दिलाया और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई। इससे सामाजिक

बदलाव की ओर एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया गया।

- **माया महाठगिनी**

इस कहानी की नायिका वीणा एक अनाथ बच्ची है, जिसे अपने जीवन का कोई निश्चित ध्येय नहीं मिलता था। उसकी समझ में नहीं आता था कि उसका भविष्य क्या हो सकता है और वह स्वयं के लिए क्या चाहती है। वह अपने काका के साथ रहती थी, लेकिन उसका काका उसकी जिम्मेदारियों से अपने आपको मुक्त करने का इच्छुक था। इसलिए वह उसे गुरुमाता के पास ले जाते हैं और उसे वहां बेच देते हैं। वीणा इस मायावी जाल में सम्मोहित नहीं हो पाती। उसके साथ गुरुमाता का भाई दुर्व्यवहार करता है। *"बच्चों को खाना मिले न मिले महामृत्युंजय जाप जरूर करवाया जाता, ताकि दुष्टात्माओं से रक्षा हो सके। मजे की बात यह है कि दुष्टात्मा तो अपना प्रकोप यथावत् बरसाती,.......*" [107] वीणा किसी भी स्थिति में निराश नहीं होती है, बल्कि वह बहुत ही मजबूत है। वह आश्रम को छोड़कर घर नहीं जाती अपितु एक अनदेखी यात्रा पर निकलती है जो आज तक जारी है।

उनकी कहानियाँ अपने समय की चुनौतियों का तो सामना करती ही हैं, साथ ही समय और समाज से टकराने की चुनौती का सामना करने की ताकत और दृष्टि भी देती हैं। यही इनकी प्रमुख विशेषता भी है।

2.7 मंजुल भगत

मंजुल भगत ऐक ऐसी समर्थ लेखिका हैं जिन्होंने अपने साहित्य में सामाज की विपदाओं, विडम्बनाओं तथा शोषण की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति की है। उन्होनें अपनी वर्गीय सीमा को लाँघकर निम्न वर्ग से अपना रिश्ता जोड़ा है। उनके कहानी संग्रहों में *'क्या टूट गया'*, *'आत्महत्या से पहले'*, *'बावन पत्ते और एक जोकर'*, *'कितना छोटा सफर'* तथा

'गुलमोहर के गुच्छे' आदि प्रमुख हैं। मंजुल भगत ने नारी के साथ होने वाले शोषण, उसकी शारीरिक व मानसिक यातनाएँ तथा उसकी पीड़ा का बड़ा ही मार्मिक वर्णन अपनी कहानियों के माध्यम से किया है।

उनके कहानी संग्रह *'क्या टूट गया'* शीर्षक कहानी के अलावा *सादगी, त्यागमयी, आत्महत्या से पहले, चैराहे के बीच में, संबन्धहीन, बुआजी* आदि कहानियाँ भी संकलित हैं जो पाठको के हृदय को झकझोर के रख देती हैं। क्या छूट गया कहानी में नारी मन की आन्तरिक भावनाओं को बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित किया गया है।

• सादगी

यह कहानी एक अनैतिक कार्य करने वाली रहस्यमयी युवती की कथा व्यथा है। वह एक साधारण और सच्ची लड़की है जो बहुत ही संवेदनशील भी है। एक सेठ रात–दिन उसके साथ रहता है और उसने दो फ्लैट उसके नाम पर कराए हैं, जिनमें से एक नीचे है और दूसरा तीसरी मंजिल पर। एक दिन नीचे वाले फ्लैट में लड़की की रहस्यमय मृत्यु हो जाती है, लेकिन उसकी मृत्यु के कारण का पता नहीं चल पाता। *"लड़की की चुप्पी किसी दार्शनिक के चिंतन–सी स्थिर थी।"* [108]

• बुआजी

यह कहानी एक औरत के जीवन की सच्चाई को दर्शाती है। वह एक पतिव्रता स्त्री के रूप में बुआजी के नाम से पुकारी जाती है, लेकिन वास्तव में वह एक रखैल भी है, साथ ही एक अवैध संतान की माँ भी। उसका विवाह एक विधुर से होता है, पति की मृत्यु के बाद वह एक दिन पति की पहली पत्नी के छोटे भाई के विवाह में जाती है। वहाँ वह पहली पत्नी की माँ द्वारा रोक ली जाती है, लेकिन बाद में उसका संबंध पहली पत्नी के भाई से

स्थापित हो जाता है, जिसके पत्नी और बच्चों के साथ रहते है।

कई बार उसे गर्भपात कराने का दबाव बनाया जाता है, लेकिन वह अंततः एक बच्चे को जन्म देती है। उस पुरुष की पत्नी का बच्चा उसे 'बुआजी' कहता है, परंतु जब उसे सच्चाई का पता चलता है, तो वह उस पर अत्याचार करता है और उसे घर से निकालने की कोशिश करता है। लेकिन बुआजी उस पुरुष को छोड़कर कहीं नहीं जाना चाहती, क्योंकि उसे अपने बच्चे की चिंता होती है कि *"बाबूजी को कौन देखेगा?"* [109] और वह संघर्ष करके अपने बच्चे के साथ रहने का फैसला करती है। मंजुल जी लिखती है– *"ज़रा-से परिस्थिति–परिवर्तन से वही कुलदेवी है और वही कोठे की नर्तकी भी?"* [110]

● आत्महत्या से पहले

यह कहानी एक व्यक्ति के जीवन की विभिन्न पहलुओ को दर्शाती है, जो उसे आत्महत्या से पहले ही रोक देती हैं। पहली बार, जब वह सत्रह वर्ष का था, उसे अपने पिता के तानाशाही व्यवहार से परेशानी होती है, जिसके कारण वह आत्महत्या का पत्र लिखने की सोचता है। लेकिन जब उसे पिता की मृत्यु का समाचार मिलता है, तो उसे दुखी होकर यह निर्णय लेना पड़ता है कि आत्महत्या की बजाय उसे अपने जीवन में सुधार करना चाहिए।

दूसरी बार, जब वह चौबीस वर्ष का होता है, तो उसे दफ्तर में ऊब का अनुभव होता है और उसे फिर से आत्महत्या का पत्र लिखने की सोच आती है। लेकिन इस बार एक बदमाश उसे मारने का प्रयास करता है। इस घटना से वह उठता है और उस बदमाश से लड़ते हुए आत्महत्या की सोच से दूर हो जाता है। वह सोचता है, *"मरूँगा तो खुद, तुम साले मुझे मारने वाले कौन होते हो?"* [111] तीसरी बार पारिवारिक–आर्थिक समस्याओं से परेशान होकर आत्महत्या की केवल कल्पना करता है किंतु पत्नी तथा बच्चों के कारण

आत्महत्या नहीं करता। उसने इस अनुभव से सीखा कि जीवन में समस्याओं का सामना करना और उनसे निपटना बेहद महत्वपूर्ण है।

- **चौराहे के बीच**

यह कहानी नए समाज के पिता–पुत्र संबंधों की वास्तविकता को उजागर करती है। यह कहानी एक पिता और पुत्र के बीच की गहरी दूरी को दर्शाती है। जब बेटा पिता को अपने साथ नहीं रखना चाहता और उसे धर्मशाला में छोड़ देता है, तो पिता को अकेलापन का अहसास होता है। वह चौराहे के बीच खड़ा होकर अपने बेटे की यादों में रोता है।

एक दिन पिता बेटे और पोते से मिलने के लिए सड़क के चौराहे पर खड़ा रहता है कि अचानक बेटे मौत की खबर सुनकर, पिता विलाप करने के लिए वहाँ पहुँचता है तो पुत्रवधू नौकर को उसे वहाँ से हटाने के लिए कहती है। *"सेठ जी ने इसका महीना बाँधा हुआ था, इसी कारण इतना चिल्ला रहा है।...........वाबू से कहना, दान–खाते से इसका नाम न काट दे कहीं!"*[112]

- **बावन पत्ते और एक जोकर**

'बावन पत्ते और एक जोकर' में ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं। इसमें आज के सामाजिक परिवेश में त्रस्त होती मानवीय संवेदनाओं की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति की गई है। *'बावन पत्ते और एक जोकर'* कहानी में एक आधुनिक परिवार के जीवन का एक चित्रण है, जो बच्ची के उपेक्षित होने तथा परिवार के सदस्यों की अलग–अलग व्यस्तताओं को दर्शाता है। पिता समीर की नौकरी की व्यस्तता, माँ शालिनी की क्लब, पार्टी और दोस्तों में व्यस्तता और बच्ची सोनू की अनदेखी और अप्रत्याशितता को प्रतिष्ठित करती है।

शालिनी चाहती है कि बच्ची के दादा–दादी उसेके पास न रहे; क्योंकि वह सोचती

है कि यह उसकी आदतों और शिक्षा को प्रभावित कर सकता है। रात को समीर एक स्वप्न देखता है जिसमे वह सोनू को इक्का और जोकर के रूप में देखता है, जो बादशाह और बेगम का डरावनी मुद्रा देख सोनू डर जाती है जिससे उसकी बेचैनी बढ़ जाती है। और जब बाद्शाह, बेगम का चेहरा बूढ़े दादा–दादी के चेहरे में बदलता है तो वह खुश हो जाता। कहानी के अंत में, यह स्वप्न देखकर समीर भी हँसने लगता है, लेकिन जब सोनू की हृदयविदारक चीख सुनकर सोनू के पास जाता है तो आया कहती है, *"कुछ नहीं, साहेब! बेबी नींद में डर गई होगी। आप जाओ, सो जाओ।"*[113] परंतु समीर उन दोनों को देखता रह जाता है। तो उसे देखने के बाद उसकी प्राथमिकताएं स्पष्ट हो जाती हैं।

मंजुल की कहानियों की बहुत बड़ी शक्ति, कैमरे के लेंस की तरह अपने विषय को फोकस में बनाये रखने की समर्थ है। जहाँ कहानी की संभावना न दिखाई पड़ती हो, वहां भी उसमें कहानीपन पैदा कर लेने का रचनात्मक कौशल उनके रचना संसार को बड़ा परिचित, जीवन्त और विश्वसनीय बनाता है।

2.8 राजी सेठ

राजी जी अपनी कहानियों और उपन्यासों में किसी घटना या स्थिति का केवल वर्णन नहीं करती हैं, बल्कि पाठको का ध्यान उस व्यक्ति की भावनाओं और प्रतिक्रियाओं की ओर खींचती है। चाहे वो प्रेम की कथा हो, सामाजिक मुद्दों का समाधान हो, या काम के दायरे में आगे बढ़ाने की कोशिश हो, राजी जी उन संवेगों को शब्दों में प्रस्तुत करती हैं, जिससे हम उनकी मानवीय अनुभूतियों को समझ सकें।

- **अंतहीन**

राज़ी जी की यह कहानी सरकारी दफ्तरों की व्यवस्था में चल रही कर्मचारियों की

अनुशासनहीनता, अमानवीयता और अधिकारियो से व्यवहारहीनता को दर्शाती है। कहानी में नायक का संघर्ष और सत्य के प्रति समर्पण दिखाया गया है। नायक को टिकट के लिए लंबी कतार में खड़ा रहना पड़ता है, लेकिन उसे अपनी समस्या का हल नहीं मिलता। उसे व्यवस्था में कठोरता और अनुशासन की कमी का सामना करना पड़ता है। वह क्लर्क और स्टेशन मास्टर के सामने बेहद अधीर रहता है, जो व्यवस्था में गड़बड़ी के खिलाफ नहीं उठते। *"मैं स्टेशन मास्टर के पास जाऊँगा। वह स्टेशन मास्टर के पास जाता है, मगर स्टेशन मास्टर भी कहते है दस रुपये के लिए यह झंझट हैं, मैंने फिर कहाँ समस्या मात्र रुपयों का ही नहीं, अपनी भूल न स्वीकारने, अपने कर्तव्य से बचने और शिष्टता की है।"* [114]

कहानी में दिखाया गया है कि जब अनुशासन की कमी होती है और कर्मचारियों में जिम्मेदारी की कमी होती है, तो समस्याएँ बढ़ती हैं। व्यवस्था के नाम पर बेइमानी, लापरवाही और भ्रष्टाचार के मामले दर्शाए गए हैं। कहानी के माध्यम से लेखिका ने स्पष्ट किया है कि समाज में न्याय और अनुशासन की महत्वपूर्णता है। नायक की संघर्षपूर्ण यात्रा और व्यवस्था की बेहाली को दर्शाकर, कहानी में समाज की व्यवस्था की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति को चित्रित किया गया है।

- **तीसरी हथेली**

राजी जी की '*तीसरी हथेली*' कहानी में, नारी की पीड़ा का वर्णन किया गया है, जिसे पुरुष बस रोमांस के लिए उचित समझते है, लेकिन सुरक्षा देने में हिचकिचाते है। कहानी की मुख्य पात्र नंदिता अपने पिता के घर में दुखी जीवन बिता रही है, और उस पीड़ा से बाहर निकलने की कोशिश करती है और उसे प्रेम की तलाश होती है। वह रमण से प्रेम करने लगती है, जो खुद अपने दांपत्य–जीवन में दुखी है। रमण और नंदिता के बीच प्रेम उत्पन्न होता है। नंदिता को खुशी होती है कि रमण उससे प्रेम करता है, लेकिन जब वह

रमण के घर के बारे में सुनती है, तो वह दुखी हो जाती है। नंदिता को इसे स्वीकार करना होता है कि वह रमण की प्राथमिकता नहीं हो सकती।

वे मिलते हैं। नंदिता का मानना है कि रमण को उसे बदलने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। वे अलग हो जाते हैं और रमण अपने परिवार के साथ आगे बढ़ता है। रमण ने नंदिता को समर्थन दिया और उसकी भावनाओं को समझने की कोशिश की लेकिन *"विवाहेतर प्रेम एक ऐसे बिंदु पर पहुँच जाता है जहाँ अलगाव ही नियति बन जाती है। पुरुष स्त्री की भावना को शायद महसूस नहीं कर पाता है।"* [115] इस कहानी में, लेखिका ने असफल प्रेम संबंधों को बयान करते हुए नारी की पीड़ा को जताया है। यह उस समय की प्रतिस्पर्धा का वर्णन करती है जब पुरुष स्त्री की भावनाओं को समझने में असमर्थ हो सकते हैं और जीवन के विभिन्न पहलुओं के बीच अंतर दिखा सकती है।

- **गमे हयात ने मारा**

उनकी प्रसिद्ध कहानी *'गमे हयात ने मारा'* में चन्नी नाम की एक लड़की है जो समाज की परवाह न करते हुए अपने जीवन के छोटे–छोटे क्षणों में उमंग, उल्लास, उत्साह और मौज–मस्ती से जीवन यापन करती है। चन्नी का असली नाम चन्द्रकुमारी गुप्ता था। यह नाम उसे उसकी बुआ से मिला था।

अपनी माँ से उसकी ज्यादा नहीं पटती थी; क्योंकि चन्नी के पैदा होते ही उसका बड़ा भाई हैजा से मर गया था। इसलिए उसकी माँ उसे अत्यन्त बैर भाव से देखती। उसको स्कूल से आने में कभी देर हो जाती तो उसे अपनी माँ से अधिकांशतः डाँट पड़ती या पिटती थी। युवावस्था में कदम रखते ही चन्नी के मन में प्रेम की कलियाँ खिलने लगी। चन्नी को अनाज मण्डी के सबसे बड़े व्यापारी चैधरी चतुर सिंह चंदेल के लड़के नरेन्द्र से प्रेम हो गया।

जब उनके घरवालों को यह बात पता चली तो उनको यह बर्दाश्त नहीं हुआ। उन्होंने

इस रिश्ते को अस्वीकार कर दिया। फिर एक दिन दोनों की मुलाकात हुयी और दोनों ने तय किया कि अब हमारी मदद कोई नहीं कर सकता। अब हमारे मिलन का बस एक ही रास्ता है और वह है मौत। क्योंकि मौत के बाद हमें मिलने से कोई नहीं रोक पाएगा। तय हुआ कि फरवरी के अन्तिम दिन दोनों अपने–अपने घरों में एक निश्चित समय में मौत को गले लगा लेंगे। और फिर फरवरी का वह अन्तिम दिन आया, और नरेन्द्र और चन्नी ने अपने–अपने घर में जहर खाकर अपनी जान देकर सदा के लिए एक हो गये। जाते–जाते नरेन्द्र अपने घरवालों के नाम एक पत्र लिखकर गया। जिसमें उसने स्पष्ट लिखा था कि हमारे प्रेम में बाधा डालने वाले मेरे पिताजी को जरूर दण्ड दिया जाय और हो सके तो मेरी और चन्नी की एक साथ मुक्ति हो। चन्नी ने भी उसी रात को उसी समय संपूर्ण श्रृंगार के साथ अपने प्राणों की बलि दी, और उसकी भी यही इच्छा थी कि दोनों की अर्थी एक साथ उठे।

राजी सेठ द्वारा रचित इस कहानी में ऐसे प्रेमी युगल की प्रेम–कथा, है जिन्हें संसार से कोई सरोकार नहीं, बस अपने मिलन की चिन्ता थी, चाहे वह मिलन इस संसार में हो या इस संसार से परे उस जगह जहाँ उन्हें कोई भी जुदा नहीं कर सकता। साथ ही इसमें समाज के खोखले नियम और उसूलों का भी वर्णन किया गया है, जो भावनाओं से परे संवेगहीन हृदय लेकर के जीवन यापन करते हैं।

- **योग दीक्षा**

कहानी *'योग दीक्षा'* में एक नौकरीपेशा लड़की की दुखभरी कहानी है, जो अपने परिवार की आर्थिक स्थिति के कारण स्वयं को यंत्रणा की चक्की में पीसते हुए पाती है। शारीरिक स्वास्थ्य खराब होने के बाद भी, वह काम करने के लिए मजबूर है। अत्यधिक मेहनत के बाद भी भरपेट भोजन के लिए उसे अपनी माँ के सामने. गिड़गिडाना पड़ता है।

नायिका के ऊपर घर की जिम्मेदारियों का बोझ ऐसे समय पर आता है जब उसके

अपनी शादी करके घर बसाने के दिन थे। वह स्तब्ध हो जाती है जब उसकी माँ उससे कहती है,

> *"अब दीपी सुन्नी के लिए दो–दो चार–चार चींजे बनाने कि फिकर... करा वह सन्न रह गई। और वह? और वह? और वह स्वंय? क्या माँ को उसका कमाना इतना रास आ गया है।"*[116]

उसकी आवाज़ में वह तड़प और विवशता सुन सकते हैं। वह सोचती है कि क्या उसके स्वप्न और इच्छाएँ अब कुछ नहीं हैं? क्या उसके परिवार की माँगों ने उसे उसकी खुद की मानवीयता और स्वतंत्रता से दूर कर दिया है?

वह चिंतित है कि क्या उसकी माँ को अब उसके अनुभवों का कोई महत्व नहीं है, या फिर उसकी महत्वाकांक्षाएँ बस उसकी नियति के तारे हैं?

- **अनावृत कौन**

कहानी *'अनावृत कौन'* में, राजी सेठ जी ने पति–पत्नी के विचारों के भिन्नताओं से उत्पन्न होने वाली समस्याओं को प्रकट किया है। यह कहानी हमें दिखाती है कि जब दो व्यक्ति अलग–अलग विचार और मान्यताओं के साथ होते हैं, तो उनके बीच में तनाव और विवाद उत्पन्न होते हैं।

प्रकाश एक युवा व्यक्ति है जो आधुनिक विचारों के पक्षधर हैं, जबकि उसकी पत्नी परंपराओं और संस्कारों को लेकर चलने वाली हैं। इस भिन्नता के कारण, उनके दांपत्य–जीवन में तनाव और हीनता आ जाती है। प्रकाश चाहते हैं कि उनकी पत्नी सिर्फ उन्हें सोचे और किसी और के बारे में नहीं सोचे, लेकिन इसका परिणाम यह होता है कि उनके बीच

में दरारें आ जाती हैं।

कहानी में एक समय ऐसा आता है, जब वे शिमला घूमने जाते हैं और वह प्रकाश अपनी पत्नी से कैबरे चलने को कहता है, जहाँ नायिका को लगता है कि

> *"केवल मैं ही नहीं... आसपास की ... संसार की सभी स्त्रियाँ अनावृत होती जा रही हैं... एक-एक करके उनके कपड़े झरते जा रहे हैं और... और तुम सब उन्हें देख रहे हो। गड़ाए....वहाशियों की तरह...। कितना घृणित लगाता है। मुझे... यह सब । शेमफूल ! डिस्गास्टिंग!"* [117]

दोनों के विचारों में समानता ना होने के कारण उनमें विवाद होता हैं और तनाव बढ़ जाता है, और वे तुरंत शिमला से वापस आ जाते है। पत्नी के काफी समझौता करने के बाद भी, प्रकाश अनावृत होता जाता हैं।

दोनों में तनाव और दरारें बढ़ती जाती हैं, और अंत में पत्नी मायके चली जाती हैं। इसके बाद भी, राजी सेठ जी ने दिखाया कि पत्नी अपने उतरदायित्व को बखूबी निभाती हैं और अपने ससुर के कहने पर वापस आ जाती है। यह कहानी बताती है कि पुरुषों के अहमी स्वभाव के बावजूद, स्त्री अपने उतरदायित्व को समझकर उसे साहस के साथ निभाती हैं।

राजी सेठ जी ने इस कहानी के माध्यम से बताया है कि पुरुषों और स्त्रियों के बीच अंतर कितना भी हो, नारी अपने पारंपरिक मर्यादा और मूल्य की रक्षा के महत्व को समझती हैं।

2.9 मेहरुन्निसा परवेज़

हिन्दी साहित्य में मेहरुन्निसा परवेज़ जी का महत्वपूर्ण योगदान है। भारतीय समाज में नारी की दुर्दशा, दुख-दर्द, अधिकार-कर्तव्य और जाग्रति को केन्द्र में रखकर हिन्दी

साहित्य को समृद्ध करने वाली लेखिकाओं की पंक्ति में शीर्ष पर विद्यमान लेखिका हैं मेहरुन्निसा परवेज़। उनकी कहानियों में जीवन की समग्रता का बोध स्वतः ही हो जाता है। समकालीन सामाजिक व्यवस्था की रूढियों से मुक्त होने की छटपटाहट उनकी रचनाओं में सहर्ष ही दिखायी दे जाती है। मुस्लिम स्त्रियों की दबी और घुटन से भरी जिन्दगी और उनके दुख–दर्द को परवेज जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से कागज पर जीवित सा कर दिया है। शोषित नारी वर्ग की हर समस्या को अपनी रचनाओं में उन्होंने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से उकेरा है। *'आदम और हब्बा'*, *'बूँद का हक'*, *'अन्तिम चढाई'*, *'टहनियों पर धुप'*, *'गलत पुरुष'* आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

- **त्यौहार**

यह कहानी विभाजन के पश्चात भारतीय मुस्लिम के विभिन्न पहलुओं को दिखाती है जो समुदाय की जीवनशैली, आर्थिक स्थिति, और सामाजिक संकटों को उजागर करती है। शानो के परिवार का अनुभव दिखाता है कि त्यौहारों का महत्व गरीबी और असुरक्षा की स्थिति में कैसे बदल जाता है। त्योहारों का यह मानवीय दृष्टिकोण उनकी आत्मसमर्पण और सहनशीलता को प्रकट करता है। आखिरकार, वे अपनी स्थिति को स्वीकार करते हुए उन लोगों की सूची में शामिल हो जाते हैं जो जकात लेते हैं, जो एक आर्थिक समाधान प्रदान करते हैं।

इस कहानी में लेखिका ने भारतीय समाज की सामाजिक व्यवस्था, विभाजन, और गरीबी के प्रति संवेदनशीलता को विवरणशील रूप से प्रस्तुत किया है। त्योहारों का महत्व उस वक्त बदल जाता है जब व्यक्ति खुद को समाजिक और आर्थिक असुरक्षा की स्थिति में पाता है। डॉ. कीर्ति केसर लिखती हैं–

"मेररून्निसा परवेज की कहानी 'त्योहार' में ईद मनाने के लिए अम्मा के

पास इतने पैसे नहीं हैं कि वह अपनी इकलौती बेटी शानो के लिए कपड़ा बनवा दे और मिठाई ला दें। ग्रामीण समाज जहाँ दयालु, भावुक और मिलजुलकर रहनेवाला है उससे, कई ज्यादा स्वार्थी, लोभी और क्रूर भी हैं।" [118]

- **शनाख्त**

यह कहानी एक दुखद कथा है जो आर्थिक दबाव और मानवता की क्षीणता को उजागर करती है। बेटी और माँ दोनों ही अपने पिता के क्रूर आचरण और शराबी होने का शिकार होती हैं। बेटी जब से बड़ी हुई उसने अपने पिता को नशे में धुत देखा जिसने सदैव उसकी माँ को अपनी काम वासना के साधन के रूप में देखा। अंत में दुर्घटना में पिता की मौत के बाद, पुलिसवाले जब उसकी माँ को पहचान के लिए बुलाते है तब वो शनाख्त से इनकार कर देती है, तब बेटी कहती है कि माँ उस शरीर को नहीं पहचानेगी जो उसे खुले आम नंगा करता था *"माँ, तूने उसे नहीं पहचाना ? वह भूरे चेक का फटा कोट ही तो पहने था।"* [119] जोकि उसके पिता की क्रूरता और उसके परिवार के आर्थिक संकटों को दर्शाता है।

इस कहानी में लेखिका ने मदिरापन और गरीबी के घिनौने रूप को बेहद विवरणशीलता से दर्शाया है। यह कहानी समाज में मूल्यों की खोज, परिवर्तन और सहानुभूति की महत्वपूर्णता को उजागर करती है।

इस कहानी पर चर्चा करते हुए डॉ. कीर्ति केसर लिखती हैं–

"इतना घृणित, इतना हेय, इतना निंदनीय पति भयानक मौत को पाकर भी नारी की करुणा का पात्र बन गया। नारी हृदय की इस करुणा, क्षमा, उदारता, त्याग और सहनशीलता के कारण ही शायद गाँधीजी स्त्री को महान मानते

थे और उसे अहिंसा दर्शन का सच्चा अनुयायी कहते थे।" [120]

• एक और सैलाब

'एक और सैलाब' कहानी में नीलू के संघर्ष और उसकी हार को व्यक्त किया गया है। वह घर और अस्पताल के बीच दौड़–भाग करने में व्याकुल थी, जहाँ उसे अपने बच्चों का ध्यान रखना और पति की सेवा करने के लिए प्रयत्नशील रहना पड़ता था। उसके जीवन का यह समय नीलू को मानसिक रूप से तोड़ देता गया।

एक दिन, उसका पुराना मित्र उमेश उससे मिलने आता है। उमेश अस्पताल में उसके पति को देखने ले जाता है और उसके घर भी जाता है। उमेश को नीलू के बच्चों और घर की हालत देखकर घिन आती है। उमेश कुछ दिन बाद नीलू से मिलता है, तब उसको पता चलता है कि उसके पति की मौत हो गई है, तो उमेश अस्पताल जाकर नीलू को सांत्वना देता है। नीलू उसके पास आकर कहती है. *"उमेश, मैंने ही उन्हें नींद की गोलियाँ ज्यादा दे दी थी। मै मजबूर हो गई थी उमेश। भाग दौड़ करते–करते मैं थक गयी थी। बस इसके आगे प्रश्न न करना।"* [121] जब नीलू अपनी सब समस्याओं को उमेश को बताती है, तो उमेश अवाक रह जाता है और बाद में उससे दूरी बना लेता है, तो उमेश को नीलू के निर्णय को समझने में समस्या होती है। इस परिस्थिति में, नीलू का निर्णय सही था या गलत, यह एक विवादपूर्ण प्रश्न था। नीलू का निर्णय उसकी मानसिक स्थिति के आधार पर समझा जा सकता है, जो उसे एक कठिन और असहज स्थिति में डाल रही थी।

• लाल गुलाब

मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानी *'लाल गुलाब'* एक ऐसी माँ की कहानी है, जिसका बेटा समर छोटी सी उम्र में ही अल्लाह को प्यारा हो गया। उसके अठारहवे जन्मदिन के दिन,

उसकी माँ के मन में यह चिंता बनी रहती है कि आज वह उसकी कब्र पर जाएगी और उसके लिए जो लाल गुलाब लेकर आई है, वह उसे अर्पित करेगी, लेकिन शहर में बारिश और तूफान का मौसम हो गया है, जिससे उसे कब्र पर जाने में मुश्किलें हो रही हैं। माँ की बेकरारी बिलकुल ऐसे दिखाई दे रही है, जैसे वह कब्र से नहीं बल्कि अपने बेटे से मिलने जा रही हो। उसका पति उसे समझाने का प्रयास करता है, *"कब्रिस्तान कैसे जा पाएँगे? वहाँ तो पानी– ही– पानी भरा होगा न ? तो वह एकदम बिफर गई। लगा सारा धैर्य छूटा जा रहा है, पानी बरस गया तो क्या हम बेटे की कब्र पर नहीं जाएँगे ? आज उसका जन्मदिन है। हर दिन की अपनी अहमियत, अपनी महक होती है। उसे दूसरे दिन नहीं किया जा सकता।"* *122*

समर की माँ भोपाल शहर में कब्रिस्तान जाने वाली पहली औरत है। मुस्लिम धर्म में महिलाओं का कब्रिस्तान जाना सख्त मना है। पर वह अकेली ऐसी औरत है, जो कभी भी अपने बेटे के लिए कब्रिस्तान चली जाती है। बहुत सारे लोगों ने इसका विरोध किया, खुदा के कहर से उसे डराने की भी कोशिश की, परन्तु उसने किसी की न सुनी और कब्रिस्तान जाना बदस्तूर जारी रखा।

धीरे–धीरे सभी मुसलमानों ने उसे वहाँ देखने की आदत बना ली। एक माँ अपने बेटे की कब्र पर बस दुआ करने ही तो आती है और उसे क्या चाहिए। बेटे के जीवन के अठारह बरस उसकी जिन्दगी के सबसे सुनहरे पृष्ठ थे। और एक बार फिर पलट कर उसने वो लाल गुलाब देखा जो कि सुर्ख दिखाई दे रहा था। बारिश फिर से शुरू हो गई थी, और वह धीरे–धीरे भारी कदमों से कब्रिस्तान से बाहर की ओर जाने लगी थी। शायद खुदा ने उनके लिए अब तक बारिश को जैसे रोक रक्खा था।

इस मार्मिक कहानी में एक माँ के दुख की पराकाष्ठा का अत्यन्त सुन्दर चित्रण किया गया है, जिसका बेटा छोटी उम्र में ही मर चुका है। लेकिन उस माँ की ममता की कोई सीमा

नहीं है। वह इस आंधी तूफ़ान भरे मौसम में भी अपने बेटे की कब्र पर उसके लिए लाए गये उन लाल गुलाबों को चढ़ाने के लिए आतुर है।

- **बँटवारे की फाँस**

'*बँटवारे की फाँस*' कहानी में भारत–पाकिस्तान के बँटवारे के समय होने वाले साम्प्रदायिक दंगो से पीड़ित लोगों की स्थिति को लेखिका ने व्यक्त किया है। कहानी में मंजु का पति मोहन उससे कहता है कि उसका मित्र पाकिस्तान से यहाँ आ रहा है। अपने पति के मित्र को देखते ही मंजू को चक्कर सा आ जाता है। क्योंकि यह व्यक्ति दूसरा कोई नहीं, बल्कि उसका पहला पति राकेश होता है। मंजु को सारी बातें याद आने लगती हैं कि किस तरह दंगों से बचकर मंजु जान बचाकर मोहन के घर में छिप जाती है। बँटवारा हो जाने पर मंजु मोहन के साथ कोलकता आ जाती है और उससे विवाह कर लेती है। मोहन उसके अतीत से अपरिचित है। लेकिन वर्षो के बाद राकेश को देखकर मंजु स्तब्ध रह जाती है और उसके सामने एक प्रश्न बनकर खड़ा हो जाता है कि *"पति के रहते में दूसरे के पास हूँ। भगवान मुझे इस देश के बँटवारे ने दो पति के सामने बाँटकर रख दिया। आज मेरे सामने दो देवता हैं, किसे पूजूँ?"* [123]

अपने अतीत को भुलाकर मंजु अपनी जिन्दगी से समझौता कर लेती है, क्योंकि वह मोहन के बच्चे की माँ बनने वाली थी। अन्त में मंजु अपने पास रखे राकेश के सामान को सूटकेश में डालकर मोहन के पास रहने का निर्णय लेती है।

विभाजन पर लिखी यह कहानी दिलों की दरारों को हमारे सामने रखती है। बँटवारा

केवल जमीन का ही नहीं होता, अपितु वह हमारा सब कुछ बाँट कर रख देता है।

- **रिश्ते**

'*रिश्ते*' कहानी मुस्लिम परिवार पर लिखी गयी है। यह कहानी घर के सदस्यों की बढ़ती संख्या से आर्थिक दबाव की बढ़ती परिस्थिति के सच को दिखाती है।

कहानी का नायक जावेद जगदलपुर से अपने घर रायपुर आता है। जहाँ उसके अब्बा, अम्मा, तथा नौ भाई–बहनें रहते है। जावेद के अब्बा घर का इतना बड़ा बोझ उठाने के लायक नहीं हैं, और उसकी अम्मा सात बहनों के विवाह के लिए चिंतित रहती है। अपने परिवार में जावेद ही किसी तरह बी.ए. तक पढ़ सका है। काफी संघर्ष के बाद नायक को जगदलपुर में एक विद्यालय में क्लर्क की नौकरी मिलती है। उसके पास घर से जो भी पत्र आते थे, वे केवल पैसे भिजवाने के अतिरिक्त और किसी बात के लिए नहीं होते थे।

वह कभी–कभी सोचता है कि, *"दस–दस बच्चे पैदा करने के लिए किसने कहा था, जब किए तो उनके पालने की भी सोच चाहिए थी।"* [124] अपने घर की दयनीय स्थिति को देखकर वह घबरा जाता है, और वह आठ–दस दिन बाद जगदलपुर लौट जाता है।

इतने बड़े परिवार का बोझ उठाना किसी के लिए भी आसान काम नहीं है, अगर व्यक्ति आर्थिक तौर पर इतना सक्षम न हो तो उसे अपने बच्चों के भविष्य से खेलने का कोई अधिकार नहीं होता। मुस्लिम परिवार में 'बच्चे खुदा की नेमत हैं वाली कहावत परिवारों को तबाह कर रही है। अधिक सन्तानों की वजह से गरीबी और दरिद्रता बनी हुई है। यह कठोर

सत्य लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

- **टूटने से पहले**

मेहरून्निसा जी की कहानी *'टूटने से पहले'* मध्यवर्गीय व्यक्ति की है, जो नौकरी से सेवानिवृत होने के कारण से उत्पन्न अर्थहीनता और भविष्य के प्रति भय को व्यक्त करती है। सुम्मी के पिता को हमेशा एक भय लगा रहता है कि सरकार कहीं सेवानिवृति की आयु अट्ठावन से घटाकर पचपन न कर दे ।

इस बात से वे हमेशा परेशान रहते हैं। उन्हें लगता है कि अभी उनके लड़के उमेश की पढ़ाई पूरी नहीं हुई है और कई पारिवारिक जिम्मेदारियाँ शेष हैं। इसी बीच सुम्मी अपने ससुराल से कुछ दिनों के लिए अपने मायके आती है। जहाँ वह अपने पिता को अत्यंत परेशान और दुःखी पाती है सुम्मी से अपने पिता का यह दुःख देखा नहीं जाता। जब सुम्मी अपने ससुराल वापस जाती है, तो उसके पिता उसे विदा करते समय कहते हैं *"सुम्मी क्या तुम्हें नहीं लगता कि हम टूट चुके है।"* [125]

मध्यम वर्गीय व्यक्ति, जो धन के लिए पूरी तरह से केवल वेतन पर ही निर्भर रहता है, उसके लिए रिटायटमेंट पर आना एक बहुत बड़ी त्रासदी होती है। इस कहानी में लेखिका ने इसी बात को उजागर किया है।

मेहरुन्निसा परवेज़ मानव मन की अन्तः भावनाओं को उकेरने में सिद्धहस्त हैं, और मन की भावनाओं को पाठकों के हृदय तक पहुँचाने का जो प्रयास उन्होंने किया है, उसमें

वह पूर्णतया कामयाब हुई हैं।

2.10 मधु कांकरिया

मधु कांकरिया जी ने अपनी कहानियों का प्रतिपादन बहुत ही सरलता से किया है। मधु जी के प्रसिद्ध कहानी *'संग्रह बीतते हुए'*, *'और अंत में ईशु'*, *'चिडिया ऐसे मरती है'*, *'दस प्रतिनिधि कहानियाँ'*, *'युद्ध और बुद्ध'* आदि इनकी यादगार कहानियाँ हैं, जो समाजिक, मानसिक, और राजनीतिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते विभिन्न दृष्टिकोणों को दर्शाती हैं। यह कहानियाँ नारी–अधिकार, आतंकवाद, और व्यवस्था के खिलाफ विचार प्रस्तुत करती हैं, जिससे उनकी महत्वपूर्णता स्पष्ट होती है।

- **बीतते हुए**

मधु जी की कहानी *'बीतते हुए'* पन्द्रह वर्ष पहले ठुकराए प्रेम को फिर से चाहने वाली मणिदीपा की कहानी है। मणि और उनका पति ट्रान्सफर होकर कोलकत्ता आते है, जहाँ पहुँचकर उन्हें अपने साथ पढ़े इन्द्रजीत की याद आ जाती है जिससे वह प्रेम करती थी। उससे मिलने की इच्छा के कारण मणि इन्द्रजीत को फोन करती। काम की व्यस्तता के कारण वह एक हफ्ते बाद मिलने को कहता है। कॉलेज के दिनों में इन्द्र के नक्सलवादी आन्दोलन से जुड़ने के कारण मणि इन्द्र के प्रेम को ठुकरा देती है।

इस घटना के पन्द्रह वर्ष बीत जाने के बाद उन्हें सही समय पर सही निर्णय न लेने का पछतावा होता है, क्योंकि अब जो ज़िन्दगी उन्हें मिली है, उसमें वह खुश नहीं है। इस खोए हुए प्रेम के बारे में मणि का कथन उचित लगता है – *"खोना पाना कुछ नहीं होता यहाँ.... सब कुछ बीतता जाता है वक्त की मुट्ठी में बंद रेत–सा... आज की दुनिया में सिर्फ*

एक ही चीज़ रह गई है... तरक्की और सब कुछ झड़ रहा है।" [126]

मिलने के दिन मणि इंद्र की प्रतीक्षा करती है, परन्तु पाँच बजने के बाद भी जब वह नहीं आता है तो निराश होकर घर चली जाती है। अगले दिन चपरासी मणि को एक कार्ड देता है जिसमें इंद्रजीत का नाम लिखा था। जिससे मणि को यह पता चलता है कि उसके जाने के बाद वह आया था। इस कहानी के माध्यम से मधु जी यह कहना चाहती है कि जीवन में उचित निर्णय उचित समय पर लेना चाहिए।

- **आर आसवो ना (और नहीं आऊँगा)**

'*आर आसवो ना*' कहानी अपने बच्चों के बीच माता–पिता द्वारा किए गए पक्षपात और उससे पड़ने वाले प्रभाव की कहानी है। यह गोपी नामक एक लड़के की कहानी है जो कि बहुत ही कुरूप और असुंदर था। जब उसकी उम्र पाँच साल की थी, तब उसके परिवार में एक नयी सदस्य के रूप में प्रियंका, का जन्म हुआ। प्रियंका सुंदर और होशियार थी, जबकि गोपी बुद्धिमान नहीं था। गोपी सरकारी स्कूल में पढ़ता था, जबकि प्रियंका कॉन्वेंट स्कूल में थी। प्रियंका को नृत्य का शौक था और गोपी को फुटबॉल और चित्रकारी का शौक था। उसके माता–पिता ने प्रियंका को नृत्य सिखाया लेकिन उसकी इच्छाओं पर ध्यान नहीं दिया। एक दिन जब प्रियंका नृत्य की तैयारी कर रही थी, और चित्र बना रहा था उसी समय प्रियंका से गोपी को धक्का लग गया जिसके कारण उसके चित्र पर रंग गिरा गया। इसके बाद, गोपी ने प्रियंका को मारा जिसके कारण माता पिता ने उसकी बहुत पिटाई की।

उन्हें पढ़ने के लिए घर में एक शिक्षक नियुक्त किया गया था, लेकिन शिक्षक का रवैया भी कठोर था। जिससे तंग आकर गोपी ने शिक्षक के हाथ काट लिया। पढाई के अत्यधिक दबाव के कारण तनाव के चलते, गोपी का स्वास्थ्य भी बिगड़ गया जिसके कारण वह परीक्षा ठीक से नहीं दे पाया। परीक्षा हॉल में नींद आ जाने के कारण पूरा पेपर

नहीं लिख पाया और परीक्षा के आखिरी घंटे में बगल में बैठे छात्र की कॉपी खीचने के कारण उसे परीक्षा कक्ष से बाहर निकल दिया गया। जाते समय बेंच पर आर आसवो ना (और नहीं आऊँगा) लिख कर चला गया, और घरवालों को मुँह दिखाने लायक न होने के कारण उसने गंगा में कूदकर आत्महत्या कर ली। यह कहानी हमें यह सिखाती है कि माता–पिता को अपने बच्चों पर ज्यादा दबाव नहीं डालना चाहिए और समान रूप से उनके साथ व्यवहार करना चाहिए– *"एक ही घर में एक को प्रचण्ड प्रतिभासंपन्न एवं दूसरे को उतना ही मन्द, बेकाबिल समझा जाना खतरनाक है। अति सर्वत्र वर्जयेत।"* [127]

- **चिड़िया ऐसे मरती है**

इस कहानी में मन की कोमल अनुभूतियों के हनन को प्रस्तुत किया गया है। कहानी का नायक विजय अपने दोस्तों को अपनी कहानी सुना रहा है। उसने बताया कि वह एम.ए की पढ़ाई के बाद नौकरी की तलाश में था और उसी दौरान वह रेश्मा से मिला, और वह उससे प्यार करने लगा। वे दोनों एक–दूसरे के बिना जी नहीं सकते थे। उसी बीच माँ की बीमारी के कारण रेशमा के पिता उसकी शादी कराना चाहते थे। रेशमा विजय के साथ भागने को तैयार थी लेकिन विजय छह महीने का समय मांगता है। इसी बीच रेशमा की शादी हो जाती है। शादी के कुछ वर्षो बाद जब वे मिलते है, तो उसे पता चला कि रेश्मा एक बच्चे की मां बन चुकी थी और उसकी दुनिया उस बच्चे के इर्द गिर्द घूमती है, और वह विजय पर ध्यान न देकर बच्चे के लिए कुछ सामान लेने दूकान में चली जाती है। *"कैसे लहरों के साथ दौडने वाली कविता, स्वप्न और सौंदर्य में ही विचरण करने वाली एक खरगोश लड़की सिर्फ दाल–रोटी की ही होकर रह गई।"* [128] विजय को इस बदलाव का जवाब मिला कि

कभी–कभी जीवन में कोमल अहसास खो जाते हैं, जैसे उसने रेश्मा को खो दिया था।

• नंदीग्राम के चूहे

मधु जी की प्रसिद्ध कहानी *'नन्दीग्राम के चूहे'* भूमि अधिग्रहण की समस्या पर विचार करनेवाली कहानी है। इस कहानी में *'सर्वहारा फकीरी से चुनिंदा अमीरों में प्रत्यावर्तन'* का वर्णन किया गया है। यह कहानी भवानी प्रसाद मिश्र जी की कविता की इन पंक्तियों से होती है।

> *"फूल को बिखरा देने वाली हवा/कौन कहता है चलनी नहीं चाहिए।*
>
> *समूचा जंगल जला देने वाली आग/कौन कहता है लगनी नहीं चाहिए।"* [129]

इस कहानी में चूहा सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है और बिल्ली अमीर वर्ग का प्रतीक है। इस चूहे–बिल्ली की दौड़ में अमीर लोग अपने जेब भरने के लिए सर्वहारा वर्ग का शोषण करते है, और इसी का उदाहरण है नंदीग्राम के सेनाचूडा गाँव में हुआ भूमि अधिग्रहण। इस कहानी में मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य की औद्योगिक नीति के कारण किसानों की खेती की भूमि के जबरदस्ती अधिग्रहण करने के विरोध में अभिजीत, रेनु दी और दीपंकर को अलीपुर सेंट्रल जेल में जाना पड़ा। जेल में उनका मिलन बहुत से कैदियों से हुआ। जिनमे से शिबू नाम का एक कैदी आधी रात में उनके पास आकर अपने जीवन के बारे में बताने लगा कि वह एक मिल में काम करता था जो बहुत अच्छे से चल रही थी, इसी बीच मिल के मालिक ने मिल की जगह शॉपिंग मॉल बनवाना चाहा। मजदूर यूनियन इसके खिलाफ था जिसके कारण मिल मालिक ने मज़दूर यूनियन नेता को मरवा दिया। मज़दूर यूनियन नेता शिबू का दोस्त था। धन की लालच में कानून भी मज़दूरो के खिलाफ था। इसी कारण शिबू के मन में बदला लेने की इच्छा हुई और उसने मिल मालिक की हत्या कर डाली। *"हाँ, मैंने एक*

सूअर को मारा था।" वह फिर संजीदा हो कहने लगा, "नहीं सर जी, मैं गलत बोल गया, सुअर तो धरती की गंदगी को सफाचट करता है। फिर सुअर तो देखने में सुअर लगता है, वह किसी को धोखा नहीं देता। मैंने जिसे मारा वह तो धरती पर गंदगी फैला रहा था, पर देखने में वह सुअर नहीं सुदर्शन लगता था। दरअसल मैंने एक नरभक्षी को मारा।" [130] शिबू की कहानी सुनकर अभिजीत को लगा कि यह भी एक चूहे-बिल्ली का खेल है, जिसमे अंतर सिर्फ इतना है कि चूहे ने एक बिल्ली को मार डाला है। लेकिन हम लोग कुछ नहीं कर पा रहे है। जेल में जाते वक्त अभिजीत यह समझ गया कि ऐसे मिल मालिकों को जड से उखाड़ फेंकना उनका जीवन लक्ष्य है।

- **भरी दोपहरी के अँधेरे**

'*भरी दोपहरी के अँधेरे*' एक दुखद कहानी है, जो धर्मगुरुओं की अमानवीय व्यवहार को बयान करती है। इस कहानी में लेखिका मधुबन गाँव में मंदिर के दर्शन के दौरान डोलीवालों की कठिनाई देखती है। मंदिरों के इस प्रदेश में डोलीवाले अपनी मुश्किलों से लड़ रहे हैं, उन्हें अपने कार्य का उचित वेतन भी नहीं मिल रहा है और इस प्रदेश में अनेक डोली वाले रात में भी डोली के लिए यात्रियो की प्रतीक्षा करते रहते हैं। लेखिका को यह देखकर दुख होता है कि डोलीवाले अपने परिवारों को पालने के लिए मेहनत कर रहे हैं, लेकिन उनकी स्थिति बेहद खराब है। पहाड़ी से नीचे उतारते समय लेखिका ने देखा की एक डोलीवाला चक्कर खाकर गिर गया और घायल हो गया तो लेखिका ने मुनि से उसके मदद मांगने की कोशिश की, तो डोलीवालो ने उसे बताया कि यदि प्रबंधकों को पता चला तो उनकी रोजी-रोटी खतरे में पड़ सकती है।

इस कहानी से स्पष्ट होता है कि धर्मगुरुओं और मंदिर प्रबंधकों को साधारण लोगों

के संघर्षों और कठिनाइयों के प्रति जागरूक होना चाहिए। उन्हें समझना चाहिए कि धर्म का असली अर्थ है सेवा और सहायता, न कि अमानवीय व्यवहार और उत्पीड़न। धर्मगुरुओं और मंदिर प्रबंधकों की अमानवीयता पर लेखिका का कथन सार्थक लगता है कि – *"शायद इसी कारण देवताओं की उस नगरी में सबके भीतर के देवता सोए हुए थे।"* [131]

- **युद्ध और बुद्ध**

यह एक संवेदनशील कहानी है, जिसमे फौजी बननेवाले एक युवक और उसके फौजी जीवन में घटने वाली घटनाएँ वर्णित है। फौज में भर्ती होने से पहले राष्ट्र की एकता, अखण्डता और गरिमा की रक्षा करना ही हर फौजी का सपना होता है। बाहर से देखने पर फौजी जीवन बहुत अच्छा दिखता हैं, परन्तु अंदर घुसते ही समझ आता है कि मानव की कोमल भावनाए कैसे टूट जाती हैं। विशाल अपने फौजी जीजू से प्रेरणा पाकर 18 वर्ष की आयु में फौज में प्रवेश लेकर गुड़गाँव में अल्फा कंपनी का कमाण्डर बनने के बाद उसकी पोस्टिंग एक अशिक्षित और गरीब गाँव में होती है, जो आतंकवादी तैयार करने का उचित इलाका है। एक ऑपरेशन के चलते विशाल हकीम अली कबीर बनकर गाँव के लोगों से घुल–मिल जाता है, और इस प्रकार वह शीघ्र ही उन लोगों के दिल जीत लेता है, जिससे गाँव के हर कोने की अच्छी जानकारी उसे हो जाती है। एक दिन विशाल को खबर मिलती है कि गाँव के एक घर का बेटा जिहादी बन गया है।

जिहादी जमील का पता लगाने के लिए विशाल अन्य फौजियों के साथ उसके घर जाया करता था। फौज और पुलिस ने मिलकर जमील के घरवालों को प्रताड़ित किया, प्रताड़ना से बचने के लिए उसकी माँ ने जमील का पता फौजियों को बता दिया। एक दिन घर आते जमील पर गोली चलाकर उसे मार देने के बाद भी उसके घरवालों को यातनाएँ दी जा रही थी जिसकी शिकायत विशाल ने अपने सीनियर ऑफिसर से शिकायत की तो उससे

कहा गया कि 'एक अच्छा फौजी बनने के लिए युद्ध और बुद्ध साथ–साथ नहीं होना चाहिए'। इस ऑपरेशन के सफल होने पर विशाल और उसके साथियो को बधाइयाँ मिली। लेकिन विशाल का मन अशांत था वह जमील की माँ और उसके परिवार के बारे में सोचकर चिंतित रहता था। कुछ दिनों बाद वह उसके घर में गया। विशाल को देखते ही जमील की माँ ने पूछा कि कैसे हो। इसपर विशाल उन्हें आँख उठाकर देखने में भी हिचकिचाता है। विशाल देखता है की जमील की माँ बीच–बीच में लेमनचूस गिनती है, और पूछने पर बताती है कि *"उन्हें जमील ने छुआ था। बहुत पसंद थीं उसे ये। पूरी दस थीं। तुम्हें उसके आने की खबर देने के बाद ही मैं बाजार से उधार लाई थी इन लेमनचूसों को।" उनकी आंखों में यादों के चिराग जल उठे। होंठ कांपे। आंखें किसी अदृश्य को देखने लगीं। एक बोझिल चुप्पी। मेरी आंखों में फिर वही दृश्य कौंध गया... चादर में लिपटा मां का लाड़ला जमील। "क्या जमील ने खाई?" पंख कटी चिड़िया सी वह फड़फड़ाई। इसमें से दो जमील खा गया।"* [132] इतना कहकर एकाएक जमील की माँ हिचकियां ले रो पड़ी। ये सब देखकर विशाल विचलित होकर इस उम्मीद के साथ वहाँ से निकला कि मन की कोमल भावनाओं को बचाने के लिए कुछ करना होगा।

मधु कांकरिया संवेदनशील और मानवीय विचाराधारा से युक्त एक सशक्त कथाकार हैं। उनकी कथाभूमि, संवेदना और कथा–दृष्टि पर मन्थन किया जाय तो उनकी कहानियाँ पाठक के हृदय में विचार और संवेदना का ऐसा ज्वार पैदा करती हैं कि वह सब कुछ भूलकर बस कथा में ही खो जाता है।

2.11 अलका सरावगी

अलका सरावगी ने जीवन के विभिन्न विषयों पर कहानी लिखकर अपने कथा साहित्य को समृद्ध किया है। अलका सरावगी ने नारी जीवन की विभिन्न समस्याएं, सामाजिक, आर्थिक, दाम्पत्य–जीवन–संबन्ध, राजनीतिक, महानगरीय जीवन एवं बदलती

हुई जीवन शैली आदि विषयों को लेकर कहानियाँ लिखी हैं।

- **कहानी की तलाश में**

यह कहानी एक ऐसे सेवानिवृत्त व्यक्ति की कहानी है, जिसने अपने जीवन को बहुत अच्छे तरीके से जिया है, और उसे जिंदगी से कोई शिकायत नहीं है। सेवानिवृत्त होने से पहले वह सोचता है कि वह आगे आने वाले समय में अपने खालीपन को कैसे दूर करेगा और अपना समय कैसे व्यतीत करेगा। फिर वह सोचता है कि सेवानिवृत्ति के बाद उसके जीवन के जो पहलू उससे छूट गए उन सभी को वह देख सकेगा।

नायक के मकान में एक युवती रहती है, जो कहानी लिखती है। जिस पर समय की कमी के कारण नायक ने पहले कभी ध्यान नहीं दिया था, लेकिन सेवानिवृत्ति के बाद नायक की रुचि उस युवती के प्रति बढ़ गई। वह उस युवती के पीछे जाकर देखता है कि वह अपने हाथ में फाइल लेकर उसके मकान से थोड़ी दूरी पर स्थित एक अंधी गली में जाती है। *"अंधी गली का अर्थ ऐसी गली है जिसमें से आप किसी और गली में नहीं जा सकते, आपको उसी गली में लौटना होगा।"* [133] साधारण व्यक्तित्व वाला नायक उस युवती से प्रभावित होता है, लेकिन उससे बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पाता।वह युवती सभी से बातें करती है, लेकिन नायक की तरफ वह ज़रा भी ध्यान नहीं देती, जिस कारण उसे बहुत गुस्सा आता है।

> *"कई बार मुझे खीज होती है कि वह खुद ही मुझसे बात क्यों नहीं करती। मैंने देखा है कि वह मकान के दरबान से, लिफ्टमैन से, खेलते हुए बच्चों से प्रायः हर परिचित से बातें करती है और जिन्हें नहीं जानती, उन्हें भी बहुत दिलचस्पी से देखती है। मुझे लगता है कि वह ज़रूर कहानियों की तलाश में है। उसने पहले–पहले तो कई बार मेरी तरफ भी दिलचस्पी से*

देखा था, पर अब उसकी मुझसे कोई दिलचस्पी नहीं रही।" [134]

इस कहानी के अंत में नायक यह जान जाता है की युवती कहानी लिखती है, और वह उन्हीं से बातें करती है, उन्हें ही देखती है, जहाँ उसे कहानी मिलती है। नायक के पास कोई कहानी नहीं है जिसके कारण वह उसमें दिलचस्पी नहीं रखती। इस कहानी का विषय अत्यंत गंभीर है, जो इसे उद्देश्यपूर्ण और सार्थक बनाता है।

- **टिफिन**

'*टिफिन*' कहानी सारिका, उसकी दादी माँ और उसकी चार सहेलियाँ विद्या, जया, रश्मि और अरुणा की कहानी है। सारिका और उसकी सहेलियाँ सभी ग्यारहवीं कक्षा की छात्रा हैं। माता–पिता की अपेक्षा सारिका अपने मन और स्कूल की सभी बातें अपनी दादी को बताती है। उसकी दादी भी उसके लिए मित्र के समान है। किशोरावस्था में अपने कोमल और भावुक स्वभाव के कारण उसे हमेशा कोई न कोई समस्या होती ही रहती है, जिसे वह अपनी दादी से साझा करती है।

इस कहानी में '*टिफिन*' का सम्बन्ध बन्द डिब्बे से है अगर '*टिफिन*' खुले नहीं तो उसका आना कोई महत्त्व नहीं रखता। सारिका अपनी दादी से कहती है *"विद्या के पास हर समय रुपये रहते हैं। उसे टिफिन लाने की भी कोई ज़रूरत नहीं है, कैंटीन में चली जाती है और जो मन होता है, खरीदकर खा लेती है। कितनी अच्छी है उसकी मम्मी।"* [135] सारिका को लगता है कि उसकी माँ की तरह ही अन्य लड़कियों की माँए भी भी कम या ज्यादा पैसे अवश्य देती होंगी, पर क्या 'जया' इतनी गरीब है कि *'वह तो भूल से भी कभी एक रुपया नहीं लाती।'* यह बात सारिका अपनी दादी से पूछती है। कुछ न कुछ दिक्कत होगी, पर क्या

माता–पिता रुपये देने से अच्छे हो जाते हैं।

'टिफिन' कहानी में अलका जी ने नारी एवं बाल मन का चित्रण किया है। बालकों के मन में किसी न किसी प्रकार का प्रश्न और उत्तर चलता रहते है। लेखिका ने सारिका की जिज्ञासाओ का वास्तविक चित्रण कर बाल मन को एक नया विस्तार दिया है।

- **एक व्रत की कथा**

'एक व्रत की कथा' एक युवती की कहानी है जो पूजा–पाठ और व्रत–त्योहारों में कोई विशेष श्रद्धा नहीं रखती है। वह अपने परिवार में पूजा–पाठ के लिए डाँट खाती है, लेकिन उसका पूजा पाठ में मन नहीं लगता। उसने बचपन में ही अपनी माँ से सुना है कि औरतों को पुरुषों से पहले नहीं खाना चाहिए, यह उन्हें पाप का भागी बना देता है। लेकिन वह इन बातो पर विशवास नहीं करती। उसका मानना है कि भूख लगे तो खाना ही धर्म है, चाहे वह औरत हो या पुरुष।

ससुराल में भूख लगने पर वह किसी की परवाह नहीं करती और सीधे खाना खा लेती है। उसकी सास भी पति और पुत्रों के बाद ही खाना खाती हैं। उसकी सास भी उसे सीधे मना नहीं करती और उसे पुराने तरीके से बताती कि औरतों का धर्म ऐसा होना चाहिए। बचपन से ही कठोर व्यंग्य सुनने के कारण इन बातो को सुनने की अभ्यस्त हो गई है। उसे लगता है कि *"बहस करना सिर्फ बहस–प्रतियोगिता में ही अच्छा समझा जाता है, बाकी तो सबकी नज़र में इससे बुरी कोई आदत हो ही नहीं सकती है। चाहे वे स्कूल की टीचर हों या माँ–बाप या पति या सास–ससुर।"* [136] बहस करने से बचने के लिए ही औरतें सभी अन्याय सह लेती हैं। वह सोचती है कि व्रत, त्योहार, और पूजा–पाठ केवल औरतों को व्यस्त रखने और उनके विचारों को नियंत्रित करने के लिए हैं।

लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से यह दिखाया है कि पूजा–पाठ और व्रत करने

की श्रद्धा मनुष्य की आस्था और विश्वास पर निर्भर है।

• जोड़ घटाव

'जोड़–घटाव' कहानी में सुधा एक स्नातकोत्तर छात्रा है जो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई है। कहानी की शुरुआत में, सुधा, सुबोध जी और मोहन जी एक रेस्तरां में बैठे हुए हैं और बातें कर रहे हैं। सुधा शांत अवस्था में बैठी हुई सुबोध जी और मोहन जी की बातें सुन रही हैं। मोहन जी फक्कड़ प्रकार के व्यक्ति हैं और वे किसी कॉलेज में लेक्चरर हैं। वह सुधा के विषय में सुबोध जी से बातें कर रहे हैं। सुधा से कई बार कहते है कि, *"तुम यहाँ के बारे में कुछ नहीं जानती न... इसलिए तो कहता हूँ कोई काम पड़े, तो हम जानते हैं। हम लोग सबकी नस–नस पहचानते हैं और उसे दबाना भी जानते हैं।"* [137]

एम.ए. में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने को कारण सभी सुधा पर संदेह करते है। और उस पर आक्षेप लगाते है। इसी संदेह की दृष्टि के कारण उसके खिलाफ दुर्व्यवहार की कोशिश की जा रही है। इसी कड़ी में, मोहन जी कहते हैं कि *"लोग इससे क्यों जलते हैं सुबोध, मेरी समझ में नहीं आता। इतनी होनहार लड़की के बारे में इस तरह की बातें सुनकर मुझे दुःख होता है। हद है, कितना गंदा माहौल होता जा रहा है इस युनिवर्सिटी का। इसका एम.ए. में फर्स्ट क्लास क्या आया, लोग किस–किस तरह की बातें कर रहे हैं।"* [138]

जोड़–घटाव कहानी का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय–जगत की सच्चाई को सामने लाना है। इस कहानी के माध्यम से, लेखिका भावी पीढ़ी के युवाओं को विश्वविद्यालय के प्रति उनकी विचारधारा को सही दिशा में ले जाना चाहती हैं। वह यह सुनिश्चित करना चाहती हैं कि विश्वविद्यालय की वास्तविकता को समझाकर उन्हें सावधान और समझदार बनाया

जाए।

- **दूसरी कहानी**

इस कहानी में लेखिका ने उन सभी माता–पिता की कहानी बताई है जिनके बच्चे किसी न किसी मानसिक रोग में हैं या फिर मानसिक रूप से अक्षम हैं। यह कहानी उनकी पीड़ा और मनोदशा को प्रस्तुत करती है, और लेखिका ने इस क्षेत्र में एक नया पहलू प्रस्तुत किया है, जो कहानी को पुराने ढांचे से अलग बनाता है।

यह कहानी अपर्णा और अजित नामक पति–पत्नी की हैं। उनका एक ही बेटा है जिसका नाम सुदर्शन है। सुदर्शन एक मानसिक रूप से विक्षिप्त बच्चा है, जिसे डॉक्टरों ने '*मेंटली रिटार्डेड*' कहकर परिभाषित किया है। अपर्णा और अजित कभी भी यह स्वीकार नहीं करना चाहते कि उनका बच्चा विक्षिप्त है, और वे उसे सुधारने के लिए प्रयासरत रहते हैं। अजित की हिम्मत कई बार टूट जाती है, लेकिन अपर्णा हमेशा हिम्मतवान रहती है और संघर्ष करती रहती है।

उसका एकमात्र लक्ष्य यह है कि वह सुदर्शन को स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाएं, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो। वह अपने बेटा से बहुत प्यार करता है। *"अपर्णा एक कहानी लिखना चाहती है। पिछले पन्द्रह वर्षों से अपने जीवन की पहली और अन्तिम कहानी"* [139] नौवें साल में लिखी। इस कहानी में, अपर्णा ने महसूस किया कि माँ–बेटे की यह कहानी दुख से भरी हो गई है। सुदर्शन उनके खुशी का कारण है, लेकिन उसकी बीमारी ने उनके जीवन को दुख का सागर बना दिया है। इस कहानी में, अपर्णा ने समाज को घुसने नहीं दिया। कहानी का अंत सुखद है और कहानी अज्ञात खुशी के साथ समाप्त होती है, लेकिन अपर्णा जानती है कि यह आनंद कितने दिनों तक रहेगा? वह यह भी जानती है कि दुख

फिर से उसके जीवन में आ सकता है और चुपके से उसके जीवन को अस्थिर बना सकता है।

- **ये रहगुज़र न होती**

यह कहानी एक संयुक्त परिवार के बारे में है, जिसके मुखिया एक वृद्ध व्यक्ति हैं। इस परिवार में उसके तीन बेटे–बहू, पोते–पोतियाँ, पत्नी, और बहन सभी रहते हैं। संयुक्त परिवार में अगर मुखिया न्यायप्रिय, समानभाव रखने वाले, शांत और स्थिर बुद्धिमान, साफदिल और ऊपर से कठोर परंतु भीतर से कोमल दिलवाला नहीं हो तो परिवार में कई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यह कहानी एक सामान्य वृद्ध व्यक्ति की जीवन–कथा है, जिसे लेखिका ने अद्वितीय तरीके से प्रस्तुत किया है।

कहानी का मुख्य पात्र इस संयुक्त परिवार के मुखिया की पोती है, जो अपने डेढ़ साल के बच्चे के साथ काफी समय बाद अपने छोटे भाई के बुलाने पर मायके आई है। जब वह अपने पुराने, जर्जर मकान में प्रवेश करती है, तो वह देखती है कि उसके बाबा ठीक वैसे ही बैठे हुए हैं, जैसे उन्हें उसने बचपन में देखा था। वह बाबा की अनोखी बुद्धि के कारण उनके सामने नहीं आना चाहती, लेकिन उसके पास भीतर प्रवेश करने के लिए कोई रास्ता नहीं था। बाबा संयुक्त परिवार के मुख्य सदस्य थे और हैं।

पोती इतने समय बाद अपने बच्चे के साथ यहाँ आई है, उनका ध्यान इस बात पर नहीं जाता और वे बड़े ही व्यंग्यात्मक और क्रोधपूर्ण ढंग से उससे बात करते है। वह अपने बाबा से पूछती है तो बाबा का जवाब कुछ इस तरह का होता है – *“कैसे हैं बाबा? ठीक है बाबा। अभी तक मरे नहीं। बैठे हैं बाबा अभी तक साले सारे बेईमानी को देखने, जो यहाँ*

से जा–जा कर बड़े साहब बन गये हैं। कोई आया पूछने कि कैसे हैं बाबा।" [140]

इस कहानी में, संयुक्त परिवार की विभिन्न समस्याओं को बताया गया है, जिन्हें परिवार का मुखिया संभालता है। उसका काम परिवार के सभी सदस्यों को एक साथ रखना, उनके सुख–दुःख में साझेदारी करना, उनकी समस्याओं का समाधान करना, सभी को समानता से देखना है। अगर मुखिया में ये गुण नहीं होते, तो संयुक्त परिवार में समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

- **एक पेड़ की मौत**

इस कहानी में एक वृक्ष के प्रति मानव के प्रेम की अभिव्यक्ति का निरूपण किया गया है। कहानी का प्रधान नायक जगन्नाथ एक प्रकृति–प्रेमी है। वह अपने जीवन की घटनाओं को किस्से कहानियों के रूप में लोगों को सुनाने के लिए मशहूर हैं। वह स्वयं ही अपनी कहानी के माध्यम से लोगों को बताता हैं कि प्रेम ही एक सच्ची अनुभूति है, जिसमें हमारा 'स्व' किसी दूसरे में विलीन हो जाता है, और फिर हमारा अहंकार मिट जाता है। नायक को एक पेड़ से प्रेम हो जाता है और एक दिन वह पेड़ काट दिया जाता है। जिससे नायक उदास होकर खाना–पीना भी छोड़ देते हैं। इस प्रकार यह कहानी मानवीय संवेदनाओं के उच्चतम स्तर को प्रदर्शित करते हुए पर्यावरण संरक्षण का भी संदेश देती है।

अलका सरावगी की कहानियाँ प्रत्यक्ष रूप से तनाव और शोक का मार्मिक चित्र खींचती दिखाई देती हैं। इनकी कहानियों में साधारण से असाधारण का मर्म छिपा है।

2.12 नासिरा शर्मा

नासिरा शर्मा एक प्रगतिशील मानव धर्मी लेखिका हैं। वह देशकाल, धर्म, जाति,

संप्रदाय के भेदों से ऊपर उठकर इन्सान के दुःख–दर्द और उत्थान–पतन को आकार देने वाली कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। जिन्दगी के हर पहलू पर निगाहें रखना और उन्हें करीब से महसूस करना, व्यास सम्मान से सम्मानित नासिरा शर्मा की कहानियों की प्रमुख विशेषता है। नासिरा जी किरदारों के साथ–साथ सहज सरल भाषा में हर कथानक की एक खूबसूरत तस्वीर खींचती नजर आती हैं। उनकी कहानियाँ सामान्य जीवन से लेकर रईस घरानों के यथार्थ का चित्रण करती हैं।

- **पत्थर गली**

'*पत्थर गली*' कहानी की मुख्य पात्र फरीदा है जो मुस्लिम सामंती परिवार में पली बढ़ी है। फरीदा हर प्रकार से योग्य है फिर भी वह सही ढंग से अपनी इच्छा से उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती, क्योंकि उसका बड़ा भाई संकुचित मानसिकता से ग्रस्त है और माँ, जो उससे बहुत प्यार करती है, पुरानीं सोच वाली महिला है। ये दोनों ही उसका जीवन उजाड़ देते हैं। फरीदा अपने ही परिवारवालों से शोषण का शिकार होती है। वह सोचती है –

> *"नफरत की चिता में जलती, उसके शोलों में तपती–झुलसती फरीदा ने बीस साल इस घर में गुजार लिये थे। उसको खुद से बातें करने की आदत हो गयी थी । उसके अंदर ही वह उदास परी उसके अधिक निकट आ गयी थी। अब तो वह स्वयं उसकी जगह हँसती–रोती और तड़पती थी। यह उदास परी बचपन में जाने कब उसके दिल में घुसकर बैठ गयी थी और आज वही उसकी जिगरी दोस्त बन गयी है....... खुद फरीदा को इस घर में लगता था कि जाने उसकी आत्मा कहाँ, किस पथरीली गली में भटक रही है, जहाँ द्वार नहीं है। बस सफेद, चिकने बड़े–बड़े पत्थर हैं। पत्थर की*

गली और पत्थर के कूचे दर कूचे है।" [141]

फरीदा अपने परिवारवालों का विरोध करती है लेकिन इसका कुछ परिणाम नहीं निकलता। इस कहानी में अपने बच्चों का शोषण करने वाले परिवार के विरुद्ध चल रही चेतना के संकेत मिलता है–

"जिन्नात की वास्तविकता क्या है जलते बदन की आग, घुटती, मरती, दम तोड़ती लड़कियाँ इन्हीं अंधविश्वासों के कृत्रिम छीटों से बुझाती हैं। उसकी तुलना आह! यह घर बैठी औरतें कुछ नहीं समझती हैं। इनका ओढ़ना–बिछौना धर्म है, अंधी मान्यताएँ हैं........ मैं नाहिद खुदैजा की तरह भी नहीं ... मुझे आजादी दो... मुझे फरीदा बनने दो। मुझे मेरी तरह जीने दो। ... मुझे सारी जंजीरों से, इस कैद से आजाद कर दो... मुझे आजाद कर दो ... आजाद?" [142]

- **बावली**

'*बावली*' कहानी की नायिका सलमा पानी से भरी बावली के रूप में दिखायी गयी है। सलमा के पिता की असमय मृत्यु के कारण सलमा का जीवन अभावों और उपेक्षाओं में गुजरा। खालिद के साथ शादी होने के बाद सलमा को अपने घर के लोगों की आत्मीयता प्राप्त हुई। सलमा एक अध्यापिका थी। शादी के सात साल बाद भी जब उसके कोई संतान न हुई, तब खुद सलमा ने खालिद की शादी सुहेला नामक लड़की से तय करा देती है, फिर वह सोचती है कि–

"शादी के बाद पहली बार जिंदगी में अपने पैरों के नीचे मैने सख्त मजबूत जमीन पायी थी। अपने घर, अपने लोगों का सुख पहली बार मिला था। प्यार और विश्वास ने मुझे जीना सिखाया था.........सुहेला मेरी सौत

बनकर क्या जुल्म ढायेगी मुझ पर, खालिद का बर्ताव कैसा होगा? क्या मैं खालिद को बँटते देख पाऊँगी?" [143]

सलमा एक ओर खालिद को दूसरी शादी के लिए तैयार करती है और दूसरी ओर अपने अंधःकारपूर्ण अधूरे जीवन की यातना की आशंका से डरती भी है।

खालिद और सुहेला की शादी के समय रात को सलमा चक्कर खाकर गिर जाती है। शादी में आई एक लेड़ी डॉक्टर सलमा की जाचँ करती है तो पता चला कि सलमा माँ बनने वाले है। इस सुखद अंत के साथ कहानी समाप्त होती है। कहानी के अंत में इस प्रकार का वर्णन है –

"सलमा ने आगे बढ़कर खालिद को कुर्सी दी। फिर खामोशी से सामने बैठ गयी। खालिद के शाने थके और निढ़ाल थे। सलमा के दिल में रह–रहकर एक ही बात उठ रही थी मैं तो एक बावली ठहरी, प्यार के रिश्तों के नाम पर अपने को बाँटने चली...... मैं पानी से भरी बावली कहाँ जाऊँगी ? मुझे तो अंतिम साँस तक खुले आसमान और जमीन के सीने में पैसना है। मरुभूमि में जिस तरह कभी–कभी बारिश बावली के ऊपर मुँह तक पानी से भर देती है।" [144] *यहाँ लेखिका ने सलमा और खालिद के आत्मीय संबंधों को सक्षम रूप से प्रस्तुत किया है।*

- **उड़ान की शर्त**

'*उड़ान की शर्त*' कहानी महशी नामक धन की लालची स्त्री की कहानी है। महशी अपने पति के मरने के बाद अपने बेटे के साथ मायके में आकर रहने लगती है। जहाँ उसकी मित्रता तालिब से होती है और वह उससे शादी कर लेती है। शादी के बाद महशी तीन महीने तक तालिब के साथ सीरिया में रहने के बाद वापस लौट आती है और पहले पति

की संपत्ति से वंचित होने के डर से तालिब के पास वापस सीरिया नहीं जाना चाहती है, क्योंकि महशी के पति ने मरते वक्त शर्त रखी थी कि, *"महशी दूसरा विवाह करती है तो फिर लड़का और जायदाद दादा–दादी को मिलेगी।"* *इसलिए महशी ने तालिब के साथ नाम बदलकर निकाह करते समय निकाहनामे में 'जुलेखा' नाम लिखा था। काफी समय बाद महशी अपने बेटे की पढाई और अमेरिका जाने के लिए अपने भाई फरीद के साथ तालिब से मिलने जाती है। लेकिन तालिब पैसे देने से इंकार कर देता है तो फरीद तालिब से महशी को तलाक देने के लिए कहता है, तो तालिब उनसे कहता है कि मैंने महशी से तो निकाह ही नहीं किया था। अंत में महशी तालिब से माफी माँगती है। तब तालिब कहता है कि, "मैं तुम्हें आजाद करता हूँ, ताकि तुम ऊँची उड़ान भर सको, दुनिया देख सको, मगर एक बात याद रखना अतीत के नाम पर वर्तमान को सियाह करना उड़ान की शर्त नहीं है।"* [145] कहकर उसे आजाद करता है।

- **इनसानी नस्ल**

नासिरा जी की कहानी *'इनसानी नस्ल'* सांप्रदायिकता पर आधारित है। अय्यूब और मिश्राजी पड़ोसी है। मिश्रा जी के कोई संतान नहीं है और अय्यूब के तीन लड़के है जावेद, नवाब और दिलशाद। दिलशाद अपने दोनों भाइयों से अलग था और बहुत अधिक शैतानियॉ करता था जिस वजह से अय्यूब जब उसे पीटता था तो वह मिश्रा जी के यहाँ चला जाता था। और धीरे धीरे दिलशाद मिश्रा जी के यहाँ ही रहने लगा था, जिससे लोग कहने लगे थे कि अय्यूब के दो बेटे हैं और मिश्राजी के एक। दिलशाद हिंदू के घर में गोद तो चला जाता है जब नवाब अपनी माँ जैनब से सविता से शादी करने की बात कहता है, तब उसकी माँ जैनब उससे कहती है, *"दूसरे मजहब वालों से दोस्ती हो सकती है, मगर नस्ल नहीं चल सकती ।... अपनी कोख से अपना बच्चा पैदा किया जा सकता है, पराया नहीं।"* [146] कहते हुए विरोध प्रकट करती है। घरवालों के विरोध के बाद भी नवाब सविता

से कोर्ट में शादी करके दिल्ली चला आता है।

काफी समय बाद पन्ना चाचा द्वारा भेजे गए ख़त से नवाब को माँ की बीमारी का पता चला। नवाब सविता के साथ अपनी माँ को देखने गाँव जाता है जहाँ उसकी भाभी नसरीन दोनों पर ताने कसती है। नसरीन की बातें सुनकर सविता दुखी होती है, लेकिन एक भी शब्द नहीं बोलती और न ही कोई विरोध प्रकट करती है, क्योंकि जब नवाब शादी के बाद सविता के घर जाता है तो उसका स्वागत जिस तरह से सविता के घर वालो ने किया था उसके आगे जिस तरह नसरीन ने उसका स्वागत वह कुछ भी नहीं है। इन सबके बाद भी सविता को अपना ससुराल अच्छा लगने लगता है। वह मन से अपने सास की सेवा करती है, और हर लम्बी छुट्टी में यहाँ आने की बात नवाब से कहती है। तभी रात को दिलशाद और जावेद नवाब को अचानक दिल्ली भेजने की व्यवस्था करते हैं, और पूछने पर नवाब को बताते है कि पास के गावं में बहले की लड़की को चिकवे का लड़का भगा ले गया था। शादी करके कई माह बाद वापस आने पर लड़की को उसकी माँ अपने साथ ले गई और लड़के को मारने के लिए खोजा जा रहा है इस पर दिलशाद का दोस्त नवाब से कहता है– *"हालात तनाव भरे हैं। ये लोग कुछ भी कर सकते हैं ... सबको पता है, तुम सविता भाभी के साथ आए हुए हो और ... हमें कुछ आशंका–सी है...।"* [147] नवाब के मना करने पर भी वे सब उसे सविता के साथ दिल्ली ववास भेज देते है।

- **बड़े परदे का खेल**

'बड़े परदे का खेल' कहानी में दर्शाया गया है कि खोखली अभिव्यक्तियों की ठेस कितनी गहरे तक मस्तिष्क में बैठ जाती है। राज मल्होत्रा एक चालाक आदमी है जो लड़कियों को अपने प्रेम के जाल में फँसाता है। उसने कई लड़कियों के साथ यह खेल खेला हैं, जिसमें रमा भी शामिल है। रमा राज से प्यार करती है, लेकिन जब उसके परिवारवाले

उसे दिनेश से शादी करने के लिए कहते हैं, तो वह राज से शादी करने को कहती है, तो राज उसे शादी के लिए मना करते हुए कहता है– *“तुम्हारी याद मेरे पास सदा रहेगी। जब कभी तुमसे मिलूँगा तो इसी गरमी से मिलूँगा।”* [148] इसके बाद रमा दिनेश के साथ शादी करके ससुराल चली जाती है।

कुछ दिनों बाद, उषा नामक लड़की उसके घर आती है, जो राज के प्यार में फंसी थी। वह राज को सबक सिखाने के लिए उसके खिलाफ कुछ करना चाहती है जिसमे वह रमा की मदद चाहती है और रमा से कहती है, *“यह सिलसिला जाने कब तक चलता जाएगा। वह मानसिक बीमार है। यह बीमारी हम औरतों, लड़कियों के कारण जड़ पकड़ती जा रही है, क्योंकि हम यह सब कुछ खामोशी से पी जाने पर मजबूर कर दिए जाते हैं, जिससे ऐसे लोगों का हौसला बढ़ता हैं।”* [149] रमा को लगता है कि उषा की मदद करने से कही उसके और दिनेश के बीच में दरार तो पैदा नहीं हो जाएगी, लेकिन बहुत सोचने के बाद वह उषा की मदद करने का वादा करती है।

- **दूसरा ताजमहल**

‘दूसरा ताजमहल’ नासिरा शर्मा की नयना नामक एक ऐसी महिला की कहानी है जो अपने जीवन में विलुप्त होती उमंग व रस की तलाश में उम्र के मध्य भाग में रविभूषण नामक वास्तुविद् से मिलती है। नयना के पति नरेन्द्र पेशे से डॉक्टर थे जो व्यस्तता के कारण अपने ही कार्य में व्यस्त रहते थे व उसके दोनों पुत्र शिक्षा के लिए विदेश गये थे। नयना व उसका ऑफिस तथा अकेलापन इसी बीच उसकी बेरंग जिंदगी इसी बीच इंटीरियर डेकोरेशन को लेकर एक मीटिंग बंबई के मशहूर उद्योगपति द्वारा बुलायी गयी थी, जिसमे नयना की रविभूषण से पहली मुलाकात होती है।

धीरे धीरे फोन पर दोनों की बातें प्रारम्भ हुयी और बातें प्रोफेशनल से पर्सनल होती चली गयी। रोज रात दस बजे रविभूषण की प्रेम व अपनत्व की बातें नयना को अलग ही

उमंगपूर्ण संसार में ले जाती हैं। *"मैं रोज आपकी खैरियत लेने के लिए दिल्ली फोन करता हूँ, मगर बातों की दिशा किस ओर बढ़ जाती है वह सब मुझे याद नहीं। मुझे छान–बीन की आदत नहीं है, तो भी मैंने आपसे कोई गैर जरूरी बात कह दी हो तो क्षमा करें।"* [150] रविभूषण के जाल में फंसकर मुंबई चली जाती है। लेकिन जिस विश्वास से रविभूषण ने उसको मुंबई बुलाया था वह विश्वास नयना के आने के बाद गायब हो गया अब रविभूषण नयना के सामने दूसरा रूप लेकर पेश आता है। तब उसका यह बदला हुआ रूप देखकर नयना अपने आपको संभाल नहीं पाती और एक बड़े आघात से बचते हुए वापस घर चली जाती है।

2.13 सुधा अरोड़ा

समकालीन कहानी में सुधा अरोड़ा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनकी कथा यात्रा लगभग चार दशकों से अविरल गतिमान है। सुधा अरोड़ा ने स्त्री जीवन के विविध पक्षों को बड़ी संवेदनशीलता से देखा है, परखा और अत्यन्त सादगी के साथ अभिव्यक्त किया है। सुधा अरोड़ा की कहानियाँ–स्त्री जीवन के किसी अनछुए कोमल पक्ष को अभिव्यक्त करती कर्णप्रिय लोकगीत सी लगती है।

- **रहोगी तुम वही**

'रहोगी तुम वही' कहानी एक मध्यमवर्गीय महिला की मूक पीड़ा को चित्रित करती है। इस कथा में, पति अपनी पत्नी के खिलाफ शिकायतों का एक अंतहीन भंडार रखता है, जिसे वह बिना किसी हिचकिचाहट के खुलेआम व्यक्त करता है। वह रोजमर्रा की बातों को कड़वे शब्दों में व्यक्त करता है और लगातार अपनी पत्नी पर आरोप लगाता है। जब पत्नी उसके कहे अनुसार खुद में बदलाव लाती है तो वह अपने अंदर के उन बदलावों को भी अस्वीकार करने लगता है। वह अपनी पत्नी के हर पहलू में गलतियाँ निकालता है, उन्हें स्वीकार करने से इनकार करता है, जिसका अर्थ है कि वह हर परिस्थिति में उसके लिए

असंतोषजनक रहेगी। वह न तो खुद को बदलता है और न ही अपनी पत्नी के बदलते स्वभाव को स्वीकार करता है, और कहता है– *"अरे, कमाल है, मैं बोले जा रहा हूँ, तुम सुन ही नहीं रही हो। ऐसा भी क्या पढ़ रही हो जिसे पढ़े बिना तुम्हारा जन्म अधूरा रह जाएगा। कितनी भी किताबें पढ़ लो, तुम्हारी बुद्धि में कोई बढ़ोत्तरी होनेवाली नहीं है। रहोगी तो तुम वही..."* [151] इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने मध्यवर्गीय स्त्री की मूक पीड़ा का चित्रण किया है।

- **अन्नपूर्णा मंडल का अंतिम पत्र**

कहानी *'अन्नपूर्णा मंडल का अंतिम पत्र'* बाँकुडा शहर के एक निम्न–मध्यम वर्गीय परिवार की लड़की अन्नपूर्णा मंडल की भावनात्मक और मानसिक परेशानी को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। यह उसके सारे सपनों के साथ शादी करने से लेकर मुंबई आने, उसके सपनों के टूटने, आघात और अपने माता–पिता के सामने इस आघात को खुलकर व्यक्त करने में असमर्थता तक की यात्रा का वर्णन करती है। यह कहानी पति पर आर्थिक निर्भरता के कारण होने वाली पीड़ा को उजागर करती है।

यह कथा एक छोटे शहर की नवविवाहित महिला की शारीरिक और मानसिक गिरावट का अभूतपूर्व चित्रण प्रस्तुत करती है। यह उस महिला के आंतरिक विलाप का मार्मिक चित्रण है जो अपने ही घर में सब कुछ खो देती है। जब महिला के लिए सभी दरवाजे बंद हो जाते हैं तो वह आत्महत्या का रास्ता अपना लेती है। लेखक ने इस कहानी में विवाहित महिलाओं द्वारा आत्महत्या करने के कारणों को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया है, जिसका उद्देश्य समाज में आत्महत्या की बढ़ती प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना है। पत्र में लिखती है– *"बाबा, तुम कहते थे न आत्माएँ कभी नहीं मरतीं। इस विराट व्योम में, शून्य में, वे तैरती रहती हैं– परम शांत हो कर। मैं उस शांति को छू लेना चाहती हूँ। मैं थक गई हूँ. बाबा।*

हर शरीर के थकने की अपनी सीमा होती है। मैं जल्दी थक गई, इसमें दोष तो मेरा ही है। तुम दोनों मुझे माफ कर सको तो कर देना। इति।" [152]

कहानी उन सामाजिक संरचनाओं पर एक सशक्त टिप्पणी के रूप में कार्य करती है जो अक्सर विवाहित महिलाओं की हताशा और असहायता का कारण बनती हैं। यह ऐसे दुखद परिणामों को रोकने और विवाहित महिलाओं के बीच मानसिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए अधिक जागरूक और सशक्त प्रणालियों की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

- **काला शुक्रवार**

'*काला शुक्रवार*' 1993 के मुंबई बम विस्फोटों की पृष्ठभूमि में एक उच्च वर्ग की कहानी है। इसके दोनों पात्र एक दूसरे से मेल नहीं खाते। पत्नी अपने ड्राइवर मिराज के साथ बाजार जाती है और शहर के दंगों में फंस जाती है। वह अपने ड्राइवर की समझदारी के कारण सुरक्षित घर लौटने में सफल हो जाती है, लेकिन जब वह दिन भर की अपनी चिंता और तनाव को अपने पति के साथ साझा करना चाहती है। तो उसका पति उसकी बात को सुने, अपनी भावनाओं, अनुभवों को साझा करने के स्थान पर उदासीन रहता है। उन्हें इस बात की भी चिंता नहीं है कि दंगों के दौरान उनके साथ कुछ हो सकता था। वह दंगों का शिकार हो सकती थी या मर भी सकती थी, लेकिन उसने उसका हालचाल पूछने की कोई कोशिश नहीं की और न ही जब उसकी पत्नी ने उसे इस बारे में बताने की कोशिश की तो उसने उस पर ध्यान दिया।

इस घटना से महिला काफी प्रभावित हुई है। वह अपनी बात कहना शुरू कर देती है, कि वह कैसे जिन्दा है, वह हिंसक भीड़ से बचने में कैसे कामयाब रही, और उनके सफल भागने के लिए ड्राइवर की बुद्धिमत्ता की प्रशंसा करती है। वह उल्लेख करती है कि यदि वह नहीं होता तो शायद वह आज जीवित नहीं होती। उसका पति चुपचाप सुनता है,

लेकिन कुछ नहीं कहता, बस टीवी चैनल बदलता रहता है, उसकी बातों पर ध्यान नहीं देता और टी.वी. पर अपने किसी पसंदीदा कार्यक्रम में तल्लीन है या शायद टीवी पर कुछ और ढूंढ रहा है। फिर, मैडोना का गाना एमटीवी पर बजता है, लेकिन वह फिर भी अपनी पत्नी की किसी बात का जवाब नहीं देता। वह वहीं पड़ा रहता है, कोई प्रतिक्रिया नहीं देता।

बेचारी अपने अंदर की उथल–पुथल को अपने अंदर ही दबाती रहती है। जब वह बोलने लगती है तो उसके पति उसे टोकते हुए कहते हैं, *"तुम्हें वहाँ जाने की क्या जरूरत थी... दोबारा ऐसी हरकतें मत करना।"* [153] वह स्पष्ट करती है कि वह किसी साहसिक यात्रा पर नहीं जा रही थी; वह तो बस रोजमर्रा का सामान खरीदने गई थी. लेकिन फिर भी, उसके पति की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई, जो टीवी पर मैडोना की मंत्रमुग्ध कर देने वाली आँखों में खोया हुआ लगता है।

अगले दिन, अखबार में प्रधानमंत्री की यात्रा और शहर में सामान्य स्थिति बहाल करने के प्रयासों की खबर छपती है। शाम को जब पति ऑफिस से लौटता हैं तो शर्मा जी के दंगों में हुई मौत और अली नवाज़ के बच्चे की मौत का खबर अपनी पत्नी को देता है। अली नवाज़ उनके ड्राइवर का बेटा था। यह खबर उस पर गहरा प्रभाव डालती है और वह अपने पति की चिंता और सहानुभूति की कमी पर सवाल उठाने लगती है। उसे एहसास होता है कि वह उसके लिए केवल मनोरंजन का एक साधन है, जिसका कोई महत्व नहीं है। वह अपनी स्वतंत्रता और आजादी की जिम्मेदारी खुद उठाने का फैसला करती है।

सुधा अरोड़ा की कहानियों में आज के समय और परिवेश की गहन पहचान के बीच कथा शैली के भीतर गहरी आत्म–पहचान का मनमोहक प्रभाव देखने को मिलता है। उनकी कहानियाँ गद्य की जटिलता को खूबसूरती से सरल बनाती हैं और व्यंग्य का पैनापन सामने लाती हैं। इन कहानियों के माध्यम से, वह एक अद्वितीय कथा–सार प्रदान करती है और पाठक को पूरी तरह से बांधे रखती है। ये कहानियाँ आज के जटिल शहरी अंतर्विरोधों

में सार्थक और साहसी हस्तक्षेप की महत्वपूर्ण संभावना भी प्रस्तुत करती हैं।

2.14 चन्द्रकान्ता

चन्द्रकांता ने अपनी कहानियों के माध्यम से आधुनिक मध्यमवर्गीय परिवारों का विघटन तथा पारम्परिक मूल्यों एवं मानसिकता के बीच के अन्तर्विरोध को बड़ी ही सहजता एवं सरलता से अभिव्यक्त किया है। उपभोक्तावाद की संस्कृति हो या पारिवारिक मूल्यों का ह्रास दोनों को ही उन्होंने अपने साहित्य में स्थान दिया हैं। कश्मीर की पौराणिकता और ऐतिहासिकता का भी वर्णन उन की कहानियों में दिखाई पड़ ही जाता है। उनकी कहानियाँ चेतना की कई परतों को अनावृत कर विस्तृत आयाम देती हैं।

- **अब्बू ने कहा था**

'अब्बू ने कहा था' कहानी एक महिला के संघर्ष और साहस पर केंद्रित है, जो सांप्रदायिक सद्भाव और मानवीय रिश्तों को समृद्ध करने में सक्षम है। कहानी में, मास्टर रतनलाल एक स्कूल में अध्यापक थे। उनके परिवार को आतंकवाद के कारण विस्थापन का सामना करना पड़ा। उनकी पत्नी रतनरानी, बेटा शेखर, और बेटियाँ सविता और नमिता शरणार्थी शिविरों में चले गए। पर मास्टर रतनलाल ने घर को छोड़ने का निर्णय नहीं लिया और वह वही रहे। एक दिन, मास्टर रतनलाल का आतंकी लोग अपहरण कर लेते हैं, और उन पर आरोप लगाते है कि उन्होंने बीएसएफ से मुखबिरी कर उनके सरदार को पकड़वा दिया है, और आतंकी मास्टर रतनलाल से कहते हैं– *"दो दिन और देते हैं तुम्हें, याद करो, वरना, एक गोली काफी है तुम्हारे लिए...... "* [154] मास्टर रतनलाल अपनी सफाई में कहते हैं– *"मुझे कुछ नहीं मालूम बच्चों! मैं किसी जासूस को नहीं जानता! मैं तो पढ़ने – पढ़ाने वाला मास्टर हूँ, मुझे इन खुराफातों से क्या लेना–देन....." मास्टर रतनलाल जब अपने जीवन की अंतिम लम्हों को गिन रहे होते है तब उनके बचपन के दोस्त फजल रहमान की*

बेटी शाहीन बीएसएफ को लेकर आती है और मास्टर रतनलाल को आतंकवादियों की कैद से मुक्त करवा देती हैं। जिससे मास्टर रतनलाल बहुत ही भावुक हो जाते हैं। और कहते है– "तुमने, शाहीन बेटी, इतना बड़ा खतरा क्यों मोल ले लिया?" इसपर शाहीन कहती है– "मास्टर चाचा। अब्बू ने जाते–जाते कहा था, मास्टर जी को बचाना। अब्बू की बात मैं भूल नहीं पायी।" शाहीन के साहस व सौहार्द को देखकर बी० एस० एफ० के जवान भी प्रभावित होते हैं। वे कहते हैं– "इतना बड़ा रिस्क लिया लडकी ने, सिर्फ इसलिए कि इसके अब्बू ने कहा था। सचमुच दिलेर लड़की है।" [155] शाहीन न केवल एक साहसी महिला हैं, बल्कि उसने धर्म के भेद को पार करके मानवीय संबंधों को बढ़ावा दिया है।

- **अकेली चारमीनार**

'अकेली चारमीनार' भारतीय समाज में फैले अन्धविश्वासों पर आधारित कहानी है। इस कहानी में, राजू की बड़ी बहन की बेटी लक्ष्मी एक शिक्षित महिला है जो बीए पास है। लक्ष्मी की माँ चाहती है कि लक्ष्मी का विवाह उसके भाई के बेटे रमन राव से हो जाए, और उसका वैवाहिक जीवन सुखी और समृद्ध हो। दिल्ली में रहने वाली राजू की सहेली दीपा हैदराबाद आई है और वह राजू से पूछती है– *"तुम्हारी जीजी ने बाल क्यों उतरवाये?"* [156] तब राजू उसे बताता है– *"उसकी लड़की लक्ष्मी है, ना बी०ए० कर चुकी है। उसकी शादी के लिए मनौती मानकर आयी है।" लक्ष्मी की माँ को यह विश्वास है कि उसकी मनौती जल्दी ही पूरी होगी और वह खुशी–ख़ुशी अपने रिश्तेदारों में तिरुपति का प्रसाद बाँट रही है। दीपा इस विश्वास से हैरान है और वह राजू से पूछती है– "इस मनौती का असर होगा?"* [157] तब राजू कहता है– *"हाँ जरूर होगा!"* यह बात सुनकर दीपा बहुत दुःखी होती है, और सोचती है इतना पढ़ी लिखा होने के बाद भी उसकी सहेली आज के समय में भी इन सब

बातो पर विश्वास रखती है।

लक्ष्मी किसी और से प्यार करती है और उसी से शादी करना चाहती है, लेकिन अपनी माँ की इच्छा और सामाजिक परंपराओं और बन्धनों के कारण, उसे रमनराव से विवाह करना पड़ता है। दूसरी तरफ दीपा जो अपने मामा के बेटे विजय से प्रेम करती है और उससे शादी करना चाहती है। लेकिन दीपा के परिवार वालो को यह बात स्वीकार नहीं। दीपा सोचती है कि हमारे समाज में एक ही रिश्ते को लेकर अलग–अलग परम्पराएँ, मान्यताएँ और रूढिया व्याप्त है इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास और विभिन्न और परंपराओं–मान्यताओ को बताने का प्रयाश किया है।

- **अलग–अलग इंतजार**

'अलग–अलग इंतजार' कहानी भ्रष्टाचार की समस्या पर केन्द्रित है। कहानी के नायक डॉ० जे० सी० जो की एक कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार और प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं। जो घाना में रहते थे और अब भारत लौट आए है और उन्होंने यहाँ के ब्लड बैंक की स्थिति सुधारने का निर्णय लिया है। डॉ० जे० सी० देखते हैं कि यहाँ की कार्यप्रणाली, रिश्वतखोरी, और लापरवाही से दुखी हैं, और अपने शिष्य आशय से इस बात पर अपनी चिंता बताते है– *"कई दिनों से महसूस कर रहा हूँ कि अब मैं यहाँ काम नहीं कर पा रहा।"* [158] डॉ० जे० सी० के काम में बाधाएं डालने की कोशिश की जाती है। उनकी सहायिका कहती हैं कि सर, अगर आप उन्हें एक फाइव स्टार होटल में डिनर दें दें, तो वे काम कर देंगे। डॉ० जे० सी० के प्रयासों से ब्लड बैंक की दशा में सुधार हुआ। लेकिन कुछ नेताओं के दबाव का सामना भी करना पड़ता है, जो अपने लोगों को नौकरी पर रखने का दबाव डालते है। डॉ० जे० सी० का मानना था कि वे धर्म का काम कर रहे हैं और उन्हें ब्लड बैंक की स्थिति सुधारनी है। डॉ० जे० सी० ब्लड बैंक में ईमानदार और अच्छा काम करने वाले लोगो को

रखना चाहते है लेकिन उनके ऊपर अपना आदमी रखने के लिए मंत्रियों द्वारा दबाव डाला जाता है। उनका मानना है की ऐसे आदमी काम नहीं कर सकते है। डॉ जे० सी० अनुश्री और आशय को अपनी विवशता बताते हुए कहते हैं– *"अब इधर / काम करना मुश्किल हो गया है। सब ऐसा ही है ऊपर से नीचे तक।"* [159]

इस कहानी में लेखिका ने दर्शाया है कि भ्रष्टाचार एक बड़ी समस्या है, जिसमें ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ लोगों के लिए काम करना मुश्किल ही नहीं, अत्यंत पीड़ादायी भी है।

- **मोह**

'*मोह*' कहानी वृद्धों के अकेलेपन और ग्रामीण जीवन और जीवन मूल्यों के प्रति युवाओ की बदलती सोच की कहानी है। गुणी कहानी की नायिका है, जो अपने पति नीलकण्ठ की मृत्यु के बाद अकेली हो जाती हैं और वह दिल की मरीज हैं। पति नीलकण्ठ ने अपने अंतिम समय में कहा था– *"तेरे तीन–तीन बेटे हैं गाँव है, घर है......।"* [160] गुणी जो अब अकेले गाँव में रहती हैं। उसके तीनो बेटे अलग–अलग जगहों पर रहते हैं। शंभू शहर में रहकर नौकरी करता हैं, नंदू कृष्णा के साथ विदेश में है और उसका सबसे छोटा बेटा दीना फौज में हैं। गुणी अपना अकेलापन और सुख–दुःख अपने पति के बचपन के दोस्त अहदू के साथ बाँटती हैं। गुणी को सबसे बड़ा दुःख इस बात का है कि उसके बेटे अब गाँव में नहीं रहना चाहते हैं। एक दिन रहमान डाकिया नंदू की चिट्ठी लेकर आता है, जिसमें नंदू ने लिखा है– "शंभू भैया ने मकान का खरीददार तय कर लिया है। माँ जिद न करे, अब गाँव के घर से क्या मोह। "*गुणी के बच्चों ने उससे कहा कि आजकल लोग गाँव में रहना पसंद नहीं करते, लेकिन गुणी ने कभी भी अपने बच्चों की खुशियों में हस्तक्षेप नहीं किया। गुणी यह सोचती है कि "कभी तो तुम अपने पूर्वजों की जमीन के लिए लालच*

करोगे, और कभी गाँव की खुशबू तुम्हें खींच लेगी।" [161] एक रात हृदय गति रुकने से गुणी की मृत्यु हो जाती है। जीते–जी न तो उसने घर बेचने का निर्णय लिया और न ही वह घर से अपना मोह छोड़ पायी।

- **हिमांत**

'*हिमांत*' एक स्त्री के दुःख, संघर्ष और मानसिक द्वन्द की कहानी है। जिसकी नायिका जया अपने पति मोती की असमय निधन के कारण बहुत दुखी हैं। जया के जीने का एकमात्र सहारा उसका बेटा मुन्नू है, जो बहुत छोटा है। वह अपने बेटे को लेकर मायके में जाकर माँ–बाप की सेवा करने के साथ–साथ अपने दुखों को भूलने की कोशिश करती हैं। लेकिन माँ–बाप की जया को लेकर चिंताओं ने उसके दुखों को बढ़ा दिया है। जया के जीवन में सोम नाम का पुरुष आता है जो उसके बेटे मुन्नू को पढ़ाता हैं। सोम मुन्नू को पढ़ाने के साथ साथ घरेलू कामों में भी जया की मदद करता हैं, जिसके कारण आस–पड़ोस के लोग उनपर संदेह करते हैं। जया के छोटे भाई–बहन प्रिया और विजय दोनों इनके रिश्ते को सामाजिक पहचान दिलाना चाहते है और आपस में एक–दूसरे से कहते रहते हैं– *"दी सोम जी के साथ विवाह क्यों नहीं करती ? सोम जी अच्छे हैं, दी से प्यार करते हैं।"* [162]

मुन्नू अब बड़ा हो रहा है और इन सब बातों को अच्छी तरह समझता है। जया के मन में भी इस रिश्ते को लेकर कई सवाल हैं। क्या मुन्नू सोम जी को अपने पापा के रूप में अपना पाएगा? क्या सोम जी मुन्नू को अपना बना पाएंगे? जया मानसिक द्वन्द्व से गुजरती है। एक तरफ मुन्नू है तो दूसरी तरफ सोम जी। उसे लगता है कि... *"कागजों पर जगह भरना और मन की तहों पर नाम अंकित करना, दोनों कितने भिन्न हैं?"* [163] अंत में वह सोम जी के साथ विवाह न करके मुन्नू के साथ रहकर उसके भविष्य को सँवारने में ही अपने जीवन

की सार्थकता की खोज करती है।

- **शायद संवाद**

'*शायद संवाद*' कहानी कश्मीर की घाटी में फैले आतंकवाद की कथा है। इस कहानी में, नीलकण्ठ भट्ट को अपने घर को छोड़कर घाटी से बाहर निकलना पड़ता है, क्योंकि आतंकियों ने उसके जवान बेटे की हत्या कर दी है। जिसके कारण उसकी पत्नी रूपावती इस दुःख से पागल हो जाती है। उनका बड़ा बेटा रघुनाथ अपने पिता नीलकण्ठ से कहता है– *"अल्टीमेटम दिया है। दो दिन में घर खाली करो। तुम्हारे भाई–बंधु तो कब के चले गये। तुम यहाँ किसलिए पड़े हो?"*[164] अंततः पूरे परिवार को घाटी छोड़ कर जाना पड़ता है।

बारह वर्षों के बाद, नीलकण्ठ इस उम्मीद से वापस लौटता हैं कि नई सरकार बनने के बाद स्थिति कुछ बदली होगी। नीलकण्ठ का घर आग से नष्ट हो गया था। जिस कारण मेजर साहब नीलकण्ठ को मन्दिर से सटी कोठरी में रहने का प्रबंध करवाते है। नीलकण्ठ अपने बचपन के मित्र रहमतउल्ला से काफी समय बाद मिलते है। नीलकण्ठ और रहमतउल्ला एक दूसरे को देख कर काफी भावुक हो जाते है। रहमतउल्ला नीलकण्ठ को बताता है– *"पहले हिन्दुओं को घर से बाहर कर दिया, फिर मुसलमानों को भी कहाँ बख्शा? आधी रात घरों में घुसकर खाने–पीने की फरमाइशें तो करते ही थे, घर की बहू–बेटियों की बेहुरमती करने से भी गुरेज नहीं किया। जिसने समझाने की कोशिश की, उसे गोली से भूनकर खामोश कर दिया।"*[165] आतंकवाद के कारण हिंदू और मुस्लिम दोनों ने ही अपना सब कुछ खो दिया है। इस प्रकार, आतंकवाद ने सामाजिक एकता को तोड़ कर प्रेम और विश्वास को समाप्त कर देश में असुरक्षा का माहौल उत्पन कर दिया है।

चन्द्रकान्ता जी ने अपनी सभी कहानियों में परिदृश्य को इतनी खूबसूरती और

सूक्ष्मता से चित्रित किया है कि पढ़ते वक्त पाठक की आँखों के सामने वह देशकाल उपस्थित हो जाता है।

2.15 कृष्णा अग्निहोत्री

वरिष्ठ लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री मौलिक विविधता एवं सूक्ष्म कथानकों की मर्मज्ञ कथाकार हैं जो अपनी सहज–सरल विशिष्ट भाषा–शैली व समसामयिक पैनी दृष्टि के कारण अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। उनकी रचनाएँ यथार्थवादी हैं, वे किसी रूढ़ियों या नियमों को तोड़ने वाली न होकर उसकी कमजोरियों को व्यक्त करने वाली हैं। आधुनिक समाज में उपस्थित विडम्बनाएँ, भ्रष्टाचार और अनैतिक कार्यों का मार्मिक वर्णन उनकी रचनाओं में दिखाई देता है। औचित्यहीन रूढ़ियों और परम्पराओं से मुक्ति पाने का उपदेश उनके साहित्य में अभिव्यक्त हुआ है। इसके साथ ही मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी संवेदनशीलता उनकी रचनाओं में दिखाई देती है। स्त्री–पुरुष के संबन्धों के बीच के संघर्ष को उन्होंने एक नई दिशा देने का प्रयास किया है। इसीलिए जहाँ उनके साहित्य में यथार्थ, संघर्ष और ईमानदारी है वहीं आधुनिकता का समावेश भी दिखायी देता है। भारतीय समाज में नारियों की दशा का मार्मिक वर्णन उनके साहित्य की एक प्रमुख विशेषता रही है।

- **कौशल्या चली वनवास**

कृष्णा जी की कहानी *'कौशल्या चली वनवास'* आधुनिक बहू द्वारा प्रताड़ित सास कौशल्या की कहानी है। नायिका कौशल्या अपने दिमागी रूप से कमजोर और निठल्ले बेटे महेंद्र की शादी शुक्लाइन की बेटी सीमा से करवाती है, जो एक गरीब घर की लड़की है। शादी के कुछ समय बाद ही सीमा अपनी सास को प्रताड़ित करने लगती है और जब कौशल्या अपने बेटे महेंद्र से सीमा को सिर पर चढ़ाने की बात कहती है, तो सीमा अपने ऊपर घासलेट डाल कर कौशल्या से कहती है– *"तुम्हे रुपये प्यारे हैं, बहू नहीं, मेरे माँ–*

बाप ने दहेज नहीं दिया इसलिए मुझे पूरे समय कोसती रहती हो।" [166] इस घटना के बाद घर पर पुलिस आ जाती है। कुछ समय बाद जब सीमा और महेंद्र का बच्चा होने पर कौशल्या बच्चे की सेवा कर अपने सारे फर्ज निभाती है लेकिन फिर भी कौशल्या पर आरोप ही लगते हैं।

अपने सास ससुर के बद्रीनाथ जाने पर सीमा सभी चीजों पर कब्जा जमा लेती है और महिला मंडल की मदद से अपनी ही सास के खिलाफ दहेज लेने का आरोप लगाती है। महिला मंडल के लोग सीमा के साथ उसके घर पहुँच जाते है। डर कर कौशल्या घर के पीछे के दरवाजे से जंगल की ओर चली जाती है। इस कहानी के माध्यम से कृष्णा जी ने एक बहू के सास पर किये जाने वाले अत्याचारों को दिखाया है। अधिकांशतः सास को बहू पर अत्याचार करते सुना जाता है लेकिन आजकल की आधुनिक बहुएँ अपनी सास पर अत्याचार करती है।

- **वहाँ दीप जले जहाँ साँझ ढले**

'*वहाँ दीप जले जहाँ साँझ ढले*' कहानी धरा नामक एक युवती की कहानी है जो समाज में पुरुषों के द्वारा छले जाने के बाद भी जीवन में आगे बढती है। धरा एक प्रतिभावान गायिका है, जिसे हर कोई अपने स्वार्थपरक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उपयोग करने की कोशिश करता है। जयंत उसे एक संगीत समारोह में शामिल होने के लिए बुलाता है, जिसके पीछे वह अपनी वासनाओं को पूरा करने की योजना रखता है। लेकिन धरा उसकी नीयत को समझ कर कहती है– *"मैं वह नहीं हूँ जिसकी तलाश में आप समय बर्बाद करें। साथ रात बिताने वाली लड़कियों की देहली में कमी नहीं है।"* [167]

संगीत विश्वविद्यालय का कुलपति हो या आकाशवाणी के इंटरव्यू के दौरान मिला सतीश सभी धरा की मदद तभी करने को तैयार होते होंगे जब धरा उनकी वासना पूर्ति की

मांग को पूरा करेगी। स्वाभिमानी धरा भी इस प्रकार के समझोते के लिए कभी तैयार न होती। धरा का विवाह परेश नामक युवक से होता है लेकिन वह भी सिर्फ धरा का लाभ उठाना चाहता है। जिसके कारण धरा परेश को छोड़ रवींद्र नामक प्रतिष्ठित वकील से विवाह करती है, लेकिन इस विवाह में भी उसे आन्तरिक संतोष नहीं मिलता, क्योंकि रविन्द्र अपने बच्चों के कारण धरा से उचित व्यवहार नहीं करता। अंत में घरा निर्णय लेती है कि वह बिना किसी पुरुष की सहायता के अपने आत्मबल के साथ स्वतंत्र जीवन निर्वाह करेगी।

- **एक अखंडित सत्य**

कृष्णा जी की कहानी *'एक अखंडित सत्य'* एक पत्नी के प्रेम, त्याग और बड़प्पन और पति के प्रति उसके समर्पण को दर्शाती है। अभिलाष एक पंजाबी ब्राह्मण है जो आकाशवाणी में कार्य करता है वह कथानायिका इला जो कि एक ईसाई लड़की है, से प्रेम विवाह करता है। विवाह के पाँच वर्ष बीत जाने के बाद भी उनके कोई संतान नहीं होती। इस बीच अभिलाष अपने साथ काम करने वाली एक युवती श्रद्धा को पसंद करने लगता है। जब इला को इस बात का पता चलता है तो वह अभिलाष पर गुस्सा होने की बजाए उसे श्रद्धा से दूसरा विवाह करने की सलाह देते हुए कहती है– *"हाँ, हो सकता है सरलता से, परंतु अब मैं अन्य किसी के प्रति समर्पित नहीं हो सकूँगी अभि? हाँ यदि तुम चाहो तो तुम दोनों का बच्चा पालती हुई शेष जीवन तुम दोनों से अलग अधिक सुगमता और प्रसन्नता के बिता सकती हूँ मैं।"* [168]

इला की इन बातोँ को सुनकर अभिलाष इला की त्याग एवम् महानता के आगे झुक जाता है और श्रद्धा से दूरी बना लेता है। इस कहानी में कृष्णा जी ने पति और पत्नी के सच्चे

प्रेम, त्याग और समपर्ण का बहुत सुन्दर चित्रण किया है।

- **खत जो गुमनाम थे**

'खत जो गुमनाम थे,' प्रिया नामक एक कामकाजी महिला की कहानी है। प्रिया के दूसरे पुरुषों से हँसने–बोलने के कारण समाज उसे चरित्रहीन मानता है। कहानी के नायक आदित्य का ट्रान्सफर दूसरें शहर में किया जाता है, जहाँ वह मैडम प्रिया से मिलता हैं। मैडम प्रिया के पहले पति शराबी होते हैं, इसलिए वह तलाक ले लेती हैं, और दूसरा पति मेजर चरित्रहीन होता हैं जिस कारण प्रिय उसे छोड़ देती है। मैडम प्रिया और आदित्य खुल कर हंसी–मजाक और बातें करते है जिसके कारण लोग उन्हें गलत दृष्टिकोण से देखते हैं। आदित्य की पत्नी और मैडम प्रिया के पति को एक गुमनाम पत्र लिखकर दोनों के अनैतिक संबंधों की सूचना देते हैं। इस कहानी के माध्यम से, कृष्णा जी यह बताती हैं कि लोग स्त्री और पुरुष के पवित्र संबंधों को भी गलत दृष्टिकोण से देखते हैं।

- **कीमत**

'कीमत' कहानी में कृष्णा जी ने धन के आधार पर बनते और टूटते रिश्तों का सच उजागर किया है। यह कहानी मुख्य नायिका पंकजा के व्यक्तिगत जीवन के जीवन पर आधारित है। पंकजा की मां एक स्कूल में प्रधानाध्यापिका हैं और उसके पिता थानेदार हैं, उसके माता पिता के सम्बन्ध अच्छे नहीं है। अपनी बीमार माँ के इलाज के लिए पंकजा अपने पिता से पैसे मांगती है तो उसका पिता पैसे देने से इन्कार कर देते है। इस कारण पंकजा अपने मामा से सहायता मांगने जाती है, लेकिन वहां उसका मामा उसपर चोरी का शक करता है। कृष्णा जी ने इस कहानी के माध्यम से यह बताना चाह हैकि सारे रिश्ते नाते स्वार्थ

वश धन के इर्द गिर्द ही घूमते है।

- **बदनाम**

'*बदनाम*' कहानी एक बदनसीब नारी की दुखभरी कहानी है। कहानी की मुख्य पात्रा आरती अपने मामा के बेटे से प्यार करती हैं और उसके साथ विवाह करना चाहती हैं। लेकिन वह उसे धोखा देकर परेश नामक युवक के साथ अनैतिक रिश्ते में फँसा देता है। परेश भी आरती के साथ बेवफाई कर उसे गर्भवती कर देता है और साथ ही उसकी बहन दीपा को भी धोखा दे देता है। जब आरती को सच्चाई पता चलता है, तो वह समाज में बदनामी के डर से आत्महत्या कर लेती है। आरती की आत्महत्या के बाद, उसकी सहेली ज्योति इस घटना पर सवाल उठाती हैं। *"आखिर यदि पुरुष कुछ करके भी कुछ कर गुजरने के अहसास से मुक्त हो जाता है तो स्त्री ही अहसास के बोझ के नीचे इतना क्यों दब जाये कि अस्तित्वहीन हो उठे?"*[169] इस कहानी के माध्यम से कृष्णा जी यह बताना चाहती हैं कि झूठे प्रेम में फंसकर अपना सब कुछ दांव पर लगाने वाली स्त्रियों को ही समाज का भय बना रहता है और अपनी बदनामी के डर से उन्हें ही आत्महत्या करने पर विवश होना पड़ता है। इस कहानी में यह प्रश्न उठाया गया है कि– *"जब सामने वाला पुरुष शरीर पर लगे दाग को खूबसूरती से धोकर साफ सुथरा बन नयी शादी की तैयारी कर सकता है तो क्या स्त्री ऐसा नहीं कर सकती?"* [170]

मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्था रखने वाली कृष्णा जी का साहित्य सामाजिक जीवन के सभी पक्षों को छूने का प्रयास करता दिखायी देता है। वह भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की हिमायती होने के साथ–साथ आधुनिक बोध और व्यक्ति के मन की संवेदनात्मक

परिस्थितियों को बड़ी ही गम्भीरता से विश्लेषित करती हैं।

2.16 मालती जोशी

मालती जोशी ने हिन्दी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में लेखन कर अपनी क्षमता का परिचय दिया है। उनकी रचनाओं में मुख्यतः परिवार के सामाजिक ताने–बाने को दिखाया गया है। उनकी रचनाएँ सामान्यतः भारतीय समाजिक परिवेश के संन्दर्भ में ही लिखी गयी हैं। स्त्री मन के अन्तर्द्वन्द को अपनी रचनाओं में उन्होंने बड़ी ही कुशलता और मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है। उनकी कहानियों की नारी निरंतर पारिवारिक और सामाजिक विसंगतियों से जूझती नजर आती है और साथ ही विघटित होते रिश्तों के विभिन्न कारणों की पड़ताल उनकी कहानियों में दिखाई देती है।

दादी की घड़ी, मध्यान्तर, एक घर सपनों का, जीने की राह, विश्वासगाथा, पराजय, राग–विराग, शोभायात्रा आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। मालती जोशी ने अपनी रचनाओं में सामाजिक जीवन के कई क्षणों को समकालीन जीवन के क्षणों के साथ पिरोने का कार्य किया है।

- **अवसान एक स्वप्न का**

अवसान एक स्वप्न का, आरती नामक युवती की कहानी है जो कॉलेज में प्रोफेसर हैं। वह घर में बूढी माँ की देखभाल करती हैं और छोटी बहन की परवरिश का ध्यान रखती हैं। माँ ने अपनी मृत्यु के समय आरती से वचन लिया था कि वह अपनी छोटी बहन का साथ कभी नहीं छोड़ेंगी। इस कारण आरती अभी तक अविवाहित है। आरती की इस स्थिति का उत्तरदायी उसके भाई और भाभी भी हैं। उसकी भाभी कहती हैं कि दोनों बहनों का विवाह तय हो जाने पर उन्हें कन्यादान के लिए बुलाया जाए। इस पर आरती कहती हैं कि

– *"आपको कन्यादान का हक कहाँ पहुँचता है। यह अधिकार तो उसका होता है जो कन्या का पालन पोषण करता है।"* [171]

आरती के विवाह के लिए एक तलाकशुदा व्यक्ति का रिश्ता आने पर वह नाराज होकर कहती है कि *"मैं इतने दिनों तक क्या इसलिए अनब्याही बैठी रही कि कोई हारा हुआ, टूटा हुआ आदमी मेरी चौखट पर आए और मैं उसे बाहों में भर लूँ, फिर जिन्दगी भर के जख्म सहलाती रहूँ।"* [172]

भारती जो इस कहानी की दूसरी नारी पात्र है, बैंक में नौकरी करती है। वह भी आरती के समान आत्मनिर्भर नारी है और शादी के लिए लड़के द्वारा लड़की देखे जाने पर व्यंग्य करते हुए कहती है कि – *"आपने तो लड़कियों को बिल्कुल सब्जी मार्केट में ही तब्दील कर दिया कि गोभी नहीं चाहिए, आलू दे दो। कद्दू नहीं चाहिए लौकी पकड़ा दो। यह तो कोई नई बात नहीं हुई। आपको जो लड़की दिखाई गयी है, उसे देखिए। पसंद आ गई तो ठीक है, वरना छुट्टी कीजिए।"* [173] इस कहानी में दोनों नारी पात्र आत्मनिर्भर होकर भी परेशान है। भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा ठीक नहीं कही जा सकती है। समाज में पुरुष एक के बाद दूसरा विवाह कर सकता हैं लेकिन स्त्री तलाकशुदा या विधवा नहीं होनी चाहिए। पुरुषो की ऐसी छोटी मानसिकता के कारण भारती पुरुषो से नफरत करती है। वह अपनी बहन आरती से कहती है कि– *"अरे, इतनी बड़ी दुनिया में एक भी पुरुष ऐसा नहीं बनाया जो तुम्हारी ऊँचाई को छू सके। सबके सब बौने हैं। यह भी कोई बात हुई?"* [174]

- **निर्वासित कर दी तुमने मेरी प्रीति**

मालती जी की यह कहानी दहेज़ न दे पाने के कारण बेटियों पर हो रहे अत्याचारों को दर्शाती है। दिव्या जो इस कहानी की नायिका है, अपने इच्छानुसार शादी कर लड़के के साथ अमेरिका चली जाती है और वही नौकरी करती है। शादी के तीन साल बाद पता

चलता है की उसने अपने लैब की सत्रहवीं मंजिल से छलांग लगा दी है, जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। दिव्या का इस प्रकार अपने लैब से कूदना आत्महत्या से ज्यादा उसकी हत्या की ओर इशारा करता है। दिव्या ने अपनी पसंद का लड़का चुना था और शादी में दहेज नहीं दे पाने की बात कही थी, क्योंकि उसके पिताजी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी– *"अब देने के लिए इन लोगों के पास कुछ शेष भी है? दोनों शादियों ने पापा को एकदम निचोड़कर रख दिया है। अब ग्रैच्युटी और फंड वगैरह की रकम मिली है, वहीं उनकी जेब में कुलबुला रही है। वही सब मुझ पर खर्च कर देंगे तो बाकी जिंदगी क्या करेंगे?"* *175*

दिव्या का पति जो एक डॉक्टर है, जिसके द्वारा गलत इंजेक्शन देने की वजह से मरीज की मौत हो जाती है, जिस कारण उसका लाइसेंस छीना जा सकता था। इस डर से वह भारत आकर अपना नर्सिंग होम खोलना चाहता था। जिसके लिए वह दिव्या पर उसके पापा का घर बेचकर पैसा देने का दबाव डालता है। दिव्या अपने पिता से घर बेचने को नहीं कह सकती है, क्योंकि उस पर सभी भाई–बहनों का अधिकार है। शायद दिव्या के पति के इसी दबाव के कारण दिव्या को जान गंवानी पड़ी।

कहानी का नायक आलोक जो कि बहुत ही अच्छा लड़का था, दिव्या को बहुत पसंद करता था और उसकी हर काम में मदद करता था। अलोक दिव्या से शादी करना चाहता था लेकिन यह बात दिव्या के घर वालो को अच्छी नहीं लगी और वह सभी की नजर में बुरा हो गया। दिव्या की मृत्यु के बाद उसकी शोकसभा में आलोक को देखकर दिव्या भैया को बहुत पछतावा होता है– *"कितना सुंदर लड़का! कितना होनहार, कितना सुशील! दिव्या पर जान छिड़कता था। अगर शादी हो जाती, तो उसे देवी बनाकर पूजता। उस दिन उसकी बात रख ली होती, तो दिव्या आज हमारे बीच होती। पराए देश में, अजनबी*

लोगों के बीच यूँ छटपटा कर प्राण न दे देती।" [176]

• मध्यान्तर

'मध्यान्तर' कहानी के माध्यम से लेखिका ने कामकाजी महिलाओं की पीड़ा का चित्रण किया है। कहानी की नायिका विमल एक मध्यमवर्गीय आत्मनिर्भर महिला है और मुख्य शिक्षिका के पद पर कार्यरत है। पहले विमल अपने विवाह के दहेज़ के लिए और बाद में अपनी तीन ननदों की शादी का खर्च उठाने के लिए संघर्षरत दिखती हैं। इस तरह वह अपने घर और विद्यालय दोनों जगह के कार्यों से थक जाती है– *"दिन भर के बाद जब घर लौटना होता है, तो दोनों ही थके हुए, टूटे हुए होते हैं। सारा उत्साह दफ्तर का रूटीन सोंख चुका होता है। शेष रह जाती है सिर्फ खींझ, झुंझलाहट और उलझनें। जैसे यही दिनभर की कमाई हो।"* [177]

विमल अपनी नौकरी, पारिवारिक कर्तव्यों और उसके पति द्वारा किए गए आर्थिक, शारीरिक, और मानसिक शोषण से परेशान है। हर औरत की इच्छा होती है कि उसके जीवन में कुछ सुख के पल हों, जिन्हें याद कर वह अपनी थकान, हताशा और एकरूपता को भूल सके – *"मेरी सपाट जिंदगी में ऐसा एक भी क्षण नहीं था, जिसे करीने से सहेज कर रखूँ।"*[178]

• एक और देवदास

इस कहानी के माध्यम से मालती जी ने एक नारी की सहनशीलता और सुशिलता का परिचय दिया है। कहानी की नायिका गीता और प्रकाश एक–दूसरे से प्रेम करते थे और उनके सभी मित्र उन्हें पारो और देवदास कहते है। अपने स्वार्थवश प्रकाश गीता को छोड़ किसी और से शादी कर लेता है। प्रकाश के विवाह की बात सुन गीता दुखी हो जाती है तो उसके मित्र उसे सांत्वना देते हैं– *"देवदास और पारो की कहानी कभी सुखांत हुई है भला। उस जन्म में पारो ने अनचाही गृहस्थी का बोझ ढोया था। इस बार यह सजा देवदास को*

भुगतने दें।" [179]

गीता जो कि अब 38 वर्ष की हो चुकी है और वह एक हॉस्टल में काम करती है। प्रकाश की पत्नी का देहांत हो चुका है। जिस हॉस्टल में गीता काम करती है और वह डॉ. इन्दु से दूसरी शादी कर रहा है। 19 साल बाद प्रकाश उसी हॉस्टल में अपनी छोटी बेटी वसु को भर्ती करने को आता है जिसे देख कर गीता चौक जाती है। गीता को देख प्रकाश उससे पूछता है कि तुमने शादी क्यों नहीं की? इस पर गीता बड़ी निडरता एवं आत्मविश्वास के साथ प्रकाश को जवाब देती है से। और प्रकाश की दूसरी शादी की बारे में जान कर गीता को लगता है कि प्रकाश नारी से सिर्फ शारीरिक प्रेम करने वाला व्यक्ति है। यह कहानी समाज की वास्तविकता पर आधारित है।

- **अस्तांचल**

मालती जी की कहानी *'अस्तांचल'* एक मध्यमवर्गी परिवार की भाव प्रधान कहानी है। कल्याणी की बेटी चित्रा भावुकता में कोई गलत निर्णय न ले इसलिए कम उम्र में ही उसका विवाह जल्दी कर देती है। शिरीष जो कल्याणी का बेटा है अपनी माँ की चिंता किये बिना हमेशा अपने मित्रो के साथ घूमता रहता है। जिस कारण कल्याणी को सदेव अकेलापन महसूस होता है– *"जीवन का यह आखिरी पड़ाव तो ऐसे ही काटना होता है। बच्चे जब अपने संगी–साथियों में डूब जाए तब एक–दूसरे का हाथ पकड़ कर ही बाकी रास्ता तय करना होता है।"* [180]

कल्याणी अपने आप को असहाय और अकेला महसूस करने लगती है और अपने जीवन में उसे हर तरफ नीरसता का अनुभव होता है– *"जब करने को कुछ नहीं रह गया है, तब एकाएक थक गई हूँ। यौवन के उद्दाम ज्वार में जिस हाथ को निर्मलता से झटक दिया*

था, उसे दोबारा पकड़ने में भी ग्लानि अनुभव हो रही है। सोचती हूँ, शायद इसी दिन के लिए नारी सब कुछ सह लेती है। सब कुछ निभा जाती है।" [181] इस कहानी में एक नारी के मन की छटपटाहट को दिखाया गया है।

- **एक सार्थक अहसास**

यह कहानी एक भाव प्रधान कहानी है जिसकी नायिका सावित्री की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। वह बाबू जी के घर का सारा काम करती है। बाबूजी की पत्नी का देहांत हो चुका है और बाबूजी के बेटा और बहू जो उनके साथ रहते हैं, हमेसा लड़ते रहते है। बाबूजी उनसे पूछना चाहते थे कि *"कई बार मन हुआ है कि बेटे को अकेले में पूछ लें, भई, क्या परेशानी है? तुम लोग इतने उखड़े–उखड़े क्यों रहते हो?"* [182] बाबूजी सोचते है कि उनकी पत्नी अगर जीवित रहती तो वह अपने बेटा और बहू दोनों को डांटती और समझाती।

सावित्री जो बाबूजी के घर की नौकरानी है वह घर का सारा काम करते हुए घर के सदस्य की तरह बाबूजी का ध्यान भी रखती है– *"उसमें नौकरों वाली बात नहीं है, बल्कि एक अपनापन है। उस अहसास के साथ वह एकाध फुलका ज्यादा भी खा जाते हैं। दिन–भर में यही एक क्षण होता है जो परम तृप्ति का होता है। यूँ तो बहू भी प्रेम से ही परोसती है, पर ना जाने क्यों एक संकोच बना ही रहता है।"* [183]

किसी भी रिश्ते का आधार प्रेम और विश्वास होता है। बाबूजी के बुढापे में, सावित्री उनका सहारा बनकर उनसे स्नेह प्राप्त करती हैं। उनका यह सम्बन्ध उन्हें आत्मीयता की भावना और साथ निभाने की शक्ति प्रदान करता है।

मालती जोशी की कहानियों में महिलाओं के यथार्थ चरित्र का अंकन किया गया है। उनका साहित्य महिलाओं की वास्तविक स्थिति का दर्पण है। इनमें पुरुष सत्ता व उसके स्वार्थ का भी प्रदर्शन दिखायी देता है। इनमें महिलाएँ कमजोर दिखायी गयी हैं अपितु उन्होंने

महिलाओं के आत्मविश्वास, दृढ स्वभाव एवं स्वतंत्रता का भी प्रतिपादन अपनी कहानियों के माध्यम से किया है।

2.17 सूर्यबाला

आठवें दशक के हिन्दी लेखकों में जिन महिला कथाकारों ने अपनी पुख्ता पहचान बनायी है, उनमें सूर्यबाला का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। उनकी कहानियों का फलक व्यष्टि से परे, समष्टि के विस्तृत क्षितिज तक फैला है। सूर्यबाला ने अपने साहित्य में नारी–मन के अंतर्द्वंद और विषम सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के बीच जीवन यापन करने वाले मध्यमवर्गीय समाज की विसंगतियों की बड़ी ही मार्मिक अभिव्यक्ति की है। समसामयिक विषमताओं को लेखिका अपनी व्यंगात्मक दृष्टि से भेदती नजर आती हैं। लेखिका की सहजता और सरलता पात्रों की पीड़ा और उनके दर्द से पाठकों को उनसे जुड़ने में आसान बना देती है।

मानुष गंध, मेरे संधिपत्र, यामिनी कथा, दीक्षांत, एक इन्द्रधनुष जुबैदा के नाम, दिशाहीन, थाली भर चाँद, ग्रह–प्रवेश, साँझवती, पाँच लम्बी कहानियाँ आदि उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। समाज और जीवन से संबद्ध गहरी संवेदनाएँ जैसी सूर्यबाला की कहानियों में प्रदर्शित होती है वैसी अन्यत्र देखने को नहीं मिलती।

- **मेरा विद्रोह**

'मेरा विद्रोह' एक मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति का वर्णन करती पिता–पुत्र के सम्बन्ध को प्रदर्शित करती भाव प्रधान कहानी है। इस कहानी के नायक के पिता एक साधारण व्यक्ति है; परन्तु अपने पुत्र को लेकर उसके बड़े–बड़े स्वप्न हैं। नायक के पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, फिर भी वह नायक का दाखिला अंग्रेजी माध्यम के

कान्वेंट स्कूल में कराता है और बड़ी ही मेहनत के साथ उसे पढाता है। एक बार उसके स्कूल वाले सभी बच्चों को पिकनिक ले जाते है और वह भी पिकनिक पर जाना चाहता है परन्तु अपनी आर्थिक स्थिति के चलते पिता उसे पिकनिक पर नहीं भेज पाता और उसके जिद्द करने के कारण उसे दो चाटे भी मार देता है।

एक बार नायक के मित्र रमन की बर्थ–डे पार्टी का न्योता रमन ने सबसे पहले उसे ही दिया था, जिसके कारण वह बहुत प्रसन्न था और निमंत्रण कार्ड घर ले जाकर जब पिताजी को दिया तो उन्होंने सख्ती के साथ मना कर दिया। नायक के बहुत जिद्द करने पर पिता ने उसे जोरदार चाटा मारा जिसका निशान उसके गाल पर बन गया। माँ ने उसे प्यार कर पार्टी के लिए तैयार किया और पिता के साथ रमन के घर भेजा जहाँ रमन के पिता जी के पूछने पर उसके पिता ने झूठ बोला कि वह गिर गया जिसके कारण उसके मन में पिता के प्रति विद्रोह की भावना जागृत हो गयी और धीरे धीरे नायक का मन पढाई से हटने लगा। वह हर समय इस प्रयास में रहता कि कैसे अपने पिता को दुःखी करे और विद्रोह में कहता है– *"मैं भी देखूँगा, आपकी इज्जत धूल में मिलाने के लिए तो कुली–कबाड़ी क्या चोर–उच्चका तक बन जाने में मुझे ऐतराज तक न होगा।"* [184]

एक दिन नुक्कड़ की दूकान पर माचिस खरीदते समय पिता को देख कर नायक उन्हें दुःखी करने के लिए – *"जाने क्या मन में आया कि दुकानवाले से एक सिगरेट खरीद लेता हूँ –कनखियों पर ठहरी उनकी कुपित नजरों के सामने एक भरपूर कश लेकर छोड़ देता हूँ..... जानता हूँ घर पहुँचकर खूब गरजेंगे– दहाड़ेंगे। दहाड़े.... मेरे मन का विद्रोह तृप्त होगा..."* [185] इसके बाद नायक जब घर लौटता है तो अपने पिता को रोता हुआ देखकर उसे बहुत पछतावा होता है और उसके मन में उत्पन्न विद्रोह समाप्त होने लगता है और वह कहता है– *"पिताजी मैं सन्धि चाहता हूँ – हाँ मै सन्धि चाहता हूँ।"* [186] इस कहानी के माध्यम से सूर्यबाला जी बच्चो की मानसिकता और पिता की महत्त्वाकांक्षाओ का पड़ने

वाले प्रभावों को दर्शाया है।

- **कंगाल**

'कंगाल' विनय नामक युवक की कहानी है जो कि बेरोजगारी की चुनौती से जूझ रहा है, जिसके परिवार में बहुत सारे लोग है। विनय के पिता जो की सेवानिवृत्त हो चुके है, और उसकी माँ की दवाइयों और बहन बिंदु की पढाई का खर्च उनकी पेंशन से होता है। विनय के दो बड़े भाई अपनी कमाई से अपना गृहस्थी चला रहे हैं। एम. ए. करने के बाद विनय ने बहुत से इंटरव्यू दिए लेकिन कोई सफलता हाथ नहीं लगी, जिसके कारण उसके पिताजी उसे हमेशा टोका करते थे। भाई और भाभी भी उसे कुछ न कुछ सुनाते थे, जिस कारण विनय हमेशा उदास रहता था। विनय का छोटा भाई पवन जो उससे दो साल छोटा है, और मेडिकल के फाइनल इयर में है, एक दिन अपने साथ दोस्तों को घर ले आता है। उनके चाय नाश्ते के लिए कम खर्चे में काम करने तथा उसके बेरोजगार होने के कारण विनय को भेजकर नाश्ते का सामान मंगवाते हैं। इस प्रकार विनय की बेरोजगारी और आर्थिक तंगहाली के कारण कोई भी सामान बाज़ार से माँगाने के बाद हिसाब नहीं लिया जाता था ना ही कुछ कहा जाता था। इसलिए उसे लगने लगा कि लाचारी ने उसके समूचे व्यक्तित्व को कमजोर कर दिया है। वह चाहता था कि अपने खोये हुए अस्तित्व को वापस जगाए। विनय जब भी घर लौटता तो अपनी असमर्थता के कारण उसे महसूस होता है की जैसे संबंधो के बंधन खुलने लगते हैं। चारों ओर से सहानुभूति भरी निगाहें उसे ऐसा महसूस कराती कि वह दूसरो पर इतना निर्भर कैसे हो गया और उसे इसका एहसास भी नहीं हुआ, क्योंकि हर किसी के पास उसके प्रति देखभाल व्यक्त करने के अपने–अपने तरीके थे।

विनय अपनी लगातार मिलने वाली असफलता के कारण किसी भी प्रतियोगी परीक्षा के लिए फॉर्म भरने की बात घर पर आकर किसी के सामने करने से कतराता था। एक दिन

उनके मामा की तेरही के कार्यक्रम में अपनी अपनी व्यस्तता के कारण घर का कोई भी सदस्य जाना नहीं चाहता था, और विनय ही अकेला ऐसा था जिस पर सभी लोगों की निगाहे टिक जाती है, और वह बिना कुछ कहे अपनी माँ के साथ चला जाता है। जब वह वापस लौटता है तो पिताजी की खुशी देखते हुए उसे पता चलता है कि किसी प्रतियोगी परीक्षा में उसके अच्छे अंक आए है, *"अरे बिनै.... तुमने कोई इम्तहान दिया था? ये देखो उसकी मार्क्सशीट आयी है। नम्बर तो बहुत अच्छे है.... इण्टरव्यू कब है इसका?"* [187] इस पर वह मन में ही विचार कर दुखी होता है और मन में ही सोचता है कि उस परीक्षा से संबंधित इंटरव्यू तब हो चुका जब वह माँ के साथ गाँव चला गया था। इस प्रकार जो आशा उसके मन में थी, उस पर भी पानी फिर गया है। लेकिन बेरोजगारी उसके पीछे भँवरे की तरह मँडरा रही है। बेरोजगार युवक की मानसिक स्थिति वैसे तो बहुत निर्बल होती है। वह सबका निशाना बनकर रह जाता है। इसी बात को विनय द्वारा लेखिका ने दिखाने की कोशिश की है।

- **सुनो सामित, सुनो सुलभ**

इस कहानी की नायिक विन्नी है। उसका पति अपना करियर बनाने के लिए कनाडा चला जाता है और विन्नी को अपने चार साल के बेटे सुलभ के साथ अकेला छोड़ देता है। शुरू में हर हफ्ते उसका पति उसे पत्र भेजता हैं। पति के पत्र को पढ़कर वह कुछ देर के लिए अपना अकेलापन भूल जाती है। वह अपना सारा ध्यान अपने बेटे पर लगाती हैं। कुछ दिनों बाद उसके पति के पत्रों का सिलसिला बन्द हो जाता है। यह बदलाव उसके पति के व्यवहार में झलकता है। वह अपनी पत्नी को, अपने बेटे को उचित शिक्षा देने की सलाह देता हैं। उनका रिश्ता सिर्फ दोस्ती तक रह जाता है और वह अन्य महिला के साथ संबंध होने की

बात बताता है। अब वह सिर्फ अपनी पत्नी को पैसे ही भेजता हैं।

इस घटना से विन्नी थोड़ा सदमे में है। हालाँकि, वह आत्मविश्वास हासिल कर लेती है और फिर से काम करना शुरू कर देती है। वह अपनी कमाई से अपने बेटे को अकेले बड़ा करने का संकल्प लेती है। वह अपना सारा ध्यान सुलभ पर केंद्रित करती हैं। यहां तक कि वह अपने बच्चे की वजह से अपनी पसन्द की चीजें खरीदना भी त्याग देती है। लेकिन जब सुलभ बड़ा हुआ, तो उसके पिता ने सुझाव दिया कि कनाडा में उसके लिए नौकरी के अवसर हो सकते हैं। अपने बेटे के प्रति प्यार के बावजूद, विन्नी उसे जाने से नहीं रोक सकती। अपने बेटे के कनाडा चले जाने के बाद, उसने फैसला किया कि अब से वह केवल अपने लिए जिएगी।

'सुनो सामित, सुनो सुलभ' नामक कहानी में कहानी की नायिका विन्नी एक सदियों पुरानी मान्यता को याद दिलाती है। विन्नी एक संरक्षित महिला के रूप में वर्णित है जो पारंपरिक मानदंडों के अनुसार बचपन में अपने पिता, युवावस्था में पति और बुढ़ापे में बेटे की छाया में रहती है। एक के बाद एक चुनौतियों का सामना करने के बाद भी, विन्नी टूटती नहीं है और अकेले अपने लिए, केवल अपने अस्तित्व के लिए जीने का निर्णय लेती है।

- **गृह प्रवेश**

'गृहप्रवेश' कहानी एक व्यक्ति के सपने की खूबसूरत कहानी है। सपना घर बनाने का है। इस कहानी का नायक बीरू भी इस सपने से अछूता नहीं है. वह गृहप्रवेश समारोह के लिए अपनी बहन को एक पत्र भेजता है। जिस दिन उसकी बहन और उनके परिवार को आना था, उस दिन शहर में तनाव फैल गया, माहौल भयानक हो गया और सभी दुकानें बंद होने लगीं। वाहन खड़े रहे। ऐसे तनावपूर्ण और डरावने माहौल में वह उस दिन नहीं आ

सकीं।

दीदी और उसका परिवार गृहप्रवेश पर न सही, डेढ़ महीने के बाद वहाँ पहुँचते हैं। भाई का घर काफी दूर रेलवे ट्रैक के पास था. यह एक ऐसा इलाका था जहाँ हमेशा तनाव रहता था. लूट, चोरी, डकैती की घटनाएं हमेशा होती रहती थीं। ऐसे माहौल में शकुन को डर लगता था और वह हमेशा भयभीत रहती थी। वह ऐसी घटनाओं को देखकर चुप और डरी रहती थी। दिन में गुंडे बच्चों का अपहरण कर लेते थे, जिससे दहशत का माहौल बन जाता था। यह पूरा वातावरण आतंक से प्रभावित था। बीरू और उसका परिवार धीरे–धीरे इस आतंक से प्रभावित होने लगा। उनके मन में एक अजीब सा डर बना हुआ था।

जितने दिन बहन अपने भाई के यहाँ रहती थी तो उसे अपने भाई के घर के आस–पास का माहौल अपने शहर जैसा ही लगता था। हालाँकि, ये लोग एक अलग वातावरण में रहते थे, उन्हें हमेशा सतर्क रहना पड़ता था। सोते समय भी उन्हें अपने दरवाज़ों को बड़े तालों से मजबूत करना पड़ता था। आँगन में बचा हुआ कोई भी सामान गायब हो जाता था। आस–पास बार और जुए के अड्डे थे। इस वातावरण का प्रभाव शकुन के पुत्र पर पड़ा। वह धीरे–धीरे ऐसे व्यवहारों की नकल करने लगा। माहौल ऐसा था कि शाम को घर से बाहर निकलना सुरक्षित नहीं था। इतना ही नहीं, बल्कि भाई–बहन के बचपन की दोस्त राधा को उसके पति और बच्चों समेत बदमाशों ने दिनदहाड़े गोली मार कर मौत के घाट उतार दिया था।

सारी स्थिति को देखकर हमेशा डरी रहने वाली शकुन अपने पति से कहती है कि ऐसे हालात में उसे अपना घर नहीं चाहिए। उन्हें यह मोहल्ला छोड़ कर अपने पुराने मोहल्ले में वापस चले जाना चाहिए। लेकिन वहाँ का माहौल भी कुछ ऐसा ही था, जिसकी याद वीरू उसे दिलाता हैं। शकुन को बच्चों की चिंता सताती रहती है; वह न ठीक से सो पाती, न दिन में अकेली रह पाती। शकुन की हालत देखकर बीरू परेशान हो जाता है और कहता हैं,

"इससे कहो, दीदी, यंत्रणाओं केबीच जीने की कला तलाशे अपने अंदर, अगर सचमुच जीना और मुझे भी जीने देना चाहती हो तो।" [188]

अपने भाई का एक नया रूप देखकर बहन आश्चर्यचकित हो जाती है और अपने भाई और भाभी की परेशानी देखकर चिंतित भी हो जाती है। वह शकुन से कहती है, ''*तुम्हारे अंदर ऐसी परिस्थितियों से निपटने की क्षमता है।*'' कहानी के अंत में शकुन के मन से डर दूर हो जाता है, जिससे बीरू का खोया हुआ आत्मविश्वास भी लौट आता है। इस प्रकार शकुन बीरू की आँखों में अटूट विश्वास के बीज बोने में सफल हो जाता है। *'गृहप्रवेश'* के डेढ़ महीने के बाद, आखिरकार उनका वास्तविक गृहप्रवेश हो गया। प्रस्तुत कहानी के द्वारा आज के मनुष्य की मानसिकता, ड़र, आतंक को सूर्यबाला जी ने बड़ी मार्मिकता से उजागर किया है।

- **सौगात**

सूर्यबाला की यह कहानी आज के समाज में व्याप्त खोखलेपन का ज्वलंत आख्यान है। इसमें दर्शाया गया है कि हमारा समाज किस तरह बुजुर्गों की उपेक्षा करता है। यह एक बूढ़े आदमी की कहानी है जिसके परिवार के सभी सदस्य उससे तंग आ चुके हैं। अपने ही परिवार में उसकी स्थिति एक नौकर जैसी हो जाती है। उनकी बहू उन्हें हमेशा कामों में व्यस्त रखना चाहती है। उनके बेटे और पोते भी उनकी उपेक्षा करते हैं। लगातार उनका अनादर करते हैं, जिससे वह बहुत परेशान रहते हैं। मोतियाबिंद के कारण उन्हें रात में कम दिखाई देता है, फिर भी उनसे कोई न कोई काम करने की अपेक्षा की जाती है।

मोतियाबिंद के ऑपरेशन के बाद बुजुर्ग का बेटा उसका ठीक से ध्यान नहीं रख पाता। वे हमेशा बूढ़े आदमी को कोसते रहते थे, जो उसे उसकी मृत पत्नी की याद दिलाती है। ऐसे समय में उनकी देखभाल के लिए भौजी को बुलाया जाता है। वह उसका बहुत अच्छे

से ध्यान रखती है। आँख की पट्टी खुलने के कुछ दिनों बाद तक अस्पताल में भौजी उनकी देखभाल अच्छे से करती है, लेकिन जैसे ही उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिली, भौजी को वापस भेज दिया गया; क्योंकि अब उनका कोई काम नहीं है। इससे बूढ़े को बहुत दुःख हुआ। इस पर उनकी बहू उनसे कहती है, *"अब आप बूढे हुए, भजन–पूजा में ध्यान लगाइए।"* [189] भौजी सभी के साथ बहुत सौहार्दपूर्ण व्यवहार करती हैं। जब वह घर वापस जाने लगती है तो घरवाले उसे खाली हाथ वापस भेजना चाहते हैं। यह देखकर बूढ़े व्यक्ति को बहुत दुख होता है।

कहानी के अन्त में वे अपनी पत्नी रेवती की बरसों से संभाली हुई साड़ी और उसके हाथ का बना बटुआ उन्हें दे देते है। कहानी का सबसे उपेक्षित पात्र बूढ़े की अनोखी सौगात पाठकों को चकित करती है। प्रस्तुत 'सौगात' नामक कहानी पाठको के हृदय को स्पर्श करती है।

कहानी के अंत में, बुजुर्ग भौजी को अपनी दिवंगत पत्नी रेवती की संभाल कर रखी हुई साड़ी और उसके सामान से एक हस्तनिर्मित पर्स देते हैं। कहानी के सबसे उपेक्षित पात्र का यह अनोखा उपहार पाठकों को आश्चर्यचकित कर देता है। 'सौगात' शीर्षक कहानी पाठकों के दिलों को छू जाती है।

- **संताप**

यह कहानी आधुनिक मानव की स्वार्थपरता की ओर संकेत करती है। यह मानव स्वभाव का एक घृणित पहलू प्रस्तुत करता है। कहानी के नायक हेमंत के दो बच्चे हैं, एक विकलांग बेटी और एक बेटा जो मर चुके है। इस त्रासदी का असर उनकी पत्नी पर बहुत गहरा पड़ता है। जब आस–पड़ोस की महिलाएँ उसे सांत्वना देने आती हैं, तो वे उसके घावों को और बढ़ाने के अलावा कुछ नहीं कर पाती हैं। पत्नी इस बात से दुखी है कि उसके

पति ने तेज बहाव में बच्चों को बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में नहीं डाली। उसका पति स्वार्थ की कठपुतली है, हमेशा उच्च अधिकारियों को प्रसन्न करके उन्नति प्राप्त करता रहता है। जब वह और बच्चे पैदा करने की बात करता है तो वह चिल्लाती है और बेहोश हो जाती है, लेकिन तभी साहब की कार का हार्न सुनकर उत्सुक पति, उसे जल्दी से होश में लाने की बात करता है, और यह कहता है कि "*आज तक कभी किसी के घर बड़ी से बड़ी गम में नहीं गए और मेरे यहाँ जरा जरा से बच्चों की मौत पर भी------*" [190] उसके लिए वह मृत्यु जरा लगती है।

इस कहानी में यान्त्रिकता-बोध को उजागर किया गया है तथा उसके 'अहं' को दर्शाया गया है। '*संताप*' नामक कहानी मौत की आड़ मे सहानुभूति पाकर बॉस की निगाहों में चढ़ने आजीविका सम्बंधित मानसिकता पर करारा चोट करती है।

सूर्यबाला ने अपने अलग और विविधतापूर्ण वैशिष्ट्य के कारण हिन्दी कथा-लेखन में महती भूमिका निभायी है। और वे आज भी सक्रिय हैं।

2.18 निष्कर्ष

21वीं सदी के इन लेखकों की कहानियों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि इनकी सभी कहानियाँ आधुनिक समाज में मौजूद ज्वलंत मुद्दों को दर्शाती हैं। ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसे उजागर न किया गया हो, जो हर किसी के लिए चिंता का विषय हो। इन लेखकों ने अपने प्रबुद्ध पात्रों के माध्यम से इन मुद्दों के समाधान को बहुत सटीक तरीके से चित्रित किया है।

इन लेखकों ने अपने प्रबुद्ध पात्रों के माध्यम से इन मुद्दों के समाधान को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित किया है। उनकी कहानियाँ पाठक के दिल और आत्मा को छू जाती हैं, अमिट प्रभाव छोड़ती हैं। इन्हें पढ़कर पाठक भावुक और प्रेरित हो जाते हैं। यही उनकी कहानियों

का सार्थक सार है।

अध्याय–3

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में सामाजिक चिन्तन

साहित्य और समाज के सम्बन्ध को आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने इन शब्दों में व्यक्त किया है – *"साहित्य और जीवन का क्या संबंध है, यह प्रश्न आज एक विशेष प्रयोजन से पूछा जाता है। वर्त्तमान भारतीय समाज एक ऐसी अवस्था में पहुँच गया है जिसके नवयुवकों के लिए यह क्रांति की घड़ी है।"* [191] प्रारंभ से ही साहित्य का स्थान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसे प्राचीन संस्कृत ग्रंथों, क्षेत्रीय बोलियों और मध्ययुगीन साहित्य में देखा जा सकता है। प्रारंभिक साहित्यिक कृतियाँ अधिकांशतः सामाजिक मानदंडों, धार्मिक मान्यताओं और राजनीतिक विचारधाराओं से जुड़ी हुई थीं, जो अपने समय के मूल्यों और चुनौतियों को दर्शाती थीं।

साहित्य समाज के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है, जो उसकी आकांक्षाओं, संघर्षों और विजय को दर्शाता है, इसी सन्दर्भ में बालकृष्ण भट्ट लिखते हैं *"प्रत्येक देश का साहित्य उस देश के मनुष्यों के हृदय का आदर्श रूप है, जो जाति जिस समय जिस भाव से परिपूर्ण या परिलुप्त रहती है, वे सब भाव उस समय के साहित्य की समालोचना से अच्छी तरह प्रकट हो सकते हैं। लेखक वास्तविक जीवन की घटनाओं, सामाजिक अन्याय और सांस्कृतिक दुविधाओं से प्रेरणा लेते हैं।"* [192] जैसे प्रसिद्ध हिंदी लेखक प्रेमचंद की रचनाएँ औपनिवेशिक युग के दौर में सामाजिक–आर्थिक असमानताओं, ग्रामीण जीवन और निचले पायदान पर पड़े लोगों की दुर्दशा को स्पष्ट रूप से चित्रित करती हैं। साहित्यिक रचनाएँ न केवल मनोरंजन करती हैं बल्कि सामाजिक मुद्दों के बारे में आलोचनात्मक सोच

को विकसित और प्रेरित भी करती हैं।

कई साहित्यिक आंदोलनों ने सामाजिक सुधार को आगे बढ़ाने और महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सूर्यकांत त्रिपाठी `निराला` और महादेवी वर्मा जैसे रचनाकारों ने कई साहित्यिक आंदोलन में पारंपरिक मानदंडों को चुनौती दी, लैंगिक समानता की वकालत की और सामाजिक अन्याय को संबोधित किया। अपने प्रगतिशील लेखन के माध्यम से, इन लेखकों ने सामाजिक परिवर्तन को उत्प्रेरित किया और एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत समाज का मार्ग प्रशस्त किया। साहित्य सामाजिक मानदंडों, संस्थानों और सत्ता संरचनाओं की आलोचना के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करता है।

समाज और साहित्य का संबंध सहजीवी एवं बहुआयामी है। साहित्य सामाजिक गतिशीलता, सांस्कृतिक मूल्यों और ऐतिहासिक संदर्भों को प्रतिबिंबित करता है और साथ ही सामाजिक चेतना, सुधार और पहचान को भी प्रभावित करता है। यह गतिशील परस्पर क्रिया साहित्य और समाज दोनों को समृद्ध करती है, एक जीवंत साहित्यिक परंपरा और एक अधिक प्रबुद्ध और सहानुभूतिपूर्ण समाज में योगदान देती है।

21वीं सदी में महिला लेखिकाओं के साहित्यिक योगदान में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, इनकी कथाएँ सामाजिक जटिलताओं में गहराई से उतरती हैं और विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। इस अध्याय का उद्देश्य इन प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में चित्रित सामाजिक सोच और जागरूकता के विषयों पर प्रकाश डालना है।

पिछले कुछ दशकों में, भारतीय साहित्य में महिला लेखिकाओं द्वारा रचित रचनाओं के माध्यम से एक परिवर्तनकारी बदलाव देखा गया है जो मानदंडों को चुनौती देती हैं, सामाजिक संरचनाओं पर सवाल उठाती हैं और बदलाव की वकालत करती हैं। इन

लेखिकाओं ने कुशलतापूर्वक कथाएँ लिखी हैं, जो न केवल मनोरंजन करती हैं बल्कि आलोचनात्मक सोच को प्रेरित भी करती हैं।

अपनी कथाओं के माध्यम से, इन लेखिकाओं ने लैंगिक असमानता, जातिगत भेदभाव, धार्मिक तनाव, पर्यावरणीय गिरावट जैसे अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश डाला है। उन्होंने सूक्ष्म दृष्टिकोण, सहानुभूतिपूर्ण चरित्र–चित्रण और विचारोत्तेजक कथानक प्रस्तुत किए हैं, जो महत्वपूर्ण सामाजिक मामलों पर विचार करने को प्रेरित करते हैं।

इन लेखिकाओं ने सामाजिक जागरूकता लाने, रूढ़िवादिता को चुनौती देने और सकारात्मक बदलाव को प्रेरित करने के लिए कहानी कहने को एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उपयोग किया है। उनकी कहानियाँ न केवल मनोरंजन करती हैं, बल्कि समाज के लिए एक दर्पण के रूप में भी काम करती हैं, जो पाठकों को प्रचलित मानदंडों पर विचार करने और अधिक समावेशी और न्यायसंगत भविष्य की कल्पना करने के लिए प्रेरित करती हैं।

3.1 समाज से आशय

"समाज" शब्द संस्कृत के दो शब्दों "सम" और "अज" से मिलकर बना है। यहां, "सम" का अर्थ एक साथ या एकजुट है, और "अज" का अर्थ एक साथ रहना है, जिसका अर्थ है एक साथ रहने वाले लोगों का समूह या समुदाय। इसे समाज नहीं बल्कि मनुष्यों का समुदाय कहा जाता है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति इस समुदाय की एक इकाई है।

जन्म के बाद मनुष्य किसी परिवार या समाज में रहता है और किसी विद्यालय से शिक्षा प्राप्त करता है, जो उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज के भीतर न केवल व्यक्तियों के समूहों में रहने पर बल्कि व्यक्तियों के बीच आपसी संबंध स्थापित

करने पर भी जोर दिया जाता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं और समाज में रहकर वे ऐसी गतिविधियाँ करते हैं जो उनके और समाज के अस्तित्व और विकास में योगदान करती हैं। सहयोग और सौहार्द की भावना से प्रेरित होकर, जब मनुष्य एक–दूसरे के साथ बातचीत करते हैं, तो इन विभिन्न गतिविधियों की परिणति अंततः सामाजिक चेतना, मूल्यों, जिम्मेदारियों और बहुत कुछ का आधार बनती है।

वस्तुतः समाज की अवस्थिति मानव द्वारा अपने परिवेश के साथ किये जाने वाले अनुकूलन में निहित है तथा इसी अनुकूलन अथवा समायोजन के पहलुओं के आधार पर मानव समाज में विभिन्न संस्थाओं का उद्भव व विकास होता है। इस प्रकार सामाजिक संबन्धों का एक पक्ष साहचर्य, संगठन, संरचना एवं बहुमुखी सामूहीकरण का है तो दूसरा पक्ष आदर्शात्मक सिद्धान्तों व उनसे उत्पन्न संस्थाओं का है। सिद्धान्तों से ही संस्थाओं की उत्पत्ति होती है। दूसरे शब्दों में यह संस्था सामाजिक सिद्धान्तों का वह व्यवस्थित रूप है जिससे मानव की आधार भूत आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। इन संस्थाओं का संश्लिष्ट रूप ही समाज है।

वृहत् हिन्दी कोश के अनुसार समाज का अर्थ– *"मिलना, एकत्र होना, समूह', संघ, दल, सभा, समिति आदि।"* [193]

कुछ विद्वानों के अनुसार समाज का अर्थ है–

डॉ० श्याम सुन्दरदास के अनुसार– *"एक ही स्थान पर रहने वाले तथा एक ही प्रकार का व्यवसाय करने वाले लोग जो परस्पर एक अलग समूह मानते हैं।"* [194]

अज्ञेय के अनुसार– *"समाज से अभिप्राय है, वह परिवृत्ति जिसके साथ व्यक्ति किसी भी प्रकार अपनापन महसूस करे।"* [195]

आर० एम० मैकाइवर के अनुसार– *"समाज सामाजिक सम्बन्धों का ताना–बाना*

है।” [196]

लापियर के अनुसार– *“समाज मनुष्यों के समूह का नाम नहीं, बल्कि यह मनुष्यों के अन्तः सम्बन्धों की जटिल व्यवस्था है।”* [197]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि *'समाज'* शब्द का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। यह एक परिवार जैसी छोटी इकाई से लेकर राष्ट्र जैसी बड़ी इकाई तक हो सकता है। समग्र रूप से मानवता को देखते हुए, पृथ्वी पर सभी व्यक्तियों को एक विशाल मानव समाज के हिस्से के रूप में देखा जाता है। समाज के कार्यों को छोटे सामाजिक समूहों, सभाओं, समुदायों और संस्थानों जैसी विभिन्न संस्थाओं के बीच वितरित किया जाता है। समूह सामाजिक संगठन में एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में सामने आता है। गाँव, शहर, राज्य, देश आदि जैसे शब्द न केवल लोगों के समूहों को दर्शाते हैं, बल्कि विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों से भी जुड़े होते हैं। समाजशास्त्र में इन समूहों को 'समुदाय' कहा जाता है। ग्रीन के शब्दों मे समुदाय संकीर्ण प्रादेशिक घेरे में रहनेवालों उन व्यक्तियों का समूह है जो जीवन के सामान्य ढंग को अपनाते हैं। एक समुदाय एक स्थानीय क्षेत्रीय समूह है।

निश्चित रूप से, यह स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है कि केवल एक ही स्थान पर रहने से स्वतः ही कोई सामाजिक समुदाय नहीं बन जाता। किसी समुदाय के निर्माण के लिए एक मजबूत सांस्कृतिक आधार आवश्यक है। यंग का दृष्टिकोण इस बात पर जोर देता है कि एक समुदाय में अपनी गतिविधियों के लिए सामान्य भौगोलिक केंद्र के साथ सांस्कृतिक वातावरण में रहने वाले व्यक्ति शामिल होते हैं। इस प्रकार, एक समुदाय में भौगोलिक सीमा और सांस्कृतिक एकता दोनों की विशेषता होती है, जो समाज के भीतर एक अनूठी इकाई के रूप में कार्य करती है और चल रही सामाजिक गतिविधियों को बनाए रखती है।

समाज के भीतर, लिंग के आधार पर एक प्राकृतिक विभाजन है – पुरुष और

महिला वर्ग। पुरुषों और महिलाओं की तुलना जीवन के रथ के दो आवश्यक पहियों से की जाती है। उनका आपसी सहयोग उनके व्यक्तिगत जीवन, परिवार और बड़े स्तर पर समाज की भलाई और प्रगति को बढ़ावा देता है। मातृ सत्तात्मक परिवार में पारिवारिक उत्तरदायित्व तथा राजनीतिक शक्ति भी नारी के अधीन थी। नारी माता है और उसी के कारण सृष्टि का विकास होता है – इस धारणा ने जहाँ नारी को महत्व प्रदान किया वही प्रजनन तथा उससे जुड़े अन्य उत्तरदायित्वों ने उसकी सामाजिक भूमि को बदलने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। महिलाओं ने स्नेह, पवित्रता, निष्ठा, कोमलता और निस्वार्थ सेवा जैसे गुणों के माध्यम से परिवारों और समाज को मजबूती प्रदान करने में लगातार महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

महिलाओं ने संतानोत्पत्ति, पालन–पोषण, शिक्षा और सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन क्षेत्रों में अधिकांशतः वे पुरुषों से आगे निकल जाती हैं। इस बढ़े हुए महत्व के कारण महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर पर्याप्त पुनर्विचार हुआ। जब कभी महिलाएँ अपने अधिकारों और महत्व के प्रति जागरूक हुई, तब समाज में राजनीति, धर्म और शिक्षा जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अपरिहार्य व्यवधानों का अनुभव किया जाने लगा और आज, जैसे–जैसे हम पुरुषों और महिलाओं की भूमिकाओं का पुनर्मूल्यांकन कर रहे हैं, आधुनिक संदर्भों में पारंपरिक मूल्यों की प्रासंगिकता के संबंध में नए प्रश्न उठ रहे हैं।

संक्षेप में, कह सकते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपनी अनुभूतियों, इच्छाओं, बौद्धिक चेतना, कर्मशक्ति तथा सभ्यता का लाभ सामाजिक परिवेश में रह कर उठा सकता है। मानव सभ्यता और संस्कृति का विकास सामाजिक चेतना के विकास से जुड़ा हुआ है। परिवार समाज की मूलभूत इकाई के रूप में खड़ा है, जो मानव गतिविधि को दो मुख्य क्षेत्रों में विभाजित करता है: पारिवारिक और सामाजिक गतिविधियाँ।

सामाजिक व्यवस्था पुरुषों और महिलाओं के बीच भूमिकाओं के प्रभावी वितरण

और समायोजन पर बहुत अधिक निर्भर करती है, क्योंकि वे सामूहिक रूप से विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं को पूरा करने के लिए जिम्मेदार हैं। सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य की अनेक आवश्यकताएँ होती हैं, जो उसे दूसरों से सहयोग लेने के लिए प्रेरित करती हैं और यह सहयोग उसे उसके आचरण के आधार पर प्राप्त होता है। किसी समाज के भीतर रहना व्यक्तियों को उस समाज में प्रचलित विभिन्न व्यवहारों, रीति–रिवाजों और गतिविधियों से अवगत कराता है। समाज मनुष्य के मात्र जैविक अस्तित्व से सामाजिक अस्तित्व में संक्रमण के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है, जो उन्हें संस्कृति की गहरी समझ प्रदान करता है। जहाँ समाज में रहने से व्यक्तियों के बीच सकारात्मक संबंध विकसित होते हैं, वहीं यह शत्रुता, संघर्ष और मतभेद जैसी नकारात्मक अंतःक्रियाओं को भी जन्म देता है। समाज मानव रचना का एक उत्पाद है, और इसके भीतर व्यक्तियों के बीच असंख्य बातचीत, आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को शामिल करते हुए, सामूहिक रूप से समाज के ढांचे को आकार देती है।

व्यक्ति समाज में रहता है और समाज में व्यवहार करता है, इसीलिए व्यक्ति सामाजिक प्राणी कहलाता है। सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य को समाज से विभिन्न अपेक्षाएँ होती हैं, और वे इन अपेक्षाओं, आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करने में, कभी–कभी सफलता प्राप्त करता है और कभी–कभी विफलता का सामना करता है। इस प्रकार के व्यवहार के लिए वह समान रूप से स्वयं जिम्मेदार हैं और अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में अक्सर समाज के भीतर उसे कई चुनौतियों और विरोध का सामना करना पड़ता है।

सामाजिक जीवन व्यक्ति के आपसी संबंधों और सहयोग पर आधारित है। संघर्ष प्राचीन काल से ही समाज में अंतर्निहित रहा है। सहयोग व संघर्ष दोनों के ही सम्मिलित रूप में समाज का निर्माण हुआ है। समाज दो प्रकार की शक्तियाँ है – एक जो मानव समाज

को एक दूसरे से बाँधकर रखती है और दूसरी वह जो उन्हें अलग करती है। समाज में रहने वाले लोगों के बीच मतभेद अनिवार्य रूप से संघर्षों को जन्म देते हैं जो विभिन्न स्तरों पर प्रकट हो सकते हैं, चाहे वे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि हों। अनेक लेखिकाओं ने अपनी कहानियों को सामाजिक मूल्यों और मानदंडों की वकालत करने के लिए एक मंच के रूप में उपयोग किया हैं।

3.2 समानता और स्वतंत्रता का समर्थन

महिलाएँ समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, फिर भी युग परिवर्तन के बाद भी उन्हें वह स्थान नहीं मिल पाया है, जिसकी वे अधिकारी हैं। इक्कीसवीं सदी में भी, महिलाएँ पारंपरिक मूल्यों, नैतिक मानदंडों और सामाजिक सीमाओं से बंधी हुई हैं। भारतीय पितृसत्तात्मक सामाजिक और सांस्कृतिक ढाँचा महिलाओं के प्रति पक्षपाती रहता है, उन मूल्यों और नैतिक मानकों को महिलाओं पर थोपता है जो उन्हें जीवन भर शक्तिहीन बना देती हैं। इसके प्रत्युत्तर में इक्कीसवीं सदी की महिला लेखिकाओं ने अपनी साहित्यिक कृतियों के माध्यम से दलितों और महिलाओं के हितों की वकालत करते हुए इस दुर्दशा का मुखर विरोध किया है।

समाज में धर्म, नीति व मान–मर्यादा को आधार बनाकर अनेक अमानवीय रीति–रिवाज आज भी चलते आ रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं का शोषण और अशक्तीकरण आज भी हो रहा है। पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं पर अत्याचार होते आये हैं। मधु कांकरिया जी की कहानी *'कुल्ला'* जूठे कुल्ले की परंपरा के माध्यम से महिलाओं के प्रति पुरुषों की घृणित मानसिकता को दर्शाती है। यह कथा एक पति द्वारा अपनी पत्नी की पीठ पर जूठा कुल्ला करने के कृत्य के खिलाफ विद्रोह को चित्रित करती है। अपने पति द्वारा इस अपमानजनक कृत्य का शिकार होने के बाद, प्रमिला विरोध में उठ खड़ी हुई। *"म्यान से निकली नंगी तलवार की तरह वह लहराई। अपमान से थरथराई और अभी–अभी पकड़ी*

गयी मछली की तरह छटपटाई "इश्श...! किस कूड़ेदान की अर्चना करती रही वह भी। कहाँ कंचन सी उसकी काया और कहाँ यह जूठा कुल्ला!" [198] स्वतंत्रता, समानता और शिक्षा के अभाव में स्त्री अपनी वास्तविक स्थिति को पहचान नहीं पायी है। जिससे महिलाओं की स्थिति समाज में और भी दीन–हीन और दयनीय बना दी गई। समानता व सम्मान के अधिकारों से वंचित महिलाएँ अपनी स्थिति के प्रति विद्रोह व आक्रोश प्रकट करने आज भी असमर्थ दिखायी देती है। पुरुष प्रधान समाज में नारियों को अनेक सुखों से वंचित रखा जाता है। शक्ति शाली पुरुष समुदाय अपनी प्रसन्नता व खुशियों के लिए उन पर प्राचीन समय से ही अत्याचार करता आया है। शनै–शनै परिवर्तन वादी विचारधारा से प्रभावित महिलाओं की स्थिति में सुधार होना प्रारम्भ हुआ है। पीढी–दर–पीढी भोगी हुयी पीड़ा को वे अपनी बुलन्द आवाज में कहने का साहस कर रही हैं।

क्रांतिकारी विचारधाराओं से प्रभावित होकर महिलाओं की स्थिति में धीरे–धीरे सुधार हो रहा है। महिलाएँ अपने लेखन के माध्यम से अपने दर्द और पीड़ा को तेजी से व्यक्त कर रही हैं, अपने लिए और अन्य उत्पीड़ित महिलाओं के लिए आवाज बन रही हैं। वे शिक्षा, अर्थशास्त्र और साहित्य में प्रगति कर रही हैं, अपने कार्यों में महिलाओं की पीड़ा को प्रदर्शित कर रहे हैं और पूरे समाज में समानता और सशक्तिकरण के संदेश फैला रही हैं।

इक्कीसवीं सदी में, महिला कहानीकारों ने अपनी जीवंत कहानियों के माध्यम से पूरे समाज में समानता के संदेश को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया है। उनका प्राथमिक उद्देश्य उन महिलाओं को प्रबुद्ध करना है, जिन्होंने सदियों से पीड़ा सहन की है। इन कहानीकारों ने अपने साहित्यिक कार्यों के माध्यम से महिलाओं के जीवंत और लचीले व्यक्तित्व को प्रदर्शित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका लक्ष्य है कि समाज की प्रत्येक महिला अपने अंतर्निहित स्वभाव और अधिकारों को समझे।

आज की महिलाएँ अपने द्वारा चुने गए किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता प्रदर्शित करने

की क्षमता रखती हैं और वे अपने बहुमुखी व्यक्तित्व को व्यक्त करने के लिए उत्सुक रहती हैं। वे महिला विरोधी मान्यताओं के प्रति विरोध प्रकट करते हुए, समान व्यवहार और सम्मान की बात कर रही हैं, जिसकी वे सही हकदार हैं। उनकी अंतिम आकांक्षा इस धारणा को समाप्त करते हुए समानता और स्वतंत्रता प्राप्त करना है।

अपने साहित्यिक प्रयासों के माध्यम से, महिला कहानीकार यह विचार स्थापित करने का प्रयास कर रही हैं कि महिलाएँ किसी के अधीन नहीं हैं। वे असमानता की बेड़ियों से मुक्त होने और एक ऐसा स्थान बनाने के लिए दृढ़ हैं, जहां महिलाओं को जीवन के सभी पक्षों में समान माना जाए। उनकी गतिशील रचनाएँ सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम करती हैं, जो एक समावेशी और न्यायसंगत समाज पर जोर देती हैं और ऐसे समाज को प्रस्तुत करती है जहाँ महिलाओं की आवाज़ सुनी जाए और उनके अधिकारों को सुरक्षित रखा जाए।

21वीं सदी की महिला रचनाकारों की रचनाओं में नारी को मात्र उपभोग व मनोरंजन की वस्तु मानने की मानसिकता का अत्यन्त विरोध किया गया है। इन लेखिकाओं का उद्देश्य समाज की प्रत्येक स्त्री को समानता व सम्मान का पद प्राप्त कराना है। उनके संदेश के केंद्र में यह विश्वास है कि महिलाएँ अपनी क्षमताओं और अधिकारों सहित किसी भी क्षमता में पुरुषों से कमतर नहीं हैं। वे इस बात पर जोर देते हैं कि महिलाओं को स्वतंत्रता और स्वायत्तता का समान अधिकार है। जिस प्रकार पुरुषों को अपने हितों और प्रवृतियों को आगे बढ़ाने की स्वतंत्रता दी जाती है, उसी प्रकार महिलाओं को भी अपनी अभिरुचिओं के अनुरूप काम करने की उतनी ही स्वतंत्रता होनी चाहिए। मेहरुन्निसा परवेज जी की कहानी *'जीवनमंथन'* में, नंदिता, जो अपने कॉलेज के वर्षों के दौरान सुंदरता, आधुनिकता और स्वतंत्रता का प्रतीक थी, अमित से शादी के बाद अपनी दुनिया को अपने घर की चार दीवारों तक ही सीमित पाती है। वह इन सीमाओं के बाहर स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति पाने के लिए संघर्ष करती है, अमित से कहती है, *"पत्नी होने के नाते मुझे भी साथ जाने का,*

तुम्हारे बिजनेस में साथ जुड़कर काम करने का अधिकार मिलना चाहिए। मुझमें और माँजी में अंतर होना चाहिए। मैं पढ़ी–लिखी हूँ। तुमने ब्याह के बाद घर में पटक रखा है। मेरे लिए घर की सीमाएँ निर्धारित कर दी हैं और अपने लिए बाहर की। यह सीमाएँ टूटनी चाहिए।" *199*

इन महिला लेखिकाओं द्वारा रचित आख्यानों में महिलाओं का बहुआयामी चित्रण उभरकर सामने आता है। ये महिलाओं में निहित मानसिक संघर्षों, कमजोरियों, बलिदानों, प्रेम और वात्सल्य गुणों को चित्रित करती हैं, साथ ही महिलाओं की स्वतंत्र अभिव्यक्ति और उनके आदर्श स्व के महत्व पर भी जोर देते हैं। इनकी कहानियाँ महिलाओं के पूर्ण व्यक्तित्व को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच के रूप में काम करती हैं, जो दृढ़ संकल्प के साथ अपने जीवन को आगे बढ़ाने में सक्षम हैं। लेखिकाओं का लक्ष्य उन सामाजिक संरचनाओं को नष्ट करना है जो महिलाओं के मूल्य को कम करती हैं या उन्हें सीमित भूमिकाओं तक सीमित कर देती हैं। वे पुरुषों के समान अधिकारों और अवसरों के साथ महिलाओं को सशक्त प्राणी मानने की धारणा का समर्थन करती हैं।

21वीं सदी की कहानियों का स्वरूप, युगबोध, मौलिकता, यथार्थता व प्राचीन रूढि वादिताओं का विरोध करता दिखायी देता है। प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में भी सामाजिकता का सूक्ष्मता से अंकन किया गया है। 21वीं सदी में हिन्दी कहानियाँ वर्तमान सामाजिक परिवेश का अत्यन्त व्यापकता से विवेचन करने के साथ–साथ अधिकाधिक बुनियादी धरातल पर उतरने का साहस दिखाती है।

इन उल्लेखनीय महिला लेखकों की रचनाएँ सामाजिक वास्तविकता को प्राथमिकता देती हैं, जीवन के मूल पहलुओं पर गहराई से प्रकाश डालती हैं। इन कहानियों की पूरी तरह से सराहना करने के लिए, किसी को अपने परिप्रेक्ष्य और सैद्धांतिक ढांचे को तदनुसार अनुकूलित करना होगा। इन आख्यानों के केंद्र में समानता, समता और स्वतंत्रता की विचारधाराएं हैं, जो एक ऐसे समाज की वकालत करती हैं, जहां प्रत्येक व्यक्ति को

सामाजिक आधार पर समान रूप से महत्व दिया जाता है।

इस सामाजिक ढांचे के भीतर, अनगिनत व्यक्तियों को निरंकुशता, अन्यायपूर्ण सामाजिक संरचनाओं और अलोकतांत्रिक शासन या नीतियों जैसे मुद्दों से जूझते हुए चित्रित किया गया है। परिणामस्वरूप समानता को एक कालातीत और सार्वभौमिक अवधारणा माना जाता है, लाखों लोग विभिन्न चुनौतियों और प्रतिकूलताओं के बीच इसे साकार करने का प्रयास करते हैं।

पुरुष और स्त्री दोनों स्वभाव से समान बुद्धि, शक्ति और क्षमताओं से संपन्न हैं, जो जीवन को सामंजस्यपूर्ण ढंग से आगे बढ़ाने में अपरिहार्य भूमिका निभाते हैं। एक के बिना दूसरे की कल्पना करना अकल्पनीय है। भारतीय दार्शनिक परंपराओं में, पुरुषों को अक्सर प्रदाता और रक्षक के रूप में देखा गया है, जबकि महिलाओं को शक्ति और ज्ञान के अवतार, जैसे कि दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी के रूप में सम्मानित किया गया। भारतीय समाज ने प्राचीन काल से ही महिलाओं को पुरुषों से कमतर चित्रित किया है, उन्हें कमजोर, शक्तिहीन और निर्बल संबोधित कर उसका उपहास किया गया है। देवी के रूप में पूजनीय होने के बाद भी, महिलाओं ने परंपरा और धर्म द्वारा उचित पितृसत्तात्मक मानदंडों द्वारा नियंत्रित अमानवीय व्यवहार को भी सहन किया है। वर्तमान युग में, हमारे देश में तेजी से बदलाव हो रहे हैं, जो सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य को प्रभावित कर रहे हैं। महिलाओं को अब सभी सामाजिक क्षेत्रों में समान अधिकार प्राप्त हैं, फिर भी मनुष्य के रूप में पुरुषों और महिलाओं के बीच एक बुनियादी अंतर मौजूद है। मैत्रेयी पुष्पा लिखती हैं – *“हमारे समाज में अपने वजूद की मालकिन औरत नहीं होती।”* [200]

धीरे–धीर नारी की स्थिति विकृत होती गयी। पुरूषों द्वारा नारी को उसके कोमल गुणों, दया, ममता, विश्वास, श्रद्धा आदि की आड में छला जाने लगा। रक्षा का मिथ्या आडम्बर

कर नारी के अधिकारों को सीमित कर उन्हें पूर्णतः समाज में पुरूषों पर आश्रित कर दिया गया। नारी की इस स्थिति को 21वीं शताब्दी में अस्त्रीकार कर दिया गया। मेहरुन्निसा के अनुसार *"मानवीय संवेदनाएँ और इक्कीसवीं सदी तक विकास की मंजिलें, जो हमने तय की हैं, वह सभी निरर्थक साबित हो गई है। सभ्यता का विकास जरूर हुआ, परंतु इन्सान की सोच जयों की त्यों ही रही। पहले नारी पुरुष के सीने की पसली थी, अब केवल संपत्ति है।"* [201] आधुनिक समय में पारिवारिक संरचनाओं और पारंपरिक रूढ़िवादिता में महत्वपूर्ण बदलाव देखे गए हैं, जिससे महिलाओं को नई स्वतंत्रता के साथ सशक्त बनाया गया है।

महिलाएँ, जो कभी आजीविका के लिए मुख्य रूप से दूसरों पर निर्भर रहती थीं, उनमें गहरा वैचारिक परिवर्तन आया है। वे अब लंबे समय से चले आ रहे मानदंडों और धारणाओं को चुनौती देते हुए खुद को जीवन और विचार दोनों में पुरुषों के बराबर होने का दावा करती हैं। इस विकास ने महिलाओं को अपनी नियति को आकार देने और समाज में सार्थक योगदान देने में सक्रिय रूप से भाग लेने का मार्ग प्रशस्त किया है।

21वीं सदी की प्रस्तुत महिला लेखिकाओं की कहानियों में स्त्रियों की सफलता के विभिन्न आयामों का वर्णन हुआ है। वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी कामयाबी का परचम लहराते हुए पुरूषों के समकक्ष खडी ही नहीं, अपितु उनके वर्चस्व को भी चुनौती दे रही है। अपने परिश्रम से उन्होंने अपनी स्वयं की एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है। आज की स्त्री परम्पराओं को क्षत–विक्षत कर नये–नये मूल्यों का निर्धारण करती नजर आ रही है। लेखिकाओं की अनेक कहानियों की नायिकाएँ अब परम्परा व रीति–रिवाज के नाम पर किसी भी प्रकार का शोषण, दमन या अत्याचार सहने को तैयार नहीं है बल्कि अन्याय के विरुद्ध पूणतः आत्मविश्वास व साहस के साथ संघर्ष करने को तत्पर है।

आधुनिक महिलाएँ सक्रिय रूप से सदियों पुरानी परंपराओं और मानदंडों को चुनौती दे रही हैं। वे नए मूल्यों और विचारधाराओं की शुरुआत कर रही हैं। इन कहानियों की

नायिकाएँ परंपरा या रीति–रिवाजों के रूप में छिपे किसी भी प्रकार के शोषण, उत्पीड़न या अत्याचार को स्वीकार करने से इनकार करती हैं। इसके बजाय, वे साहसपूर्वक अटूट आत्मविश्वास और लचीलेपन के साथ अन्याय का सामना करती हैं।

इन लेखिकाओं की कहानियों की नारियाँ भी समता, समानता व स्वतंत्रता जैसे अपने अधिकारों का समर्थन करती हुयी दृष्टिगत हुई हैं, यथा अलका सरावगी की कहानियों में भी नारी जीवन की अनेक समस्याएँ, सामाजिक, आर्थिक, दाम्पत्य–जीवन संबन्धों आदि का अत्यन्त प्रमुखता से विवेचन किया गया है। लेखिका की प्रमुख कहानी *'दूसरी कहानी'* संग्रह में इस कहानी की नायिका अपर्णा एक लेखिका है, जो पिछले पन्द्रह वर्षों से अपने जीवन की पहली और अन्तिम कहानी लिखना चाहती है। अपर्णा अपने अपाहिज बेटे सुदर्शन को सुधारने का हर संभव प्रयास करती नजर आती है। अपर्णा संसार की प्रत्येक माँ की भाँति अपने पुत्र से अत्यधिक स्नेह करती है। समाज की रूढ़िता व बन्धनों को तोड़ती हुई अपर्णा जीवन के आदर्शात्मक मूल्यों के साथ आत्मविश्वास से पूर्ण जीवन निर्वहन करती है। वह समाज की विचारधारा के विपरीत स्वयं को निर्बल व कमजोर न स्वीकार करते हुए अपने दुःख को ही सहर्ष सुख के रूप में स्वीकार करती है। अलका सरावगी की कहानी के माध्यम से, अपर्णा जैसी समर्पित माँ के संघर्षों में सन्निहित एक लचीली और साहसी महिला की कहानी जीवंत हो उठती है। यह चित्रण न केवल सामाजिक मानदंडों को चुनौती देता है, बल्कि जीवन की जटिलताओं को अनुग्रह और दृढ़ संकल्प के साथ सुलझाने में महिलाओं की अंतर्निहित शक्ति और लचीलेपन का भी प्रस्तुत करती है।

21वी सदी की महिला कहानीकारों ने स्त्रियों की स्वतंत्रता को अत्यन्त महत्व दिया है। उनकी कहानियाँ सामाजिक रूढ़ियों और प्रतिबंधों को ध्वस्त करती हुई पारिवारिक और सामाजिक मानदंडों के खिलाफ महिलाओं के संघर्ष को उजागर करती हैं। मालती जोशी जी का कहानी संग्रह *'औरत एक रात'* में अनेक महिलाएँ, परिवार व समाज के संघर्षों से

लड़ती दिखायी दी हैं, चाहे *'वह माँ तुझे सलाम'* की सीमा, वीना, स्मृति या कल्परेणु हो और *'औरत एक रात की'* दो बहनें जो सभी पितृसत्तात्मक संरचनाओं को चुनौती देती हैं और अपनी पहचान को परिभाषित और सिद्ध करने की कोशिश करती हैं।

समाज में नारी व पुरुष दोनों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। परन्तु समाज में आज भी ऐसी विचारधारा वाले लोग हैं जो नारी को कमजोर, असहाय व निर्बल समझकर प्रताड़ित करते रहते हैं। इन कहानियों में नायिकाएँ अपनी स्वायत्तता का दावा करते हुए साहसपूर्वक ऐसी विचारधाराओं का सामना और प्रतिकार करती हैं।

स्वतंत्रता की ओर कदम बढ़ाने के बावजूद, कई महिलाओं को आज भी अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए सामाजिक और पारिवारिक सहमति का सामना करना पड़ता है, जो पूर्ण स्वायत्तता के लिए चल रहे संघर्षों को उजागर करता है। नारी की स्वतंत्रता का पक्ष मजबूत करती जया जादवानी की में कहानियों में भी आदर्श सामाजिक संरचना का स्वरुप विद्यमान है।

समकालीन समय में, महिलाएँ हर पहलू में पुरुषों के बराबर खड़ी होकर अपनी विशिष्ट और मजबूत उपस्थिति का दावा करती हैं। चाहे जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, वहाँ महिलाओं की बलशाली भूमिका जगत के समक्ष प्रकट हुई है, और कई क्षेत्रों में तो महिलाओं ने पुरूषों को भी पीछे छोड़ दिया है। महिलाओं को न केवल पुरुषों के बराबर देखा जाता है, बल्कि ईमानदारी, निष्पक्षता और सरलता में अधिकतर उनसे आगे निकल जाती हैं, चाहे वह किसी भी व्यवसाय में हो या रोजमर्रा के कर्तव्यों में।

मंजुल भगत की कहानियों में नायिका एक समकालीन महिला के विकास की प्रतीक है, जो घर की सीमाओं से मुक्त होकर अपने व्यक्तित्व की खोज और स्थापना करती है। वह पारंपरिक घरेलू सीमाओं से परे जाकर अपने लिए एक अलग पहचान बनाने का प्रयास

करती है। इस विषय पर डॉ० सुरैया खान लिखती है– *"इस प्रकार मंजुल भगत ने अतीत और वर्तमान से घिरी हुई एक ऐसी नारी का चित्रांकन किया है जिसमें भविष्य में कुछ कर दिखाने की हिम्मत है। घर के भीतर वह स्वयं को अस्तित्वहीन मानती है लेकिन घर की चार–दीवारी से बाहर निकल कर अपने बलबूते पर अपने स्वतंत्र अस्तित्व का निर्माण करती है। जब सफलता उसके कदम चूमने लगती है तो विसु के लिये अपने अस्तित्व–बोध के अतिरिक्त शेष सभी आकांक्षाएँ, चाहे निशीथ राय को प्राप्त करना हो या अपनी बेटी नैना की शादी की चिन्ता वह सभी निरर्थक हो जाती है।"* [202]

जब समाज अलग–अलग विचारों और मान्यताओं के बाद भी आपसी प्रेम, एकता और भाईचारे का प्रदर्शन करता है, तो यह 'सामाजिक समन्वय' की भावना को दर्शाता है। चन्द्रकांता ने अपने कथा–साहित्य में समता, समानता और स्वतन्त्रता का समर्थन किया है। *'कथा सतीसर'* में लेखक ने रहमान जी और नाथ जी जैसे पात्रों के बीच की दोस्ती, आपसी प्रेम और भाईचारे का खूबसूरती से चित्रण किया है। यह चित्रण समाज के भीतर सांप्रदायिक सद्भाव का एक ज्वलंत उदाहरण के रूप में कार्य करता है– *"इन्द्रा भाभी ने पानी का गिलास थमाया और आँखों से दरिया बहाते हुए बोली, आप कभी भूले नहीं। वो साथ बिताए बचपन की कितनी दास्तानें सुनाते थे मुझे! बाद में आप सियासत में चले गए। रहमान जी को उस दिन तहे दिल से अफसोस हुआ कि सियासत ने चाहे उसे दुनियावी दौलत दी पर बेलाग रिश्तों से महरूम करके रख दिया। मसरूफियत के बहाने उसने नाथ जी जैसा प्यारा बचपन का यार खो दिया।"* [203]

21वीं सदी की प्रमुख महिला कथाकार स्वयं इस वास्तविकता को मूर्त रूप देती हैं कि महिलाएँ समाज के भीतर अपनी विशिष्ट उपस्थिति रखती हैं। ये लेखिकाएँ महिलाओं को उल्लेखनीय रूप से मजबूत चरित्रों के रूप में चित्रित करती हैं, जो समकालीन समय में देखे जा रहे सामाजिक परिवर्तनों को दर्शाती हैं। परिणामस्वरूप, उनका साहित्य उन महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रतिध्वनित करता है जो अपने परिवारों और बड़े पैमाने पर

समाज में अपने अधिकारों के बारे में तेजी से जागरूक हो रही हैं।

3.3 दलित ,जाति एवम् वर्ग भेद भाव का विरोध

समाज में जातिगत भावना पैतृक वंशावली और पारंपरिक प्रथाओं से विकसित होती है। इस परिप्रेक्ष्य में कहा गया है, *"जाति वंशपरंपरा पर आधारित ऐसा सामाजिक स्तर है, जो अपने सदस्यों की सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यवसाय, सामाजिक संबंधों इत्यादि का निर्णायक बन जाता है।"*[204] जन्म के समय किसी व्यक्ति की जाति उसकी आजीवन सामाजिक पहचान निर्धारित करती है, जिसे बदलने या छोड़ने की कोई संभावना नहीं होती है। जाति–व्यवस्था समाज को उच्च और निम्न स्तरों में विभाजित करती है और धार्मिक, प्रथागत और कानूनी भेदों द्वारा चिह्नित हिंदू समाज में गहराई से व्याप्त है। *"इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि समाज की सर्वाधिक सेवा करने वाला वर्ग पिसता रहा तथा उसे अछूत समझा जाने लगा। समाजपतियों ने अछूतों को मानवीय अधिकारों से वंचित कर दिया। अछूत के साथ बैठकर भोजन करना तो दूर ही रहा, उनके स्पर्श को भी पाप या अपवित्र माना जाने लगा। मंदिर में उनका प्रवेश भी निषिद्ध हो गया। उन्हें गाँव के बाहर निर्जन स्थान पर रहने के लिए बाध्य बना दिया।"* [205]

21वीं सदी की कहानियों में दलित–चेतना का उदय देखा गया है, जो इस विषय पर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। ये कहानियाँ दलित–चेतना के पारंपरिक चित्रणों से हटकर एक सूक्ष्म और समसामयिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। दलित–चेतना को हिंदी साहित्य में उल्लेखनीय रूप से अभिव्यक्ति मिली है, जो पूरे इतिहास में दलितों के साथ हुए अन्याय और शोषण को चित्रित करने के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में कार्य कर रहा है। साहित्य ने लंबे समय से दलितों पर होने वाले अत्याचारों पर प्रकाश डालने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य किया है। इसने साहित्यकारों को पात्रों के चित्रण और आकर्षक संवादों के माध्यम से सामाजिक जागरूकता को कुशलतापूर्वक बढ़ाने में सक्षम

बनाया है।

दलित इसे एक सामाजिक समूह के रूप में संदर्भित करते हैं, जिसने लंबे समय से शोषण को सहन किया है, जो समाज के सबसे निचले पायदान पर रहने वाले वर्ग के रूप में बना हुआ है। उन्हें अपनी निम्न स्थिति को कायम रखते हुए, अछूत कहे जाने के अपमान का सामना करना पड़ा है। डॉ. वी.एन. सिंह दलित वर्ग के बारे में लिखते हैं, *"दलित उन जातियों के लिए एक शब्द है, जो शताब्दियों से पीड़ित, दुःखी, शोषित रही है। सवर्णों के अत्याचारों और जुल्मों को सहती रही। पशुओं से भी गिरी जिन्दगी को जीती रही है। मनुष्य होते हुए भी सामन्ती समाज के ये सवर्ण जातियों के गुलाम थे। ये आर्थिक, सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था में दलित निम्नतम पायदान पर थे।"* [206] समाज में दलितों को अक्सर गरीबी और शिक्षा की कमी से जोड़ा जाता रहा है।

21वीं सदी की कहानियों में, दलितों द्वारा अपने उत्पीड़न, शोषण और पीड़ा का सक्रिय रूप से विरोध दिखायी देता है। आज दलित अपनी स्थिति के प्रति जागरूक हो रहे हैं और शिक्षा के माध्यम से उनके उत्थान के प्रयास किये जा रहे हैं। वे उन अंधविश्वासों के खिलाफ भी खड़े हो रहे हैं, जिन्होंने उन्हें लंबे समय तक पीछे रखा है। प्राचीन काल से, उच्च जातियाँ अक्सर अपनी संकीर्ण सोच के कारण दलितों के साथ छुआ–छूत का व्यवहार करती थीं। जब कि आधुनिक हिंदी साहित्य में कई लेखक अपनी रचनाओं में इस भेदभाव का पुरजोर विरोध करते हैं। ये साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ सामाजिक अन्याय को चुनौती देने और दलितों और अन्य निचले पायदान पर रहने वाले समूहों के अधिकारों को बताने के लिए शक्तिशाली उपकरण के रूप में काम करती हैं। आर्थिक रूप से, दलित और उत्पीड़ित वर्ग मुख्य रूप से अपनी आजीविका के लिए श्रम पर निर्भर हैं, उनके पास उत्पादन के साधनों तक पहुँच नहीं है। यह आर्थिक असमानता अक्सर उन्हें दिन में दो वक़्त की रोटी जैसी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष करने पर मजबूर कर देती है, जो समाज

में व्याप्त गहरी असमानताओं को उजागर करती है। *"यह समाज का वह भाग है, जो अपनी जीविका का उपार्जन श्रम से करता है और अधिकतर इस वर्ग का ही शोषण किया जाता है। इस वर्ग के अन्तर्गत किसान मजदूर आते हैं।"* [207]

मंजुल भगत एक समर्थ लेखिका हैं अपने लेखन में कठिनाइयों, विरोधाभासों और शोषण की जटिलताओं को कुशलता से उजागर करती हैं। वह अपनी कहानियों को निम्न वर्ग के इर्द–गिर्द केंद्रित करके, उनके अनुभवों और चुनौतियों में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करके अपनी सीमाओं को पार करती है। मंजुल जी की कहानी *'कसार'* एक जमादार परिवार की कथा के माध्यम से दलित समुदाय का चित्रण करती है। कहानी में जमादार, उसकी पत्नी, बेटी और बहू को घर–घर जाकर बाथरूम साफ करने और सड़कों पर झाड़ू लगाने जैसे काम करते हुए दिखाया गया है। अपनी पहचान बताते हुए जमादार कहता हैं: *"मुझे और जमादारनी को छोड़कर कोई दसेक बच्चे हैं? मेरी माँ भी है। गोद के होर, जो अंगुली पकड़ के चल्ले उन्ने छोड़ के, हम सबी कोठियों में जावे।"* [208] यह कहानी दलित समुदाय की जीवनशैली पर प्रकाश डालती है, उनकी सामाजिक स्थिति, गरीबी, संघर्ष, लचीलापन और प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच खुशी के क्षणों पर प्रकाश डालती है। यह न केवल कलात्मक रूप से सफल है, बल्कि समसामयिक सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने में भी प्रासंगिक है। इस संबंध में नामवर सिंह जी लिखते हैं: *"आज किसी कहानी का शिल्प की दृष्टि से सफल होना ही काफी नहीं है बल्कि वर्तमान वास्तविकता के सम्मुख उसकी सार्थकता भी परखी जानी चाहिए।"* [209] *'कसार'* कहानी दलित समुदाय का प्रामाणिक प्रतिनिधित्व करती है, उनकी सामाजिक वास्तविकताओं और मनोवैज्ञानिक स्थिति का चित्रण करती है।

अलका सरावगी ने लिखा है– *"भारत के बेचारे गरीब किसान कुएँ से पानी भी पम्प से न निकाल कर शरीर के जोर से निकालें, शहरों मे रिक्शा चलाएँ, ताकि दुनिया के सारे*

अमीरों को दरवाजे के पास आकर दरवाजा खोलने के लिए अंगुली न लगानी पड़े और दरवाजे खुल जाएं, वे सीढ़ियों पर खड़े हो, तो सीढ़ियाँ अपने आप ऊपर चलने लगें और वे एक शहर से दूसरे शहर जाने के लिए उस तरह हवाई जहाज पकड़े जैसे लोग बस या टैक्सी पकड़ते हैं। वे लोग मौज से रहें और हम उनकी गंदी की हुई हवा को साफ करने के लिए यहाँ पेड़ लगाते रहें और घोड़े–बैलों की तरह शरीर के जोर से सारे काम करते हुए एक मामूली पंप भी न चलाएं।" [210]

समकालीन सामाजिक परिदृश्य के बीच जातिगत भेदभाव के खिलाफ एक मजबूत प्रतिरोध स्पष्ट है। भारतीय जाति–व्यवस्था ने प्राचीन काल से ही भारत में सामाजिक संगठन की मूलभूत संरचना के रूप में कार्य किया है, परन्तु आज यह विघटन के कगार पर खड़ा है। जाति व्यवस्था की उत्पत्ति का पता वैदिक संस्कृति से लगाया जा सकता है, जहाँ यह जीवन और समाज को व्यवस्थित करने के लिए एक तंत्र के रूप में कार्य करती थी। समय के साथ, इस संरचना में परिवर्तन हुए, जो वर्ण, जातियों और उप–जातियों में विकसित हुए। जैसे–जैसे ये सामाजिक विभाजन मजबूत होते गए, उन्होंने अपने–अपने रीति–रिवाजों और मान्यताओं की रक्षा के लिए अपनी अलग संस्थाएँ स्थापित करना प्रारंभ कर दिया। आधुनिक समय के आगमन के साथ, यह परंपरा और भी मजबूत हो गई और इसने समाज के स्तरीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

21वीं सदी की कहानियों में, जाति व्यवस्था के भीतर अंतर्निहित भेदभावपूर्ण प्रथाओं के खिलाफ एक स्पष्ट प्रतिवाद है। इन कहानियों में पारंपरिक पदानुक्रमित संरचना, जो कभी भारतीय समाज को परिभाषित करती थी, उसे अब चुनौती दी जा रही है और उस पर सवाल उठाए जा रहे हैं तथा जाति–व्यवस्था के विकास की आलोचनात्मक जांच की जा रही है और इसका विरोध किया जा रहा है। यह बदलाव एक ऐसे समाज के बदलते दृष्टिकोण और आकांक्षाओं को दर्शाता है, जो सभी सामाजिक स्तरों पर समानता और

समावेशिता के लिए तेजी से प्रयास कर रहा है।

मानवीय अनुभवों से अपने गहरे जुड़ाव के कारण चित्रा मुद्गल आधुनिक लेखकों में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनकी साहित्यिक रचनाएँ जीवन की जटिलताओं और त्रासदियों को अत्यधिक यथार्थवादी तरीके से चित्रित करती हैं। वह मुख्य रूप से निचली जातियों के व्यक्तियों द्वारा सामना किए गए संघर्षों और वास्तविकताओं पर ध्यान केंद्रित करती हैं, जो उनके स्वयं के जीवन के अनुभवों का प्रतिबिंब है। इस दृष्टि से चित्रा मुद्गल का कथन बड़ा ही सार्थक है– *"आदमी और जगह बदल लेने से जिंदगी थोड़े ही बदल जाती है।"* [211]

जो बात चित्रा जी को अलग करती है, वह है घर–परिवार की गतिशीलता और रिश्तों के विषयों को उत्कृष्टता से अपनी कहानियों में सहजता से एकीकृत करने की उनकी क्षमता। यह कौशल न केवल उसकी कहानी समृद्ध करता है, बल्कि उसे सामाजिक बाधाओं को पार करने में भी सक्षम बनाता है। वह बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए सहजता से घरेलू परिवेश से विज्ञापन, कॉर्पोरेट कार्यालयों और स्वतंत्र जीवन की तेज़–तर्रार दुनिया में स्थानांतरित हो जाती हैं।

इसके अलावा, चित्रा जी निचले पायदान पर रहने वाले समुदायों, विशेषकर निचले सामाजिक तबके के लोगों द्वारा सामना की जाने वाली आर्थिक चुनौतियों और दबावों पर कुशलता से प्रकाश डालती हैं। अपने लेखन के माध्यम से, वह उन कठोर वास्तविकताओं और कठिन परिस्थितियों की ओर ध्यान दिलाती हैं जो इन व्यक्तियों के जीवन को आकार देते हैं, प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच उनके लचीलेपन को उजागर करती हैं।

चित्रा जी के कहानी संग्रह '*भूख*' की अधिकतर कहानियों मे यथार्थ को स्वीकार करते हुए ही अधिक प्रभावपूर्ण बन पायी हैं। आर्थिक दबावों का सीधा प्रभाव आज जिस तेजी से हमारे समाज पर पड़ रहा है, उसे वैविध्यपूर्ण कथ्य और शिल्प के साथ–साथ भाषा

के स्तर पर प्रस्तुत करने में चित्रा मुद्गल की सिद्धहस्तता उल्लेखनीय है। दरअसल, यह संग्रह चित्रा जी के कथा लेखन में आए उस रचनात्मक बदलाव का दस्तावेज है, जो बहुत कम कथाकारों को प्राप्त होता है।

'*भूख*' कहानी गरीबी का मार्मिक एवं यथार्थवादी चित्रण बनकर सामने आती है। यह एक महानगर की झुग्गी बस्ती में रहने वाली निम्न वर्ग की महिला लक्ष्मा के जीवन पर आधारित है। तीन बच्चों की देखभाल के लिए उनका संघर्ष, खासकर अपने पति की दुखद दुर्घटना के बाद, निचले पायदान पर रहने वाले समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों की एक ज्वलंत तस्वीर पेश करता है– *"बच्चों की कमी नहीं है, एक ढूंढ़ो, हजार मिलते हैं, पर कलाबाई ने उसकी विशेष सिफारिश की है। इस पर लक्ष्मा ने जग्गूबाई को दो रुपये प्रति दिन के हिसाब से बेटा किराये पर दे दिया।"* [212]

3.4 पारिवारिक मूल्यों पर संकट से उत्पन्न चिंता

स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद हमारे समक्ष ऐसी बहुत सी स्थितियाँ उत्पन्न हो गई, जो समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण परिवर्तनों के दौर को उजागर करती हैं। इस युग में अनेक बदलाव आये, जिन्होंने जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया। जन्म से लेकर मृत्यु तक, व्यक्ति अपनी नींव परिवार में पाता हैं, जहां वह रहता हैं और अपनी जरूरतों को पूरा करता हैं। *"परिवार उन दो या दो से अधिक व्यक्तियों का समूह जो रक्त, विवाह या गोत्र लिये जाने से संबंधित हो और साथ साथ रहते हों।"* [213] परिवार समाज की एक संगठित इकाई के रूप में कार्य करता है जिसमें पति, पत्नी, बच्चे, माता–पिता और करीबी रिश्तेदार शामिल होते हैं। इस इकाई का प्राथमिक उद्देश्य शिक्षा, आर्थिक सहायता और समाजीकरण जैसी आवश्यक सुविधाएं प्रदान करना है।

कोई भी तत्व जो मानव कल्याण में सकारात्मक योगदान देता है और खुशी लाता

है, उसे जीवन के मूल्य का हिस्सा माना जा सकता है और परिवार हमें जीवन के उन मूल्यों जैसे प्रेम, विश्वास, व्यवहार, सामाजिकता, धार्मिक प्रथाएं, दया, स्नेह, दान, नैतिकता, सहयोग, सहानुभूति आदि से अवगत करता है। ये मूल्य संपूर्ण समाज और उसकी संस्कृति के महत्व का आकलन करने के लिए एक मानक के रूप में कार्य करते हैं। *"जीवन में जो कुछ अर्जित है, जो कुछ संवेदनात्मक ज्ञान और ज्ञानात्मक संवेदना के रूप में प्राप्त है। अर्थात् जो कुछ विशिष्ट अनुभव है और जीवन जगत संबंधी जो कुछ आत्मकृत सामान्यीकरण है जो भी जीवन मूल्य आत्मसात किये हैं और जिनके लिये संघर्ष किया है, जो संस्कार, जो आदर्श, जो यथार्थ हृदय का अनन्य अंग।"* [214]

परिवार के सभी सदस्यों के बीच आपसी प्रेम, विश्वास, स्नेह, करुणा, आदर और सम्मान की भावनाएँ शाश्वत रही हैं, लेकिन विकास के साथ–साथ मनुष्यों का दृष्टिकोण भी बदला है और जो मूल्य शाश्वत माने जाते थे, वे आज टूट रहे हैं। पारिवारिक मूल्यों के विघटन के कारण रिश्ते नीरस हो गए हैं और रिश्तों में मानवीय संवेदना की कमी के कारण अंतरंग रिश्ते भी बोझिल लगने लगे हैं। माता–पिता–बच्चे के रिश्तों, पति–पत्नी, भाई–बहन, ननद–भाभी आदि रिश्तों में न मिटने वाली दूरियाँ आ गई हैं। समकालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों में पारिवारिक मूल्यों को बड़ी सूक्ष्मता से परखा है, रिश्तों में तनाव, टूटना, जटिलता और जबरदस्ती रिश्तों को निभाने की विवशता को व्यक्त किया गया है। साहित्य समाज का दर्पण होता है इसलिए साहित्यकारों का उद्देश्य इन स्थितियों को समसामयिक कहानियों के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करना है।

औद्योगीकरण और शहरीकरण जैसे अनेक कारको ने पारंपरिक मूल्यों और मानदंडों तथा सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके साथ–साथ, शिक्षा प्रणाली और आधुनिक विचारधाराओं ने विभिन्न पीढ़ियों के दृष्टिकोण के बीच विरोधी भावनाओं को जन्म दिया है। युवा पीढ़ी अधिक अविश्वासी हो गई है, जबकि पुरानी पीढ़ी पारंपरिक

मूल्यों में निहित है, जिससे रिश्तों में टकराव और अपरिहार्य बदलाव आ रहे हैं। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में आर्थिक स्थिति भी रिश्तों को प्रभावित करने वाले एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरा है, जो समकालीन समाज में नैतिक मूल्यों पर भारी पड़ रहा है। मूल्यों में इस बदलाव ने सामाजिक संरचना को एक नया आकार दिया है। महिला आंदोलनो और शिक्षा ने महिलाओं में स्वतंत्रता की भावना पैदा की है, जिसके फलस्वरूप, महिलाएँ अपनी पारम्परिक भूमिकाओं के साथ–साथ आर्थिक क्षेत्र में भी शामिल हो गई हैं, जो पारिवारिक मूल्यों के बदलाव में योगदान दे रही हैं। इन परिवर्तनों ने न केवल समाज के विचारों, विश्वासों, धर्म, संस्कृति और नैतिकता को प्रभावित किया है, बल्कि व्यक्तिवादी धारणाओं को भी बढ़ावा दिया है।

21वीं सदी की कहानियाँ साहित्य के क्षेत्र में एक अद्वितीय स्थान रखती हैं, जो पारंपरिक मूल्यों और मानदंडों से हटकर हैं, इस युग का परिवेश सामाजिक ताने–बाने में बदलाव के प्रारम्भ का दौर होने के साथ–साथ परिवर्तन और संक्रमण का काल भी रहा है। समाज विसंगतियों, कलह, दुर्भावना, अपराध और विषमता से भरा दिखायी देता है। साहित्यकारों में इस स्थिति को देखकर आक्रोश के स्वर तेज होते रहे हैं।

सदी के शुरुआती वर्षों में सामाजिक मूल्यों और मानदंडों में महत्वपूर्ण बदलाव देखे गए, जिससे परिवर्तन की लहर दौड़ गई। कहानीकारों ने, विशेष रूप से, कुशलतापूर्वक ऐसी कथाएँ तैयार की हैं, जो इन विकसित होती सामाजिक गतिशीलता के इर्द–गिर्द घूमती हैं। इस बदलाव ने हिंदी कहानी–साहित्य में एक नई दिशा और परिप्रेक्ष्य की शुरुआत की है, जो बदलते समय के साथ एक नई दृष्टि प्रदान करती है।

चन्द्रकांता का कहानी संग्रह *'बदलते हालात में'* इन्हीं परिस्थितियों का आकलन करने में सफल हुयी है। इसमें सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था का ऐसा सम्मिश्रण है, जो बदलते समय के सामयिक परिदृश्य का सम्पूर्ण विवेचन करता है। इसमें बदलते राजनैतिक

परिदृश्यों के साथ–साथ बदलते पारिवारिक मूल्यों का प्रतिपादन हुआ है। इसमें अपनों से पीछे छूटे उदास अकेलेपन की कहानियाँ हैं, तो कहीं युवा पीढी की महत्वाकांक्षाओं और विदेश–गमन का मोह दिखायी दिया है। अकेलेपन को नियति मानने वालों के मस्तिष्क पर यह कहीं कडा प्रहार करती दिखायी दे जाती हैं। समय के क्रूर यथार्थ को दर्शाती हुयी ये मानवीय स्मृतियों के जाल से बनी कहानियाँ हैं जो पाठकों को नित सोचने पर मजबूर करती हैं। मानवीयता की पक्षधर होने के साथ ही ये कहानियाँ मानव–विरोधी समाज को कठघरे में खड़ा करने के प्रयास में पूर्णतया सफल हुई हैं।

चंद्रकांता की कहानियाँ संवेदनशील होने के साथ–साथ आधुनिकता द्वारा उत्पन्न वैश्विक संकटों को भी मुखरता से प्रस्तुत करती हैं। इनकी कहानियों में आकांक्षाओं की माँगों और वैश्वीकृत दुनिया की वास्तविकताओं से प्रेरित, समाज के भीतर बढ़ते प्रवासन में योगदान देने वाले कारण की गहन खोज है। इसके अतिरिक्त, ये कहानियाँ पारिवारिक अकेलेपन के मार्मिक चित्रण को गहराई से उजागर करती हैं और परिवारों द्वारा अनुभव किए गए भावनात्मक अलगाव पर प्रकाश डालती हैं। इसके साथ ही, वे मानव मन के भीतर अंतर्निहित मौलिक प्रवृत्तियों और पाशविक प्रवृत्तियों को कुशलता से उजागर करती हैं।

कृष्णा अग्निहोत्री की कहानी *'कुटुंब'* में पारिवारिक मूल्यों को स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है। परिवार का नेतृत्व मालकिन द्वारा किया जाता है, जिसमें उसके बेटे, बहू, पोते, पोती, बेटी, दामाद और अन्य रिश्तेदार भी परिवार के सदस्यों की तरह साथ रहते थे। एक दिन जब भाई अपनी बहन और उसके पति को घर छोड़ने और सड़क के किनारे रहने की व्यवस्था करने का आदेश जारी करता है और उन्हें घर से निकल देता है, जिसके परिणामस्वरूप बहू और बेटा प्रसन्न हो जाते हैं। इस पर मालकिन बेबस और असहाय होकर कहती है *"बेटा, मैं इस कुटुम्ब से भरपाई मेरे लिये शहर में कोई छोटी–मोटी कोठरी ढूंढ दो, मैं अब यहाँ नहीं रहना चाहती।"*[215] यहाँ पारिवारिक विघटन का जो चित्र उभर कर

आया हैं, वह कारूणिक और पीड़ा से युक्त है।

जया जादवानी के कहानी संग्रह *'अन्दर के पानियों में कोई सपना काँपता है'* समाज में प्रचलित रूढ़िवादी विचारधाराओं और रूढ़ियों को चुनौती देता है और आलोचना करता है, जिससे उभरते सामाजिक परिदृश्य में पारिवारिक मूल्यों की अवधारणा को फिर से परिभाषित किया जाता है।

ममता कालिया की कहानी *'मुखौटा'* की मुख्य पात्र पूजा पर जब बच्चा पैदा करने का दबाव डाला जाता है, तो वह अपने पति–सहित पूरे परिवार के खिलाफ कड़ा रुख अपनाती है। वह इस अपेक्षा का पुरजोर विरोध करती है। कहानी के में अंत पूजा एक सभा में पहुँच जाती है जहाँ उसका पति अपने भाषण में लैंगिक समानता की बात कहता हैं। वह उसके सामने खडी होकर पूछती है कि क्या यही नियम आप अपने घर के लिए भी रखते हैं, तो वह सामने अपनी पत्नी को देखकर हक्का–बक्का रह जाता है। और अन्त में वह अपने पति को यह मुखौटा त्यागकर एक सच्चा मनुष्य बनने के लिए कहती है।

मंजुल भगत ने अपनी कहानियों में पारिवारिक मूल्यों पर उत्पन्न संकट को चित्रित किया है। लेखिका ने जो समस्याएँ उठाई हैं, वह आज के समय में ज्यों की त्यों बनी हुई हैं। परिस्थितियों में परिवर्तन अवश्य आया है, किन्तु समस्याओं की जटिलता बरकरार है। लेखिका ने असफल दाम्पत्य–जीवन को चित्रित किया है। *"पति–पत्नी के सम्बन्धों के बीच प्रेम, आत्मीयता का भाव सामाजिक आर्थिक और भावात्मक कारणों से समाप्त होता जा रहा है। जहाँ दाम्पत्य–जीवन में मधुरता, प्रेम, विश्वास होता है वहीं दाम्पत्य–सम्बन्ध सफल होते हैं। आज दाम्पत्य सम्बन्ध अनेक कुण्ठाओं और विकृतियों से ग्रस्त हो गये है, जिसके कारण दाम्पत्य सम्बन्धों में विघटन शुरू हो गया है।"* [216]

मंजुल जी ने दाम्पत्य–जीवन की नीरसता को विविध रूपों में दर्शाया है।

'त्यागमयी', 'पायदान', 'दूत', 'नागपाश', 'वह जो चाहत हुआ करती थी', 'भग्नावशेष', 'अन्धेमोड़', 'शादी की सालगिरह' आदि कई कहानियाँ असफल दाम्पत्य जीवन को चिन्हित करती है।

मंजुल जी ने असफल दाम्पत्य–जीवन को भरपूर मात्रा में लिखा है, किन्तु इनके नारी पात्रों की एक विशेषता है। वह सम्बन्धों को तोड़ने में विश्वास नहीं रखती। चाहे जीवन कष्टों में बीत रहा हो। विवाह–बन्धन को पूर्णतः निभाने में विश्वास रखती है। *'अजूबा'* कहानी की नायिका कहती है– *"तो यही कि तलाक के लिए अब फिर से वेदी पर आग जलानी होगी। वर–पक्ष और कन्या–पक्ष कोई कट्ठा करना होगा। पंडित को बुलाना होगा। निशीथ को मेरा हाथ पुनः पिताजी को सौंपते हुए शपथ तोड़नी होगी। हमें पंडित के पीछे–पीछे दोहराना होगा, एक–एक वचन जो हम तोड़ना चाहते हैं। तभी होगा विधिपूर्वक तलाक।"* [217]

मंजुल जी का वैवाहिक संबंधों का चित्रण अत्यधिक भावनात्मक है, जिसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि कागज पर केवल 'तलाक' लिखने से विवाह समाप्त नहीं होता है। वह भारतीय महिलाओं की पारंपरिक छवि प्रस्तुत करती हैं, उन्हें चुनौतियों से भागने के बजाय उनका मुकाबला करने के लिए प्रेरित करती हैं। लेखिका ने आधुनिक नारी को भी भारतीय संस्कारों से जोड़े रखा है।

'छुरी काँटे' कहानी में चाँदनी की सहेली उसे समझाते हुए कहती है– *"तुम्हें उस पागल कशमकश से मुक्ति मिल रही है, यही बड़ी बात है। अब तुम डूबोगी नहीं, तैरोगी। मेरे वाला भी समझता था कि उससे अलहदा होकर मैं तबाह हो जाऊँगी। पर ऐसा नहीं हुआ। मैं हर धरातल पर जीवित ही नहीं, कामयाब भी हूँ।"* [218] मंजुल जी ने अपने नारी पात्रों को अलग–अलग दिशाएँ दिखाई हैं। अब यह स्थिति पर निर्भर करता है कि वो कौन

सी राह चुनें।

'तीसरा अस्तित्व' कहानी में मंजुल भगत ने सास और बहू के रिश्ते को कुशलता से चित्रित किया है। भारतीय समाज में सास की नकारात्मक छवि को अधिकतर उजागर किया जाता है। ऐसे में मंजुल जी की यह कहानी पारिवारिक रिश्तों पर एक सकारात्मक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करते हुए इन रिश्तों के सकारात्मक पहलुओं पर प्रकाश डालती है और इस बात पर जोर देती है कि वे पारिवारिक संबंधों को मजबूत करने में कैसे योगदान दे सकती है।

परिवार किसी व्यक्ति के चरित्र, सोच–विचार, आचार–व्यवहार अर्थात उसके व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आज के पारिवारिक परिदृश्य से समाज का रूप भी बदल गया है और उस बदले हुए स्वरुप और परिवर्तनों से ही व्यक्ति अपने जीवन और रिश्तों को आगे बढ़ाते हैं और आधुनिक समाज के ढांचे को आकार देते हैं– *"आधुनिता की इस अंधी दौड़ में पुराने पारिवारिक सम्बन्धों का टूट जाना और पारिवारिक चेतना का ह्रास तथा संयुक्त परिवारों का सकल परिवारों में बंट जाने की प्रक्रिया ने विघटन ला दिया है। जैसे विवाह सम्बन्ध में तलाक, अलगाव, पारिवारिक मूल्यों का विघटन ही परिवार के विघटन का मूल कारण है।"* [219]

शिव स्वरूप सहाय ने परिवार को अपने शब्दों में परिभाषित करते हुए कहा है कि– *"परिवार से अभिप्राय उस पैतृक परिवार से है जिसमें एक साथ अलग–अलग क्षेत्रों में तथा समान दायित्वों का निर्वाह करते हुए कई पीढ़ियों तक के लोक सम्बन्ध बनाकर निवास करते हैं।"* [220]

डॉ॰ मधुरेश जी ने परिवार को इन शब्दों में परिभाषित किया है– *"परिवार समाज का अभिन्न अंग है, व्यक्तियों का समूह समाज है। परिवार, व्यक्ति या मनुष्य को अस्मीयता*

एवं स्नेह बंधनों में बांधता है और मानव के अच्छे भविष्य का निर्माण कर जीवन को गतिशील बनाता है। परिवार समाज की मौलिक, सार्व भौमिक तथा प्रमुख संस्था है, इसके लिए उसके सदस्यों का योगदान बहुत जरूरी है, उनके आपसी सम्बन्ध परिवार को बनाए रखने की नींव है, जब वह सम्बन्ध टूट जाता है तब सब कुछ अस्त व्यस्त हो जाता है। परिवार के सम्बन्धों के टूट जाने के अनेक कारण हो सकते हैं। पारिवारिक सम्बन्धों के विघटन के प्रमुख कारण दाम्पत्य जीवन, प्रेम विवाह, शिक्षा, आर्थिक समस्याएँ, आपसी शंका, व्यक्तियों का अहंभाव आदि है। अतः डॉ० मधुरेश जी ने चित्रा जी की कहानियों को 'पारिवारिक जीवन की शोभा–यात्रा' कहा है।" [221]

चित्रा मुद्गल ने अपनी कहानी में पिता की भूमिका को दर्शाते हुए कहा है कि पिता अपनी सभी सुख–सुविधाओं को न देखकर मात्र सन्तानों की सेवा और शिक्षा में अपना जीवन समाप्त कर देता है–

"सबसे अच्छी बात जो उनकी उसे लगती है, वह है माँ के विषय में वह उससे कभी कुछ नहीं जानना चाहते हैं। जितना चाहते हैं। जितना समय उसके संग व्यतीत करते हैं, उसके कभी कुछ नहीं जानना चाहते हैं। जितना समय उसके संग व्यतीत करते हैं, उसके बचपन के दिनों में टहलते रहते हैं। दूसरी शादी क्यों नहीं की उन्होंने? शादी वह करे, जिसे अकेलापन काटे। उस घर में रहते हुए प्रति पल वह उसके पास बनी रहती है। घर के प्रत्येक कोने में उसकी तस्वीरें सजी हुई हैं। घर की कड़ी खोलते ही वह किसी भी तस्वीर से बाहर छलांग लगा, उनके स्वागत में दौड़कर उनकी टांगों से लिपट जाती है–दिखाइए, मेरे लिए क्या लाए हैं? जेब से उनकी पसंद की चाकलेट निकालकर वह बैठक में रखे डिवाडर पर रखी चाकलेट खाती उसकी तस्वीर के सामने रख देते हैं। चाकलेट इकट्ठी होती रहती है। मिलने पर इकट्ठी चाकलेट वे उसे थमा देते हैं। उनके सामने ही वह चाकलेट के रैपर हटाकर

एक के बाद एक खाना शुरू कर देती है।"[222]

पारिवारिक जीवन में पिता का प्रमुख स्थान होता है, पिता के बिना सम्पूर्ण गृहस्थ जीवन अधूरा रहता है, पिता अपने पुत्रों के लिए छाया बनकर निवास करता है, अर्थात् पिता सब कुछ है–

"'जे' एक सुधड़ जननी की भांति उनकी औलादों को सजा–धजाबारी–बारी से उनके हाथों में सौंप देती। मासूमों को पहले से ही अनुकूलित करती। वह एक सुनहला समय बिताने जा रहे हैं अपने पिता के साथ। पति वह अच्छे नहीं रहे तो क्या। पिता वह बहुत अच्छे हैं। समझदार हैं। अब तो उनके पिता उसके लिए दोस्त हैं। उनके साथ सप्ताहान्त मनाने के लिए उन्होंने फलां पिकनिक स्पॉट चुना है। जमके सप्ताहान्त मनाना तुम उनके साथ। पसन्द का भोजन करना। चीजें खरीदना। पिता अपने बच्चे को सब कुछ दिला सकता है। संकोच नहीं करता। माँ की बुराई नहीं करना। नहीं करोगे ना। माँ को अपनी इज्जत–आबरू का विशेष ध्यान रहता है। जब कभी उसके पारिवारिक जन उसकी सन्तानों की इज्जत की धज्जियाँ उड़ाते हैं तब माँ अतिव्या कुल हो जाती है और उसके लिए वह कुछ भी करने को तत्पर उठती है। एक सांप–सूंघी–सी खामोशी उनके दरमियान दुबकी हुई–सी उनके संग ही सीढ़ियां चढ़ने लगी। ठीक घर के सामने पहुंचकर श्रीमती खन्न पुनः मुखर हुई, मामला नाजुक है, धैर्य से भांपने की कोशिश करो। एकदम से उब लोगी तो उसकी कौन–सी इज्जत–आबरू पर कालिख चढ़ेगी, उल्टा सारे मोहल्ले में तुम्हारे घर को बदनाम कर देगी... किसी दिन से तड़ से रंगेहाथ धर लोगी तो मुंह जमीन में गड़ जाएगा। जबान नहीं खुल पाएगी चोट्टी की.......।"[223]

आधुनिक युग में एकाकी परिवारों को एक आदर्श परिवार माना जाता है। बदलते हुए परिवेश ने व्यक्ति की इच्छाओं, आकांक्षाओं और स्वतंत्रता के अर्थ को ही बदल दिया है आज हर व्यक्ति अपना जीवन पूरी स्वतंत्रता और व्यक्तिगत ढ़ंग से जीना चाहता है। 21वीं

सदी की महिला कथाकारों ने परिवार और उससे जुड़े सभी मूल्यों का बड़े ही सुन्दर ढ़ंग से वर्णन किया है। परिवार में हो रहे बदलाव को बताने के साथ ही समस्याओं के समाधान की ओर भी इन लेखिकाओं ने इशारा किया है।

3.5 युवावर्ग की सकारात्मक दृष्टि

21वीं सदी में साहित्य में उल्लेखनीय विकास हुआ है, विशेषकर हिंदी महिला कहानीकारों द्वारा लिखी गई कहानियों के माध्यम से। उनकी कहानियों ने युवाओं के संबंध में उनकी सकारात्मक दृष्टि को उजागर करने का सफल प्रयास किया है। अपने कार्यों के माध्यम से, ये कहानीकार आधुनिक युग की जटिलताओं को गहराई से उजागर करती हैं, युवाओं के ऐसे स्वरुप को चित्रित करती हैं, जो प्रेरणादायक और व्यावहारिक दोनों है।

इनकी कहानियों में वर्णित युवा आशावाद, लचीलेपन और महत्वाकांक्षा की भावना को समाहित करता है जो इस पीढ़ी को परिभाषित करता है। चुनौतियों और अनिश्चितताओं से भरी दुनिया में, ये कहानीकार युवा वर्ग को एक ज्वलंत तस्वीर के रूप में पेश करते हैं जो साहस, दृढ़ संकल्प और उद्देश्य की भावना के साथ जीवन की जटिलताओं को पार करते हैं। चाहे वह अपने सपनों, आकांक्षाओं या संघर्षों के माध्यम से हो। इनकी कहानियों में युवा वर्ग की भावना और जीवन में अपना रास्ता खुद बनाने की इच्छा का प्रतीक हैं। यह सकारात्मक चित्रण न केवल पाठकों के उत्साह को बढ़ाने का काम करता है, बल्कि सशक्तिकरण और कुछ करने की भावना को भी प्रेरित करता है, खासकर युवा पाठकों के बीच जो खुद को चुनौतियों और दुविधाओं से जूझते हुए पाते हैं। इसके साथ ही वह उन युवकों को सामाजिक अपेक्षाओं को पार करने, मानदंडों को चुनौती देने, और अपने जुनून को आगे बढ़ाने की प्रेरणा भी देते है।

इसके साथ ही 21वीं सदी की कहानियों में युवा वर्ग को एक महत्वपूर्ण स्थान इस सदी के रचनाकारों ने दिया है। युवा सामाजिक–राजनैतिक परिवर्तन की धुरी हैं। ये वह वर्ग

है जिसके द्वारा समाज अपनी दशा और दिशा दोनों प्राप्त करता है। इसीलिए युवा मानवीय संसाधनों में सबसे प्रमुख हैं और सरकार हो या समाज या हमारा साहित्य, युवा सभी में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं।

कुल मिलाकर 21वीं सदी की हिंदी महिला कथाकारों की कहानियों में युवाओं की सकारात्मक दृष्टि आशा और प्रेरणा की किरण का काम करती है। उनके आख्यान न केवल समकालीन युवाओं की वास्तविकताओं को दर्शाते हैं, बल्कि लचीलेपन, आकांक्षाओं और सकारात्मक परिवर्तन की क्षमता को प्रदर्शित करते हैं, जो इस गतिशील पीढ़ी को परिभाषित करते हैं। अपनी कहानी कहने की क्षमता के माध्यम से, ये महिला लेखिकाएँ सांस्कृतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, कहानियों को आकार देती हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी पाठकों के साथ जुड़ती हैं और भविष्य के लिए आशावाद और संभावना की भावना को बढ़ावा देती हैं।

इस सदी की प्रमुख कहानीकार मधु कांकरिया अपनी कहानियों में युवाओं को सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने वाले और मानवीय स्वतंत्रता की बात करने वाले के रूप में चित्रित करती हैं। उनकी कहानियाँ आधुनिक युग में जीवन की जटिलताओं को उजागर करती हैं, विचारोत्तेजक प्रश्न उठाती हैं और सामाजिक मूल्यों पर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। कांकरिया जी की कहानियाँ समाज के भीतर रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करती हैं, जो उनके विचार और संवेदनशीलता के गहरे स्तर को दर्शाती हैं।

ममता कालिया की कहानी *'मुखौटा'* में युवा नायिका एक युवा नेता से प्रेरित है, जो समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने की इच्छा व्यक्त करता है, परन्तु उसका दृष्टिकोण काफी हद तक बदल जाता है जब उसे पता चलता है कि यह व्यक्ति एक मुखौटे के पीछे अपने असली चरित्र को छिपाकर, एक झूठे व्यक्तित्व के द्वारा काम करने का इरादा रखता है। यह रहस्योद्घाटन उसकी विद्रोही भावना को बढ़ावा देता है, जिससे वह सबक सिखाने

और नेता का सामना करने के लिए प्रेरित होती है। एक दिन, वह उसकी सभा में आती है और उसे मुखौटा उतारने के लिए मजबूर करती है, जो उसके सच्चे स्व को उजागर करने के उसके दृढ़ संकल्प का प्रतीक है।

प्रत्येक लेखक अपने साहित्य के भीतर विकसित हो रही मानसिकता से उत्पन्न होने वाले सामाजिक बदलावों को उत्सुकता से देख रहा है। समसामयिक कथा साहित्य आज के युवाओं की मानवता और परिवर्तनकारी प्रकृति को प्रदर्शित करता है। यह पीढ़ी पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देने और नए प्रतिमान बनाने की इच्छा से प्रेरित है। परम्परागत मान्यताओं पर बौद्धिक दृष्टि से विचार करता युवा वर्ग जीवन में नये मूल्यों की ओर बढ़ रहा है। यही परिवर्तन युवा पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी में विद्रोह का कारण बनता है। *"जातीय, धार्मिक व भाषाई रूढ़ धारणााओं के साथ–साथ हमारे देश में कई और रूढ़िबद्ध छवियाँ विद्यमान हैं। एक ऐसी ही छवि हमारे युवाओं की भी है। उनकी रूढ़िबद्ध छवि यह है कि वे उग्रवादी, विद्रोही, क्रान्तिकारी, विवेकहीन और अपरिपक्व होते हैं। यह सही है कि युवा बाहरी प्रभावों के प्रति अति संवेदनशील होते हैं और दूसरों की नकल करते हैं, परन्तुं इसका अर्थ यह नहीं होता कि युवा केवल विध्वंस, हत्या, आक्रमण और आतंकवाद में ही विश्वास करते हैं।"* [224]

आधुनिक समय में जैसे–जैसे समाज विकसित हो रहा है, पुरानी परंपराएँ, नियम, मूल्य और व्यवहार अप्रचलित और अनावश्यक हो जाते हैं। व्यक्तियों को नए मूल्यों और नियमों को तेजी से अपनाना चुनौतीपूर्ण लगता है, जिससे उनकी पारंपरिक परवरिश और विकसित होती मानसिकता के बीच संघर्ष होता है। कहानी का नायक जयंत भी इसी दुविधा से जूझता है– *"आदमी के जीवन में कई बार बहुत असमंजस भरी स्थिति सामने होती है और कुछ ऐसी प्रचंड सी चीज उसके अन्दर पैदा होती है जो उसे हिलाकर रख देती है।"*

परिवार एक युवा व्यक्ति के चरित्र और विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पारिवारिक जीवन का प्रभाव उनके सामाजिक संबंधों और समग्र सामाजिक जीवन के अनुभवों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

पारिवारिक सदस्यों के आपसी सम्बन्ध व्यवहार और आर्थिक स्थिति पर निर्भर करते हैं। व्यक्ति के व्यवहार को आंशिक विषमताओं ने पूरी तरह से बदल दिया है। आधुनिक जीवन में अर्थ की सत्ता व्यक्ति के ऊपर हावी हो गई है। युवा वर्ग इसी आर्थिक विषमता का शिकार है। परिवार में प्रत्येक सदस्य के लिए आर्थिक सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण हो गई है। युवा वर्ग देशहित के लिए काम करना चाहता है, परन्तु कम्पनी और कारखाने सिर्फ अपने मुनाफे के बारे में ही सोचते हैं। पुरानी हो या नयी, हर सदी में युवा वर्ग होता है। बदलते परिवेश के कारण भारतीय समाज की सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन हुआ है। परम्परागत जीवनशैली और आदर्शों का महत्व युवा–पीढ़ी में घट रहा है। इन मूल्यों के विघटन का ही कारण है, जो मानवीय समस्याओं ने जटिल रूप धारण कर लिया है।

जिस सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में व्यक्ति रहता हैं, वही उनके जीवन–पथ को आकार देता है, जिसमें अधिकतर अनैतिक मूल्यों की अस्त्रीकृति होती है। युवा–समाज में परिवर्तन, संक्रमण और क्रांति के उत्प्रेरक के रूप में खड़े हैं। उनके कार्य और व्यवहार मानव–मन के विकास के प्रतिबिंब के रूप में काम करते हैं, जो पुरानी पीढ़ियों की तुलना में अधिक जागरूकता और आत्म–सम्मान की मजबूत भावना को प्रदर्शित करते हैं।

बाहरी चका–चौंध और आकर्षण के बीच, युवा पीढ़ी पारिवारिक और संबंधपरक प्रतिबद्धताओं पर व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को प्राथमिकता देती है। यह झुकाव छोटे शहरों के युवाओं में भी है, जो महानगरीय जीवनशैली से प्रभावित हैं, जो उनमे पारंपरिक संबंधों

को त्यागने और आधुनिक जीवनशैली अपनाने की इच्छा पैदा कर सकता है। उर्मिला शिरीष की *'वृंदा'* उनके कार्यों में इस समकालीन मानसिकता का प्रतीक है, जो सौंदर्य प्रतियोगिताओं के आकर्षण और ऐसी आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए कोई भी कदम उठाने को तैयार है। नायिका वृंदा घर छोड़ती है और बाहरी दुनिया से परिचित होती है। वृंदा जैसी लड़कियाँ अपनी सफलता–असफलता के प्रश्न को जीवन–मरण का प्रश्न बना लेती हैं, जिसके लिए कितना ही तनाव झेलना पड़े– *"यहाँ के एक फाइव स्टार होटल में एप्रेनटिस के रूप में काम मिल गया है। माडलिंग के लिए भी प्रयास जारी है। यहाँ की लड़कियाँ कितनी बोल्ड हैं, आत्मविश्वास से भरी निर्भीक। निःसन्देह मैं उनके सामने किनती दब्बू नजर आती हूँ।"* [226]

राजी सेठ की प्रीति जो आई०ए०एस० अधिकारी है, वह भासकरन के विवाह प्रस्ताव को नकारते हुए कहती है– *"तुम्हें नहीं मालूम...... मैं किसी दूसरी मिट्टी की बनी हूँ.... मैं अपने को अच्छी तरह जानती हूँ। मुझसे बहस बन हीं निभ पाएगा ...... खाने का सवाल... सबके बाद में बाथरूम का इस्तेमाल... सबसे बाद में खान की छुट्टी सबसे पीछे। 'पत्नी' –जिसे पत्नी कहते हो तुम सब लोग, वह मैं कभी नहीं हो सकती ..... मेरे अन्दर दूसरों को उस हद तक झेलने का माद्दा नहीं है .... आय टैल यू! दे आर ग्रेट–दीज वाइफ– बड़ी महान है– यह पत्नियाँ कितनी अच्छी तरह जानती है अपने को दूसरों की खातिर कैसे मरना है। कैसे शहीद होना है..... घर में होते ही स्टैंड बदल जाते हैं। राइट्स ड्यूटीज बँट जाती हैं। खेमे बन जाते हैं, और यह पत्नियों का खेमा–होठों पर एक वक्र सीत रेड झलकी मालूम है, इस खेमे में एक ही बात में पर फैक्शन चाहिए अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जी सकने का आर्ट चाहिए। अपने को धुला देना, मिटा देना वहाँ बखूबी है और मैं? मैं अपने को भूल नहीं सकती ..... मैं अपनी जरूरतों को लेकर खासी अड़ियल हूँ। बदल नहीं सकती।"* [227]

21वीं सदी की कहानियों का युवा अस्तित्व ही न हो कर अपने अस्तित्व की तलाश

करता हुआ संघर्षरत दिखायी देता है। वह अनेक क्षेत्रों में अपना वर्चस्व स्थापित करने की तलाश में है। और अपनी इस यात्रा में वह सफल होता भी दृष्टि गोचर होता है। वह परम्परागत रूढियों को तोड़कर आगे बढ़ने को आतुर नजर आता है।

3.6 निष्कर्ष

महिला लेखिकाओं ने समकालीन साहित्य को आकार देने और अपने समय की सामाजिक सोच को प्रतिबिंबित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपनी कहानियों के माध्यम से, उन्होंने सामाजिक मानदंडो और मूल्यों में स्त्री के अस्तित्व, जाति और वर्ग, पारिवारिक चिंतन और युवा वर्ग सम्बन्धी विभिन्न विषयों की खोज की है। इन प्रमुख लेखिकाओं द्वारा लिखी गई कहानियाँ भारतीय समाज की जटिलताओं और महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली उभरती भूमिकाओं और चुनौतियों पर गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

21वीं सदी में साहित्य में भारतीय महिला लेखिकाओं ने न केवल साहित्यिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, बल्कि भारतीय समाज की बदलती स्थितियों की जांच करने के लिए एक मंच भी प्रदान किया है। उनकी कहानियाँ केवल आख्यान नहीं बल्कि समकालीन भारत में प्रचलित सामाजिक सोच का प्रतिबिंब हैं। सूक्ष्म पात्रों, जटिल कथानकों और विचारोत्तेजक विषयों के माध्यम से, इन लेखिकाओं ने सामाजिक बदलावों, सांस्कृतिक दुविधाओं और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के सार को पकड़ लिया है।

इन प्रसिद्ध महिला लेखिकाओं ने कहानियों में आने वाले विषयों में से प्रभावशाली भूमिकाओं और अपेक्षाओं की खोज है। मृदुला गर्ग, अलका सरावगी और मंजुल भगत जैसी लेखिकाओं ने समाज में उपस्थित सभी वर्गों द्वारा आधुनिक समाज में उपस्थित जटिलताओं और समस्याओं जिसका सामना इन सभी के द्वारा किया गया है, इसकी गहराई

से जाँच की है। उनकी कहानियाँ आधुनिकता के साथ–साथ परंपरागत, व्यक्तिगत आकांक्षाओं के साथ पारिवारिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ सामाजिक मानदंडों को संतुलित करने वाली महिलाओं के संघर्ष को दर्शाती हैं। इन लेखिकाओं की कहानियाँ अक्सर भारतीय समाज के बदलते परिदृश्य को प्रतिबिंबित करती हैं। शहरीकरण, वैश्वीकरण और प्रवासन जैसे मुद्दे उन कथाओं में प्रतिध्वनित होते हैं जो तेजी से सामाजिक परिवर्तनों से जूझ रहे पात्रों को दर्शाते हैं।

21वीं सदी की महिला लेखिकाओं की कहानियाँ उत्कृष्ट शैली में लिखी गई हैं, जो अपने युग की सामाजिक सोच को प्रकट करती हैं। विविध विषयों, नवोन्मेषी आख्यानों और प्रभावशाली कहानी कहने के माध्यम से, इन लेखिकाओं ने साहित्यिक परिदृश्य और सामाजिक विमर्श में बहुत बड़ा योगदान दिया है। उनकी रचनाएँ पाठकों को प्रेरित और प्रभावित करती रहती हैं, जैसे–जैसे हम 21वीं सदी की जटिलताओं से जूझ रहे हैं, इन लेखिकाओं की कहानियाँ अंतर्दृष्टि और सहानुभूति के प्रतीक के रूप में काम करती हैं, जो हमें दुनिया के साथ गंभीर रूप से जुड़ने और अधिक समावेशी और न्यायसंगत भविष्य की कल्पना करने के लिए आमंत्रित करती हैं।

अध्याय–4

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में आर्थिक चिंतन

भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार अर्थ की गणना उन चार पुरुषार्थों में की जाती है, जिसकी ओर मनुष्य का ध्यान जीवन में सदैव रहता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों में अर्थ का अपना अलग महत्व है। आर्थिक स्थिति से ही व्यक्ति के संस्कार, उसकी बुद्धि, उसका हृदय आदि परिवर्तित होते हैं। सामाजिक व्यवस्था और मनुष्य का जीवन अर्थ की व्यवस्था पर निर्भर करता है।

आज समाज में, पैसा जीवन के सभी पक्षों की नींव के रूप में कार्य करता है। आर्थिक दृष्टिकोण इस बात पर बल देता है कि किसी देश और समाज की आर्थिक शक्ति, उसकी प्रगति और प्रति व्यक्ति आय इस पर निर्भर करती है। लोग अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने, और अपनी अजीविका सुनिश्चित करने के लिए अपने द्वारा किये गए आर्थिक कार्यों और प्रयासों पर भरोसा करते हैं।

वैदिक काल से ही भारतीय भाषाओं में अर्थ शब्द का प्रयोग होता आ रहा है। 'अर्थ' से सम्बन्धित बहुत से शब्द कोश ग्रन्थों में उपलब्ध हैं। 'अर्थ' शब्द का सबसे प्रचलित अर्थ– लक्ष्य, उद्देश्य, प्रयोजन, अभिलाषा, हेतु, अभिप्राय, कारण, तात्पर्य आदि हैं। *'अर्थ'* शब्द की अर्थ सीमा इतनी बड़ी है कि वस्तु और पदार्थ भी इसके अन्तर्गत आ जाते हैं। *"अर्थ अन्त में वस्तु का ही प्रतीक है और इष्ठ वस्तु को प्राप्त कर सकने की सामर्थ्य दिलाने वाला धन, सम्पत्ति, दौलत, रुपया इस अर्थ का मुख्य बोधगम्य विषय है। यही*

कारण है कि उपयोग, लाभ, भलाई, आवश्यकता, जरूरत आदि के साथ–साथ माँगना, याचना, प्रार्थना, दावा, याचिका, कार्यवाही, अभियोग जैसे अर्थों का समावेश भी इस शब्द में हो जाता है। इतना ही नहीं यह शब्द वस्तु–स्थिति, यथार्थ, रीति, प्रकार, तरीका, रोक, दूर रखना, प्रतिरोध, उन्मूलन आदि का भी अर्थ देता है।" [228] अर्थ के अभाव में मनुष्य का जीवन लक्ष्य रहित हो जाता है। *"सृष्टि के पालनकर्ता विष्णु को भी इसी कारण अर्थ कहा जाता है।"* [229]

'अर्थ' शब्द के पर्यायवाची पर ध्यान दें तो यह धन, सम्पत्ति वाले अर्थ का ही समर्थन करती है। *"जैसे द्रव्य, दरब, दाम, दौलत, धन, पूँजी, वित्त, माल, मुद्रा, रकम, रूपया–पैसा, लक्ष्मी, वैभव, श्री, सम्पत्ति आदि।"* [230]

ये सभी शब्द धन, सम्पत्ति के ही पर्याय हैं। साधारण रूप से *'अर्थ'* धन को ही कहते हैं। अर्थ शब्द के निम्न शब्द सीधे–सीधे धन शब्द से ही सम्बद्ध हैं, जैसे– *"अर्थक, अर्थकर, अर्थकाम, अर्थ–कृच्छ, अर्थगत, अर्थगृह, अर्थघ्न, अर्थ चिन्तक, अर्थ चिन्तन, अर्थ जात, अर्थ दण्ड, अर्थ दर्शन, अर्थ दूषण, अर्थ न्यायालय, अर्थपति, अर्थबन्ध, अर्थभृत, अर्थमंत्री, अर्थवता, अर्थवान, अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्री, अर्थहीन, अर्थाधिकारी, अर्थानुबंध, अर्थान्वित, अर्थार्थी, आर्थिक, अर्थी, अर्थ्य आदि।"* [231] संस्कृत कोश में भी *'अर्थ'* शब्द के लिए कुछ शब्द चुने गये हैं, जिनका सम्बन्ध सीधे *'अर्थ'* से है। *"अर्थोत्पत्ति, अर्थोपम्, अर्थकृत, अर्थवृद्धि, अर्थघ्न, अर्थनिबन्धन, अर्थलब्ध, अर्थप्रयोग, अर्थमात्रम, अर्थालाभ, अर्थवृद्धि, अर्थव्यय, अर्थज्ञ, अर्थशौचम्, अर्थसंस्थानम्, अर्थसार, अर्थवत्।"* [232] *'अर्थ'* को अर्थ देने वाले शब्दों की संख्या इतनी अधिक है कि जो मानव जीवन में अर्थ प्रभाव और इसके महत्व को दर्शाती है।

अर्थ व्यक्ति और समाज के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसीलिए अर्थ हमारी

सभ्यता, संस्कृति तथा उन्नति और समृद्धि की आधारशिला है।

सरिता वशिष्ट के अनुसार *"केवल अर्थ ही जीवन का एक ऐसा पक्ष है जो अपने अभाव में व्यक्ति को उसकी नैतिकता से नीचे गिरा देता है।"* [233]

डॉ० हेमेन्द्र पानेरी के अनुसार, *"अर्थ समाज की केन्द्रीय शक्ति है। संसार के सभी कार्य–कलाप अर्थ पर ही आधारित हैं। सामान्यतः आर्थिक दृष्टि से उन्नत समाज को ही विकसित समाज कहा जाता है। वर्तमान में सामाजिक संबंधों के आधार प्रमुखतः अर्थ बन गया है। अर्थ ही समाज की शिराओं में बनने वाला रक्त है, जो सम्पूर्ण समाज का जीवन संचालित करता है। प्रत्येक युग का सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन अर्थ प्रक्रिया से प्रभावित रहता है। विकास का मूल आधार अर्थ ही है।"* [234]

'अर्थ' समाज के निर्माण की पीठिका है, उसका आधार स्तम्भ है। कालमाक्र्स ने पूंजी, के केन्द्रीकरण को अर्थहीनता एवं निर्धनता का कारण माना था। *"जीवन के स्तर पर ऊँचा उठाने का साधन है अर्थ! जीवन की आवश्यकता भोजन, वस्त्र, घर, अर्थ के उपार्जन, संचय एवं उपयोग पर आश्रित है। संसार के सभी व्यवहारों में अर्थ को मुख्य माना गया है, क्योंकि सभी कार्य व्यवहारों की प्राप्ति का मूल आधार अर्थ ही है। आर्थिक परिस्थितियाँ ही मनुष्य की प्रत्येक परिस्थितियों की निर्णायक है। आर्थिक पक्ष सबल होगा तो निश्चित तौर पर बाकी पक्ष भी सबल होंगे। मनुष्य की आजीविका, दैनिक जीवन की आपूर्ति से लेकर देश के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक बोध अर्थ के माध्यम से परस्पर जुड़कर युगीन परिवेश को प्रभावित एवं परिचालित करते हैं। समाज में आज अर्थ ही मुख्य बन गया है।"* [235]

समकालीन समाज में *'अर्थ'* पर ध्यान केंद्रित करने से लक्ष्यहीनता की भावना पैदा हुई है, क्योंकि आर्थिक साम्राज्यवाद केवल आर्थिक लाभ पर अत्यधिक जोर देता है। इस

प्रकार इन सभी स्थितियों को चित्रित करने का कर्तव्य एक कहानीकार का है। 21वीं सदी की लगभग सभी लेखिकाओं जैसे– मंजुल भगत, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, कृष्णा अग्निहोत्री, चंद्रकांता, मेहरुन्निसा परवेज़, अलका सरावगी आदि ने भारत की आर्थिक प्रणाली के सभी बिन्दुओं का यथार्थवादी और आलोचनात्मक दृष्टि से चित्रण किया है।

अपनी कहानियों के माध्यम से, ये कहानीकार आर्थिक साम्राज्यवाद की जटिलताओं को उजागर करती हैं, और इसमें अंतर्निहित लाभ, हानि, कमियों और आवश्कताओं को उजागर करती हैं। वे आर्थिक आकांक्षाओं के जाल में फंसे व्यक्तियों के संघर्षों को उजागर करती हैं, अमीरों और गरीबों के बीच स्पष्ट विभाजन और मुख्य रूप से आर्थिक उद्देश्यों से प्रेरित समाज के परिणामों को दर्शाती हैं।

इन लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में आर्थिक विषयों को अच्छे ढंग से पेश किया है, जो आर्थिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक शक्तियों के सन्दर्भ में जानकारी प्रदान करती हैं। उन्होंने वर्तमान परिस्थितियों को विभिन्न रूपों से देखा है और आर्थिक विचारधाराओं पर सवाल उठाये हैं, जिसने पाठकों को अर्थ से अधिक समृद्धि और प्रगति पर विचार करने के लिए प्रेरित किया है। इन कहानीकारों की रचनाएँ अर्थ–केंद्रित समाज की शक्तिशाली आलोचना के रूप में काम करती हैं, पाठकों से उन प्राथमिकताओं और मूल्यों पर पुनर्विचार करने का आग्रह करती हैं जो हमारी आर्थिक प्रणालियों और सामूहिक आकांक्षाओं को आकार देती हैं और आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में निहित जटिलताओं की गहरी समझ के लिए प्रेरित करती हैं।

4.1 सामंती शोषण का विरोध

महिला लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में सामंती शोषण का विरोध अपनी कहानियों के माध्यम से, इन लेखिकाओं ने सामंतवाद के ऐतिहासिक और समकालीन बिन्दुओ पर

प्रकाश डालते हुए, इसकी दमनकारी प्रकृति और सम्पूर्ण रूप से व्यक्तियों और समाज पर इसके प्रभाव को उजागर किया हैं। इसके अतिरिक्त, यह बताने का प्रयास किया है कि कैसे समाज के विभिन्न वर्गों में स्तरीकरण आर्थिक कारणों विशेषकर धन संग्रह से जटिल रूप से जुड़ा हुआ है।

समाज में वर्ग विभाजन की अवधारणा *'आर्थिक ढांचे'* पर ही आधारित है। आर्थिक व्यवस्था में वर्ग से अभिप्राय, उस मानव समूह से है, जिसके हित समान हों। सामाजिक चेतना के अभाव में किसी भी वर्ग का निर्माण असम्भव है। जब समाज के एक विशिष्ट वर्ग के सदस्य सामाजिक असमानताओं से परिचित हो जाते हैं और इस जागरूकता के आधार पर खुद को दूसरों से अलग समझने लगते हैं, तभी वर्ग का जन्म होता है।

'अर्थ' वर्ग व्यवस्था के केन्द्र बिंदु के रूप में कार्य करता है। यह व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति, अवसरों और संसाधनों को प्रभावित करता है, उनकी सामाजिक स्थिति को आकार देता है और समाज की वर्गीकृत संरचना के भीतर उनके स्थान को परिभाषित करता है। *"वर्ग जनित मूल्यों के सृजन में भूमि, पूँजी एवम् श्रम तीन निर्माणकारी तत्व मुख्यतः स्वीकार किये जा सकते हैं। ये ही वर्ग व्यवस्था के आधार बिन्दु हैं। उच्च और निम्न या धनी या गरीब वर्गों के निर्धारण में इन्हीं तत्वों का योग रहता है।"* [236] समाज की आर्थिक स्थिति ने व्यक्ति को तीन प्रमुख वर्गों में बाँटा है– उच्च वर्ग, मध्य वर्ग और निम्न वर्ग।

निम्न वर्ग के अन्तर्गत कृषक, श्रमिक आदि आते हैं। इस वर्ग के पास श्रम को छोड़कर उत्पादन का कोई साधन नहीं होता। जिससे उनके लिए बुनियादी जरूरतों को पूरा करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। ये दो वक्त की रोटी जुटाने में भी असमर्थ हैं, क्योंकि उन्हें शोषण का सामना करना पड़ता है, ये शोषित हैं और शोषण की यह प्रक्रिया समाज में अस्थिर है। *"यह समाज का वह भाग है, जो अपनी जीविका का उपार्जन श्रम से करता है और अधिकतर इस वर्ग का ही शोषण किया जाता है। इस वर्ग के अन्तर्गत किसान मजदूर*

आते हैं।” [237]

अलका सरावगी ने अपनी कहानियों में शोषण के विरुद्ध अपनी आवाज उठायी है। किसानों की निम्न आर्थिक स्थिति का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है– *“भारत के बेचारे गरीब किसान कुएँ से पानी भी पम्प से न निकालकर शरीर के जोर से निकालें, शहरों में रिक्शा चलायें ताकि दुनिया के सारे अमीरों को दरवाजे के पास आकर दरवाजा खोलने के लिए अगुँली न लगानी पड़े और दरवाजे खुल जाएं, वे सीढ़ियों पर खड़े हों, तो सीढ़ियां अपने आप ऊपर चलने लगे और वे एक शहर से दूसरे शहर जाने के लिए उस तरह हवाई जहाज पकड़ें जैसे लोग बस या टैक्सी पकड़ते हैं। वे लोग मौज से रहें और हम उनकी गंदी की हुई हवा को साफ करने के लिए यहाँ पेड़ लगाते रहें और घोड़े–बैलों की तरह शरीर के जोर से सारे काम करते रहें। एक मामूली पम्प भी न चलाएं।”* [238] उपरोक्त पंक्तियाँ इस बात पर प्रकाश डालती हैं कि किस प्रकार सामंती वर्ग निम्न वर्ग का शोषण करता है।

इसी प्रकार चित्रा मुद्गल ने *‘सुख’* नामक कहानी में दर्शाया है कि कभी–कभी आर्थिक परिदृश्य का विकृत रूप भी देखने को मिलता है, अर्थात् जिन लोगों के पास धन की अधिकता है वे भोग–विलास में इतना लिप्त रहते हैं कि उन्हें दीन–दुनिया का कुछ भी ज्ञान नहीं हो पाता। लोग थोड़ी–सी सुख–सुविधा पाकर फूले नहीं समाते हैं तथा अपने से निम्न वर्ग का तिरस्कार करने में संकोच नहीं करते। *“पलटेंगी महारानी, जरूर पलटेंगी। सुख–सुविधा, स्वतंत्रता, समता का खून लग चुका मुंह। इतनी छूट और कहीं संभव नहीं। हो सकता है, अभी घंटे–खांड में मिजाज ठिकाने आ लगे और नीचे बैठी अपनी चिल्लर बिरादरी से उसके घर का गोपनीय खुसखुसा, ऊपर लौट आए। बहरहाल, यह तय है कि वह पीछे छौड़कर मटकी को मनाने नहीं जाएगी। उसे विश्वास हो रहा है कि न आना होता पलटकर पट्ठी को तो निश्चय ही अपना हिसाब–किताब लेकर जाती।”* [239]

समाज की आर्थिक भूमिका में अमानवीयता की स्थिति उत्पन्न करने वाली कहानी

'भूख' है। जीवन की वास्तविक कड़वी सच्चाई बयान करने वाली रचना *'भूख'* अविस्मरणीय है। तीस रूपया दिहाड़ी पर काम करने वाला गुंडप्पा मिस्त्री पंद्रह मंजिला इमारत में काम करते वक्त फिसलकर मौत को गले लगाता है। लछमा के सम्मुख तीन बच्चों के भरण–पोषण की समस्या उपस्थित हो जाती है।

चित्रा मुदगल की कहानी *'भूख'* समाज की आर्थिक गतिशीलता में निहित अमानवीयता को स्पष्ट रूप से चित्रित करने वाली कहानी है। यह कहानी जीवन की कठोर वास्तविकताओं को उजागर करती है और पाठकों पर अमिट प्रभाव छोड़ती है। गुंडप्पा, जो प्रतिदिन मात्र तीस रुपये की दिहाड़ी पर काम करने वाला मिस्त्री है, जिसकी मृत्यु पंद्रह मंजिला इमारत में काम करते समय फिसलकर गिरने से हो जाती है। पैसों के जोर पर खडूस सेठ यह सिद्ध कर देता है कि– *"मिस्त्री बाटली चढ़ाए हुए था। अलबत्ता रात को जरूर वह बोतल चढ़ा के सोया था, पर सुबू एकदम होश में काम पर गया। मुँह से दारू की बास नहीं गई होगी तो और बात। हजार रुपए लक्ष्मा को टिका के टरका दिया हरामी ने।"* [240] जिसके कारण अपने तीन बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी के बोझ तले दबी लछमा खुद को दुविधा में पाती है, क्योंकि वह इस स्थिति के कारण अपने गांव नहीं लौट सकती है। *"गावं के हालात शहर से भी बदतर हैं। मजूरी वह भी दो पाव चावल पर।"* [241] कोई उसके पहचान न होने की वजह से काम में रखना नहीं चाहता। हालात उसे विवश कर देते हैं कि वह अपने बच्चे को एक भिखारिन को किराए पर दे देती है। भिखारिन तो बालक को भूखा रखकर अपने भीख के धंधे को खूब चलाती थी, पर लछमा अपने पुत्र से हाथ धो बैठती है, जब उसे यह पता चलता है कि– *"बच्चे को खाने नहीं देती थी क्या। बच्चा भूख से मर गया। उसकी आंते सूखकर चिपक गई थी।......"* [242] *'भूख'* यातना और शोषण की अमानवीय करूण कहानी है।

'पाठ' एक मार्मिक कहानी के रूप में कार्य करती है जो गरीबी और भुखमरी की

दुखद वास्तविकताओं को दर्शाती है। इस कहानी में नेता ग्रामीण बच्चों को स्वच्छता का पाठ पढ़ाते हैं, परन्तु भूख जैसी गंभीर समस्या का समाधान करने में विफल रहते हैं। कहानी एक स्पष्ट विरोधाभास को चित्रित करती है, जहाँ चुनाव के दौरान जीत हासिल करने के लिए पैसे पानी की तरह बहाये जाते हैं, फिर भी समाज का एक महत्वपूर्ण वर्ग अपनी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए भी वर्षों तक अभाव से जूझता रहता है।

इसी तरह *'मामला आगे बढ़ेगा अभी'* कहानी में सक्सेना पूंजीपति उच्च वर्ग का प्रतिनिधि है। बगैर धुली गाड़ी में बाहर निकलना उसकी अभिजात्यीय शान के खिलाफ है। फ्लू में तपते नौकर मोट्या को कार साफ न होने पर केवल गालियाँ ही नहीं देते हैं, वरन् उसका सात दिनों का तनखाह काटने का दण्ड भी देते हैं। *"मेरा सात दिवस का खाड़ा (नागा) काट लिया... फरेब करके थोड़ी मैं घर पर मस्ती मारता होता!... खाड़ा के वास्ते मैं साहब से लड़ाई किया तो वो मेरे को झापड़ चढ़ा के दफा हो जाने कू बोला... धक्का मारके घर से बाहर कर दिया... मेरे को!.. सब समझता मैं... काय का वास्ते काम पर से हकाला साहब ने..."*[243]

स्पष्ट है कि 21वीं सदी की लगभग सभी लेखिकाओं नें अपनी कहानियों में इन दो वर्गों का बड़ी ही सूक्ष्मता से चित्रण किया है। एक है सामंत वर्ग और दूसरा है शोषित वर्ग। सभी लेखिकाएँ सामंती वर्ग का विरोध करती दिखायी देती हैं। उनका मानना है कि मनुष्य को मनुष्य समझना चाहिए, छोटा या बड़ा नहीं। मनुष्य का मूल्यांकन उसके गुणों से होना चाहिए, अमीरी या गरीबी से नहीं।

4.2 श्रम के मूल्य की प्रतिष्ठा

स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात भारत ने औद्योगिक विकास में वृद्धि का अनुभव किया, जिसने देश के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में आर्थिक शक्ति के

महत्व को रेखांकित किया। किसी देश की आर्थिक नींव उसके सामाजिक और राजनीतिक ताने–बाने का आधार बनती है, आर्थिक प्रगति देश की सामाजिक संरचना में प्रगति को उत्प्रेरित करती है और इसकी आबादी के बीच एक प्रगतिशील मानसिकता को बढ़ावा देती है। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक कारकों के विपरीत, आर्थिक स्थितियाँ किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति पर अधिक प्रभाव डालती हैं। इसी तरह, वैश्विक मंच पर किसी देश का कद उसकी आर्थिक उन्नति पर काफी हद तक निर्भर करता है।

भारत एक विकासशील देश है, जहां निर्धनता है। यहाँ देश को उन्नत बनाने वाले सभी साधन उपलब्ध हैं, फिर भी देश में गरीबी है। इस आर्थिक विपन्नता का कारण सिर्फ इतना है कि यहाँ उपलब्ध आर्थिक स्त्रोतो का सम्यक् उपयोग नहीं हो पा रहा है। मनुष्य सादा जीवन उच्च विचार को प्राथमिकता देने के कारण आर्थिक विकास की ओर ध्यान नहीं देता। मानव–जीवन में अर्थ सर्वोपरि है। *"आधुनिक युग जब भी विकास की सारी शक्तियाँ विज्ञान और उद्योग में केन्द्रित हो गई हैं, विकास का आधार अर्थ हो गया है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि आज के प्रगतिन्मुख जनजीवन में उन्नयन के सारे साधन अर्थ में निहित है।"* [244]

अलका सरावगी ने श्रम के मूल्य की प्रतिष्ठा करते हुए लिखा है– *"देश का किसान तो हमेशा से आज तक अपने शरीर के श्रम से अनाज पैदा करता आया है।"* [245]

श्रम की प्रतिष्ठा ने परम्परागत मूल्यों में परिवर्तन किया है। जिससे ऐसे व्यक्ति सशक्त हुए हैं जो खुद को हीन समझते थे। निम्न वर्ग के हृदय में विद्रोह के स्वर स्पष्ट दिखाई देते हैं। समकालीन समाज में, यह सर्वहारा वर्ग सक्रिय रूप से अपनी ताकत को संगठित और मजबूत करने में लगा हुआ है।

'त्रिशंकु' कहानी का बंटू माँ की दशा से द्रवित होकर मात्र चालीस पैसे में लिफ्ट

रहित बिल्डिंग में भारी बोझ से भरे सामान पहुँचाता है। जिससे उसके कंधे छिल जाते हैं। आर्थिक तंगी और मां की दयनीय हालत देखकर वह श्रम की महत्ता को समझता है और वही करता है– *"पढ़ कर वह करेगा भी क्या? जब तक पढ़ लिखकर कमाने–धमाने के काबिल बनेगा चैबीस घंटे मेहनत करती बूंद–बूंद निचुड़ती मां जीवित बचेगी? कमजोर! चलती है तो मन करता है कि अगले ही डग ठोकर खाकर ढेर न हो जाए। वह मां को जिंदा रखेगा। कमाएगा, कमा कर तो आराम करने के लिए मां को घर बैठा देगा। पैसा जोड़कर अलग खोली ले लेगा। मां काम से लौटती है, तो कटे वृक्ष सी लोहे वाले पलंग पर ढेर हो जाती है।"* [246]

चित्रा मुद्गल, ममता कालिया, चंद्रकांता, मृदुला गर्ग, कृष्णा अग्निहोत्री, मंजुल भगत, अलका सरावगी, मेहरुन्निसा परवेज़, उर्मिला शिरीष जैसी 21वीं सदी की महिला कथाकारों की कहानियों में श्रम का अत्यधिक महत्व है। इन लेखिकाओं के अनुसार, उनकी कहानियों में पुरुष और महिला मजदूर दोनों ही सम्मानित पात्र हैं, जिन्होंने सच्ची पीड़ा का अनुभव किया है। उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण की सभी ने अपनी–अपनी कहानियों में लगातार प्रशंसा और सराहना की है।

चित्रा मुद्गल की कहानी *'ठेकेदार'* में श्रम के मूल्य को प्रमुखता से दर्शाया गया है। नायक, एक नाई हैं जो अपने दैनिक काम के माध्यम से दिन में केवल दो जून के भोजन के लिए पर्याप्त कमाता है, वह अपने पड़ोसी के साथ रहता है, जो अनिच्छा से उसके खर्चों को वहन करता है और कहता है– *"सुनो छेदी। गलत न समझना कि तुम हम पर भारी पड़ रहे हो, इसलिए सलाह दे रहे हैं, खाली बइठने से अच्छा है, पुष्पा बुआ के पास ढोलकिया का काम धर लो। तीन–चार हजार नगदी जुड़ जाएगा, तब काम छोड़ देना। पांव रिक्शा चला लेना। चलाने को अब भी चला सकते हो मगर फिर वही बात। ठेकेदार के पास से*

बिना डिपासन के रिक्शा मिलने से रहा।"[247]

वैश्वीकरण में भारत के एकीकरण के बाद भी आर्थिक असमानता में कोई विशेष कमी नहीं आई है, खासकर गरीबों की दुर्दशा के संबंध में। सरकारी नीतियों ने कॉर्पोरेट टैक्स में पर्याप्त छूट देकर और नियमो में ढील देकर आर्थिक असमानताओं को बढ़ावा दिया है। भारत में वर्तमान आर्थिक व्यवस्था पूंजीपतियों, जमींदारों, वकीलों, राजनेताओं, डॉक्टरों और सरकारी अधिकारियों जैसी विभिन्न संस्थाओं द्वारा शोषण को जारी रखती है, जिसके परिणामस्वरूप धन का एक चिंताजनक अंतर पैदा होता है, जहाँ समृद्ध लोग और अमीर होते जाते हैं, जबकि गरीबों को अनगिनत आश्वासनों और वादों के बावजूद बिगड़ती परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। धन के आभाव ने गरीबी को एक अभिशाप में बदल दिया है, जो किसी व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा को दर्शाता है। लगभग सभी गरीब लोगों के जीवन की कहानी एक सी है, जिसमें जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन भर अभावों का सामना करना पड़ता है, बावजूद इसके कि वे अपने और अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए दिन–रात अथक परिश्रम करते हैं।

कथा साहित्य के क्षेत्र में, 21वीं सदी की लेखिकाओं ने लगातार श्रम के मूल्य पर प्रकाश डाला है और अपनी कहानियों में ऐसे पात्रों को चित्रित किया है जो सफलता की कुंजी के रूप में कड़ी मेहनत को प्राथमिकता देते हैं। हमेशा अपने मेहनती प्रयासों के माध्यम से चुनौतियों पर काबू पाने का रास्ता खोजते हैं। इन महिला लेखिकाओं की विशिष्टता उनके पात्रों के जीवंत और गतिशील चित्रण में निहित है, जो अपनी परिस्थितियों की जटिलताओं से निपटने वाले मेहनती व्यक्तियों के ज्वलंत चित्रण के माध्यम से अपनी कहानियों में जीवन भर देती हैं।

4.3 स्वावलम्बन की पक्षधरता

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में आर्थिक स्वावलम्बन

की पक्षधरता का विशेष महत्व है। ये लेखिकाएँ अपनी कहानियों के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता की महत्ता समझाती हैं और इसे समाज में महत्वपूर्ण अंग मानती हैं। आर्थिक स्वावलम्बन की पक्षधरता उनकी कहानियों के पात्रों के माध्यम से प्रकट होती है। वे अपने पात्रों को समृद्धि और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते दिखाती हैं।

ये लेखिकाएँ सामाजिक संदर्भ में आर्थिक स्वावलंबन के महत्व पर प्रकाश डालती हैं। ये अपनी कहानियों में आत्मनिर्भरता और आत्म–जागरूकता को आवश्यक विषयों के रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियाँ आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्तियों की उपलब्धियों का समर्थन करती हैं,और समाज के भीतर नए मानकों और मानवाधिकारों की मान्यता में सहायता करती हैं। आर्थिक स्वावलंबन से जुड़ी इनकी कहानियाँ पाठको को आत्मनिर्भरता के महत्व को समझने में मदद करती हैं और उन्हें आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विषयों से अवगत कराती हैं।

आर्थिक स्थितियाँ मानव अस्तित्व को प्रतिबिंबित करती हैं, जो हमारे जीवन में धन के महत्व को रेखांकित करती हैं। आज, आर्थिक कौशल, सामाजिक पदानुक्रम में महत्वपूर्ण प्रभाव रखता है। आर्थिक स्थिति का समाज और व्यक्ति दोनों पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है, समाज की शिराओं में बहने वाला रक्त अर्थ ही है जो सम्पूर्ण मानव जाति के जीवन को संचालित करता है। सम्पूर्ण मानव जाति के इतिहास में आर्थिक प्रक्रियाओं के उतार–चढ़ाव ने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्रों को प्रभावित कर उन्हें एक आकर दिया है। प्रगति के लिए अर्थ का होना आवश्यक है, क्योंकि ये एक मौलिक सिद्धांत है जो आधुनिक मानवीय संबंधों और रिश्तों में व्याप्त है।

सामाजिक प्रतिष्ठा और संसाधनों की प्राप्ति के लिए धन मानवीय पक्षों में एक अभिन्न भूमिका निभाता है। समकालीन समय में, आर्थिक शक्ति एक प्रमुख शक्ति है, जो सामाजिक संरचना और व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है। किसी समाज की आर्थिक स्थिति में होने वाला उतार–चढ़ाव सामाजिक गतिशीलता, सांस्कृतिक

प्रथाओं और राजनीतिक विचारधाराओं में बदलाव ला सकता है। आर्थिक मंदी सामाजिक अशांति को बढ़ावा दे सकती और किसी समुदाय या राष्ट्र की आन्तरिक संरचनाओं को प्रभावित करती है। इसके विपरीत, आर्थिक समृद्धि सामाजिक एकजुटता, सांस्कृतिक नवाचार और राजनीतिक स्थिरता प्रदान करती है।

चित्रा मुद्गल ने अपनी कहानियों में स्वावलम्बन का पक्ष लिया है। *'इस ध्यान में'* कहानी में अंजा का कथन इसी ओर संकेत करता है– *"अंजा से मैंने अपनी इस ऊबन का जिक्र किया तो वह सुझाव देती–सी बोली थी, 'बाई, अक्खा दिन काय कू घर में पड़ा सड़ता है। दूर किसी आफिस–वाफिस में काम–धंधा देख लो ना साब जो भी बोलता हय, तुम गुप–चुप काय को मान लेता हय? तुम लिखेला–पढ़ेला है न, परवा मत करो। जितना परवा करेगा न उतना वो तुमको आंख दिखाएगा, समझा। फिर बाबा का भी तो काम नईं है। वो उधर शाणा में और तुम इधर घर में अकेला भूत सरखा।"* [248]

"उसकी बातों ने सचमुच घेरे को तोड़ने का विद्रोह पैदा कर दिया था। सोमेश को बिना बताए एक स्कूल में मैंने अध्यापिका के लिए प्रार्थना–पत्र भेज दिया। साक्षात्कार का बुलावा आने पर चुपचाप साक्षात्कार भी दे आई। अचानक एक दोपहर मुझे स्कूल के अधिकारियों का पत्र प्राप्त हुआ कि वहाँ मुझे एक हफ्ते के भीतर ज्वाइन कर लेना है।" [249]

चित्रा मुद्गल की कहानी *'प्रमोशन'* की नायिका ललिता, अपने परिवार के आर्थिक संकट दूर करने के लिए नौकरी करती है। किन्तु उसके पति की संकीर्ण मानसिकता के कारण वह उसकी पदोन्नति को संदेह की दृष्टि से देखता है और ललिता को आदेश देने का प्रयत्न करता है कि वह अपनी नौकरी छोड़ दे और घर पर रहे, तो ललिता, अपने अधिकारों के प्रति पूरी तरह से जागरूक और अपनी स्वतंत्रता को महत्व देते हुए, दृढ़ता से अपनी बात पर अड़ी रहती है। वह अपने पति की क्षुद्र मानसिकता की उपेक्षा करती है और आत्मविश्वास के साथ कहती है– *"तुम्हारी कुण्ठाओं द्वारा रचा हुआ सत्य मेरी नियति नहीं बन सकता।"*

250

आर्थिक स्वावलम्बन की इच्छा ही महिलाओं को समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए प्रेरित करती है। आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हुए, कई महिलाएँ बचत करके अपना भविष्य सुरक्षित करने का प्रयास करती हैं। *"तनख्वाह अपेक्षित न भी मिले तो क्या वह नौकरी से मुंह मोड़ पाएगी? मां भुनभुना रही थी। पिछले हफ्ते, आग लगे, मसाले इतने मंहगे हो गए हैं कि मिर्च, धनिया पर हाथ नहीं धरे जाते। ऊपर से वक्त का टोंटा ऐसा टूटा कि वे पहले की भांति थोक की मंडी मस्जिद मन्दिर जा पाती है, न घर में कूटना–पीसना सम्भव रहा।.......... आज की यह सारी खरीददारी तुमरे जन्मदिन का उपहार है। इनमें से कोई भी पोशाक, जिसे तुम सबसे पहले पहनने का चाव रखती हो, पहनकर कल घर आना यानि कि अपने कार्यकाल में एक नई नमिता से मुलाकात करना चाहता हूँ।....."* [251]

जब हम अपनी वर्तमान आजीविका से असंतुष्ट होते हैं और धन पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम अक्सर अपने मूल्यों और सिद्धांतों से भटक जाते हैं। प्रतिस्पर्धा के जीवन का एक सर्वव्यापी पहलू है, जो विभिन्न रूपों में प्रकट होता है। कुछ लोग केवल आर्थिक लाभ के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, तो कुछ दूसरों को प्रेरित करने और उनके उत्थान के लिए प्रतिस्पर्धी प्रयासों में लगते हैं। जब तक यह प्रतिस्पर्धा रचनात्मक होती है और स्वस्थ विकास को बढ़ावा देती है, तब तक यह सकारात्मक परिणाम देती है। किन्तु जैसे ही यह अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा में बदलती है वैसे ही यह नकारात्मकता में बदल जाती है, जो कभी–कभी हानिकारक परिणामों की ओर ले जाती हैं।

इसी प्रकार ममता कालिया की कहानी दौड़ समकालीन परिवेश में बहुत ही प्रासंगिक है। बाजार के प्रभाव से देश के अधिकांश महत्वाकांक्षी युवाओं को एम०बी०ए० एवं एम०सी०ए० की ओर आकर्षित किया जिनमें ऊपरी दिखावा तो है, किन्तु ये व्यक्ति के तन और मन दोनों को खोखला कर देते हैं। व्यक्ति के जीवन में बस एक ही चीज रह जाती है,

वह है स्पर्धा। इस भागदौड़ भरे जीवन में समय किसी के पास नहीं है। मानवीय संवेदनाएँ, सम्बन्ध, संस्कार सब हाशिये पर है। बहुराष्ट्रीय कम्पनी में काम करने वाला अभिषेक इसी दौड़ में शामिल है जो कम्पनी के लिए विज्ञापन बनाता है, वह कहता है– *"मैंने आई०आई०एम० में दो साल भाड़ नहीं झोंका। वहाँ से मार्केटिंग सीख कर निकला हूँ। आई कैन सैल ऐ डैड रैट (मैं मरा हुआ चूहा भी बेच सकता हूँ) यह सच्चाई, नैतिकता, सब मैं दर्जा चार तक मारल साइंस में पढ़कर भूल चुका हूँ। मुझे इस तरह की डोज मत पिलाया करो।"* [252]

21वीं सदी की सभी महिला लेखिकाओं ने स्वावलम्बन की पक्षधरता की है। उन सभी का मानना है कि जो व्यक्ति स्वावलम्बी होता है वह जीवन में किसी भी परिस्थिति में हताश नहीं होता और हर परिस्थिति का साहस और दृढ़ संकल्प के साथ सामना करता है।

4.4 लघु एवं कुटीर उद्योग को बढ़ावा

प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी स्तर पर अपना जीवन–यापन करने के लिए जीविकोपार्जन का साधन चुनना ही पड़ता है। आजीविका का अर्थ है एक ऐसा व्यवसाय या कार्य जिसके द्वारा जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होने के साथ ही उन्नति के अवसरों का लाभ उठाया जा सके। हमारे देश में काम करने वालों की कमी नहीं है। प्राकृतिक संसाधनों की कोई कमी नहीं है। जीवन के हर क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं के विकास और रोजगार के अवसर पैदा करने की अनन्त संभावनाएँ विद्यमान हैं, फिर भी आजीविका के लिए संघर्ष लगातार गहराता जा रहा है। प्रत्येक क्षेत्र में हम संघर्ष करते परिवारों व युवाओं की स्थिति को देख सकते हैं।

कुटीर उद्योग उन उद्योगों को कहते हैं, जिनमे वस्तुएं किसी कारखाने में नहीं बल्कि घर पर बनाई जाती हैं और कुशल कारीगर घर पर ही सामान बनाते हैं, जिसमें कम लागत

में हाथ से की जाने वाली कारीगरी के द्वारा वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। भारत के इतिहास में कुटीर उद्योगों का बहुत महत्व रहा है। कुटीर उद्योगों को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है:

कुटीर उद्योग वे हैं जो एक ही परिवार के सदस्यों द्वारा पूरी तरह या आंशिक रूप से संचालित होते हैं। इन्हें ग्रामीण कुटीर उद्योग और शहरी कुटीर उद्योग में वर्गीकृत किया जा सकता है। इन उद्योगों में सीमित मात्रा में श्रम और पूंजी की आवश्यकता होती है। कुटीर उद्योगों के उदाहरणों में चमड़े के सामान, ईंट भट्टे का काम, कागज़ के थैले और बाँस की टोकरियाँ बनाना शामिल हैं। बढ़ईगीरी, लोहार और मिट्टी के बर्तन बनाने जैसे पारंपरिक शिल्प भी इसी श्रेणी में आते हैं। इसके अतिरिक्त गुड़, अचार, पापड़, जैम और मसाले जैसे खाद्य उत्पाद भी बनाए जाते हैं। यह उद्योग अपेक्षाकृत कम पूंजी निवेश के साथ उत्पादन बढ़ाने में सक्षम है। कुटीर उद्योगों में उपयोग किए जाने वाले अधिकांश कच्चे माल कृषि से प्राप्त होते हैं, जिससे किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करके भारत की कृषि–अर्थव्यवस्था को समर्थन मिलता है। इसके अलावा, इन उद्योगों में उत्पादन प्रक्रियाएँ पर्यावरण के लिए कम हानिकारक होती हैं। उनके कई लाभों के बाद भी, हमारे देश में कुटीर उद्योगों के प्रचलन में गिरावट आई है।

उद्योग के विकास के कारण सामाजिक व्यवस्था के सभी पक्षों पर अर्थ का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। मानव जाति में तो 'अर्थ' को नियन्ता ही माना जाने लगा है। 21वीं सदी की लगभग सभी महिला कथाकारों ने अपनी कहानियों में तत्कालीन आर्थिक स्थिति का सूक्ष्मता से अंकन किया है।

अलका सरावगी ने *'काम छोटा हो या बड़ा, काम तो काम है'* इस पर लिखा है– *"दुनिया में कुछ लोग सही रास्ते पर नहीं चलते और उनसे निपटने के लिए कानून और पुलिस है। बाकी लोग घूमती हुई पृथ्वी के साथ अपने–अपने हिस्से के खाते–पीते, सोते–*

हँसते, लड़ते और प्रेम करते एक मुकम्मल जिन्दगी जीते हैं। जबकि सच यह है कि नब्बे प्रतिशत लोग यहाँ बीच की जिन्दगी जीते हैं यानि कि ऐसी जिन्दगी जिसमें सही और गलत का फर्क मिटते–मिटते इतना मिट जाता है कि दोनों एक हो जाते हैं। बड़ा बाजार और आसपास के पुलिस थानों में नियुक्त होने के लिए बोली लगती है। यहाँ पुलिस की कमाई सबसे अधिक जो है। काउंसिलर पाँच सालों में इतने अमीर बन जाते हैं जैसे कि उनकी जन्मपत्री में अचानक कोई राजयोग चला आया हो। व्यापारी को हर हाल में किसी बला को टालना है भले ही उसे किसी को कोई भी रकम क्यों न देनी पड़े। हर आदमी की एक कीमत है और हर काम की एक कीमत है।" [253]

आधुनिक युग में व्यक्ति काफी जटिल हो गया है। जीवित रहने के लिए, व्यक्ति को कई तरह की ज़रूरतों को पूरा करना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप *'अर्थ'* मुख्य केंद्र बन जाता है। संसार के सभी व्यक्ति अपनी योग्यता के आधार पर कड़ी मेहनत करके धन अर्जन करते हैं, और इस धन का उपयोग समाज में अपनी आर्थिक स्थिति को स्थापित करने के लिए करते हैं। इसी तरह, देश की अर्थव्यवस्था अपने उद्योगों की वृद्धि और सफलता पर निर्भर करती है।

कुटीर उद्योगों की समस्या को प्रदर्शित करने वाला एक अन्य उदाहरण मधु जी की '*दबी–दबी लहरें*' कहानी में देखा जा सकता है। इस कहानी में, आदिवासी मंगला ने लेखिका को बताया कि उनका परिवार नमु विजरिया जाति से है। वे लोग हमोटाइट पत्थर को भट्टी में पिघलाकर लोहा बनाते थे और उस लोहे से त्रिशूल, हसुआ, खुरपी, तलवार आदि बनाते थे। इस लोहे में बहुत ताकत होती थी और यह जंग नहीं पकड़ता था। उनका पूरा गाँव और आस–पास के गाँव भी उनसे ही लोहे का सामान खरीदते थे। वे इस प्रकार से लोहा बनाने वाले अंतिम लोहार थे। लौह तकनीक के आधार पर अपनी पहचान बनाने वाले बिरजिया और असुर समुदाय के लोग अब मजदूर बन गए हैं। जब लेखिका ने इसका

कारण पूछा, तो मंगला ने बताया कि:–

“का बतायें दीदी, हमारा लोहा और लोहे का सामान थोड़ा महँगा बनता था, बाजार में टाटा के लोहे का सस्ता सामान मिलने लग गया। तब लोगन क्यों खरीदेंगे हमारा सामान। सामान नहीं बिकता था। हमारे दादा ससुर ने सरकार से गुहार भी लगाई कि हमें थोड़ी सुविधा दे दीजिए हम फिर से जी उठेंगे। ई टाटा बाटा ने हमारा ही ज्ञान चुराया है। सरकार ने दिल्ली के विज्ञान भवन में उन्हें सम्मानित किया लेकिन सुविधा नहीं दी। गुहार लगाते–लगाते वे चले गये। हमारे ससुर को दिन के चार किलो चावल के हिसाब से मजदूरी मिलती थी वाद में वे खुशहाल भारती में काम करने लगे। जंगल कुमार उन दिनों बायो गैस प्लांट लगवा रहे थे वहीं उन्हें काम मिल गया। हमारे आदमी को कभी दिल्ली तो कभी रॉची में मजदूरी मिल जाती है, दिन का 110 रूपल्ली मिल जाते हैं। इतना तो दूसरे के खेत में काम करने पर भी नहीं मिलता।”[254] इस प्रकार, हम देखते हैं कि मंगला का ससुर और पति अपने पारंपरिक कारोबार को छोड़कर मजदूरी करने लगे हैं।

कहानी संग्रह '*आदि अनादि*' की कहानी *‘लिफाफा’* भारत में बेरोजगारी की समस्या का एक जीवंत और यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करती है। कहानी का नायक अशोक होनहार है और पढ़ाई लिखाई में भी अच्छा है। अशोक ने बी.कॉम और बिज़नस मैनेजमेंट की पढ़ाई की है, फिर भी वह डेढ़ साल से बेकार बैठा है। बेरोजगारी की समस्या के लिए अशोक मन ही मन लड़कियों को जिम्मेदार मानता है। उसका कहना है की *“रही लड़कियों की बात, वे अपने–आप में एक जबरदस्त 'सिफारिश' हे भला उन्हें सिफारिश की क्या जरूरत? जमाना ही लड़कियों का है। घर, सड़क, दफ्तर, बाग–बगीचे, रेलवे प्लेटफार्म, फूटपाथ, बाजार, दुकान – जहाँ देखो वहीं लडकिया ही लडकिया उमड़ी चली आ रही। टिड्डियों के दल–सी यह जो युवको में बेकारी की बाढ़ आई हुई है – लड़कियां ही जिम्मेदार है।”* [255] अशोक खुद मानते हैं कि नौकरी के बाजार में महिलाओं की आमद पुरुषों के लिए नौकरी के अवसरों की कमी का कारण है, हालांकि यह एक गलत धारणा है। कहानी आगे बताती है

कि कई बेरोजगार व्यक्ति विभिन्न लघु–स्तरीय उद्योगों की शुरुआत करने के लिए एकजुट होते हैं। अशोक का दोस्त सतीश जो उसी की तरह बेरोजगार है, वह कहता है– *"क्यों न हम शिक्षित बेकारों के लिए खोली गई सरकार की 'लघु उद्योग योजना' की ऋण नीति का लाभ उठाएँ, युवा शक्ति को बेरोजगारी से उत्पन्न हताशा और निराशा पढ़े–लिखे नौजवानों को बेकार बैठे रहने पर मजबूर करती है। उनके लिए इस देश में कोई आसान तरीका नहीं है, जिससे वह अपनी बेरोजगारी दूर कर सकें।"* [256] इसके माध्यम से, कहानी बेरोजगार युवाओं की मानसिकता, समाज और उनके परिवारों द्वारा नजरअंदाज किए जाने की उनकी भावना और व्यापक सामाजिक और पारिवारिक गतिशीलता को सोच–समझकर चित्रित करती है।

21वीं सदी की महिला–लेखकों द्वारा रचित कथाएँ स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि जब उनके स्वार्थ दाँव पर होते हैं तो लोग एकजुट होकर खड़े हो जाते हैं। इन कहानियों में, शोषक पूँजीपतियों और जमींदारों को जब भी अपनी शक्ति और हितों के लिए खतरा महसूस होता है तो आक्रामक रूप से अपने प्रभाव और नियंत्रण को बढ़ाते हुए दिखाया गया है। सदियों से भारत में उच्च जातियों ने दलित और मजदूर वर्गों का शोषण किया है। स्वयं को शक्तिहीन मानने वाले गरीब और निचले पायदान पर पड़े वर्ग लगातार इस व्यवस्था के अधीन रहे हैं, किन्तु शिक्षा और औद्योगीकरण के आगमन के साथ, ये उत्पीड़ित व्यक्ति अपने अधिकारों और उनके द्वारा सामना किए जाने वाले प्रणालीगत अन्याय के बारे में अधिक जागरूक और सचेत हो गए हैं। *"पूँजीपति अपने आर्थिक लाभों के कारण एक ही स्थान पर अनेक उद्योगों की स्थापना में विश्वास करते हैं। उद्योगों के इस स्थानीकरण के कारण श्रमिकों में वर्गीय चेतना का निरन्तर विकास होता रहता है। उनमें एकता उत्पन्न होती है और इसके आधार पर वे पूँजीपतियों का मुकाबल करने में सफल हो जाते हैं।"* [257]

उर्मिला शिरीष जी की कहानी *'हरजाना'* में हम उन परिवारों की विकट स्थिति को देखते हैं, जो अपनी आजीविका के लिए पारंपरिक कलाओं और व्यवसायों पर निर्भर हैं।

कहानी बताती है कि कैसे ये पारंपरिक कलाएँ लुप्त होने के कगार पर हैं, जिससे इन परिवारों की आजीविका गंभीर खतरे में पड़ गई है। *"परिवार जिनका पुश्तैनी धंधा मूर्तियाँ बनाना था। त्यौहारों के समय मूर्तियाँ, बाकी समय मिट्टी के बरतन....... घड़े, गमले, सुराही आदि। पर अब गांव में घड़ों और सुराही की जगह मजबूत चमकीले और सुंदर स्टील और प्लास्टिक के बरतनों ने ले ली है। विजय के पिता का यह धंधा अब बच्चों का पेट भरने लायक नहीं रह गया था......... पुराने काम की न वहाँ साख बची थी न सम्मान।"* [258]

4.5 बेरोजगारी

21वीं सदी की लेखिकाओं ने बेरोज़गारी के मुद्दे पर गहराई से विचार किया है, इनके द्वारा समकालीन भारत की सामाजिक–आर्थिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने वाली कहानियाँ प्रस्तुत की गई हैं। ये लेखिकाएँ अपनी कहानियों के माध्यम से न केवल व्यक्तियों पर, बल्कि परिवारों और समुदायों पर भी बेरोज़गारी के बहुआयामी प्रभावों को प्रस्तुत करती हैं। इनकी कहानियों में शिक्षित युवाओं का चित्रण है जो अपनी योग्यता के बाद भी उपयुक्त रोज़गार पाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। ये कहानियाँ अक्सर उन युवाओं की हताशा और मोहभंग को उजागर करती हैं जो अपनी शिक्षा और कौशल से मेल खाने वाली नौकरी पाने में असमर्थ हैं।

इन लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में बेरोज़गारी की समस्या को गहराई और सहानुभूति के साथ प्रस्तुत किया हैं। वे इसकी जटिल वास्तविकताओं को समझने में मदद करती हैं और इससे प्रभावित लोगों की आवाज़ बनती हैं। अपनी कहानियों के माध्यम से, वे समकालीन भारत की सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों को प्रस्तुत करती हैं। इसके अलावा, वे प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में आशा और लचीलापन भी पैदा करती हैं।

मशीनीकरण और औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप, बेरोज़गारी समाज के सामने

एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। 'बेरोज़गार' शब्द किसी व्यक्ति की आजीविका को बनाए रखने के लिए आवश्यक आय अर्जित करने की चुनौती से संबंधित है। एक बेरोज़गार व्यक्ति वह होता है जो काम करने के लिए इच्छुक और उत्सुक होता है, लेकिन उसे कोई रोजगार के अवसर नहीं मिल पाते।

बेरोजगारी की बढ़ती समस्या लगातार हम सबके समक्ष एक चुनौती के रूप में बनी हुई है। यह जीवन के किसी भी चरण में विभिन्न कारणों से हो सकती है, जैसे कि नौकरी न मिलना, पिछली नौकरी छूट जाना, व्यापार में विफलता या प्राकृतिक और शारीरिक संकट। *"आज बेरोजगारी का क्षेत्र बड़ा व्यापक बना है। बेरोजगारी जो न केवल आर्थिक ढाँचे के लिए बल्कि समाज व्यवस्था तथा शासन तंत्र के लिए भी एक भयंकर खतरा बन गई है। बेरोजगारी का संसर्ग व्यक्ति, परिवार, शिक्षा, सामाज, सुरक्षा, सांस्कृतिक जीवन आदि सभी से होता है। परिणामतः युवा–मन में एक गहरी निराशा और आकोश की भावना उत्पन्न हो गई है।"* [259]

समकालीन महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में आर्थिक परिस्थितियों का बारीकी से चित्रण किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक अस्थिरता और बेरोज़गारी किस प्रकार से समाज और व्यक्तियों पर असर डालती है। इनकी कहनियाँ शिक्षित व्यक्तियों द्वारा सामना की जाने वाली बेरोजगारी की कठोर वास्तविकताओं को स्पष्ट रूप से चित्रित करती हैं, युवाओं के भावनात्मक और आर्थिक संघर्षों को दर्शाती हैं और बेरोजगार युवाओं की भयानक परिस्थितियों पर प्रकाश डालती हैं। इनमे उनकी कुंठाओं और उनकी दुर्दशा में योगदान देने वाले प्रणालीगत मुद्दों को मार्मिक रूप से चित्रित किया गया है, जो गरिमा और स्थिरता की तलाश में बेरोजगारों के सामने आने वाली चुनौतियों की एक व्यापक तस्वीर पेश करती है।

चित्रा मुदगल की कहानी '*बंद*' शिक्षित स्नातकों की भावनाओं और आर्थिक संघर्षों

को दर्शाती है जो अपनी प्रतिभा और कड़ी मेहनत को उच्च श्रेणी के उद्योगपतियों के लाभ के लिए त्याग देते हैं, जो केवल बीस रुपये प्रतिदिन कमाते हैं। शिक्षित बेरोजगार व्यक्तियों की दुर्दशा को बहुत दुखद रूप में दर्शाया गया है। कहानी नवल, रमेश और हरीश जैसे शिक्षित बेरोजगार लोगों की भयानक और आर्थिक स्थिति को उजागर करती है। युवा बेरोजगार अपनी हताशा को यह कहकर व्यक्त करते हैं– *"मन में आता कि लपककर बुड्ढे की गरदन दबोच लें। कहें कि बुड्ढे, जितने पैसे तू हमें देता है न, उसमें सिर्फ बीड़ी ही पी जा सकती है, न दूध। पर मन मसोसकर सारा आक्रोश गुटक लेना पड़ता; क्योंकि दफ्तर में रोज–दर–रोज जितने लोग बुड्ढे से मिलने आते, उनमें से एक–चौथाई के बारे में वह यही दावा करता कि वे उसके पास नौकरी की सिफारिश लेकर आए हैं। स्नातक तो आजकल पाँच रुपए रोज पर भी काम करने को तैयार हैं। वे तो फिर भी छह रुपए प्रतिदिन देते हैं। तिसपर रहना मुफ्त है। कम है क्या? ठिकाना कहाँ मिलता है मुंबई में!"* [260]

चित्रा जी की कहानी *'दुलहिन'* बेरोजगारी से जूझ रहे एक मध्यम वर्गीय परिवार को दर्शाती है। *'दुलहिन'* में, अम्मा का बेटा प्रोफेसर बनने की इच्छा रखता है और चाहे जो भी कीमत चुकानी पड़े, वह अपनी मेडिकल प्रैक्टिस पूरी करने के लिए दृढ़ संकल्पित है। अपनी शादी की पहली रात को, वह और उसकी पत्नी इस बात पर सहमत हुए कि जब तक वह अपनी थीसिस पूरी नहीं कर लेता, तब तक वे बच्चे पैदा नहीं करेंगे। जीवन के प्रति उसका व्यावहारिक दृष्टिकोण उसे यह एहसास कराता है कि एक सुचारू, सुसंगत और जीवंत पारिवारिक जीवन को बनाए रखने के लिए आर्थिक स्थिरता और वित्तीय संसाधन महत्वपूर्ण हैं।

'उसका यौवन' कहानी का नायक विराम एक बेरोजगार युवक है। वह हमेशा बड़े बड़े सपने देखता रहता है। वह खुद को कभी शिक्षक, कभी मार्गदर्शक, कभी अभिनेता आदि के रूप में देखता है। कभी–कभी उसे यह भी लगता है कि वह देश का प्रधानमंत्री

बनने की क्षमता रखता है। वह खुद की विभिन्न भूमिकाओं में कल्पना करता है, जिनमें से प्रत्येक उसकी बड़ी–बड़ी आकांक्षाओं को दर्शाते है। वह सोचता है– *"पर अच्छा है अपना देश। यह क्या तुक है भई कि जो जन्मजात अध्यापक हो, उसके लिए भी यह जरूरी हो कि पहले बी.ए. करो बाद में मास्टरी। यहाँ तक कि क्लर्की में भी बी.ए. चाहिए।"* [261]

उसके सभी दोस्त कहीं न कहीं नौकरी करते हैं। वह अकेला बेरोजगार घूम रहा है। उसे सभी उपलब्ध नौकरियाँ तुच्छ लगती हैं– *"कभी–कभी विराम को लगता है, जीवन एक रेलगाड़ी की तरह दौड़ रही है और वह एक प्लैटफ़ार्म की तरह स्थिर है।"* [262]

ममता जी के कहानी *'वसंत सिर्फ़ एक तारीख'* की नायिका चंदा शिक्षित है, फिर भी बेरोज़गार है। एक दिन, वह दस बजे घर से निकली और सबको कहीं जाते देखकर हैरान रह गई। जब रिक्शा चालक ने उसे बताया कि दस बज चुके हैं और सभी शायद दफ़्तर जा रहे हैं, तो वह हैरान रह गई और सोचने लगी, *"बेकार रहते–रहते मैं तो यह भूल चुकी थी कि दस बजे का समय दफ्तर जाने का होता है। वर्षों से हमारे घर से कोई दफ्तर नहीं गया था। बेरोजगारी हमारा पुश्तैनी रोजगार था। फिर भी हमारा गुजर किसी तरह होता ही था......... हर महीना जब बीत जाता, हमें हल्का अचंभा और गहरी खुशी होती कि हम भूख, महंगाई, बीमारी और दुर्घटनाओं को चकमा देते हुए एक और महीना जिंदा रह लिए।"* [263]

ममता जी की कहानी *'लड़के'* कहानी में बेरोजगारी की समस्या को दिखाया गया है। लड़कों के पास कोई काम नहीं था, इसलिए वे कॉलेज में हड़ताल पर जाना चाहते थे। *"पढ़कर निकलने की जल्दी भी किसे थी, जो निकले थे वे भी रो रहे थे, जो नहीं निकले वे भी, फिलहाल पढ़ाई एक तगड़ा बहाना था। उन्हें कोई कार्यक्रम नहीं मिल रहा था, न घर में न बाहर। वे अपनी ऊर्जा इस्तेमाल करना चाहते थे। हलचल के नाम पर उनके पास था ही क्या अखबार की दी हुई खबरों, सरकार की दी हुई बेरोजगारी और परिवार की दी हुई*

परेशानियाँ।" [264]

उच्च शिक्षा–ग्रहण करने के बाद भी नौकरी मिलने की कोई निश्चितता नहीं है। इसलिए, भारतीय युवाओं का एक बड़ा भाग अपनी शिक्षा छोड़कर विदेश में नौकरी करने को अधिक उपयुक्त मानते हैं। अलका सरावगी जी ने कहानी संग्रह *'कोई बात नहीं'* की कहानी में इस मुद्दे को बहुत अच्छे से प्रस्तुत किया है– *"दिन में अठारह वीस घंटे पढ़कर और अच्छे से अच्छे ट्यूटोरियल में जाकर भी इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि उनका दाखिला आई.आई.टी. या आई.आई.एम. जैसे किसी ऐसी जगह में हो जाएगा, जहा किसी मल्टीनेशनल की बढ़िया नौकरी पलकें बिछाए उनका इंतज़ार कर रही होगी... इसलिए ये लडके अमेरिका इंग्लैंड में बस जाने का ख्वाब देखकर दिलों को जोडे रखते हैं, जहाँ वेटर का काम करने में उतना पैसा मिलता है, जितना यहाँ बड़ी से बडी कम्पनी में किसी ऊँचे पद पर काम करके।"* [265]

अलका जी कहानी संग्रह *'एक ब्रेक के बाद'* की कहानी में भी इसी विषय को दर्शाया गया है कि भारत में बेरोजगारी का स्तर इस हद तक पहुंच गया है कि श्रमिक वर्ग का एक बड़ा हिस्सा भारत के बजाय विदेश में रोजगार की तलाश करना अधिक लाभदायक मानता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वे विदेश में अधिक वेतन कमा सकते हैं, जो उनकी ज़रूरतों को बेहतर ढंग से पूरा करता है– *"हाँ, अमेरिका के लोगों के लिए बच्चों का सस्ता होमवर्क, सस्ती मजदूरी और अब सस्ती प्रार्थना करने के लिए भी इंडियन हाजिर है।"* [266]

जब कोई व्यक्ति, योग्य और मेहनती होने के बावजूद अपनी नौकरी खो देता है, तो उसके मन में आत्महत्या के विचार आते हैं। यह दुखद स्थिति अलका जी की कहानी '*आक एगारसी*' में सामने आती है, जहाँ आक के दोस्त को नौकरी से निकाल दिए जाने के बाद ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ता है। *"कॉलेज में पढ़ाता था, आपके साथ या अखबार में काम करता था... या किसी दफ्तर में नौकरी करता था? निकाल दिया होगा अपमानित*

करके ? बहुत योग्य रहा होगा। वहुत मेहनत की होगी, बहुत सालों तक उसने।"[267]

4.6 निष्कर्ष

21वीं सदी की प्रमुख भारतीय महिला लेखिकाओं की कहानियाँ आर्थिक विषयों की गहन और बहुआयामी खोज प्रस्तुत करती हैं, जो समकालीन भारतीय समाज की जटिल वास्तविकताओं को दर्शाती हैं। अपनी कहानियों के माध्यम से, ये लेखिकाएँ आर्थिक जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे बेरोज़गारी, गरीबी, लघु उद्योग, स्वावलम्बन, सामाजिक असमानता और वैश्वीकरण के प्रभाव पर प्रकाश डालती हैं। उनकी कहानियाँ न केवल व्यक्तियों और समुदायों के सामने आने वाली आर्थिक चुनौतियों की झलक प्रदान करती हैं, अपितु उन पर विजय प्राप्त करने के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

बेरोजगारी एक व्यापक मुद्दा है, जो पूरे भारत में लाखों लोगों को प्रभावित करता है, विशेष रूप से निचले पायदान पर पड़े समुदायों और युवाओं को। इन महिला लेखिकाओं ने मार्मिक चित्रण के माध्यम से बेरोजगारी से जुड़े भावनात्मक बोझ, सामाजिक कलंक और आर्थिक अनिश्चितता को उजागर किया हैं। इनकी कहानियाँ एक दर्पण के रूप में काम करती हैं, जो तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था में कई लोगों द्वारा सामना की जाने वाली कठोर वास्तविकताओं को दर्शाती हैं।

भारत के आर्थिक तंत्र में लघु उद्योग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो रोज़गार सृजन और आर्थिक विकास को आगे बढ़ाते हैं। इन महिला लेखिकाओं की कहानियाँ लघु उद्योग मालिकों, विशेष रूप से महिला उद्यमियों की चुनौतियों और जीत पर प्रकाश डालती हैं। वे नौकरशाही बाधाओं को दूर करने, वित्त तक पहुँचने और गतिशील बाज़ारों में प्रतिस्पर्धा करने की जटिलताओं को चित्रित करती हैं। इन कथाओं के माध्यम से, पाठकों को लघु उद्योग क्षेत्र में सफल होने के लिए आवश्यक धैर्य, दृढ़ संकल्प और रचनात्मकता

की गहरी समझ प्राप्त होती है।

इनकी कहानियों में स्वावलम्बन या आत्मनिर्भरता एक विषय के रूप में उभरती है, जो पात्र को सामाजिक अपेक्षाओं और सीमाओं को पार करते हुए आत्म–खोज और सशक्तिकरण के लिए प्रेरित करती हैं। लेखिकाएँ ऐसे व्यक्तियों का चित्रण करती हैं, जो स्वायत्तता को अपनाते हैं, साहसिक विकल्प बनाते हैं और आर्थिक स्वावलम्बन और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते हैं। ये कथाएँ पाठकों के साथ गहराई से जुड़ती हैं, स्वतंत्रता और गरिमा की आकांक्षाओं को प्रतिध्वनित करती हैं।

21वीं सदी की प्रमुख भारतीय हिंदी महिला लेखिकाओं की कहानियों में आर्थिक प्रतिबिंब बेरोजगारी, लघु उद्योग और आत्मनिर्भरता की खोज की बहुआयामी खोज प्रस्तुत करते हैं। ये कथाएँ यथार्थवाद को आशा के साथ मिलाती हैं, जो भारत के विविध आर्थिक परिदृश्य में व्यक्तियों की जटिलताओं, चुनौतियों और विजय को चित्रित करती हैं। अपनी कहानी कहने की कला के माध्यम से, ये लेखिकाएँ पाठकों को एक ऐसे भविष्य की कल्पना करने के लिए प्रेरित करती हैं, जहाँ आर्थिक अवसर समावेशी हों, बाधाएँ समाप्त हों और सभी के लिए आत्मनिर्भरता प्राप्त करना संभव हो।

अध्याय–5

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में राजनीतिक चिंतन

प्राचीन काल से ही मनुष्य निरंतर विकास के लिए प्रयासरत रहा है। वह ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के अधिग्रहण के माध्यम से आगे बढ़ा है। इनमें से राजनीति मानव–जीवन और समाज को व्यवस्थित और संवर्धित करने के लिए विकसित एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभर कर सामने आती है। राजनीति किसी भी समाज के लिए महत्वपूर्ण है, ठीक उसी तरह जैसे समाज राजनीति के लिए आवश्यक है, जो उनके गहरे अंतर्संबंध को उजागर करता है। 'राजनीति' शब्द 'राज' यानी राज्य और 'नीति' यानी शासन के संयोजन से निकला है, जो किसी राज्य को प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए स्थापित नीतियों को संदर्भित करता है। समकालीन जीवन में राजनीति एक महत्वपूर्ण कारक है, जो कोई भी अपने देश के प्रति जिम्मेदारी की भावना महसूस करता है, वह खुद को राजनीति से अलग नहीं कर सकता, क्योंकि राष्ट्र और समाज के व्यापक पक्ष उस समुदाय के साथ जुड़े हुए हैं, जिसमें वे रहते हैं। इसलिए, कोई भी संवेदनशील और रचनात्मक व्यक्ति इसे अनदेखा नहीं कर सकता।

21वीं सदी में महिला लेखिकाएँ अपने समय की राजनीति के प्रभाव से बच नहीं सकीं। उनकी व्यक्तिगत मान्यताओं के बावजूद, राजनीतिक माहौल अनिवार्य रूप से उन्हें प्रभावित करता है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। स्वतंत्र भारत में चुनाव होने के बाद से, नेताओं ने सामाजिक भेदभाव को खत्म करने, शोषण को समाप्त करने और गरीबी को मिटाने जैसे कई वादे किए हैं और इन वादों को पूरा करने के बजाय, कई नेता व्यक्तिगत

लाभ के लिए सत्ता से चिपके रहते हैं, जिससे आम लोगों का राजनीति में विश्वास खत्म हो जाता है। आज की राजनीति एक विनाशकारी शक्ति बन गई है, जो ईमानदारी, मानवता और नैतिकता जैसे मूल्यों को नष्ट कर रही है और यह मुख्य रूप से पैसे के बल पर काम करती है, जिसमें व्यक्ति अपने विचारों को दूसरों पर थोपने या दूसरों का विरोध करने पर हिंसा का सहारा लेते हैं। प्रभावशाली ताकतें ऐसी ही विचारधारा को बढ़ावा देती हैं। राजनीति में इस भौतिकवाद ने क्षेत्रवाद, जातिवाद और प्रांतवाद को काफी बढ़ावा दिया है, जिसके परिणामस्वरूप हथियार उठाना और हिंसा का रास्ता चुनना आसान है, जो स्वाभाविक रूप से नकारात्मक है। *"आम आदमी की झोली खाली ही रह जाती है। जनकल्याण के दफ्तर की सार्थकता साइनबोर्ड तक सीमित है। आम आदमी उन दफ्तरों से केवल झिड़कियाँ पाता है। सरकारी अफसर जैसे सारे जनवादी संघर्षों के दमन के लिए नियुक्त किये गये हो।"* [268]

राजनीति शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द पॉलिक्ट्स का हिन्दी रूपान्तर है, जो कि यूनानी भाषा के शब्द *'पॉलिस'* से बना है, जिसका अर्थ है – *'राज्य'*। इसका सर्वप्रथम प्रयोग अरस्तू ने अपनी राज्य संबंधी पुस्तक के शीर्षक के रूप में किया था। प्रसिद्ध राजनीति शास्त्री ब्लुशंली के अनुसार, *"राजनीति शास्त्र वह विज्ञान है जिसका संबंध राज्य से है और जो यह समझने का प्रयत्न करता है कि राज्य के आधारभूत तत्व क्या हैं, उसका आवश्यक स्वरूप क्या है? उसकी किन–किन विविध रूपों में अभिव्यक्ति होती है तथा उसका विकास कैसे हुआ।"* [269]

मानक हिन्दी कोश के अनुसार, *"वे नीतियाँ या वे पद्धति जिनके अनुसार किसी राज्य का प्रशासन किया जाता है या होता है, राजनीति कहलाती है।"* [270]

डॉ॰ जकरिया के अनुसार, *"राजनीति शास्त्र क्रमबद्ध रूप में उन आधारभूत सिद्धान्तों का निरूपण करता है जिनके अनुसार समष्टि रूप में राज्य का संगठन होता है और प्रभुसत्ता*

का प्रयोग किया जाता है।" [271]

आदर्श हिंदी शब्दकोष में राजनीति का संबंध शासक द्वारा जनता की सुरक्षा के लिए बनाई गई नीतियों से है– *"वह नीति जिसके अनुसार राजा या शासक अपने राज्य के शासन तथा प्रजा की रक्षा करता है।"* [272]

गिलक्राइस्ट के शब्दों में, *"राजनीति शास्त्र के अन्तर्गत राज्य तथा सरकार का अध्ययन किया जाता है।"* [273]

गिलक्राइस्ट का मानना है कि राज्य या सरकार की अवधारणा राजनीति शास्त्र के बिना असंभव है, क्योंकि राज्य द्वारा प्रदान की गई शक्ति का उपयोग संस्थाएं करती हैं। सरकार के बिना, राज्य केवल एक अमूर्त कल्पना बनकर रह जाता है।

श्यामलाल वर्मा का राजनीति के संदर्भ में मानना है, *"राजनीति, शक्ति और प्रभाव सम्बन्धी वह गत्यात्मक गतिविधि है, जिसके द्वारा व्यक्ति या व्यक्ति समूह–सहयोग एवं द्वन्द्व के माध्यम से अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए राजनीतिक संरचनाओं, प्रतिक्रियाओं एवं क्रियाविधियों की औचित्यपूर्ण सत्ता के प्रयोग का प्रयास करते हैं।"* [274] अतः कह सकते हैं कि राजनीति वह शक्ति है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने कार्य को पूरा करने का प्रयास करता है। नैतिकता के घेरे में बंधी राजनीति नीति निर्माण करती है।

ज्ञानचन्द गुप्त के अनुसार, *"राजनीति समाज का अनिवार्य अंग है समाज के निर्माण तथा व्यक्ति के उत्थान–पतन में इसका महत्वपूर्ण योगदान होता है।"* [275]

ए॰सी॰ कपूर के अनुसार, *"अब साधारण राजनीति के अर्थों में वर्तमान राजनीति के अर्थों में वर्तमान राजनीति समस्याएँ ली जाती हैं, जो किसी देश और उसकी सरकार के सम्मुख उपस्थित हों।"* [276]

वर्तमान में राजनीति का प्रत्यक्ष संबंध सत्ता, शक्ति और संघर्ष से हो गया है। राजनीति

के विषय में श्रीकान्त वर्मा का मानना है कि *"राजनीति महज राजनीति नहीं रही। अब वह समूचे समाज की नियति हो चुकी है और इसलिए यह समाज के सभी वर्गों के कर्तव्यों का निर्धारण करती है।"* [277]

विभिन्न विचारकों के दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्र का संपूर्ण जीवन राजनीति के इर्द–गिर्द घूमता है। व्यक्ति समाज की एक मूलभूत इकाई है, लेकिन जिस समाज में यह व्यक्ति रहता है, वह मानव सामाजिक जीवन के कई आयामों से जुड़ा हुआ है। इन आयामों में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक पहलू शामिल हैं, जो सभी मानव अस्तित्व के साथ जुड़े हुए हैं। 21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखकों की रचनाओं में राजनीति के विविध रूप प्रमुखता से चित्रित किए गए हैं।

राष्ट्र के जीवन को आकार देने में राजनीति की भूमिका को कम करके नहीं आँका जा सकता। यह सामाजिक और व्यक्तिगत दोनों ही अस्तित्व के हर पक्ष को प्रभावित करती है। राजनीति सामाजिक संरचनाओं, आर्थिक नीतियों, धार्मिक प्रथाओं और सांस्कृतिक विकास को प्रभावित करती है, जिससे मानवीय अनुभव को परिभाषित करने वाले अंतःक्रियाओं का एक जटिल जाल बनता है। इन पहलुओं का परस्पर संबंध समाज की नींव बनाता है, जो व्यक्तिगत जीवन और व्यापक राजनीतिक गतिशीलता के बीच गहरे अंतर्संबंध को दर्शाता है।

21वीं सदी की महिला लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में राजनीति की विभिन्न अभिव्यक्तियों को विशद रूप से दर्शाया है। उनकी कहानियाँ अपने समय के राजनीतिक माहौल को दर्शाती हैं, यह दर्शाती हैं कि कैसे राजनीतिक निर्णय और घटनाएँ व्यक्तियों के व्यक्तिगत और सामूहिक अनुभवों को आकार देती हैं। अपने लेखन के माध्यम से, ये लेखिकाएँ सत्ता की गतिशीलता, सामाजिक न्याय, आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक पहचान जैसे मुद्दों को उजागर करती हैं, जो राजनीतिक परिदृश्य में सूक्ष्म अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। उनके कार्यों में राजनीतिक विषयों का समावेश जीवन के सभी पहलुओं पर

राजनीति के व्यापक प्रभाव को रेखांकित करता है, जो सामाजिक और व्यक्तिगत वास्तविकताओं को आकार देने में इसकी केंद्रीय भूमिका पर जोर देता है।

डॉ. ज्योति गजभिए लिखती हैं– *"राजनीति और साहित्य दो अलग धाराएँ हैं। किंतु प्राचीनकाल से ही देश, काल और उनसे जुड़ी परिस्थितियों का साहित्य पर प्रभाव पड़ता है। आदिकाल और मध्यकाल में तो राजाओं ने साहित्यकारों और कवियों को राज्याश्रय भी दिया था। देश में जो भी सत्ता हो उसका चाहे आंशिक रूप में क्यों न हो साहित्य पर प्रभाव पड़ता है। लोकतंत्र के तहत साहित्यकार भी पहले से अधिक मुखर हो गया है। समकालीन साहित्य समसामयिक समस्याओं का वर्णन करता है। निश्चित ही समस्याओं के स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ है। बढ़ती हुई महँगाई और बेरोजगारी आज की ज्वलंत समस्याएँ हैं। भ्रष्टाचार का दानव गरीबों पर जुल्म ढा रहा है। समाज की व्यवस्था इस प्रकार की है कि अमीर और अमीर होते जा रहा है और गरीब और गरीब होते जा रहा है। इन्हीं सब कारणों से देश का ढाँचा चरमरा गया है। रिश्वतखोरों ने आम इंसान का जीना मुहाल कर दिया है।"* [278]

5.1 सिद्धान्तहीन राजनीति तथा प्रजातांत्रिक व्यवस्था

21वीं सदी में, भारतीय समाज ने तीव्र वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तनों के कारण हुए बदलाव को देखा है। इन बदलावों के बीच, राजनीति की भूमिका महत्वपूर्ण रही है, जिसने जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया है और राष्ट्र की सामूहिक चेतना को आकार दिया है। राजनीति, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत क्षेत्रों पर अपने गहन प्रभाव के साथ, इस युग की प्रमुख हिंदी महिला लेखिकाओं के कार्यों में एक आवर्ती विषय है। ये लेखिकाएँ, अपनी कहानियों के माध्यम से, समकालीन राजनीति की सिद्धांतहीन प्रकृति और इसके दूरगामी परिणामों की

जाँच करने के लिए एक आलोचनात्मक दृष्टि प्रदान करती हैं।

राजनीति और साहित्य के बीच जटिल संबंध लंबे समय से स्थापित है, जिसमें साहित्यकार समाज की अंतरात्मा के रूप में काम करते हैं, और अपने समय के राजनीतिक परिवेश का आलोचनात्मक रूप प्रतिबिंबित करते हैं। समकालीन महिला लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में न केवल सामाजिक–राजनीतिक परिवेश की तात्कालिक वास्तविकताओं को दर्शाया हैं, बल्कि व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक संरचनाओं पर राजनीतिक कार्यों और निर्णयों के गहरे निहितार्थों को भी उजागर किया हैं। अपने दृष्टिकोणों के माध्यम से, ये लेखिकाएँ सिद्धांतहीन राजनीति के व्यापक प्रभाव को उजागर करती हैं और न्याय, समानता और मानवीय गरिमा पर इसके प्रभाव के बारे में प्रासंगिक प्रश्न उठाती हैं।

भारत ने अपनी कल्पना के नए स्वतन्त्र सुखी सम्पन्न भारत के नव–निर्माण का लक्ष्य घोषित किया। वर्गहीन शोषणमुक्त समाजवादी समाज–व्यवस्था के निर्माण का लक्ष्य घोषित किया, जिसमें वर्ग वैषम्य न था, न वर्ण असमानता, न जाति–पाँति, न ऊँच–नीच। हर व्यक्ति को समानता से सुरक्षा–पूर्वक शिक्षित होकर विकास करने का अधिकार था। राष्ट्रीय लक्ष्य की पूर्ति के लिए पूंजीपतियों से मजदूरों के शोषण न होने के लिए कानून बने। व्यक्तिगत पूंजी के समानांतर उद्योगों की स्थापना की गई। आर्थिक संस्थानों का राष्ट्रीयकरण किया गया। पूंजीपतियों की सत्ता पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से कम करने की योजना बनाई गई। राष्ट्र को आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और आत्म निर्भर बनाने के लिए भारतीय राष्ट्र ने समाज पर ही समाज व्यवस्था की ओर दृढ़ कदम उठाये, परन्तु इसके बाद भी आम आदमी आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र नहीं हो पाया। *"प्रजातंत्र जैसे पूँजीपति की सुविधाओं का ही नाम हो गया है। पूँजीपतियों की बैसाखियों को लेकर चलने वाली सरकार दिखावे के लिए श्रमिक और किसान के हित में कानून पास करती है। लेकिन ये कानून मात्र कागजी कार्यवाही रह*

जाते हैं। अदालतें इतनी महँगी और पेचीदी हो गयी हैं कि न्याय के लिए फैली हुई आम आदमी की झोली खाली ही रह जाती है।" [279]

प्राचीन काल में राजनीति की बड़ी स्पष्ट अवधारणा थी। नीतियुक्त राज ही राजनीति का लक्ष्य था। राजधर्म और राजनीति में विशेष अन्तर न था। धीरे–धीरे राजकीय सुखों की लालसा नीति पर भारी पड़ती गयी और राजनीति 'कूटनीति' का पर्याय बन गयी।

आज के समय में राजनीति का अर्थ ही उलट गया है। किस प्रकार प्रतिपक्षी को परास्त किया जाए, किस प्रकार मतदाताओं को मूर्ख बनाया जाय, यही करना कुशलता का पर्याय माना जाने लगा है। *'कथनी और करनी'* की असंगति आज की राजनीति की साधारण सी बात है। आज के राजनीतिज्ञ दोहरा जीवन व्यतीत करते हैं। मंच पर उनका कुछ और ही रूप होता है और मंच से हटकर कुछ और। कहने को जनता स्वामी है और तन्त्र सेवक है, किन्तु वास्तविकता ठीक इसके विपरीत है। मतदाता से मतयाचना करने जाओ तो लम्बे–चैड़े वायदे करो। सुख–सुविधाओं और सुरक्षा का स्वप्न–जगत सजा दो। पदासीन होते ही सब कुछ भूल जाओ। केवल अपना और अपनों का स्वार्थ सिद्ध करने में लीन हो जाओ।

राजनीति में हो रहे बदलाव और मूल्य संक्रमण के लिए जीवन–मूल्यों के प्रति बढ़ती उदासीनता और अनादर भी जिम्मेदार है। एक चरित्रनिष्ठ व्यक्ति को सिवाय काल्पनिक असन्तोष के आज के समय में क्या मिल सकता है। अवसर और सुविधाएँ पाने के लिए एक अन्धी दौड़ चारों ओर मची हुई है। आदर्श नैतिकता, चरित्र, धर्म और सामाजिक उत्तरदायित्व सभी को रौंदता हुआ मनुष्य समृद्धि की मृगमरीचिका के पीछे भाग रहा है।

स्वतंत्रता के बाद से आज तक राजनीति के स्वरूप में तेजी से परिवर्तन आया है। राजनीति के शीर्ष पर बैठे नेता धन, प्रतिष्ठा, वैभव तथा सत्ता की मदहोशी में राष्ट्र के निर्माण का संकल्प भूल गए। मुट्ठी भर लोगों को छोड़कर शेष जनता राजनीति के कुचक्र का शिकार

हैं। अंग्रेजों के शासन काल में दमन के पहियों–तले कुचले हुए लोग जिस तरह दर्द–भरा जीवन जीते थे, उसमें आज थोड़ा सा ही बदलाव आया है।

भारतीय संविधान में प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार दिये जाने की बात कही गयी। इस आशा के साथ कि सभी लोग आपसी मतभेद भुलाकर भारत को एक मजबूत राष्ट्र के रूप में खड़ा करें। *"संविधान के धर्म निरपेक्ष स्वरूप ने निम्न जातियों में स्वाभिमान की भावना के साथ उन्हें ऊपर उठने को प्रेरित किया है। निम्न वर्गों के उत्थान हेतु सरकार ने विभिन्न प्रयत्न किया है। ताकि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समता एवं न्याय की भावना को वे भली भाँति समझ सकें। संविधान में शिक्षा पाने का अधिकार भी मौलिक अधिकार है। ग्रामीणों में उसके प्रचार एवं प्रसार के लिए विभिन्न योजनाएँ बनायी गयी हैं।"*[280]

भारत के संविधान में यह व्यवस्था की गई है कि जब जो व्यक्ति चाहे वह अपनी एक अलग राजनीतिक पार्टी बना सकता है। इसी व्यवस्था का परिणाम है कि आये दिन नई–नई राजनीतिक पार्टियाँ बनती रहती हैं। आज की शासन–प्रणाली ऐसी हो गई है कि राजनेता विभाजन के विष वृक्ष को काटने की बजाय उसे सींचने का काम करते हैं। भारतीय समाज से इस मतभेद को मिटा पाना मुश्किल है। इसका कारण भारतीय समाज में धर्म और जातिवाद है।

"भारत की शासन–व्यवस्था बदल चुकी है, पर शोषण की प्रक्रिया में कहीं कोई अंतर नहीं आया, बल्कि शोषण का रूप बदलकर और तीव्र हो गया।" [281] संविधान में पिछड़े दलित और अल्पसंख्यकों की स्थिति सुधारने के लिए आरक्षण की नीति लागू की गयी परन्तु आज के नेता अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए इसका दुरूपयोग कर रहे हैं।

स्वतंत्रता लोकतंत्र की आत्मा है। स्वतंत्रता के अन्तर्गत प्रत्येक नागरिक की किसी

ढ़ंग से सोचने, विचार करने, भाषण देने, वाद–विवाद, अपनी सम्पत्ति देने तथा आलोचना करने की, धर्म को मानने की स्थिति आती है, किन्तु स्वतंत्रता से तात्पर्य अपनी इच्छाओं को दूसरों के हितों की उपेक्षा करके पूरा करना नहीं माना जा सकता है।

लोकतन्त्र शासन–प्रणाली में शासन का मुख्य उद्देश्य लोक कल्याण होता है। जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए कानून निर्माण किया जाता है। भारत में समय–समय पर निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए चुनाव आयोग की स्थापना की गई है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की सफलता के लिए वहाँ की जनता का अपने संविधान व संवैधानिक संस्थानों में आस्था होना आवश्यक है। इसके साथ ही लोकतंत्र में हम अपनी वैचारिक असहमति भी प्रकट कर सकते हैं, किन्तु यह असहमति लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप होनी चाहिए।

चित्रा मुदगल की कहानी *'लपटें'* में दिखाया गया है कि नेता जनता के प्रति उदासीन हैं और अपने स्वार्थ के लिए तरह–तरह के हथकंडे अपनाता है, जनता को सिर्फ़ अपने लिए वोट पाने के साधन के रूप में इस्तेमाल करता है। उसे जनता के सुख–दुख और समस्याओं से कोई सरोकार नहीं है। नेता जनता को तरह–तरह के प्रलोभन देकर अपनी 'लोक सेना पार्टी' में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित है। *"अमची मुंबई अमचे माणस यही 'लोकसेना पार्टी' का आवाहन है, मुंबई पर अपनी पार्टी का विजय–पताका फहरा कर हम संपूर्ण महाराष्ट्र को अपना लक्ष्य बनाएंगे और अलख जाएंगे। नेताजी ने भीड़ से वादा किया कि उनकी पार्टी में सत्ता में आते ही 'हमारी' जात–बिरादरी के लोग रोजगार में आरक्षित होंगे वह व्यवसाय की सुविधा पाएंगे। उच्च पद उनके लिए सुलभ होंगे, ऊंची अट्टालिकाओं में वे बसेंगे। सिनेमा के पर्दे पर नायक–नायिका होंगे, तकनीशियन होंगे। इस समस्त लक्ष्यों की पूर्ति के लिए वे सर्वप्रथम 'लोकसेना' के सदस्य बनें। पार्टी के विकास के लिए दिल खोल कर चंदा दें। 'लोकसेना' उनकी पार्टी है किसी की टट्टू नहीं।"* [282] इस कहानी में नेता स्वार्थ भोग और धन प्राप्ति के लिए अनेकों हथकंडे अपनाकर जनता के जीवन को कष्टकारी

बना देते हैं।

वर्तमान समय की राजनीति इतनी विकृत हो चुकी है कि नेता लोग स्वार्थवश किसी की जान लेने में भी संकोच नहीं करते, केवल उनकी स्वार्थ की पूर्ति होनी चाहिए। इसी सम्बन्ध में चित्राजी लिखती हैं– *"उत्तर में उसके कण्ठ से आर्तनाद फूट पड़ा, जिसे फौरन उसने मुंह में आंचल ठूंसकर रोका। एक लम्बी हुचकी खींचते हुए फुसफसाई– 'मनुआ को उन लोगों ने लपटों में नहीं झोंका.... जहरा चूड़ीवाली बता रही थी कि रोजे का समय चल रहा मेरा। झूठ नहीं बोलूँगी भाभी साहब। हमने अपनी नंगी आंखों से शेट्टी टीवी वाले की दुकान लूटने के बाद सत्तार चाली के छोकरों को मनुआ को दबोच लपटों में झोंकते देखा है.... सत्तार चालीवाले पारसाल इन्हीं की पार्टी के लिए चंदा मांगने नहीं आए थे।"* [283]

वर्तमान समय में राजनीति इतनी विकृत हो चुकी है कि न्यायालयों से भी गरीब व्यक्ति निराश हो चुका है। ऐसा ही वर्णन चित्रा जी ने अपनी कहानी *'जिनावर'* में किया है। एक तांगे वाले की घोड़ी दुर्घटना में घायल हो गई। वह थाने में रपट लिखवाने गया तो दरोगा के पैरों में गिरने के बाद ही उसकी रपट लिखी गई–

"दो हवलदारों के संग छोटे दरोगा तत्काल घटनास्थल पर पहुँच गए। पहुँचते ही अवरुद्ध यातायात के भारी जमाव को सुचारु करने के लिए सबसे पहले उन्होंने तांगे और घायल घोड़ी के इर्द–गिर्द......... छोटे दरोगा इस बीच मामले की जानकारी हेतु लड़की और महिला की ओर मुखातिब हुए। पक्ष सुना। लाइसेंस देखा। फिर असलम से वास्तविकता जाननी चाही। असलम विचलित सा दरोगा के पांवों में लोट गया– 'तबाह हो गया सरकार... जीते जी दफन हो गया... मार डाला इन बीवियों ने मेरी सरवरी को...।'

'चुप बेहूदे! जो पूछा जाए, वही बता।' हवलदार ने डंडा उठा उसे लड़की और

महिला की ओर अभद्र तरीके से इंगित करने पर घुड़का।" [284]

समाज में राजनीति की इतनी विकृत रूपरेखा है कि अपराधियों की चाय–समोसे से सेवा होता है तथा न्याय की अपेक्षा रखने वालों का डंडे से स्वागत किया जाता है। जब अपराधी महिलाओं के पिता थाने पहुंचे तो दरोगा ने उनकी सब प्रकार से आवभगत की और तांगे वाले को डांट–डपटकर शांत कर दिया– *"थाना प्रभारी मि॰ गहलोत ने लड़की के पिता मि॰ तिवारी का तपाक से उठकर स्वागत किया। उनका परिचय कार्ड पढ़कर वे व्यवहार में अतिरिक्त सहज हो आए। तत्काल सबके लिए चाय मंगवाई। लड़की से उन्होंने विशेष रूप से 'कोल्ड़ ड्रिंक के लिए पूछा। उसके इंकार में सिर हिलाने पर दोबारा आग्रह किया।"* [285]

सिद्धान्तहीन राजनीति का इतना अधिक बोल–बाला है कि दरोगा ने अपराधियों से सुविधा शुल्क लेकर उन्हें मुक्त कर तथा न्याय की अपेक्षा करने वालों को समझाकर शान्त कर घर जाने के लिए कह दिया,

"मि॰ गहलोत मि॰ तिवारी का आशय भांप गए। प्रतिक्रिया में अर्थपूर्ण मुस्कान मुस्कराए, 'रिपोर्ट नहीं बदल सकती।'

'परेशानी आप समझ रहे हैं न... लड़की का मामला है... कोई अन्य गुंजाइश,

जिससे शीना को कोर्ट–कचहरी के चक्करों से मुक्त रखा जा सके?'

'मैं आपकी परेशानी समझ रहा हूँ.. गुंजाइश सिर्फ एक है।'

'बताइए?'

'तांगे वाला बच्ची के विरुद्ध दर्ज कराई रिपोट वापस ले ले।'

'संभव है?'

'दोनों पक्ष कोई निजी समझौता कर लें, संभव हो जाएगा।" [286]

अति विकृत रूप तब होता है जब दरोगा तांगे वाले को कुछ पैसे दिलवाकर तथा कुछ धनराशि स्वयं भी लेकर रपट निरस्त कर देता है और तांगेवाले को बाद में बताता है कि उसकी घोड़ी अब मर चुकी है।

"मि० गहलोत ने हवलदार बिशन सिंह को आदेश दिया कि दरोगा अजय मित्तल के पास तांगेवाले को ले जाकर इसकी रिपोर्ट के संदर्भ में एक निरस्त पत्र लिखवा लें। इससे और दस्तखत करवा लें...'

मि. गहलोत अब तक सहमी बैठी हुई शीना से उन्मुख हुए, 'बेटी! गाड़ी खूब चलाओ... धड़ल्ले से, मगर भीड़–भाड़ में जरा सावधानी के साथ, इन अन्धों से तनिक बचकर....'

प्रत्युत्तर में शीना ने दृष्टि झुका ली।" [287]

राजी सेठ की कहानी *'अंतहीन'* जनकल्याण के लिए बनाई गई प्रशासनिक व्यवस्था पर व्यंग्य है। *"व्यवस्था जो सिद्धांत से तो व्यक्ति के विकास के लिए बनायी गयी है, परंतु व्यवहार में वही व्यक्ति को पीसती है। कभी एक प्रकार की परिस्थिति के चक्कर में कभी दूसरे प्रकार की...इससे क्या फरक पड़ता है कि यह चक्का आर्थिक है सामाजिक या पारिवारिक।"*

21वीं सदी की लगभग सभी भारतीय महिला लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था और उसकी कमियों पर दृष्टि डाली है। इनके पात्रों को भारतीय संविधान और उनके अधिकारों के प्रति जागरूक दिखाया गया है। विशेष रूप से महिला पात्र अपने अधिकारों के प्रति लगातार जागरूकता प्रदर्शित करती हैं। अपनी कहानियों के माध्यम से ये लेखिकाएँ सिद्धांतहीन राजनीति की आलोचनात्मक जांच करती हैं और उत्पन्न मुद्दों पर गहरी चिंता व्यक्त करती हैं। इनकी कहानियाँ भ्रष्ट राजनीतिक प्रथाओं के हानिकारक प्रभावों को उजागर करती हैं और शासन में जवाबदेही और ईमानदारी की आवश्यकता पर जोर देती हैं।

5.2 सांप्रदायिक परिदृश्य में बदलाव

सांप्रदायिक परिदृश्य में बदलाव की मानसिकता 21वीं सदी की सभी महिला कहानीकारों की कहानियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। आज हर क्षेत्र में सांप्रदायिकता का विरोध व्याप्त है। विशेषकर राजनीतिक जीवन में सांप्रदायिकता का विरोध नेताओं और बुद्धिजीवियों के विचारों और अभिव्यक्तियों से उभरा है। समाज हो या राजनीति, सांप्रदायिकता की व्यवस्थाएं उठती–गिरती रहती हैं। परिणामस्वरूप, सत्ताधारी दल से जुड़े लोग इन व्यवस्थाओं का पूरा फायदा उठाते हैं और साथ ही इनका विरोध भी करते हैं। धीरे–धीरे सांप्रदायिक राजनीति का खोखलापन लोगों के सामने स्पष्ट होने लगा है, जो अपने नेताओं की सत्ता की भूख को समझते हुए अपना असंतोष व्यक्त करने लगे हैं।

आज राजनीति सिद्धांतों से प्रेरित होने के बजाय सस्ती चालों का खेल बन गई है। नैतिकता का आह्वान केवल वास्तविक नैतिक व्यवहार का गला घोंटने के लिए किया जाता है। आज के नेता अपने तरीकों की वैधानिकता या अवैधानिकता को नजरअंदाज करते हुए केवल सत्ता हासिल करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। कई नेता दोहरे मापदंड दिखाते हैं,

उनकी कथनी और करनी में काफी अंतर होता है। 21वीं सदी की महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में बिगड़ते सांप्रदायिक राजनीतिक परिदृश्य के सामने व्यवस्थागत बदलाव की जरूरत को उजागर किया है। अपने पात्रों के माध्यम से उन्होंने सांप्रदायिक राजनीति की कुरूप वास्तविकताओं को चुनौती देने और बदलने का प्रयास किया है।

उर्मिला शिरीष की कहानी में साम्प्रदायिक दंगे के साथ ही प्रतिरोध के स्वर भी हैं। जिसके मूल में किसान रामरतन और मौलाना साहब जैसे पात्रों की समझदारी के साथ आवश्यकता पूर्ति भी है। रामरतन अपना सामान बेचने के लिए मुस्लिम बस्ती में कदम रखता है, जहाँ इससे पूर्व कोई हिन्दू नहीं आया था। साम्प्रदायिक दंगे के पश्चात दोनों ही पक्ष एक दूसरे से भयभीत रहते हैं। रामरतन के बस्ती में रहने की बात पर मुस्लिम समुदाय के लोग विरोध करते हैं। अफजल मियाँ दंगे में अपने दो बेटे खो चुके हैं फिर भी अपनी कौम को समझाते हुए कहते हैं, *"क्या आजादी के बाद दंगे फसाद नहीं हुए थे? आज भी सरहद के पार लोगों के दिल में कशिश है, प्यार मुहब्बत है। हम यहाँ पहले भी अपनी मर्जी से थे, आज भी आये हैं, हमें भी इस वतन से प्यार है। इस जमीन को अपना न समझा होता तो लेते पनाह। फिर झगड़े कहाँ नहीं होते? सियासत की लड़ाई में हम यूँ ही बेकार मारे जाते हैं। हर धर्म मुहम्ब्बत करना सिखाता है नफरत नहीं।"* [289]

कुछ समय पश्चात बलवाइ रामरतन की दुकान को आग लगा देते हैं। सब कुछ जलकर नष्ट हो जाता है, किन्तु चैन अमन के लिए रामरतन पुलिस के आगे किसी का नाम नहीं लेता–

"वह मौन बना था, पत्थर की तरह निस्पंद। बुरे लोग तो हर कौम में होते हैं, जैसे अच्छे लोग। उसकी आत्मा समझा रही थी।" [290] इस कहानी में दोनों सम्प्रदाय अपने अस्तित्व–रक्षा के लिए इस कदर प्रयासरत हैं कि बाकी सब गौण होने लगता है। रामधारी

सिंह दिनकर लिखते हैं–

"साम्प्रदायिकता एक संक्रामक रोग है। जब एक जाति भयानक रूप से साम्प्रदायिक हो उठती है तब दूसरी जाति भी अपने अस्तित्व का ध्यान करने लग जाती है और उसके भाव भी शुद्ध नहीं रह पाते।" [291]

उर्मिला शिरीष की एक अन्य कहानी में आशिक अली ऐसे व्यक्ति के रूप में हैं जो कर्म को ही पूजा मानकर केवल उसे पूरी शिद्दत से निभाते हैं, किन्तु उनकी त्रासदी का कारण केवल उनका मुस्लिम समुदाय से सम्बन्धित होना होता है। वे हिन्दू धर्म का भी पूरा सम्मान करते हैं–

"ऐसे इन्सान को कोई कैसे शुद्ध मुसलमान मान ले, जिसका कोई भी कर्म, धर्म और दीन ईमान से सौ प्रतिशत मेल न खाता हो। पर विडम्बना देखिए कि नाम से, काम से, ख्यालातों से, बुरके वाली बीवी से, कुल मिलाकर ऊपरी तौर पर आशिक अली को लोगों की नजरों में उसे मुसलमान बना देती थी।" [292]

बाहरी रूप और धर्मगत व्यवहार ही किस प्रकार एक नेक मनुष्य को साम्प्रदायिक दंगे में मृत्यु का शिकार बना देते हैं इसे यह कहानी संवेदनशीलता के साथ चित्रित करती है।

चित्रा मुदगल की कहानी *'बाघ'* धर्मनिरपेक्ष होने का दिखावा करने वाले मध्यम वर्ग की अवसरवादी सोच को दर्शाती है। यह वर्ग सांप्रदायिकता की आड़ में स्वार्थों को सिद्ध करने में माहिर है। कहानी में, एक आदमी घर खरीदना चाहता है, लेकिन धन की कमी के कारण उसे अपनी ज़रूरतों के हिसाब से घर नहीं मिल पाता। उसका एक सहकर्मी इस समस्या का समाधान सुझाता है कि उसी इलाके में, दूसरे धर्म का एक तीसरा आदमी रहता है, जो हाल ही में हुए दंगों के डर से अपना घर बेचकर ऐसे इलाके में जाना चाहता है, जहाँ उसके धार्मिक समुदाय की आबादी ज़्यादा है। सहकर्मी पहले आदमी को सलाह

देता है कि वह तीसरे आदमी को दंगे का डर दिखाकर उसका घर बहुत कीमत खरीद ले। शुरू में तो पहला आदमी इस सुझाव से सहमत हो जाता है लेकिन जल्द ही उसे सलाह के पीछे की दुर्भावना का एहसास हो जाता है। वह समझ जाता है कि इस तरह से किसी की कमज़ोरी का अनुचित फ़ायदा उठाना गलत है। इस कारण पहले आदमी को अपने सहकर्मी में इंसान नहीं बल्कि *'बाघ'* नज़र आने लगता है। *"पुरोहित डरे हुए थे। मकान की तलाश में थे। जैसे ही उनके मित्र 'ग' ने 'ख' के मकान के बारे में बताया वे उसे खरीदने के लिए उतावले हो गए। 'ग' ने बताया की पूरी कोलीनी में 'ख' का मकान अन्य मजहब के व्यक्ति का है। पिछले दंगों के कारण 'ग' की बस्ती वालों ने सोच लिया है कि रामनवमी के पूर्व 'ख' को बस्ती छोडने के लिए मजबूर कर देगें। वैसे वह मकान के बाइस लाख कह रहा है पर कम में पट जायेगा। गुलमोहर और छतनार से पटी साफ–सुथरी, चौडी सडकें, शांत वातावरण और दक्षिण दिल्ली में स्थित मकान पुरोहितजी को आकर्षित कर गया। 'ग' ने उन्हें आश्वासन दिया कि उनकी चादर में ही सौदा पक्का हो जाएगा। जरूरत उसे है, भयभीत वह है। लोगों द्वारा खदेडने से पूर्व यदि मकान बिक गया तो उसे कीमत मिलेगी और 'रामनवमी है कितनी दूर? चिंगारी ने लपट पकडी नहीं कि 'ख' औने–पौने दामों घर सुलटा बोरिया–बिस्तर बांध लेगा।"* [293]

"क्योंकि 'ग' ने कहा था बस 'कुछ हफ्तों का खेल है। तोते उडे हुए है जनाब 'ख' के। हमारी बिरादरी के बीच बच्चू रहे तो रहे मगर बाघ के सामने बँधी बकरी से।" [294]

"पुरोहित जी को उसके शब्दों से ऐसा लगा कि आज स्वार्थ में लिप्त आदमी 'बाघ' की ही भूमिका निभा रहें हैं। 'ग' के स्कूटर के पीछे बैठा वह ऐसा ही सोच रहा था कि 'अचानक उन्हें महसूस हुआ कि उनकी हथेली के नीचे 'ग' के जकडे कंधे की जगह किसी की सख्त नुकीली बालों– भरी पीठ आ गयी है।'' 'ग' ने उनके अचेतन मन में 'बाघ' का रूप धारण कर लिया। उन्हें पता ही नहीं चला कि यह उनका दृष्टिभ्रम है या एन्जाइना का

अटैका उन्होंने सिहरकर 'ग' के कंधे को देखा। उन्हें लगा जैसे बाघ ही सामने हो। 'ग' के कंधे से हथेली हटाने पर भी उनकी घिग्घी बंधी रही। उनकी घबराहट देख कर 'ग' ने उन्हें थ्री–व्हीलर में बैठा घर तक पहुँचाना चाहा मगर पुरोहितजी अकेले ही थ्री व्हीलर से घर चल पडे। पुरोहितजी को लगा कि यदि वे 'ग' द्वारा दिखाया मकान खरीद लेते हैं तो हमेशा यहीं आशंका बनी रह सकती हैं कि दंगो में मकान जलाया जा सकता है या फिर सस्ते दामों में बेचना पड सकता है। 'ग' व्यक्ति नहीं, एक 'बाघ' का प्रतीक है, जो कभी भी झपट सकता है।" [295]

चित्रा जी की कहानी *'लपते'* में उन लोगों के मानसिक द्वंद को दर्शाया गया है, जो आजीविका की तलाश में अपना गांव छोड़कर अपने ही देश के दूसरे हिस्से में बसने की कोशिश करते हैं। यह कहानी आज के सांप्रदायिक माहौल में कट्टरपंथी हिंदू तत्वों का असली चेहरा भी उजागर करती है, जहाँ एक आम, सहिष्णु व्यक्ति कट्टरपंथी तत्वों का समर्थन करने के लिए मजबूर है। स्थानीय नेता अपनी राजनीति को बनाए रखने के लिए अपने भाषणों से स्थानीय लोगों को प्रभावित करके अपने ही देशवासियों के बीच दरार पैदा करने का घृणित कार्य करते हैं। इन नेताओं के प्रभाव में स्थानीय लोग देश के दूसरे हिस्सों से आने वालों को अपना दुश्मन मानते हैं। उनके दिमाग में यह भर दिया जाता है कि ये बाहरी लोग बड़े उद्योगपति, अधिकारी, सिनेमा के सुपरस्टार और ठेकेदार बनकर हमारी जमीन पर कब्जा कर रहे हैं। उन्हें यह विश्वास दिलाया जाता है कि जब तक ये बाहरी लोग यहां हैं, तब तक वे आगे नहीं बढ़ सकते, इसलिए इन बाहरी लोगों को हटाना ही होगा, चाहे इसके लिए खून बहाना पड़े। अक्सर सांप्रदायिक दंगों में पूरे परिवार खत्म हो जाते हैं। पुरखों को पानी पिलाने वाला कोई नहीं बचता। मुंबई के अंधेरी इलाके में रहने वाले पति–पत्नी और उनकी जुड़वाँ बेटियाँ, साथ ही राजकिशोर यादव नामक एक साधारण तीसरी कक्षा का छात्र मनुवा, इसी तरह से अपना जीवन जीते हैं। दंगाइयों और सांप्रदायिक राजनेताओं के साथ समझौता करके वे आतंक के माहौल में जीते रहते हैं। कहानी में लोक

सेवा पार्टी हिंदुत्व का समर्थन करती है, हिंसा को पनाह देती है और राज्य में केंद्र की राजनीति को लागू करने के लिए कटिबद्ध है। इसके नेता कहते हैं... *"हमारी जात-बिरादरी के लोग अपनी ही जगह बेरोजगार हो कुली, कुबड़ी, क्लर्क बने इनकी चाकरी पर मजबूर हैं... क्यों? यह सब केंद्र की राजनीति है, हमारे लोगों को मजबूर और अशक्त बनाये रखने की। लेकिन अब हम उन्हें सावधान करना चाहते हैं कि अब हमारी जगह और हमारी राजनीति चलेगी, उनकी नहीं। हम नपुंसक नहीं हैं। अपने हितों को अब और तिरस्कृत होता नहीं देख सकते। अपनी जात-बिरादरी के लोगों के हित-चिंतन की खातिर, 'उनके अधिकारों के संरक्षण की खातिर हमने अपनी पार्टी गठित की है, लोक-सेना...!' अमची मुंबई अमचे माणस' यही लोक-सेना का आह्वान है।"* [296] ऐसे नेताओं की घिनौनी मानसिकता को अनेक कहानियों में चित्राजी ने बेनकाब किया है।

स्वयं प्रकाश लिखते हैं, *"साम्प्रदायिकता अधिकार चेतना का एक विकृत स्वरूप है और यह केवल हिन्दू मुसलमान का मसला न होकर बहुसंख्यकों की धौंस है, जो अल्पसंख्यक समुदाय के नागरिकों को बराबर का इंसान नहीं समझना चाहते हैं।"* [297]

लगभग सभी महिला कहानीकारों ने विद्वेष और सौहार्द दोनों का चित्रण किया है। सदियों से साथ रहते-रहते जो एक साझी संस्कृति और आपसी समझदारी हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच विकसित हो गई है, उसके उज्जवल पक्ष का चित्रण करके कहानीकारों ने सद्भाव की सम्पुष्टि में अपने कर्तव्य का निर्वाह किया है।

मंजुल भगत, चित्रा मुद्गल, चंद्रकांता, कृष्णा अग्निहोत्री, कमल कुमार आदि सभी महिला लेखिकाओं ने समाज और राजनीति की घनिष्ठता तथा राजनीति के अच्छे और बुरे दोनों रूपों का यथार्थ चित्रण किया है। राजनीति कुछ कारणों से विकृत होती जा रही है। इन कारणों की इन लेखिकाओं ने खोज की और उन्हें दूर करने का उपाय भी सुझाया है। अपने पात्रों के माध्यम से इन लेखिकाओं ने भ्रष्ट होती राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन का आग्रह

किया है, जो उनका एक सार्थक प्रयास है।

5.3 आतंकवाद और हिंसा

समकालीन साहित्य में हिंसा और आतंकवाद के व्यापक मुद्दों का सामना करने वाली कहानियाँ एक शक्तिशाली लहर के सामान दिखाई देती है। आधुनिक भारत के सामाजिक–राजनीतिक ताने–बाने में गहराई से निहित इन विषयों को हिंदी महिला लेखिकाओं की रचनाओं के माध्यम से एक मार्मिक और सम्मोहक आवाज़ मिली है। जब देश अपने विविध सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक परिदृश्य की जटिलताओं से जूझ रहा है, तब ये लेखिकाएँ हिंसा और आतंकवाद के बहुआयामी आयामों का पता लगाने और उन्हें उजागर करने के लिए अपने साहित्यिक कौशल का उपयोग करते हुए महत्वपूर्ण टिप्पणीकार के रूप में उभरी हैं।

प्रारंभ में हिंसा और आतंकवाद के इर्द–गिर्द की कहानियों को मुख्य रूप से पुरुष लेखकों द्वारा आकार दिया गया था, जो व्यापक और प्रभावशाली दृश्यों पर ध्यान केंद्रित करते थे। इस परिपेक्ष्य में 21वीं सदी की महिला लेखिकाएँ एक अनूठा दृष्टिकोण लेकर आती हैं, जो व्यक्तियों और समुदायों, विशेषकर महिलाओं के सूक्ष्म और अनदेखे अनुभवों को गहराई से समझती हैं, जो इन परिस्थितियों के कारण उत्पन्न संकटों से प्रभावित होती हैं।

इन कहानियों की एक विशेषता यह है कि ये व्यक्तिगत और राजनीतिक विषयों को आपस में जोड़ने की क्षमता रखती हैं, जिससे एक समृद्ध परिदृश्य तैयार होता है जो समकालीन भारत की वास्तविकताओं को दर्शाता है। हिंसा का चित्रण केवल शारीरिक आतंक तक ही सीमित नहीं है, बल्कि पीड़ितों पर मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और सामाजिक प्रभाव तक फैला हुआ है। अलका सरावगी, चित्रा मुदगल और मृदुला गर्ग जैसी लेखिकाओं ने ऐसी कहानियाँ लिखी हैं जो राजनीतिक अशांति, उग्रवाद और सांप्रदायिक

हिंसा के जाल में उलझे लोगों के जीवन का चित्रण करती हैं। अपने पात्रों के माध्यम से, ये लेखिकाएँ लिंग, वर्ग और धर्म की अंतर्संबंधता को उजागर करती हैं, जो समाज पर आतंकवाद के प्रभाव को दर्शाता हैं।

ममता कालिया की कहानी *'सुरक्षा का आतंक'* में भी पंजाब में हुए दंगो में हुई हिंसा का वर्णन किया गया है। *"अब तो राज्यों की भी जन्मपत्रियाँ छपती हैं। ज़्यादातर उनमें किसी न किसी राजनीतिक दल की पक्षधरता के हवाले से संकेत दिए जाते हैं कि इनकी सरकार बनाने के योग हैं या उनकी गिरने के। इन दस वर्षों में पंजाब ने जितना उतार–चढ़ाव देखा किसी राज्य ने न देखा होगा। कोई छोटा मोटा मरियल प्रदेश होता तो अब तक पिस गया होता। पर पंजाब आज भी हिंदुस्तान के नक्शे पर धड़कता है। पंजाब में बहादुरों ने न कभी जीने में हौसला हारा न मरने में हिम्मत। फिर भी यहाँ न जाने कहाँ से आ घुसा था आतंकवाद। हर तरफ से शक, शुबहा और शामत। कई बार अच्छे–भले परिवारों को सताया गया महज शक की खातिर। कई बार न्याय हुआ ज्यादा बार अन्याय।"* [298]

मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानी *'पासंग'* में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच संघर्ष को उजागर किया गया है, जिसमें दिखाया गया है कि कैसे कुछ लोग समाज और राष्ट्र के भीतर विभाजन और अशांति को बढ़ावा देने के लिए कूटनीति का उपयोग करते हैं। ये लोग एकता को बढ़ावा देने के बजाय दंगे भड़काने पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। ज़ैनब दादी आपा से कहती हैं– *"सब कह रहे हैं, दंगे भड़काने वाले नारे लगा रहे थे मुसलमान पाकिस्तान जाओ, अब तुम्हें यहाँ रहने नहीं देंगे। चिल्ला–चिल्ला कर चौक पर भाषण दे रहे थे, बापा, अगर इस बुढ़ापे में यह वतन छोडना पडेगा तो कैसे जी पाएँगे? एक गली से दूसरी गली तक आते–जाते तो इतना दम फूल जाता है, दूसरे देश कैसे जा पाएँगे?"* [299] आपा यहाँ कहती हैं कि– *"पाकिस्तान क्या जीते जी कोई जा सकता है? हड्डियों को ले जाना हो तो ज़रूर ले जाएँ। जोश में तो हर आदमी अपना होश खो बैठता है न? बंटवारा हुए भी दस–*

वरस के ऊपर हो गये, पर लोगों का मन साफ नहीं हुआ।" [300] आज की राजनीति गुण्डों के हाथों में ही है। *"गुंडों को नया काम मिल गया है। सभी गुंडे देश भक्त बन गये हैं, छोटी जायदादों पर कब्जा कर रहे हैं।"* [301] दंगे भड़काने वाले धार्मिक केन्द्रों का विस्फोट पहले करते हैं। इसका भी एक उदाहरण *'पासंग'* में दृष्टव्य है *"आपा, सुना है, रायपुर में तो गुंडों ने सारे मसजिदों पर कब्जा कर लिया है, नमाज़ियों को नमाज़ पढ़ने जाने नहीं दे रहा है। कहते हैं मसजिदों को गिरा कर अब मन्दिर बनाएँगे। सारी हवेलियों पर गुंडों का कब्जा हो गया है।"* [302]

चित्रा मुदगल की कहानी *'बंद'* में जब मजदूरों के अधिकारों का हनन उनके मालिक लोग करते हैं, तभी वे एकजुट होकर अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए नारेबाजी करते हैं, इस नारेबाजी में कभी–कभी उग्ररूप उत्पन्न हो जाता है तथा जन–धन की हानि भी होती है।

"नवल के स्वर में खीझ और हताशा उभर आई, 'साऽऽले सेठी ने आज कैंटीन भी इसी डर से नहीं खोली।'

"ओखली में सिर देता क्या?" रमेश ने सेठी को न आने की तरफदारी की। बात सही भी थी, मद्रासियों के प्रति 'बंद' का आवाहन करने वालों का खास रोष था।....

हम भी तो उन्हीं लोगों में से हैं। हमें बंद से क्या फायदा? ये जो पथराव की ताकत रखते हैं, बसें जला डालने की हिम्मत दिखा रहे हैं, कितने भूखे हैं? हुं नवल ने गरदन झटककर नथनों से रोष भरा फुफकारा छोड़ा, "साले क्या उखाड़ लेंगे इस तोड़–फोड़ से?"[303]

हिंसा का विकल्प चित्रा जी की अनेक कहानियों में दिखाई देते हैं। कुछ कहानियों में नौकरों द्वारा प्रदर्शन दिखाया गया है। ये प्रदर्शन नौकरों को अपना अधिकार न मिलने के

समय उनकी मजदूर यूनियन के द्वारा किये जाते हैं, कभी तो इनमें सफलता मिलती है तथा कभी प्रतिकूल वातावरण सामने उपस्थित होता है, जिसमें किसी का सिर फूटता है, किसी के हाथ में चोट तो किसी की हड्डियाँ चकनाचूर हो जाती हैं तथा कभी–कभी जीवन भी गंवाना पड़ता है।

चित्रा जी की कहानी *'लपटें'* में भी इसी तरह का परिदृश्य प्रस्तुत है। इस कहानी में नेताओं के कार्यकर्ता गुटबाजी करते हुए, नारेबाजी करते हुए आस–पड़ोस की दुकानों में आगजनी की घटनाएं करते हैं तथा इससे सामान्य लोगों को बहुत नुकसान उठाना पड़ता है।

"पति का गोल, मूंछों भरा चेहरा वितृष्णा से डरावना हो आया और जाति अखबार पढ़े तो जाने इनकी पोलपट्टी! इनके छद्म! विधानसभा में उत्तर भारतीय विधायकों ने इनके जुल्मों के खिलाफ हंगामा खड़ा कर दिया तो अपनी जाति के उद्धारक यही नेता भारी–भरकम शब्दों में अपने गुंडों की वकालत करने उतर आये कि आत्मरक्षा के लिए किये गये प्रतिवाद–स्वरूप संभव है कि संयोगवश कोई लपट तबेले, दुकानों तक पहुंच गई हो। बल्कि हमारी पार्टी, हमारे कार्यकर्ता न होते तो इनके तबेले, दुकानें ही न फुके होते घर भी फूंके गये होते। विधायकों ने तर्क दिया कि संयोग एक खास वर्ग, जाति के लोगों के साथ ही क्यों घटा तो पलटकर उन्होंने उत्तर भारतीय विधायकों को फटकारा कि वे तिल का ताड़ बनाकर जातीय सांप्रदायिकता की आंच पर अपनी रोटी सेंकने की कोशिश न करें ....।"
304

21वी सदी की महिला लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में व्यवस्था परिवर्तन के लिए कहीं–कहीं हिंसा को भी विकल्प रूप में दर्शाया गया है। चित्रा मुद्गल जी की एक अन्य कहानी इस स्थिति को स्पष्ट रूप से चित्रित करती है–

"सुनकर विद्रोह की एक तड़प सी कौंधी। चीखों का ढका–दबा सैलाब फट पड़ने

को हुआ, किन्तु हमेशा की तरह सब भीतर ही भीतर अंतस की गहराइयों में फूटता रहा .... बहता रहा। बहुत पहले अपनी घुटन को अभिव्यक्ति दी थी, चस्मा उतारकर अपनी आँखे दिखाई थी। इन आंखों में देखने की शक्ति है .... मस्तिष्क सोचता भी है, हृदय में संवेदनाशीलता भी है।" 305

मधु कांकरिया की कहानी 'युद्ध और बुद्ध' एक ऐसे युवक के इर्द–गिर्द घूमती है जो एक सुबह अखबार में छपे *'राष्ट्र को आपकी ज़रूरत है'* के विज्ञापन से प्रभावित होकर अपने परिवार की बात नहीं मानता और सेना में भर्ती हो जाता है। जम्मू में अपनी पोस्टिंग के दौरान वह सेना के जीवन की वास्तविकताओं का सही अनुभव करता है, जहाँ उसका सामना आतंकवादियों से होता है। इन मुठभेड़ों में कभी–कभी आतंकवादी उसकी गोलियों का शिकार हो जाते हैं, तो कभी–कभी वह उनका निशाना बन जाता है। ऐसे अस्थिर माहौल में उसे अपनी असली पहचान छिपानी पड़ती है। हालाँकि वह हिंदू है, लेकिन उसे मुस्लिम नाम हकीम अली कबीर दिया गया था। श्रीनगर से लगभग 40 किलोमीटर दूर गुंडगाँव के इलाके में, वह मेजर संदीप के नाम से जाने जाने वाले एरिया कमांडर के रूप में कार्यरत थे। *"यों गांव खूबसूरत था, पर यहाँ की हवाएँ, पहाड़ियाँ, खूबसूरत वादियाँ, चश्मे, गुनगुनाती धूप, दूधिया तिलिस्मी बादल कुछ भी लोगों को सुकून नहीं दे पाते थे, क्योंकि लोगों के मिजाजों में खूबसूरती नहीं थी। वे वर्तमान में कम मिथक, अधकचरे इतिहास और कुरान में ज्यादा जीते थे। जाहिर है ऐसी माटी में आतंकवाद के जीवाणु खूब फलते–फूलते। दिन में यह गांव किसी आदिम गांव सा ऊंघता–उबासी लेता लेकिन अंधेरा घिरते ही गांव की सरहद पर बेचैन आत्माएं भटकने लगतीं। आतंकवाद केंचुए की तरह रेंगने लगता। कभी इस पार से उस पार तो कभी उस पार से इस पार। कभी घर से बाहर तो कभी बाहर से भीतर।" 306*

नासिरा शर्मा की कहानी *'गुंचा दहन'* में ईरान में हुई राजनीतिक क्रांति से बर्बाद हुए

एक परिवार की कहानी है। अमनद आगा की बेटी मेहरमान, जिसकी उम्र केवल 12 साल है, राजनीति की निर्दयता का शिकार बन जाती है। *"सियासत का भूखा अजदहा जवान खून का प्यासा है। कहाँ तक, कब तक मेहरमान को बचाकर रखोगी? वह अजदहा जवान तन की बू सूँघता हमारे घर में दाखिल हो जायेगा।"* [307] स्कूल के एक जुलूस में मेहरमान को पासदार पकड़ कर ले जाते हैं। जेल में उसके साथ बलात्कार होता है, जिसके कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। जब मेहरमान के माता–पिता को यह पता चलता है, तो उसकी माँ विरोध करती है, जिससे उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया जाता है। इस प्रकार, राजनीति के कारण एक और परिवार तबाह हो जाता है।

नासिरा जी की कहानी *'दीवार–दर–दीवार'* में दिखाया गया है कि कैसे राजनीतिक विडंबना मोहन दास आगा के परिवार को तबाह कर देती है। जब राजनीति घर और परिवार में घुस जाती है, तो राजनीति का संघर्ष अंततः माता–पिता पर हावी हो जाता है।

"सियासत लोगों की साँस में रच–बस गई थी। मोहंदिस आगा धार्मिक यानी हिज्बउल्लाही थे, सत्तारूढ़ पार्टी के कट्टर अनुयायी थे। बेटा साम्यवादी और बेटी शैदा मुजाहिद यानी इस्लामी गुरिल्ला, जो सत्ता पार्टी की कड़ी आलोचक थी.... आजादी करीब है माँ ! परेशान मत हो, तुम्हें आज बताती हूँ, हादी जेल में है। मैं भी जा रही हूँ। आजादी का सूरज निकला, तो हम साथ–साथ दिखेंगे वरना हमारे लहू की लालिमा को तुम देखकर गौरवान्वित होना।" [308]

इन लेखिकाओं की कहानियाँ सामाजिक–राजनीतिक उथल–पुथल की पृष्ठभूमि में अराजकता के बीच अपनी पहचान और विवेक को बनाए रखने की कोशिश कर रहे व्यक्तियों के संघर्ष को दर्शाती हैं। इनकी कहानियाँ सहानुभूति की गहरी भावना से ओतप्रोत हैं, जो समाज के लचीलेपन को दर्शाती हैं, जो आतंकवाद और हिंसा के खतरनाक जाल को साहस और गरिमा के साथ पार करती हैं तथा इनके द्वारा दिए गए घावों को दर्शाती हैं

और उसके उपचार पर जोर देती हैं। इनकी कहानियों में पात्र जिंदगी में होने वाली हानि, विस्थापन और आघात की वास्तविकता को दर्शाते है, जो पाठकों को समाज की असहज सच्चाइयों का सामना करने के लिए मजबूर करते हैं।

5.4 भ्रष्टाचार

राजनीतिक भ्रष्टाचार एक व्यापक मुद्दा है, जो समाज को प्रभावित करता है। ड़ी ड़ी तिवारी के अनुसार *"राजनीति व्यक्ति को साँप की कुंडली की भांति चारों ओर से घेरे हुए है, जिससे निकलना असम्भव है।"* [309] समृद्ध साहित्यिक परंपरा वाले हमारे देश में, अधिकांश साहित्यकारों ने भ्रष्टाचार के विभिन्न आयामों की आलोचना कर उन्हें उजागर करने का प्रयास किया। 21वीं सदी की हिंदी महिला लेखिकाओं ने इस क्षेत्र में विशेष रूप से उत्कृष्टता हासिल की है, जो राजनीतिक भ्रष्टाचार और इसके बहुआयामी परिणामों पर प्रकाश डालने वाली कहानियाँ लिखी हैं। इन्होनें कथानक, पात्रों और साहित्यिक विचारों द्वारा इस पर प्रकाश डाला है।

राजनीतिक भ्रष्टाचार, जिसमें राजनेताओं, अधिकारियों तथा बड़े व्यापारियों द्वारा अवैध निजी लाभ के लिए सत्ता का दुरुपयोग किया जाता है, जो कि हमारे समाज के लिए एक गंभीर मुद्दा बना हुआ है। सामाजिक यथार्थवाद और सुधारवादी प्रयासों के साथ इन लेखिकाओं ने अपनी कहानियों द्वारा इस क्षेत्र में सफल और सार्थक प्रयास किये हैं। ये समकालीन लेखिकाएँ एक अनूठा दृष्टिकोण लाती हैं, जो समाज, व्यक्ति, लिंग, जाति और वर्ग के मुद्दों को राजनीतिक भ्रष्टाचार के साथ जोड़ती हैं और समाज पर इसके प्रभाव का एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं।

आज के समय में भ्रष्टाचार तेजी से फैल रहा है और समाज को कमजोर कर रहा है। सूर्यबाला जी अपनी कहानियों में इस मुद्दे को स्पष्ट रूप से दर्शाया है, और बताया है कि भ्रष्टाचार कितनी गहराई तक समाज में घुस गया है। '*संझावती*' संग्रह की कहानी '*सुनंदा*

छोकरी की डायरी' में सुनंदा की मालकिन उसे उसके काम के पैसे देने से मना कर देती है। जब सुनंदा किसी दूसरी नौकरी में थोड़ा ज़्यादा कमाने लगती है, तो मालकिन उसके बीस रुपये छीन लेती है। यह भ्रष्टाचार की शुरुआत है। जब सुनंदा अपनी मज़दूरी मांगती है, तो मालकिन जवाब देती है, *"तू मेरे से पइसा का हिसाब माँगी? तुम लोग को हर बात में बस पइसा...."*[310]

सूर्यबाला जी की कहानी '*गीता चौधरी का आखिरी सवाल*' शिक्षा विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करती है। परिवार की ज़रूरतें गीता की शिक्षा से ज़्यादा अहमियत रखती हैं। गीता की भाभी का भाई गीता से अपनी भाभी और बच्चे की देखभाल के बदले में एक फ़र्जी प्रमाणपत्र देने का वादा करता है, जो शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करता है। पैसे के लिए किसी भी वर्ग और डिवीजन का प्रमाणपत्र हासिल किया जा सकता है। *"मेरी भाभी का भाई तो कहता था कि पचास रूपए में जिस क्लास के चाहो, जिस डिवीजन के चाहो, ला देगा वह जाली सर्टिफिकेट।"* [311] ये पंक्तियाँ शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को साफ़-साफ़ दर्शाती हैं।

भ्रष्टाचार सत्ता व संसाधनों का दुरुपयोग राजनीति में गहराई से समाया हुआ है। राजनेता अपने निजी लाभ के लिए सरकारी सुविधाओं का दुरुपयोग करते हैं। ममता जी ने अपनी कहानी '*लड़के*' में इस मुद्दे को बहुत ही आकर्षक और व्यंग्यात्मक तरीके से चित्रित किया है- *"लड़कों ने गिना, सात पर भारत सरकार की तख्ती लगी थी, तीन पर प्रादेशिक सरकार की, जाहिर है भारत सरकार नहाने आयी थी। लड़कों ने देखा भारत सरकार मूली खरीद रही थी, भारत सरकार जलेबी खा रही थी, भारत सरकार पुण्य कमा रही थी। एक जीप मत्स्य विभाग की थी। एक स्वास्थ्य विभाग की। करदाता के खून-पसीने का पेट्रोल पेट में डाल ये जीपें दौड़ती रहती थी। साहब के लिए तरबूज लाने, साहब के बच्चे स्कूल पहुँचाने, साहब की मेम को सिनेमा दिखाने, साहब के रिश्तेदार स्टेशन पहुंचाने।"* [312] इस कथन से पता चलता है कि सरकारी अधिकारी किस हद तक सुविधाओं का दोहन करते

हैं, सरकारी स्थानों का प्रयोग निजी कार्यों के लिए करते हैं। यह चित्रण अपने व्यंग्यात्मकता के कारण महत्व प्राप्त करता है, जो अधिकारियों द्वारा संसाधनों के व्यापक दुरुपयोग को उजागर करता है। इसी तरह उन्होंने अधिकारियों द्वारा किये जा रहे भ्रष्टाचार पर भी प्रकाश डाला है। *"एक जीप माप–तौल निरीक्षण विभाग की थी। इसके एक कर्मचारी सुनील वर्मा के घर के पास रहते थे। उनके घर में ऐसे कई बाटों का ढेर था जिन पर एक किलो लिखा था पर वे आठ सौ ग्राम के थे। ये उन्होंने शहर के सब्जीवालों, फलवालों, मिठाईवालों से पकड़े थे। कुछ महीने ये बाट घर में पड़े रहते फिर एक दिन चुपचाप उन्हीं के विभाग का एक आदमी ले जाकर इन्हें बेच आता।......... 'सबके सब शिकारी हैं यहाँ कोई तराजू से शिकार करता है, कोई चन्दन से, कोई मीटर से, कोई लीटर से'। ताहिर बोला "सबसे बड़े शिकारी तो ये हैं," सुनील ने कड़वाहट से कहा, "जीपों में लद–लदकर आने वाले अफसरान, इन्हीं को भ्रष्टाचार की जांच–पड़ताल का जिम्मा सौंपा जाता है।"* [313] इन कथनों से पता चलता है कि देश में भ्रष्टाचार किस हद तक फैल चुका है। ममता जी की कहानी में इस मुद्दे को व्यापकता से दर्शाया गया है।

चित्रा जी ने अपनी कहानियों में राजनीतिक भ्रष्टाचार का चित्रण किया है। उन्होंने कहा है कि आज राजनीति बेईमानी, लूट, जबरन वसूली, स्वार्थ और चापलूसी जैसे भ्रष्ट मूल्यों का घर बन गई है। '*पाठ*' कहानी में चित्रा जी द्वारा राजनीति और स्कूली बच्चों के बीच भ्रष्टाचार को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। समाज का जनसेवक स्वास्थ्य मंत्री किस तरह सरकारी स्कूलों के बच्चों से मिलता है और उनके स्वास्थ्य की बात करके इसे अपना वोट बढ़ाने का जरिया बनाता है। वह बच्चों से बात करते समय कहते हैं *"नियमित रूप से शुद्ध जल से स्नान करना चाहिए। शरीर के ढ़के रहने वाले अंगों की विशेष रूप से सफाई करनी चाहिए। गर्दन कानों के पीछे आदि की सफाई कम महत्वपूर्ण नहीं....... समझ में आया कुछ?"* [314]

इस कहानी में मंत्री जी बच्चों को वोट के लिए रिश्वत के तौर पर नहाने का सामान

और कपड़े धोने का साबुन बाँटते हैं। सतीश की माँ को खाने के लिए पैसे की जरूरत है, इसलिए वह इन सामानों को किराने की दुकान पर बेचकर खाने का सामान ले आती हैं– *"माई बोली..... सरकार खूब मज़ाक करत है, नहा धोके पेट थोडेड़ भरने वाला है.... बट्टी अऊर अंगौछा के दाम से दू रोज का पिसान आएगा...... तू नहाएगा कि रोटी खाएगा?"* [315] यह दर्शाता है कि भ्रष्टाचार न केवल राजनीति को प्रभावित करता है, बल्कि आम लोगों के दैनिक जीवन और निर्णयों को भी प्रभावित करता है।

चित्रा जी की कहानी *'बंद'* में रोजगार के अधिकार के समकालीन मुद्दे को दर्शाया गया है। कहानी में इस बात पर जोर दिया गया है कि महाराष्ट्र में नौकरी पाने में मराठी लोगों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। ऐसा न होने पर राजनीतिक राज्य को *'बंद'* करने की रणनीति बनाते है। जिसका उद्देश्य लोगों में भय पैदा करना, आतंक की भावना पैदा करना और असुरक्षा को बढ़ावा देना है– *"ओखली में सिर देता क्या!' रमेश ने सेठी के न आने की तरफदारी की। बात सही भी थी। मद्रासियों के प्रति 'बंद' का आह्वान करनेवालों का खास रोष था। उनका तर्क था कि इन लोगों ने अति मचा रखी है। जहाँ जिस दफ्तर में काम करते हैं, अपनी जात–बिरादरीवालों को भर लेते हैं। बेचारे महाराष्ट्रियों को नौकरियाँ नहीं मिलतीं। जबकि मुंबई उनकी है और उनकी अपनी ही 'मुंबई' में उनका यह अनादर ! उनकी माँग थी कि अस्सी प्रतिशत नौकरियाँ स्थानीय लोगों को प्राप्त होनी चाहिए। उनका नारा था– 'बाहरवालों को भगाओ, अपनों को जगह दिलाओ'।"* [316] चित्राजी की कहानियाँ राजनीतिक भ्रष्टाचार के गंभीर मुद्दे को बहुत ही स्पष्ट रूप से चित्रित करती हैं। उनकी कहानियाँ बताती हैं कि राजनीति में भ्रष्टाचार कितनी गहराई तक समाया हुआ है।

नासिरा शर्मा जी की कहानी *'गूंगा गवाही'* में पुलिस भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया गया है। होली के दिन सुखिया नवाब और गोपी हबीब नाई के बेटे चांद के साथ कुकर्म करते हैं, जिससे उसकी मौत हो जाती है। अपराधियों को सजा देने के बजाय इंस्पेक्टर हबीब के भाई से कहता है– *"हम मदद करना भी चाहें तो नहीं कर सकते हैं। बेबात दुश्मनी हो*

गई तो फिर रोज दंगा–फसाद होगा। तेरा जीना मुश्किल हो जाएगा। उसे कौन बाद में संभालेगा। हमारी मजबूरी समझ, कच्ची हँडिया में खाना नहीं पकता।" [317]

नासिरा जी की कहानियाँ *'ठंडा बस्ता'*, *'खिड़की'* और *'इब्ने मरियम'* इन भ्रष्ट प्रवृत्तियों को दर्शाती हैं। *'ठंडा बस्ता'* में ईमानदार और बहादुर थानेदार संतोष कुमार का तबादला और सहाय के पदभार संभालने पर जरीना हत्याकांड की फाइल बंद होना यह दर्शाता है कि भ्रष्ट व्यवस्था में संतोष कुमार जैसे ईमानदार लोगों के लिए कोई जगह नहीं है। *'खिड़की'* शिक्षा में पक्षपात, भ्रष्टाचार और पाखंड को दर्शाती है। *'इब्ने मरियम'* भोपाल गैस त्रासदी से प्रभावित एक व्यक्ति की दुर्दशा को दर्शाती है। सुगरा नामक पात्र विलाप करती है, *"इस गैस की वजह से अमीर लोग हमारे नाम पर लाखों कमाते हैं, लेकिन हमें कुछ नहीं मिलता, कोई मदद या सहायता नहीं मिलती। अगर हमें कम से कम चिकित्सा सुविधा मिल जाती, तो अब्बा आज दर–दर भटकते नहीं।"* [318]

निष्कर्ष के तौर पर, सूर्यबाला,चित्रा मुदगल, नासिरा शर्मा जैसी लेखिकाओं द्वारा राजनीतिक भ्रष्टाचार की खोज सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में साहित्य की शक्ति को रेखांकित करती है। उनकी रचनाएँ पाठकों को भ्रष्टाचार को पहचानने और उसे चुनौती देने के लिए प्रेरित करती हैं, जिससे एक अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज की दिशा में सामूहिक प्रयास को बढ़ावा मिलता है।

21वीं सदी की प्रमुख भारतीय हिंदी महिला लेखिकाओं की कहानियों में राजनीतिक भ्रष्टाचार एक महत्वपूर्ण विषय बना हुआ है। अपनी कहानियों के माध्यम से, ये लेखिकाएँ जीवन के विभिन्न पहलुओं में व्याप्त भ्रष्ट आचरण की गहन आलोचना करती हैं, विशेष रूप से निचले स्तर पर पड़े और कमज़ोर लोगों को प्रभावित करती हैं। विविध विषयों, समृद्ध चरित्र चित्रण और नवीन साहित्यिक तकनीकों का उपयोग करके, वे राजनीतिक भ्रष्टाचार की जटिलताओं और परिणामों को प्रकाश में लाते हैं। उनका योगदान न केवल साहित्यिक संस्कृति को बढ़ाता है बल्कि समाज में न्याय और सुधार की वकालत करने में भी महत्वपूर्ण

भूमिका निभाता है।

5.5 निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में, 21वीं सदी की भारतीय महिला लेखिकाओं की कहानियाँ सिद्धांतहीन राजनीति की एक सम्मोहक परीक्षा प्रदान करती हैं। अपनी कहानियों के माध्यम से, ये लेखिकाएँ राजनीतिक परिदृश्य के भीतर नैतिक पतन पर आलोचनात्मक रूप से विचार करती हैं, जनता के सामने आने वाली निराशा और चुनौतियों को उजागर करती हैं। वे कुशलता से दर्शाती हैं कि कैसे राजनेता लोगों के कल्याण पर अपने स्वार्थी हितों को प्राथमिकता देते हैं, वोट हासिल करने के लिए छल और हेरफेर का उपयोग करते हैं जबकि समाज को प्रभावित करने वाले वास्तविक मुद्दों के प्रति उदासीन रहते हैं।

भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता आम लोगों के शोषण और सांप्रदायिक परिदृश्य में बदलाव जैसे विषयों की खोज करके, ये लेखिकाएँ राजनीतिक नेताओं की ईमानदारी और जवाबदेही के बारे में महत्वपूर्ण सवाल उठाती हैं। उनकी रचनाएँ न केवल समकालीन राजनीति की आलोचना के रूप में काम करती हैं, बल्कि पाठकों को अपने समय की सामाजिक–राजनीतिक वास्तविकताओं पर सवाल उठाने और उनसे जुड़ने का आग्रह करते हुए कार्रवाई के लिए आह्वान भी करती हैं। इन महिला लेखकों द्वारा पेश किए गए अनूठे दृष्टिकोण लिंग, जाति और आर्थिक स्थिति के साथ राजनीति की अंतर्संबंधता को रेखांकित करते हैं, जो राजनीतिक निर्णयों के बहुआयामी प्रभाव की सूक्ष्म समझ प्रदान करते हैं।

इन लेखिकाओं की रचनाओं में हिंसा और आतंकवाद की खोज उनके साहस और साहित्यिक कौशल का प्रमाण हैं। ये कहानियाँ न सिर्फ़ समकालीन भारत की कठोर वास्तविकताओं को दर्शाती हैं, बल्कि संवाद, समझ और अंततः उम्मीद के लिए एक जगह भी प्रदान करती हैं। अपनी कहानियों के ज़रिए, ये लेखिकाएँ हमें स्थायी मानवीय भावना और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में लचीलापन और मुक्ति की संभावना की याद

दिलाती हैं।

अंततः, 21वीं सदी की इन भारतीय महिला लेखकों की कहानियाँ एक अधिक नैतिक और जिम्मेदार राजनीतिक ढांचे की आवश्यकता पर जोर देती हैं। वे एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था को प्रस्तुत करती हैं, जो वास्तव में जनता की जरूरतों और चिंताओं को संबोधित करती है, और एक अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज को बढ़ावा देती हैं। अपनी शक्तिशाली कहानी कहने के माध्यम से, ये लेखिकाएँ राजनीतिक अखंडता और सामाजिक न्याय पर चल रहे विमर्श में योगदान देती हैं, पाठकों को बेहतर भविष्य की कल्पना करने और उसके लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करती हैं।

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में स्त्री विषयक चिंतन

पुरातन काल से आधुनिक काल तक जो साहित्य रचित हुआ है, नारी के अभाव में उसकी कल्पना करना असंभव है। साहित्य में नारी के विविध रूपों का वर्णन हमें नायिका पात्रों के माध्यम से देखने को मिलता है। डॉ॰ ओम प्रकाश शर्मा के अनुसार, *"महिलाओं के लिए लेखन कई रूपों में सामने आता रहा है। कुछ महिला–साहित्य में स्त्रियों को परम्परागत नारी गुणों से परिपूर्ण करने का प्रयास मिलता है, तो कुछ में आज के समसामयिक आधुनिकता बोध से सम्पन्न होने की कोशिश दिखाई देती है। आजकल कहीं परम्परागत स्त्रीत्व का मंडित रूप प्रस्तुत है, तो कहीं स्त्रीत्व की खंडित अभिव्यक्ति भी प्रस्तुत हो रही है।"* [319]

साहित्य में समाज के यथार्थ को दर्शाने के लिए नारी जीवन का साहित्य में वर्णन होना आवश्यक है। *"नारी जैसे सृष्टि का मूल है, वैसे ही वह साहित्य का भी उत्स रही है। साहित्य जीवन–यथार्थ की जिस पूर्णता की अभिव्यक्ति करता है, वह बिना नारी की सहभागिता के अपूर्ण होगा।"* [320]

साहित्य में नारी के जीवन की व्यथा का वर्णन बहुत मार्मिक शब्दों में हुआ है। महादेवी वर्मा ने लिखा है– *"नारी जागरण की दृष्टि से तो साहित्य उसके स्वत्व और व्यथा का समर्थ व्याख्याकार ही रहा है। कवियों के कंठ से भारत की जय ही नहीं गूँजी, नारी की जय भी ध्वनित हुई है। कथाकारों की आँखों में, भारत माता की परवशता पर ही आँसू नहीं*

आए हैं, विवश नारी के बंधनों पर भी आए हैं।" [321]

प्राचीन काल से ही पितृसत्तात्मक समाज द्वारा स्त्रियों का शोषण किया जाता रहा है। भारतीय परम्पराएँ, रूढ़ियाँ और रीति–रिवाज सभी स्त्रियों की अधीनता की ओर इशारा करते हैं। समाज में स्त्रियों की दशा हमेशा से दयनीय रही है, क्योंकि मर्यादा, सम्मान, कर्तव्य, रीति–रिवाज और परम्परा की आड़ में उनका शोषण किया जाता रहा है। परिणामस्वरूप, उन्हें कमज़ोर और असहाय के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सभी अधिकार पुरुषों के पास हैं, जबकि सभी कर्तव्य महिलाओं पर हैं। अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए पुरुषों ने लगातार महिलाओं पर अत्याचार किया है।

"नारी के उत्पीड़न और दासता का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितना असमानता और उत्पीड़न पर आधारित सामाजिक संरचनाओं के उद्भव और विकास का इतिहास। प्राचीन साहित्य में ढेरों मिथक और कथाएँ मौजूद हैं, जो पुरुष–स्वामित्व की सामाजिक स्थिति के विरुद्ध स्त्रियों के प्रतिरोध और विद्रोह का साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं। नारी की दासता और दोयम दर्जे की सामाजिक स्थिति का कई पुरुष विचारक प्राचीन काल से साहसिक एवं तर्कपूर्ण प्रतिवाद करते रहे हैं, इसके प्रमाण भारत और सारी दुनिया के इतिहास और साहित्य में मिलते हैं। संभवतः नयी सदी की भोर में भारत में 'नारीवादी सोच', 'स्त्री–विमर्श' की सैद्धांतिक विचारधारा इसी की उपज है।" [322]

भारतीय महाकाव्य रामायण और महाभारत पुरुष प्रधान समाज और महिलाओं के उत्पीड़न को उजागर करते हैं। रामायण में, सीता, जिन्होंने रावण द्वारा बंदी बनाए जाने के बाद भी अपनी मर्यादा बनाए रखीं, परन्तु एक धोबी द्वारा निराधार आरोप लगाए जाने के कारण भगवान राम द्वारा त्याग दिया जाता है। महाभारत में गांधारी, कुंती और द्रौपदी भी शोषण के विभिन्न रूपों का सामना करती हैं। गांधारी का विवाह अंधे धृतराष्ट्र से कर दिया जाता है जिसके कारण वह आजीवन आँखों पर पट्टी बाँधकर रहना चुनती है। कुंती का

विवाह बीमार पांडव से होता है जो युवावस्था में ही मर जाते है और सामाजिक मर्यादाओं के कारण उन्हें अपना मातृत्व त्यागने के लिए मजबूर होना पड़ता है। *"भारतवर्ष की मनीषा के लिए शाश्वत प्रश्न लेकर अवतरित हुई द्रोपदी, परस्पर विरोधी राजनीतिक प्रतिशोध का साधन, पाँच पांडवों की समन्वित भार्या, 'दूत–क्रीडा' में छली गयी। भारतवर्ष के इतिहास में नारी के उत्पीड़न को लेकर वह बड़ी अशुभ घड़ी थी, जब दुःशासन द्रोपदी के बालों को खींचता हुआ उसे सभा में ले आया।"* [323] राज दरबार में द्रौपदी का चीरहरण महिलाओं के उत्पीड़न के चरम को दर्शाता है। भगवान कृष्ण द्रौपदी को बचाने के लिए हस्तक्षेप करते हैं, लेकिन आज के आधुनिक समाज में सामूहिक बलात्कार, यौन शोषण और घरेलू हिंसा का सामना करने वाली स्त्रियों बचाने के लिए ऐसा दिव्य हस्तक्षेप नहीं मिलता है, जिसके कारण पीड़िता न्याय या सामाजिक समर्थन के बिना जीवित ही नहीं रहती या समाज में उनका अपमान होता हैं।

भारत के विस्तृत और विविधतापूर्ण साहित्यिक परिदृश्य में, 21वीं सदी के साहित्यकार ऐसी रचनात्मकता के साथ उभरे हैं, जो स्त्रियों के समक्ष प्रस्तुत होने वाली जटिलताओं की खोज करते हैं और उन सामाजिक एवम् सांस्कृतिक मानदंडों को चुनौती देते हैं, जो भारतीय समाज में स्त्रियों की भूमिकाओं को सीमित करते हैं। इनके साहित्य केवल मनोरंजनपरक न होकर स्त्रियों के विविध अनुभवों को गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, जिसमें पहचान, स्वतंत्रता, उत्पीड़न, प्रेम और सम्मान जैसे विषय शामिल हैं।

सदी के अंत में भारतीय साहित्यिक परिदृश्य में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है, जिसमें महिला लेखिकाओं को अभूतपूर्व प्रमुखता और मान्यता मिली है। इस अवधि में ऐसी लेखिकाओं का उदय हुआ है जो अपने अनुभवों और बदलती सामाजिक गतिशीलता के अवलोकन से स्त्रियों का प्रामाणिक, सूक्ष्म और साहसिक चित्रण करती हैं। मृदुला गर्ग, अलका सरावगी, चित्रा मुदगल जैसी लेखिकाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, इनके

कारण हिंदी साहित्य समृद्ध हुआ और स्त्रियों के जीवन पर नए दृष्टिकोण से विचार किए गये। इन लेखिकाओं द्वारा लिखी गई कहानियाँ पारंपरिक कथाओं की सीमाओं को पार करती हैं और कई शैलियों को अपनाती हैं, जो स्त्रियों के जीवन की जटिलता को दर्शाती हैं। रोज़मर्रा के संघर्षों के कठोर यथार्थवाद से लेकर आंतरिक दुनिया की गत्यात्मक खोज तक, उनकी रचनाएँ उन असंख्य पक्षों को दर्शाती हैं, जिनसे स्त्रियाँ अपनी पहचान और आकांक्षाओं को पूरा करती हैं। ये कहानियाँ घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, मानसिक स्वास्थ्य और स्वायत्तता की खोज जैसे कठिन और वर्जित विषयों को संबोधित करने से नहीं कतराती हैं। ये इन मुद्दों का सीधा सामना करती हैं। इनकी कहानियाँ जाति, वर्ग, धर्म और क्षेत्र के मुद्दों से जुड़ती हैं, जो स्त्रियों के जीवन को प्रभावित करने वाली सामाजिक संरचनाओं का एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। ऐसा करके ये भारतीय स्त्रियों के एकरूप चित्रण को चुनौती देती हैं और उनके अनुभवों की विविधता को प्रस्तुत करती हैं।

21वीं सदी की प्रमुख लेखिकाओं की कहानियाँ स्त्री–चिंतन का एक समृद्ध ताना–बाना प्रस्तुत करती है, जो समकालीन भारत में स्त्रियों के विविध और विकसित होते अनुभवों को उजागर करती हैं। अपने कहानी–लेखन और गहन विषयगत अन्वेषणों के माध्यम से ये लेखिकाएँ स्त्री अनुभव की गहरी समझ में योगदान देती हैं तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक क्षितिज को चुनौती देती हैं और उसका विस्तार करती हैं।

6.1 कामकाजी नारियों का दुःख दर्द

भारत की स्वतंत्रता के बाद, निश्चित आय वाले मध्यम और निम्न वर्ग को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। शोषण की एक नई प्रणाली उभरी, जिसमें पूंजीपति वर्ग, नौकरशाही और अवसरवादी नेताओं का वर्चस्व था। इस गठबंधन ने सुनिश्चित किया कि बढ़े हुए उत्पादन का लाभ सीमित अभिजात वर्ग को मिले, जिससे व्यापार में एकाधिकार हो गया। इस चुनौतीपूर्ण माहौल में, मध्यम और निम्न वर्ग की महिलाओं को अपने परिवार

का भरण–पोषण करने के लिए काम करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। एकल आय पर निर्भर रहना लगभग असंभव हो गया है, जिससे महिलाओं को आर्थिक रूप से योगदान करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। इन कामकाजी स्त्रियों के बारे में डॉ. रोहिणी अग्रवाल लिखती है– *"गृहस्थी से यान, यान से राष्ट्र के परिचालन तक के गुरूदायित्वों को सफलतापूर्वक निभानेवाला नारी, संध्यासमय दफ्तरों–फैक्टरियों से निकलती, भीड़ में आत्मविश्वासपूर्वक अपना रास्ता बनाती, मरीजों की परिचर्या उद्घाटित करनेवाली नारी के कंधे पर झूलता बड़ा–सा पर्स उसकी आर्थिक स्वतंत्रता की उद्घोषणा जान पड़ता है।"* [324]

हिन्दी साहित्य में कामकारी नारी के बारे में रेणु गुप्ता लिखती है– *"हिन्दी की लेखिकाओं ने समाज में नारी की स्थिति का वर्णन मात्र प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि नारी क्या चाहती है? उसका क्या अस्तित्व है? वह पुरूष से कम नहीं है, आदि उनके विषयों से सम्बन्धित प्रश्न अपने साहित्य में उठाए। यही नही, उन्होंने नारी–मन की गहराइयों को समझकर उन पर प्रकाश डाला और अन्याय को भाग्य न मानकर उसके विरुद्ध आवाज उठाने का संदेश दिया।"* [325]

राष्ट्रीय विकास ने महिलाओं को शोषण के खिलाफ पर्याप्त सुरक्षा प्रदान किए बिना उनके घरों से बाहर निकाल दिया है। महिलाओं को वरिष्ठ अधिकारियों और सहकर्मियों से कार्यस्थल पर उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। सफल महिलाओं को अक्सर अपने पतियों से ईर्ष्या और समर्थन की कमी का सामना करना पड़ता है। पुरुष अपनी पत्नियों को आर्थिक लाभ के लिए काम करने की अनुमति दे सकते हैं, लेकिन इस दोहरी भूमिका के कारण उन पर पड़ने वाले अतिरिक्त बोझ को अनदेखा कर देते हैं, जिससे महिलाएँ महज मशीन बनकर रह जाती हैं। कामकाजी महिलाओं की मानसिक स्थिति की देखने पर यह स्पष्ट होता है कि मध्यम और निम्न वर्ग की महिलाएँ आर्थिक आवश्यकता के कारण काम करने के लिए मजबूर होती हैं, जबकि उच्च वर्ग की शिक्षित महिलाएँ अक्सर व्यक्तिगत

प्रतिष्ठा और आत्म–संतुष्टि के लिए काम करती हैं, जिसका उद्देश्य अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाना होता है, आर्थिक बाध्यता के बिना काम करना आत्म–संतुष्टि और बेहतर जीवन स्तर की इच्छा से जुड़ा है।

किन्तु अधिकांश भारतीय नारियाँ इसलिए नौकरी करने को मजबूर हैं कि घर के पुरुष सदस्यों की आय पूरी नहीं पड़ती। जीवन–स्तर को ऊँचा उठाने के लिए आर्थिक आय की आवश्यकता अनुभव होती है। घर की मूल आवश्यकता की पूर्ति के लिए नौकरी करने वाली नारियों के लिए नौकरी एक मजबूरी है, वे चाह कर भी उसे छोड़ नहीं सकतीं।

आर्थिक तनाव निम्न, मध्य तथा उच्च सभी वर्गों की नारियों के जीवन को संत्रस्त करता है। स्त्री–पुरुष के संबंध के मध्य उभरते आर्थिक तनावों का चित्रण कहानी *'अपने–अपने लोग'* में मेहरुन्निसा परवेज करती हैं, जिसमें कहानी की नायिका सुमन अपने पति से अधिक वेतन पाती हैं। इसके बाद भी उसका पति काम के बाद आराम करता हैं जबकि वह सुबह से देर रात तक काम करती रहती हैं और अपने ससुराल वालों और पति की देखभाल करती हैं। उनकी दिनचर्या इस प्रकार है– *"सुमन सवेरे पाँच बजे सोकर उठती थी। घर का काम निपटाकर, नाश्ता तथा दोपहर का लंच बनाकर टेबल पर ढककर रख देती। सात बजे अपना तथा बेटी का टिफिन बनाकर दोनों तैयार होकर स्कूटर पर निकलती। बेटी को स्कूल छोड़कर अपने काम पर जाती। दोपहर को घर लौटकर आराम करती; फिर दो–तीन बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती और शाम होते ही रसोई में जा लगती। सारा काम कर रात जब बिस्तर पर लेटती तो लगता, जैसे सारी सृष्टि का चक्कर काटकर लौटी है। थकान से चूर–चूर होकर सोती तो होश न रहता। दूसरे दिन फिर वही भागा–दौडी।"* [326] इसके बाद भी सुमन के ससुराल वाले उससे असंतुष्ट रहते हैं। इस प्रकार कामकाजी स्त्री को समाज और घर दोनों जगह चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

जया जादवानी की कहानी *'फिर–फिर लौटेगा'* में तनु अपने परिवार का भरण–

पोषण करने की कोशिश करते हुए आर्थिक कठिनाइयों का सामना करती है। उसका पति तरुण अपनी आर्थिक स्थिति से परेशान होकर अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ लेता है और शादी के दूसरे साल में ही अपनी पत्नी और अपने बुजुर्ग माता–पिता की सारी जिम्मेदारी छोड़कर सन्यास लेकर गुरु महाराज के पास चला जाता है। पति के चले जाने का शोक मनाने के बजाय तनु अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करती है। वह अपने मायके नहीं लौटती और बेटे की तरह अपने ससुराल वालों की देखभाल करती है। वह अपनी सास से कहती है, *"माँ वह मर गया है। मैं हूँ न तेरी बेटी या बेटा, जो तू समझ। पहले तुम दोनों को खिलाऊँगी, फिर खुद खाऊँगी। तू उसके लिए न रो, जो रोने के काबिल न हो।"* [327] यह कहानी स्पष्ट दिखाती है कि एक स्त्री मुश्किल हालात से भागती नहीं है, बल्कि उनका डटकर सामना करती है। पति के चले जाने के बाद तनु घर की पूरी जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाती है और उसे पूरा करती है।

जया जी की ही एक और कहानी *'ये रात कितनी लम्बी है'* की नायिका इशिता को भी आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है। उसे मुश्किल हालातों से जूझना पड़ता है, क्योंकि उसकी माँ की आर्थिक स्थिति उसकी शादी से पहले ही खराब थी। वह प्रेम विवाह करती है, लेकिन उसका पति कुछ नहीं कमाता। पढ़ाई में अच्छी होने के बावजूद वह दर्शन नाम के लड़के से शादी करने के लिए पढ़ाई छोड़ देती है। अपने ससुराल वालों की असमय मृत्यु के बाद पूरी जिम्मेदारी उस पर आ जाती है। बेटी को जन्म देने से उनकी आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है और उसे प्रसव के तुरंत बाद काम पर लौटना पड़ता है, क्योंकि उसके पति पर काफी कर्ज हो गया था। इशिता कहती हैं, *"धीरे–धीरे मेरे पास उन लोगों की कतार आनी शुरू हो गई, जिनसे मेरे प्रसव के दौरान दर्शन ने अपनी शराब और रोटी के लिए कर्ज लिया था। लोगों ने भी सोचा होगा, कहाँ जायेंगे, मैडम पढाती है। अब वे भी चुकाने शुरू किये, महीने के अंत में हाथ फिर खाली का खाली तीन ही महीनों बाद मैंने स्कूल में नौकरी कर ली। मैं सुबह चार बजे उठती, दोनों वक्त का खाना बनाती, छह बजे*

घर से निकल जाती, बाहर बजे मुझे एक हॉस्टल में ड्यूटी देनी होती, जिसका मुझे हजार रूपये अतिरिक्त मिलता था। शाम छह बजे घर आती तो ट्यूशन के बच्चे इंतजार करते मिलते। आठ बजे तक इन्हें पढ़ाती। फिर रात का खाना, बच्ची को सँभालना और दूसरे कई काम।" [328] लेखिका ने लिखा है कि परिस्थिति कैसी भी हो, एक स्त्री कभी भागती नहीं। वह कभी हार नहीं मानती। वह टूट सकती है, लेकिन अपने बच्चे के लिए फिर से उठ खड़ी होती है। इशिता बहुत मेहनत करती है, आर्थिक तंगी का डटकर सामना करती है। कई दिनों तक उसके बच्चे को दूध भी नहीं मिला, तो उसने उसे चीनी का पानी पिलाया। लेकिन उसने हार नहीं मानी। जया जी की हर कहानी में महिला संघर्ष के बाद फिर से खड़ी होती है।

चित्रा मुदगल की कहानी *'प्रमोशन'* की नायिका ललिता के पदोन्नति प्राप्त करने पर उसके पति सुभाष को ईर्ष्या और शंका होती है– *"डा० कोठारी तुम पर मेहरबान क्यों है... इस कम्पनी में नौकरी करते हुए तुम्हें तीन साल भी पूरे नही हुए... तीन साल मे इतना बड़ा प्रमोशन?"* [329] ललिता सुभाष से साफ शब्दों में कहती है कि मैंने नौकरी तुमसे पूछकर नहीं की थी। इस प्रकार ललिता के रूप में चित्रा मुदगल जी एक सजग और आत्मचेता नारी का रूप प्रस्तुत करती है।

कहानी *'दरमियान'* में नलिनी कला विभाग में काम करती है और अपने बॉस बत्रा के अनुचित व्यवहार के कारण उसे थप्पड़ मार देती है तो प्रतिशोध में बत्रा नलिनी पर समलैंगिक होने का आरोप लगाता है और कहता है कि इसी कारण उसके पति ने उसे तलाक दिया। इस घटना पर नायिका की सहेली आकांक्षा अपने सहकर्मी सिराज से कहती है– *"मैं तो कहती हूँ कि नलिनी की जगह अगर कोई लड़की होती तो मात्र एक थप्पड़ से ही अपने अपमान का बदला न लेती, सीधा सैंडिल उतारकर जुट जाती।"* [330] आज, जैसे–जैसे महिलाएँ आगे बढ़ रही हैं और प्रगति कर रही हैं, नैतिक और सामाजिक वर्जनाओं की बाधाएँ कमज़ोर हो गई हैं। इस बदलाव ने पुरुषों को महिलाओं के ध्यानाकर्ष्ण के लिए ऐसे

तरीके अपनाते देखा है जो महिलाओं के लिए असहनीय हैं। डॉ. शीला सलूजा ने कामकाजी महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों पर यह विचार व्यक्त किया है– *"कामकाजी महिलाओं को कभी–कभी अपने सहकर्मियो से बातचीत के दौरान अनुचित दबावों के संकेत मिलते है.... इस प्रकार की बातचीत और व्यवहार अशिष्ट तो होते ही है, साथ ही अमर्यादित और अनुचित भी होते है। लेकिन कामकाजी जीवन में ऐसी बातचीत, अनुचित दबाव, अशिष्टता इसलिए महिलाओं को सहनी पड़ती है क्योंकि उनके पास इन्हें सहन करने के अलावा और कोई चारा नहीं होता।"* [331]

6.2 दाम्पत्य जीवन की विसंगतियाँ

पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था में, विभिन्न रिश्तों में पुरुषों और महिलाओं के बीच एक सुंदर सामंजस्य होता है, जो एक सुखद और जीवनदायी संतुलन बनाता है। आधुनिक समय में, यह सामंजस्य फीका पड़ रहा है, क्योंकि सामाजिक दबाव इस संतुलन को बाधित करते हैं। विवाह, जो कभी शुद्ध नदी की तरह थे, वो अब इन परिवर्तनों के कारण प्रदूषित हो गए हैं। उच्च और शिक्षित वर्ग विशेष रूप से तनावपूर्ण दाम्पत्य जीवन की कड़वी सच्चाई का सामना करते हैं। मध्यम वर्ग फिर भी सामाजिक मानदंड, धार्मिक विश्वास और रीति–रिवाज के कारण इन रिश्तों को बनाए रखते हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर गोपेश्वर सिंह ने दाम्पत्य जीवन की इस स्थिति को दर्शाया है, जहाँ चुनौतियों के बाद भी लोग वैवाहिक जीवन को बनाए रखते हैं– *"मुश्किल यह है कि हमारे समाज के नियमों में ही द्वैत है। हम परम्परागत आचरण ढोते चले आ रहे है। एक बार शादी हो गयी तो बस उसी के साथ बंधे रहना है, भले ही पटरी न बैठती हो। समाज अपेक्षा करता है कि मानसिक स्तर पर अलग–अलग होने पर भी दम्पत्ति जीवन भर साथ रहे। हमारे यहाँ शादी को जन्म–जन्मान्तर का सम्बन्ध माना जाता है। जबकि यह एक सामाजिक करार है। इस तरह का कोई भी करार*

तभी तक कायम रह सकता है, जब तक दोनो पक्ष शर्तों का बराबर पालन करते हो।" [332]

पुराने संस्कारों और नयी परिस्थितियों के बीच नारी किस प्रकार पुरुष के अनेक टूटे संदर्भों में अकेली होती जाती है, उनकी मानसिक गठन और मनोविज्ञान में कैसे परिवर्तन आते जाते हैं, इसे आज की कहानी अधिक वास्तविक भूमि, अनेक सूक्ष्म संश्लिष्ट धरातल और विविध संवेदनशील पक्षों से चित्रित करती है। 21वीं सदी की महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में नारी जीवन के विविध रूपों का वर्णन किया है। नारी–विकास के लिए इन लेखिकाओं ने नये–नये प्रतिमान स्थापित किये हैं, लेकिन उन्हें साकार होने में अभी समय है। योजना रावत के शब्दों में– *"समकालीन कथा–साहित्य में स्त्री की पीड़ा एवं वेदना को व्यापक फलक पर अभिव्यक्ति मिली है। सदियों से चली आ रही रूढ़ परम्पराओं, पितृसत्ता, नैतिक प्रतिमानों, स्त्री के लिए मान्य सामाजिक व पारिवारिक बन्धनों तथा पुरुष प्रधान भारतीय समाज में सदियों से दमित, शोषित व संघर्षरत स्त्री आज भी पुरुष के दमन चक्र से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पायी है।"* [333] इस प्रकार इन लेखिकाओं ने स्त्री विमर्श के अंतर्गत्त दाम्पत्य जीवन की विसंगतियों को दर्शाया है।

चंद्रकांत जी की कहानी *'विदागीत'* में इंद्रा की चार बेटियाँ हैं: भाविनी, प्रमोदिनी, सरोजिनी और रजनी। इंद्रा ने अपनी सबसे बड़ी बेटी भाविनी का विवाह तय किया। लेकिन भाविनी का विवाह सुखी नहीं रहा। उसका पति उसे शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित करता था। सास के ताने और फटकार ने उसके जीवन को कष्टमय बना दिया। जब भाविनी को संतान नहीं हुई तो उसकी सास ने उसे बाँझ कहकर न केवल अपमानित किया, बल्कि उसे प्रताड़ित भी किया। इंद्रा को अपनी बेटी की चिंता हमेशा सताती रहती थी। भाविनी अंततः ससुराल छोड़कर अपने माता–पिता के घर वापस आ गई। उसकी बहन प्रमोदिनी ने उसे सलाह दी, *"यह घड़ी दीदी, यह घड़ी सच है। इस घड़ी को जीना सीखा।"* [334] भाविनी अपने दुख को अपने भीतर ही दबाए रखती रही। भाविनी के विवाह की विफलता से पूरा

परिवार व्यथित रहता था।

चंद्रकांता जी की कहानी *'रामबिल्ले की दस्तक'* में चुन्नी का पति उसे प्रताड़ित करता है। विवाह के बाद उसका व्यवहार बहुत बदल जाता है। वह चुन्नी की बहुत–सी कमियां बताकर उसे उसके माता–पिता के घर वापस भेज देता है। वह नाई के हाथ शिकायतों, दोषों और आरोपों की एक लंबी सूची भी भिजवाता है, जिसमें लिखा है– *"नाई के हाथ शिकायतों, खामियों व अपराधों की लम्बी फेहरिस्त भी भिजवा दी, जैसे कि रात को खर्राटे भरती है, शाम को जल्दी सो जाती है, यखनी में मिर्च और 'बोस्तहाख' में हल्दी डाल देती है। यह औरत नहीं कपड़ा धोने की मशीन हैं। धोने–पछोरने की खब्त है इसे। साबुन इतना खर्च करती है कि दो मास और रखूँ तो भीख माँगने की नौबत आ जाये, फिर सूरत–सीरत भी ऐसे कि दोस्तों में नाक कट जाय।"*[335] चन्नी की चाची कहती है– *"गरीबी सब बुराईयों–अपराधों की जड़ है, नहीं तो लड़की सोना है। पिछले जन्म की पेटजायी है मेरी।"* [336]

चित्रा मुदगल की कहानी *'मुआवज़ा'* दाम्पत्य–जीवन की नीरसता को उजागर करती है। इस कहानी में सुमित का अहंकार साफ़ झलकता है, क्योंकि वह एक स्त्री को अपने नियंत्रण में रखने में विश्वास करता है। सुमित एक एयर होस्टेस और मॉडल शैलू से शादी करता है, लेकिन शादी के बाद वह उसे दबा कर रखना चाहता है। वह अपने परिवार के साथ मिलकर शैलू को परेशान करता है और यहाँ तक कि उसे मारता भी है। शैलू की माँ मधु, शैलू के पति और ससुराल वालों के व्यवहार से परेशान है और वह क्षुब्ध होकर कहती है– *"तब... टेलकम कंधों पर छिड़कती हुई शैलू सुमित के दिल की धड़कन थी, ब्याह होते ही आंखो की किरकिरी हो गयी? आप घर में एक कठपुतली चाहते थे। व्यक्तित्वपूर्ण बहू नही! व्यक्तित्वपूर्ण बहू की समाई के लिए व्यक्तित्व सम्पन्न पारिवारिक माहौल भी चाहिए। यह हम महसूस नही कर सके न निश्छल शैलू....।"* [337]

चित्रा जी की कहानी *'अपनी वापसी'* में शकुन घरेलू जिम्मेदारियों के बोझ तले

दबकर दाम्पत्य–जीवन में खुशियां पाने में पिछड़ जाती है। उसका व्यवहार पुराना हो जाता है और वह अलगाव की भावना से घुटन महसूस करती है। अतीत को याद करके वह निराश होने लगती है और आत्मचिंतन करने लगती है। *“दूसरो को प्रश्नो के घेरे में घेरती.... अचानक वह स्वयं को प्रश्न हुआ पाती। सोचती 'अब ऐसा क्यों हो गया उनके दरमियान!....वह बदल गयी ! हरीश, बच्चे, समय....? कारण समृरि की व्यावहारिकताएं या उनकी निजता का व्यक्तित्व में परिणति या स्वयं के वर्चस्व को उपेक्षित, अनावश्यक अनुभव करना? या उसकी प्रौढ़ हो आई देह की आकर्षण खो चुकी निरन्तर असक्रिय होती जा रही उमंगविहीन उपस्थिति या अच्छा दिखने, बनने की कोशिश में जतन से ढ़क–मूंद दी गई अपनी कुंठाए जो सुई में तागा डालने की असमर्थता के चलते पैबंद–सी उधड़ गयी?”* [338]

दांपत्य–जीवन में किसी तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति अलगाव, घुटन और हताशा का कारण बन जाती है। चित्रा जी की कहानी *‘शून्य’* में सरला का पति राकेश बेला नाम की एक महिला के साथ प्रेम–संबंध में उलझ जाता है। वह बार–बार सरला के साथ बुरा व्यवहार करता है। उसके ससुराल वाले सरला को भरोसा दिलाते हैं कि राकेश अंततः उसके पास वापस आ जाएगा। निराश महसूस करते हुए सरला खुद को स्थिति के हवाले कर देती है और इसे अपनी किस्मत मान लेती है। *“तब सिर झुकाए उसने सबकुछ स्वीकार कर लिया अपनी नियति मानकर। यह मानकर कि किसी के मन में अपने लिए बलात, कोई कोना पैदा नहीं किया जा सकता। न सप्तपदी की प्रदक्षिणा को आजीवन ढाल बनाकर पत्नीत्व का अधिकार जिया जा सकता है।”* [339]

पति–पत्नी के बीच का रिश्ता आपसी विश्वास पर टिका होता है। जब यह विश्वास टूटता है, तो संदेह पैदा होता है, जिससे वैवाहिक जीवन में दरार पैदा होती है। वैवाहिक मुद्दों को सुलझाने के लिए दोनों भागीदारों के प्रयास की आवश्यकता होती है। संदेह और

अविश्वास भावनात्मक और शारीरिक दूरी को जन्म देता है, जिससे अलगाव या घुटन होती है। भारतीय परंपरा में, रूढ़िवादी पति अक्सर पत्नियों को संपत्ति के रूप में देखते हैं, जिससे ये मुद्दे और भी गंभीर हो जाते हैं, मेहरुन्निसा परवेज की कहानी *'अयोध्या से वापसी'* में राजेंद्र और नीरा पति–पत्नी हैं। जब से नीरा अपने मायके से लौटी है, राजेंद्र को उस पर शक हो गया है। जिस कारण वह अपना सारा समय उस पर नज़र रखने में बिताता है। वह चुपके से उसकी डायरी पढ़ता है। नीरा उसके व्यवहार से परेशान हो जाती है। एक दिन राजेंद्र आखिरकार नीरा से अपना शक जाहिर करता है। *"इतने दिन तुम वहाँ रही, किसी से दोस्ती तो हुई होगी। सुना है वहाँ काफी जोर–शोर से तुम्हारी शादी की बातें आ रही थी। इतने तुम्हारे आशिक होंगे यह तो हमें भी पता नहीं था।"* [340] राजेंद्र के अविश्वासपूर्ण रवैये से परेशान होकर नीरा उसके साथ अपना रिश्ता खत्म करने और स्वतंत्र रूप से रहने का फैसला करती है।

मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानी *'रेगिस्तान'* में देव की शराब पीने की आदत के कारण नीरा और देव की शादी टूट रही है। शराबी देव के साथ नीरा का रहना मुश्किल हो जाता है– *"देव अपने जीवन की कड़ुवाहट को शराब के नंगे प्याले में उतारने लगा। पढ़ा–लिखा देव जब नशे में उसे गंदी और सड़क छाप गालियाँ बकता, तो एकदम गँवार और जाहिल आदमी लगता।"*[341] जैसे–जैसे देव की शराब पीने की आदत बिगड़ती गई, नीरा उसे तलाक दे देती है। इसी तरह कहानी *'आकाशनील'* में तरू की शादी एक शराबी और चरित्रहीन आदमी से होती है। उसका पति हमेशा नशे में रहता है और तरू की इच्छाओं और भावनाओं की अनदेखी करते हुए दूसरी स्त्रियों के साथ संबंध बनाता है। इस वजह से तरू अकेले रहने का फैसला करती है। अपनी असफल शादी पर विचार करते हुए तरू सोचती है, *"पता नहीं मंत्र किसने गलत पढ़े थे, जिंदगी की शुरूवात ही गलत ढंग से हो गयी थी।"* [342]

21वीं सदी की प्रमुख भारतीय महिला हिंदी लेखिकाओं द्वारा लिखी गई कहानियों

में विवाहित जीवन की विसंगतियों का विषय स्पष्ट रूप से उभर कर आता है। ये कहानियाँ विवाह के भीतर महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली जटिलताओं और चुनौतियों के साथ–साथ, रिश्तों की नाजुकता और विभिन्न कारणों को दर्शाती हैं।

6.3 आर्थिक स्वावलम्बन की ललक

आज के भौतिकतावादी युग में शताब्दियों से चली आ रही सभी मान्यताएँ विशृंखलता का शिकार हो गई हैं तथा नैतिकता और सामाजिकता के सभी पुराने मूल्य नयी परिस्थितियों के सामने टिक पाने में असमर्थ होकर ढह गये हैं। परिणामस्वरूप युग चिन्तन की दिशा बदलती है। इस परिवर्तित दिशा–दृष्टि का सर्वाधिक प्रभाव आज की नारी पर पड़ा है। सामाजिक दृष्टि से देखें तो भारत की स्वतंत्रता के बाद से होने वाले सबसे अधिक सारभूत और उल्लेखनीय परिवर्तनों में से एक है–नारी समाज की आपेक्षित मुक्ति–घरों की चारदीवारियों से निकल कर उसका बाहरी दुनिया की हलचल में शामिल होना।

युगों से नारी का कार्यक्षेत्र घर के परिवेश तक सीमित रहा। उसके कर्तव्य निर्धारण में उसकी स्वभावगत कोमलता, मातृत्व तथा सन्तान–पालन की आवश्यकताओं पर तो ध्यान रखा ही गया, साथ ही बाहर के कठोर, आतंकपूर्ण वातावरण ने भी उसकी सामाजिक भूमिका को बहुत हद तक कुंठित किये रखा। परन्तु बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में ही परिस्थितियाँ नवीन सांचे में ढ़लनी शुरू हो गई। नारी–गरिमा के उद्घोष सुनाई देने लगे। एक ओर इतिहास के झरोखे से उसका गौरवशाली चित्र प्रस्तुत किया जाने लगा तो दूसरी ओर पाश्चात्य प्रभाव उसे स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान करने का आग्रह करने लगे। स्वतंत्रता–आन्दोलन के संदर्भ में उसका महत्व बढ़ा और स्वतंत्र भारत में उसकी भूमिका को नये आयाम प्राप्त हुये।

शहरीकरण की परिस्थितियों ने नारी संबंधी मान्यताओं में परिवर्तन और भी

आवश्यक कर दिया। स्त्री अब केवल रमणी या भार्या नहीं रही, वरन् घर के बाहर भी समाज का एक विशेष अंग तथा महत्वपूर्ण नागरिक बन कर प्रस्तुत हुई। आज नारी अपने कच्चे कांचवाली यौनशुचिता को त्याग कर घर बाहर के दायित्वों को निभा रही है, यहाँ तक की उसने केवल पुरुषों के लिये परम्परा से सुरक्षित क्षेत्रो में भी विचरना आरम्भ कर दिया है। नारी ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि पुरुषों के लिये सुरक्षित कुछ एक क्षेत्रों में वह पुरुषों से अधिक कुशलता का भी पर्याय हो सकती है। परिणामस्वरूप घर की चारदीवारी में घिरी नारी धीरे–धीरे सभी परम्परागत सीमाओं को तोड़ती हुई कार्यालयों की ओर बढ़ी और इस प्रकार समाज में एक नया महत्वपूर्ण वर्ग सामने आया–कार्यशील या नौकरीपेशा नारी वर्ग।

मधु कांकरिया ने अपनी कई कहानियों में महिलाओं की व्यापक शक्ति के विषय को सामने रखा है, तथा दुनिया के लिए इसके महत्व पर जोर दिया है। उनकी प्रसिद्ध कहानी '*लेडी बॉस*' इस अवधारणा को प्रभावशाली ढंग से दर्शाती है। '*लेडी बॉस*' की मुख्य नायिका एक सशक्त स्त्री के रूप में है, जो अपने पति द्वारा त्याग दिए जाने के बाद भी दृढ़ता से खड़ी है तथा कुशलतापूर्वक खुद को तथा कंपनी को संभालती है। '*लेडी बॉस*' कहानी स्त्रियों की शक्ति को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करती है: *"मैडम बॉस कैसी है? हमारी...मतलब यही की जींस पहनकर जब औरत के जिन्स ही तेजी से बदलने लगे तब यही होता है... अंदर की बत्ती गुल और प्रतिभा, इच्छा शक्ति सब शून्या... मैडम बॉस– जिनको हमेशा यह मुगालता रहता कि, वे हंसी की गई है, कि चेहरे का कसाब जरा ढीलापन पड़ा कि कंपनी का मुनाफा खिसका। चुस्त–दुरुस्त और फटाफट कामयाबी का रास्ता अख्तियार करने वाली मैडम हंसती तो भी गणना करके। मैडम के स्नायुतंत्र हमेशा तने रहते क्योंकि वह हमेशा तीन चीजों के बारे में सोचतीं काम, मुनाफा और स्टॉफ की ठोका पीटी।"* [343]

चित्रा जी के साहित्य में स्त्रियों के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं जो आर्थिक और सामाजिक बंधनों से मुक्त होकर आत्मनिर्भर बनने और अपनी पहचान बनाने का प्रयास

करती हैं। चित्रा जी की कहानी *'पदोन्नति'* में नायक सुभाष अपनी पत्नी ललिता की पदोन्नति से नाखुश है। वह ललिता के अपने बॉस डॉ. कोठारी के साथ संबंधों को संदेह की दृष्टि से देखता है और ललिता पर दबाव डालता है कि वह नौकरी छोड़ दे, लेकिन ललिता अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर जवाब देती है, *"सोचना तुम्हें है... मानसिक तौर पर रुग्ण तुम हो, मैं नही.... कान खोलकर सुन लो तुम्हारी कुंठाओं द्वारा रचा हुआ सत्य मेरी नियति नही बन सकता।"* [344] यह एक स्वस्थ मानसिकता और स्वतंत्र दृष्टिकोण वाली महिला को दर्शाता है। समकालीन समाज में कामकाजी महिलाएँ आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो रही हैं और उनके दृष्टिकोण भी विकसित हो रहे हैं। चित्रा जी की कहानियाँ महिलाओं में इस परिवर्तन को जीवंत रूप से दर्शाती हैं, इन परिवर्तनों को करीब से देखती हैं।

राजी सेठ ने अपनी कहानियों में समाज की बदलती गतिशीलता के बीच महिलाओं की बदलती मानसिकता को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं। राजी जी ने *'मेरे लिए नहीं'* कहानी में इस बदलाव का बेहतरीन चित्रण किया हैं। मुख्य पात्र प्रीति आई.ए.एस अधिकारी का प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने के बाद अपने परिवार से अलग रहती है। अस्वस्थ होने के बावजूद, वह अपनी सहायता के लिए परिवार के किसी भी सदस्य को बुलाने से इनकार करती है। जब भास्करन उसकी अनिच्छा के बारे में पूछता है, तो वह जवाब देती है, *"क्यों बुला लूँ... मैं कह चुकी हूँ उनसे कि मैं अपनी देख-भाल खुद कर सकती हूँ। सुख में दुःख में, बीमारी में, आराम में अपना आगा-पीछा देख सकती हूँ। पूरा शहर सँभालती हूँ, अपने को नहीं सँभाल सकती?"* [345] प्रीति के चरित्र के माध्यम से, राजी सेठ एक महिला की आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्वालंबन को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करती हैं, यह दर्शाती हैं कि वह न केवल खुद की, बल्कि अपने परिवार की भी देखभाल करने की क्षमता रखती

है।

6.4 दहेज और अनमेल विवाह

दहेज महिलाओं की सामाजिक भूमिका नहीं है, बल्कि एक सामाजिक भूमिका है जो महिलाओं के जीवन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। वैवाहिक मुद्दों में, दहेज देने और लेने की प्रथा विशेष रूप से हानिकारक है। हालाँकि सरकार ने इस प्रथा पर कानूनी रूप से प्रतिबंध लगा दिया है, लेकिन यह अभी भी प्रचलित है। दूल्हे का परिवार एक निश्चित राशि की माँग करता है, और दुल्हन का परिवार, अक्सर हताश होकर, उसका पालन करता है। जब माता–पिता आर्थिक तंगी के कारण अपनी बेटी के लिए उपयुक्त वर नहीं ढूँढ पाते हैं, तो उन्हें उसकी शादी किसी विधुर या किसी बड़े व्यक्ति से करवानी पड़ सकती है। आज, पढ़े–लिखे पुरुष भी शादी के लिए दहेज की शर्तें लगाते हैं।

दहेज की समस्या लड़की के माता–पिता को परेशान करती है और खुद लड़की के लिए भी काफी तकलीफ़ का कारण बनती है। कुछ मामलों में, अगर उसकी शादी नहीं हो पाती है, तो वह निराश हो जाती है या भाग जाती है। चरम स्थितियों में, अगर शादी असंगत होती है, तो वह आत्महत्या भी कर सकती है। इन असहाय लड़कियों और उनके माता–पिता के लिए, दहेज विरोधी कानून कोई खास फर्क नहीं डालते। वर्तमान में, देश में रूढ़िवादिता और अंधविश्वास महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याएँ बनी हुई हैं। परिणामस्वरूप, बाल विवाह, बेमेल विवाह, बाल श्रम, दहेज प्रथा और विधवा पुनर्विवाह का अभाव जैसे सामाजिक मुद्दे बने हुए हैं, जो देश की प्रगति में बाधा बन रहे हैं।

मालती जोशी जी की कहानियों में दहेज प्रथा और उसके कारण महिलाओं के संघर्ष और पीड़ा का सजीव चित्रण किया गया है। जोशी जी की कहानी *'विकल्प'* एक ऐसी लड़की पर केंद्रित है, जो तीन बेटियों वाले घर में रहती है। परिवार द्वारा दहेज न दे पाने के

कारण उसकी शादी में देरी हो रही है। सबसे बड़ी बेटी अपनी पढ़ाई जारी रखती है, क्योंकि उसकी शादी नहीं हो सकती। दिखने में औसत और अधिक शिक्षित होने के बावजूद, वह खुद को सामान्य विवाह योग्य उम्र से बाहर पाती है। *"दीदी शादी की प्रत्याशा में पढ़ाई करती रही। फिर उसने बी.एड. भी पूरा किया। जब उसे अभी भी कोई उपयुक्त वर नहीं मिला, तो उसने काम करना शुरू कर दिया। पिछले छह सालों से वह अपने दहेज के लिए पैसे बचा रही है। लेकिन हर साल उम्र और उपयुक्त वर से जुड़ी लागतें दोगुनी होती जा रही हैं।"* [346] दहेज के पैसे की कमी के कारण घर की तीनों बेटियों की शादी नहीं हो पाई है। सबसे बड़ी बेटी की शादी इसलिए जरूरी है क्योंकि इसके बिना छोटी दो बेटियां अपनी शादी नहीं कर सकती हैं। जैसे–जैसे समय बीतता जा रहा है, छोटी बेटियों की शादी की उम्र भी घटती जा रही है। देरी से होने वाली शादियों और आर्थिक तंगी का यह चक्र परिवार पर बहुत दबाव डालता है और उनके जीवन पर दहेज प्रथा के विनाशकारी प्रभाव को उजागर करता है।

मालती जोशी जी की कहानी *'गुड़िया का दहेज'* दहेज–प्रथा के क्रूर और अमानवीय पहलुओं को दर्शाती है। इस कहानी में, गुड़िया की शादी होने वाली है, और उसके परिवार ने दहेज के लिए सभी ज़रूरी सामान इकट्ठा कर लिया है। हालाँकि, शादी से ठीक एक दिन पहले, उसके घर में चोरी हो जाती है। नतीजतन, दूल्हे के परिवार ने तुरंत शादी रद्द कर दी। दूल्हे की माँ बेरुखी से कहती है, *"मेरा बेटा ऐसे कंगालों के घर बारात लेकर नहीं जाएगा। मेरे कोई दस बीस लड़के हैं?"* [347] यह घटना इस बात पर प्रकाश डालती है कि दूल्हे का परिवार कितनी आसानी से रिश्ता तोड़ देता है। कहानी समाज के उस पत्थर दिल स्वभाव पर प्रकाश डालती है, जो स्वार्थ से इतना प्रेरित है कि लड़की और उसके परिवार के सामने आने वाली भावनात्मक उथल–पुथल और संकट पर विचार करने में विफल हो जाता है। मालती जोशी ने समाज में व्याप्त उस विकृत मानसिकता को शक्तिशाली रूप से उजागर किया है, जो दहेज प्रथा के कारण होने वाली पीड़ा के प्रति गहरी असंवेदनशीलता और

सहानुभूति की कमी को दर्शाती है।

चन्द्रकान्ता जी ने अपनी कहानियों में सामाजिक जीवन को महत्त्व देते हुए उसके हर उतार–चढ़ाव व परिवर्तन से जूझती हुई नारी के संघर्ष, उसकी मनोदशा और चुनौतियों को चित्रित किया है।

चन्द्रकान्ता जी की कहानी *'मेरी माँ कहती थी'* में कमलावती खुद दहेज के मोह से अलग नहीं हो पाती। उसके मन में दहेज की तीव्र इच्छा होती है। वह अपनी बड़ी बहू से नाराज़ होती है क्योंकि शादी के समय कमलावती की उम्मीदों के मुताबिक वह पर्याप्त दहेज नहीं ला पाई। इसके विपरीत, वह अपनी छोटी बहू से बहुत खुश होती है, जो शादी के समय घर में काफी मात्रा में दहेज लेकर आई थी। इस संदर्भ में कमलावती कहती है– *"छोटी वाली दान दहेज भी लाई है घर में। वह भी देखना हुआ ना। ट्रक भरकर सामान आया। यों है तो बी.ए. पास, पर बड़ी की एम.ए., पी. एच.डी. से मैं क्या माँगू? छोटा भाग्यशाली है। उसे मिलना भी चाहिए था। यों तो बड़ी को भी दस–पन्द्रह दिए थे फर्नीचर अर्नीचर के वास्ते। पर क्या दस–पन्द्रह हजार में आता इतना फर्नीचर? डबल बेड, डाइनिंग टेबल, सोफा, स्टील की आलमारी फिज–विज़। यों मेरा क्या है! सास–ससुर यों ही बदनाम हैं बेचारे। दिया अपने ही बेटे–दामाद को। मेरा कौन–सा हक बनता है इस्तेमाल करने का? पर दिल में तसल्ली रहे है कि नहीं? बेटे की गृहस्थी बन रही है, इससे ज्यादा माता–पिता को चाहिए भी क्या?"* [348]

विवाह दो दिलों का मिलन होता है, किन्तु अगर ये दिल एक दूसरे से मेल नहीं खाते हों तो यह अनमेल विवाह हो जाता है। कभी–कभी माँ–बाप की मर्जी या कभी अपनी ही महत्वाकांक्षा के लिये हम ऐसा रिश्ता जोड़ लेते हैं। जिसे निभाना बहुत मुश्किल हो जाता है। पति–पत्नी में भिन्नता किसी भी स्तर की हो सकती है। कभी–कभी अशिक्षा के कारण लोग कम उम्र की लड़कियों का विवाह अधिक उम्र के पुरुष से कर देते हैं। ऐसे विवाह

किसी भी परिस्थिति में सफल नहीं हो पाते।

चंद्रकांता जी ने अपनी कहानियों में दहेज प्रथा, अनमेल विवाह से जूझती नारियों का भावपूर्ण चित्रण किया है। उनकी कहानी *'उसका रास्ता'* मृणाल के दुखद और असफल विवाहित जीवन को दर्शाती है। मृणाल अपने पति को देवता के समान सम्मान देती है, लेकिन उसका पति उसके साथ क्रूर और अमानवीय व्यवहार करके इस दिव्य छवि को खंडित करता है। वह शुद्ध वैवाहिक रिश्ते की पवित्रता को नष्ट करता है। उसके देवर सभी सीमाओं को पार करते हैं, न केवल देवर या भाभी की तरह हानिरहित छेड़छाड़ करते हैं, बल्कि अनुचित शारीरिक स्पर्श भी करते हैं। उसका पति चुपचाप उनके कार्यों को मंजूरी देता है। वह भयावहता के साथ याद करती है, *"क्या वह उस रात को भूल पाएगी जब उस भले– आदमी ने उसकी मनुहार करते हुए कहा था कि वह उसके बॉस की खातिरदारी करने रात भर के लिए चली जाए।"* [349] अपने पति के इस घोर दुर्व्यवहार और विश्वासघात के कारण मृणाल उससे अलग होने का फैसला करती है, जिससे उसका विवाह टूट जाता है।

चन्द्रकान्ता जी की कहानी *'रामबिल्ले की दस्तक'* में चुन्नी का पति उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार करता है। शादी के बाद, उसके प्रति उसका व्यवहार काफ़ी बदल जाता है। वह चुन्नी की कई कथित खामियों की आलोचना करता है और उसे उसके माता–पिता के घर वापस भेज देता है। वह अपनी शिकायतें उसके परिवार को बताते हुए कहता है– *"नाई के हाथ शिकायतों, खामियों व अपराधों की लम्बी फेहरिस्त भी भिजवा दी, जैसे कि रात को खर्राटे भरती है, शाम को जल्दी सो जाती है, यखनी में मिर्च और 'बोस्तहाख में हल्दी डाल देती है। यह औरत नहीं कपड़ा धोने की मशीन हैं। धोने–पछोरने की खब्त है इसे। साबुन इतना खर्च करती है कि दो मास और रखूँ तो भीख माँगने की नौबत आ जाये, फिर सूरत–सीरत भी ऐसे कि दोस्तों में नाक कट जाय।"* [350] चुन्नी एक गरीब परिवार से आती है, जो उसके शोषण और पीड़ा का मुख्य कारण है। उसकी मौसी कहती है, *"गरीबी सब*

बुराईयों–अपराधों की जड़ है, नहीं तो लड़की सोना है। पिछले जन्म की पेटजायी है मेरी।" [351] इस तरह, छोटी–छोटी बातों और अहंकार के टकराव के कारण उनके वैवाहिक जीवन में कड़वाहट पैदा होती है। नतीजतन, उनका विवाह असफल हो जाता है।

मंजुल जी ने अपनी कहानियाँ अनमेल विवाह को चित्रित किया है। मंजुल भगत जी की कहानी *'पायदान'* पति–पत्नी के बीच जटिल रिश्ते और पत्नी मुक्ता के अथक संघर्ष को दर्शाती है। मुक्ता अपने पति मुकेश को शराब छोड़ने के लिए कई प्रयास करती है। अपनी हताशा में, वह खुद भी शराब पीती है, उम्मीद करती है कि इससे मुकेश को शराब छोड़ने का प्रोत्साहन मिलेगा। हालांकि, मुकेश शराब पीने का आदी बना रहता है। धीरे–धीरे, मुक्ता खुद को उसके दबंग व्यक्तित्व और अथक दुर्व्यवहार से घुटन महसूस करती है। मुक्ता के पिता, उसकी भलाई के लिए बहुत चिंतित हैं, उसे वापस अपने घर ले जाना चाहते हैं। वह अपना दुख व्यक्त करते हुए कहते हैं, *"दुःख होता है देखकर, बेटी! तुझ–सी अंगारा लड़की, इस घर का पायदान कैसे बन गई?"* [352] मुक्ता की सदमे की प्रतिक्रिया को देखकर, वह आगे कहते हैं, *"तो और क्या रह गई है तू? देख तो रहा हूँ, माथे पर 'स्वागतम्' छापकर दहलीज़ पर बिछी है, जिससे अपने पैरों की अभागी भटकन पोंछ–झटककर, मुकेश जब–तब घर आ सके।"* [353] इन कठोर शब्दों और अपनी दुर्दशा के स्पष्ट चित्रण के बावजूद, मुक्ता खुद को मुकेश को छोड़ने में असमर्थ पाती है।

मंजुल जी की कहानी *'अंधे मोड़'* उजाला, अमूल्य, राजुल और राजुल की बहन के जीवन पर केंद्रित है, जो एक भारतीय महिला के पारंपरिक व्यक्तित्व को दर्शाती है। राजुल का जीजा बहुत ही दुर्व्यवहारी था, अक्सर उसकी बहन को पीटता था, लेकिन हिंसा के बावजूद, उसकी बहन उसे छोड़ने के लिए खुद को तैयार नहीं कर पाई। उजाला, एक कल्पनाशील लड़की है जो कविता के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करती है। अमूल्य से प्यार करती है और उससे शादी करती है। हालाँकि, उसका वैवाहिक सुख

अल्पकालिक है, क्योंकि अमूल्य की शराब पीने की आदत जल्द ही उसकी खुशी को चकनाचूर कर देती है। जब उजाला अपनी सहेली राजुल को अमूल्य की शराब की लत के बारे में बताती है, तो राजुल उजाला को उसे छोड़ने की सलाह देती है। हालाँकि, उजाला इस सुझाव को खारिज कर देती है। तब राजुल को याद आता है कि उसकी बहन ने एक बार ऐसी ही स्थिति में क्या कहा था– *"मन नहीं मानता, राजुल!"* [354]

आधुनिक युग में नारी जागरण की भावना तथा शिक्षा व्यवस्था ने नारी के आत्मबल को बढ़ावा दिया है। वह विवाह–संस्था को नकारने लगी है और दहेज से मुक्ति पाने के लिए विद्रोह कर उठती है। दहेज–प्रथा संबंधी विवेचन से स्पष्ट है कि आज का कहानीकार जानता है कि इस अर्थ–आधारित समाज में व्यक्ति इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि पैसा। ऐसे परिवेश में इन सब विभीषिकाओं से उबर कर स्त्री को अपना बोझ स्वयं संभालना होगा।

6.5 देह–मुक्ति का प्रश्न

नारी की देह का शोषण पुरातन समय से चला आ रहा है। पुरुष समाज ने नारी को मात्र भोग्या ही समझा है। समाज व परिवार इसलिए बना है ताकि मनुष्य भय मुक्त वातावरण में जीवन यापन करे, किन्तु नारी को यहाँ भी निराशा ही मिलती है। शारीरिक शोषण से नारी का तन और मन विक्षिप्त हो जाता है। समाज में आधुनिकता के नाम पर नए–नए प्रयोग हो रहे हैं। जहाँ एक ओर विज्ञान का विकास हो रहा है, वहीं दूसरी ओर नैतिकता का पतन हो रहा है। स्त्रियों की आजादी समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है, किन्तु जब आधुनिकता की दौड़ में स्त्रियाँ अपना अस्तित्व ही खतरे में डाल देती हैं तो स्थिति कष्टदायी हो जाती है।

वेश्या नारी–समाज का एक ऐसा अंग है, जिसे समाज अपना मानने में हिचकिचाता है। नारी की यह भूमिका सामाजिक भूमिका होते हुए भी सामाजिक संबंधों के सामान्य चैखटे

में नहीं आ पाती। विडम्बना यह है कि वेश्या नारी एक प्रकार से अपने नारी समाज से कट कर रह जाती है और उनकी भूमिकाएँ असामाजिक बन जाती हैं। वेश्यावृत्ति मूलतः सामन्तशाही तथा पूँजीवादी समाज की देन है, जहाँ पुरुष शासक और नारी शासित है। स्त्री और पुरुष के लिए समाज के भिन्न–भिन्न नियम हैं। जो कार्य पुरुष के लिए क्षम्य है, वही नारी के लिए वर्जित है। पुरुष का अनैतिक आचरण देखकर भी अनदेखा कर दिया जाता है और दूसरी ओर सच्चरित्र नारी का एक रात्रि को भी बाहर रह जाना अक्षम्य अपराध माना जाता है। यही नहीं नारी को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के आश्रय में रहना पड़ता है। फलतः जब नारी किसी कारणवश पुरुष की छत्रछाया से वंचित होकर भटक जाती है तो वेश्या बन जाती है।

नारी के वेश्या बनने के कारणों में सबसे प्रमुख कारण आर्थिक संघर्ष है। नये कहानीकारों ने भौतिक मूल्यों को सर्वग्राही और विध्वंसक मानते हुए भूख और काम संबंधी जो कहानियाँ लिखी हैं, उनमें आर्थिक विवशता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

चंद्रकांता ने अपनी कहानियों में वेश्यावृत्ति के मुद्दे को प्रमुखता से उठाया है। इस सामाजिक समस्या में महिलाएँ केंद्रीय भूमिका में हैं। इस पेशे में जबरन धकेले जाने से महिलाएँ न केवल शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न झेलती हैं, बल्कि समाज में उपेक्षा और अवमानना का भी शिकार बनती हैं। समाज इन महिलाओं को अपराधी और गलत काम करने वाला मानता है, बजाय इसके कि उन्हें इस पेशे में धकेलने वालों को दोषी ठहराया जाए।

चन्द्रकान्ता जी की कहानी *'नूराबाई'* में, बढ़ते पारिवारिक खर्च और गंभीर आर्थिक तंगी के कारण नूरा और सूफी की ज़िंदगी उलझने लगती है। अपने चार बच्चों का पेट पालना उनके लिए मुश्किल होता जा रहा है। सूफी एक केमिकल फैक्ट्री में काम करता है, लेकिन उसे शराब की लत लग जाती है, जिससे उसकी सेहत पर बुरा असर पड़ने लगता है। आर्थिक

तंगी के चलते परिवार को जद्देशाह से मदद मिलती है, जिसे नूरा अपना भाई मानती है। वह अपनी कृतज्ञता और जिज्ञासा व्यक्त करते हुए कहती है, *"किस जन्म का भाई–बन्द रहा है तू जद्देशाह, जो नूरा के लिए तेरे भीतर दर्द उग आया?"*[355] हालांकि, जद्देशाह नूरा के भरोसे को तोड़ता है। वह न केवल उसके साथ अवैध शारीरिक संबंध बनाता है, बल्कि उसकी बेटी हसीना की इज्जत भी तार–तार कर देता है। जद्देशाह नूरा को नूराबाई बनने के लिए मजबूर करता है, क्यों कि वह वेश्यावृत्ति के व्यापार में संलिप्त था। वह उसे नीचा दिखाते हुए कहता है, *"नूराबाई, तुझे गुमान किस बात का? चार हरूफ तो पढ़ी नहीं। कोई करब हाथ में होता तो सी–पिरोकर कुछ कमा लेती। दो घर बर्तन घिसने से तू हॉफने लगती है। गुस्सा हेकड़ी उसे सोहते हैं, जिसके पल्ले पैसा धेला हो। तू मेरे कहे रह और बच्चों को बढ़ाकर, खाबंद की दवा–दारू कर और बुची खुची ठस्से से गुजार।"* [356] इस प्रकार, जद्दोजहद, नूरा की खराब आर्थिक स्थिति का फायदा उठाकर उसे अपनी पहचान नूरा से बदलकर नूराबाई करने पर मजबूर कर देता है।

चित्रा मुदगल जी की कहानी *'फातिमाबाई कोठे पर अब नहीं रहती'* में लेखिका वेश्यावृत्ति की समस्या पर गहराई से विचार किया गया है। पत्रकार फातिमाबाई के वेश्यालय में जाकर वहाँ रहने वाली वेश्याओं से साक्षात्कार करती है। पत्रकार के साथ आए हवलदार पवार उनकी भयावह जीवन स्थितियों का वर्णन करते हुए कहते हैं, *"उनकी अभावग्रस्त जिन्दगी वाकई नरक है नरक। आप चाहें तो एकाध औरत को हम यही बुलवाकर आपसे मुलाकात करवाए देते है।"* [357] वेश्यालय में रहने वाली रेशमा अपनी दुर्दशा के लिए अपनी सौतेली मां को दोषी मानती है। वह पत्रकार को बताती है, *"वह गलत लोगो की सहानुभूति का शिकार होकर काम दिलाये जाने के प्रलोभन में दलालों के शिंकजे में फंस गयी। ऐसे ही एक रात उसने अपने को फातिमाबाई के कोठे पर पाया।"* [358] वेश्यावृत्ति के जाल में अक्सर वे महिलाएँ फंस जाती हैं, जो काम की तलाश में इस घिनौने धंधे के चंगुल में फंस जाती हैं। हमारा तथाकथित सभ्य और कुलीन समाज उन्हें यह सोचने का एक पल भी नहीं देता

कि उन्होंने क्या खोया और क्या पाया।

मधु काँकरिया की कहानी *'फाइल'* समाज में व्याप्त वेश्यावृत्ति की कठोर वास्तविकताओं को उजागर करती है। यह कहानी कलकत्ता में काम करने वाली वेश्याओं के सामने आने वाली चुनौतियों को उजागर करती है। वेश्यावृत्ति के दलदल से बाहर निकलने के बाद भी समाज इन महिलाओं का सम्मान करने में विफल रहता है। सिनी आशा नामक एक संगठन सड़कों, प्लेटफार्मों, झुग्गियों और फुटपाथों पर रहने वाली महिलाओं के बच्चों का समर्थन करने के लिए काम करता है। इस संगठन के प्रत्येक बच्चे के पास अपनी परिस्थितियों का दस्तावेजीकरण करने वाली एक व्यक्तिगत फाइल है।

इस कहानी के केंद्र में पिंकी नाम की एक लड़की है। उसे उसकी अपनी माँ ने वेश्यावृत्ति की गहराइयों में धकेल दिया है। पिंकी को उसकी माँ द्वारा घर लाए गए ग्राहकों द्वारा बलात्कार का शिकार होना पड़ता है। अपनी माँ द्वारा किए गए दुर्व्यवहार के कारण, पिंकी अपनी माँ के नाम के मात्र उल्लेख पर शिकारी कुत्ते की तरह क्रोधित हो जाती है। वह अपने अतीत से बहुत घृणा करती है। जब पिंकी मानसिक रूप से स्थिर होती है, तो उसके अतीत के बारे में पूछे जाने पर वह असंगत तरीके से जवाब देती है, जिससे लोगों को लगता है कि वह मानसिक रूप से बीमार है और परिणामस्वरूप उसे मानसिक अस्पताल में भर्ती कराया जाता है। भावनात्मक लड़की पिंकी को अंततः मानसिक अस्पताल से सिनी आशा संस्था में वापस लाया जाता है। पिंकी को एक ऐसे युवक से प्यार हो जाता है जो उसके जीवन में खुशियाँ लेकर आता है। हालाँकि, जैसे–जैसे उनका रिश्ता और गंभीर होता जाता है, युवक ऑफिस क्लर्क को पिंकी की फ़ाइल पढ़ने के लिए रिश्वत देता है, जिसमें उसके अतीत की कहानी होती है। फ़ाइल पढ़ने के बाद, वह उससे भिड़ जाता है और कहता है, *"मैंने तुम पर कितना विश्वास किया...लेकिन तुम.... वेश्या की बेटी वेश्या निकली।"* [359] हालाँकि पिंकी वेश्यावृत्ति में शामिल होने के लिए ज़िम्मेदार नहीं है, लेकिन उसे अपनी माँ

के कार्यों के परिणाम भुगतने होंगे। लेखक पिंकी से कहता है, *"फाइलों का यह देश, यहाँ फाइलें सिर्फ तैयार की जाती हैं, पढ़ी कहाँ जाती हैं।"* [360] इस कहानी के माध्यम से, लेखक यह दर्शाता है कि एक महिला के वेश्यावृत्ति से बचने के बाद भी, समाज उसे वह सम्मान देने से इनकार करता है, जो उसे मिलना चाहिए था।

मधु कांकरिया जी की कहानी *'जलकुम्भी'* में लेखक ने प्रणीता नाम की एक अनाथ लड़की के जीवन का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। उसके जन्म के समय, उसकी माँ ने किसी अज्ञात कारण से उसे उसके जन्म प्रमाण पत्र के साथ एक टोकरी में रख दिया था, और बाद में उसे नीदरलैंड के एक जोड़े ने गोद ले लिया था। हालाँकि, जैसे–जैसे वह बड़ी होती जाती है, प्रणीता अपनी माँ की तलाश शुरू करती है, यह सवाल करती है कि उसे क्यों छोड़ा गया और यह भी कि क्या उसकी माँ एक वेश्या थी। एक दिन, प्रणीता की मुलाक़ात सूर्यबाला नाम की एक महिला से होती है, लेकिन कुछ सामाजिक कलंक के कारण सूर्यबाला उसे स्वीकार करने से इनकार कर देती है। प्रणीता इस मुलाकात का वर्णन करती हैं: *"मुझे कुछ क्षणों तक अपलक देखती रही वह। उफ उसका सौम्य वह देखना ! जैसे अभी–अभी उगी थी वे आँखे ! उसका सौम्य चेहरा धीरे–धीरे उदास, धुँधला और फिर स्याह हुआ। उसकी आँखों में कुछ उगा, शायद डर ! उसकी आँखों से कुछ यहा–शायद जल ! उसकी सुतवाँ नाक की झिलमिलाती लौंग को देखते हुए मैं दो कदम आगे बढ़ने को हुई कि अपना दरवाजा थोड़ी तेजी से बन्द करते हुए मुण्डी हिलाते हुए भॉय–भॉय शब्दों में बड़बड़ाते हुए कहने लगी वह, मुझे देरी हो रही है काम पड़ा हुआ है।"* [361] मधु कांकरिया जी की इस कहानी में दिखाया गया है कि वेश्याओं के बच्चों के लिए जीवन कितना कठिन हो सकता है, जिनकी माँएँ शर्म के कारण उन्हें स्वीकार नहीं करती हैं और इसके बजाय उन्हें अनिश्चित भविष्य के लिए छोड़ देती हैं।

वेश्यावृत्ति की पृष्ठभूमि की जाँच करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इस

स्थिति के लिए केवल वेश्या ही जिम्मेदार नहीं है, बल्कि पूरा समाज जिम्मेदार है। निस्संदेह, बदलती मानसिकता के साथ महानगरों में महिलाओं का एक वर्ग ऐसा भी है जो स्वेच्छा से इस जीवनशैली की ओर प्रवृत्त हो रहा है। हालांकि, वेश्या द्वारा किए जाने वाले अनैतिक कार्य केवल बाह्य व्यवहार हैं, जिन्हें उसे आर्थिक और सामाजिक संघर्षों के कारण अपनाना पड़ता है। वेश्यावृत्ति में लिप्त महिला भी अपने हृदय में एक अच्छी गृहिणी की भावना रखती है, लेकिन सामाजिक व्यवस्था उसे इस स्थिति से ऊपर उठने की अनुमति नहीं देती।

6.6 प्राचीन रुढियों का विरोध

भारतीय सामाजिक एवं साँस्कृतिक गतिविधियों का मूलाधार धर्म रहा है। यूं तो धर्म का उद्देश्य मानव को कर्म के लिए प्रेरित करना है, लेकिन धर्मान्ध जनता धर्म और दर्शन के सार तत्वों की अनभिज्ञता के कारण अन्धविश्वासों एवं रूढ़ियों को धर्म के नाम से जानने लगती है। यहाँ तक कि साम्प्रदायिक मतभेद भी धर्म के नाम से जानने लगती है। इन बातों ने धर्म के सही स्वरूप को खोखला कर दिया है।

जहाँ स्वतंत्रता–परवर्ती कथा लेखकों ने नारी के पारम्परिक स्वरूप की चर्चा करते हुए उनकी रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासजन्य धर्मान्धता का चित्रण किया है वहीं उन्होंने एक ऐसी नारी का चित्रण करने की चेष्ट की है जिसे ईश्वर के अतिरिक्त किसी गुरु में विश्वास करना कदापि स्वीकार नहीं तथा पुनर्जन्म उसे एक ढकोसला लगने लगा।

ममता कालिया जी ने अपनी कहानियों में विविध रुढियों का चित्रण किया है। ममता जी की कहानी *'जनम'* में घर में लड़की के जन्म पर होने वाले तनाव के प्रति अपना विरोध व्यक्त किया है। *"जिस दिन वह पैदा हुई, कोई त्यौहार नहीं था। बाहर या घर में कहीं कोई जश्न नहीं मना। उलटे घर में तो मातम ही मना। दादी ने चूल्हा भी नहीं जलाया। लालटेन की मद्धम रोशनी में सिर पर हाथ रखे वे देर तक तख्त पर बैठी रहीं। बड़े लाड़ले की छोटी बेटी*

के लिए उनके मन में सिर्फ नामंजूरी थी। उन्हें बड़े तीखेपन से अपनी तीनों बेटियों का ध्यान आया जिनके रहते वे कभी बेफिक्री से पाखाने तक में नहीं बैठ सकी। तीनों प्रसूतियों पर उनका दिल कैसा टूटा था, कैसी अपमानित हुई थी वे अपनी ससुराल में...।" [362]

मालती जोशी जी की कहानी *'कोखा का दर्प'* कहानी में लेखक ने गहरी रूढ़िवादी मानसिकता का चित्रण किया है। जब बाबूजी की बहन शीला अपनी बहू और बेटे के साथ मायके आती है, तो बाबूजी की प्रतिक्रिया उनके पुराने विचारों को दर्शाती है। वह पूरा दिन अपनी बहू के आधुनिक रूप को देखकर भौंचक्के रह जाते हैं– *"बहू के कटे बाल, रंगे होंठ, बढ़े हुए नाखून, खुले ब्लाउज और ऊँचे जूतों को लेकर बाबूजी दिन–भर नाक–भौं सिकोड़ते रहते। उसके सिर न ढकने पर उन्हें कोफ्त होती। वह उनके सामने बैठकर पेपर पढ़ने लगती तो उनका पारा सातवें आसमान पर चढ़ जाता। जिस दिन उन्होंने उसे पति को नाम से पुकारते हुए सुना था, उस दिन तो हद ही हो गयी थी।"* [363] बाबूजी की मानसिकता पारंपरिक मूल्यों में निहित है, जो महिलाओं की आधुनिकता को नापसंद करते हैं और उन्हें सामाजिक बंधनों और सीमाओं में बंधे रहने के लिए तरजीह देते हैं।

मालती जी की कहानी *'सती'* में लेखिका ने कान्ता की सास की अंधविश्वासी मानसिकता को दर्शाया है, जो सुबह सबसे पहले अपनी विधवा बहू का चेहरा देखना अशुभ मानती है। हालाँकि विधवा होना कोई पाप नहीं है, लेकिन ऐसी दुखद स्थिति में एक महिला को सहारा देने के बजाय इसे एक अपशकुन के रूप में देखना एक गहरी पारंपरिक मान्यता है। मुख्य पात्र कान्ता बताती है, *"सुबह–सुबह अगर मैं सास के सामने पड़ जाऊँ तो उनके हाथों के तोते उड़ जाते हैं। दिन–भर जिस–तिस देवता को मनाती रहती हैं कि कुछ अशुभ न घट जाए।"* [364] यह चित्रण इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे कांता की सास अंधविश्वास में उलझी हुई है और मुश्किल समय में कान्ता को वह करुणा और सहायता

प्रदान करने में विफल रहती है जिसकी उसे आवश्यकता है।

कृष्णा अग्निहोत्री ने अपनी कहानियों में विभिन्न पात्रों के माध्यम से सामाजिक बुराइयों को संबोधित किया है। कृष्णा जी की कहानी कहानी *'नीलोफर'* नीलम एक हिंदू डॉक्टर है जो प्यार के कारण अहमद नामक एक मुस्लिम व्यक्ति से शादी करती है। हालाँकि, उनकी शादी के बाद, उसकी सास जोर देती है कि वह बुर्का पहने। अपनी माँ से प्रभावित होकर, अहमद भी नीलम को बुर्का पहनने के लिए कहता है, जिससे उनके बीच विवाद होता है। नीलम तर्क देती है, *"तुम्हारी कई बहनें हैं, जो बुर्का नहीं पहनती और मैं तो डॉक्टर हूँ....। तुम क्या अम्मी से मेरे लिए एक लफ्ज भी नहीं बोलोगे ?' 'तुम क्या जानती नहीं कि वे इस शादी के खिलाफ थी ? कुछ कहूँगा तो बात बिगड़ेगी, बनेगी नहीं, नीलू ! तुम दो मिनट बुर्का ओढ़ ही लेती.... मोटर में तो उसे उतारना ही था ना एडजस्टमेंट हो जाता। इसके सिवा हो भी क्या सकता है ?' अहमद कहता है। 'बुर्का.... और मैं? क्या कहते हो तुम?"* [365] नीलम अंततः बाहर जाने से मना कर देती है लेकिन बुर्का न पहनने के अपने फैसले पर अडिग रहती है। तनाव तब और बढ़ जाता है जब उसकी सास नीलम के छोटे बेटे पर धार्मिक रीति–रिवाज थोपने की कोशिश करती है, जैसे नमाज पढ़ना और *'अल्लाह'* कहकर प्रार्थना करना। नीलम चुपचाप इन थोपनों का विरोध करती है, उसे लगता है कि उसके बेटे की मासूमियत को धार्मिक अपेक्षाओं के द्वारा हेरफेर किया जा रहा है। इस कहानी में, ऐसा प्रतीत होता है कि जहाँ सास पारंपरिक मूल्यों का प्रतीक है, वहीं नीलम एक आधुनिक महिला के आदर्शों का प्रतिनिधित्व करती है।

कृष्णा जी की कहानी *'निष्कृति'* की एक पात्र ईरा भी सती प्रथा के विरुद्ध खड़ी है। मीरा ने अपने पति के जीवित रहते हुए भी श्रृंगार करना छोड़ दिया था। वह केवल अपने पति के लिए श्रृंगार करना या कोई प्रयास नहीं करना चाहती थी। जब उसके पति की मृत्यु हो जाती है, तो उसके ससुराल वाले मीरा से सती होने की मांग करते हैं, लेकिन मीरा इस

परंपरा का दृढ़ता से विरोध करती है। वह कहती है, *"मनुष्य का जन्म–मरण ईश्वर की इच्छा से चलता और समाप्त होता है। यदि पत्नी के मरने पर पति जीवित नहीं जलता तो पत्नी क्यों जलेगी?"* [366] अपने विरोध के बाद मीरा को अपने माता–पिता और ससुराल वालों दोनों से यातनाएँ सहनी पड़ती हैं। इसके बावजूद मीरा दृढ़ निश्चयी बनी रहती है, आत्मविश्वास के साथ जीवन जीती है और कृष्ण की भक्ति में लीन रहती है।

चंद्रकांता की कहानियाँ धर्म की आड़ में महिलाओं के शोषण को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं। वे इस बात पर प्रकाश डालती हैं कि कैसे महिलाओं को धार्मिक मानदंडों द्वारा उचित ठहराए गए गंभीर उत्पीड़न और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। ये कहानियाँ उन महिलाओं द्वारा झेले जाने वाले गहरे दर्द और अन्याय को उजागर करती हैं जो ऐसी हानिकारक प्रथाओं के अधीन हैं, जो सामाजिक सुधार की आवश्यकता को दर्शाती हैं।

चन्द्रकान्ता जी की कहानी *'पृष्ठभूमि'* में पत्रकार अपनी पत्रिका *'निर्माण'* के लिए एक साक्षात्कार के लिए मठ के मुख्य पुजारी से मिलने जाती है। उसका उद्देश्य धार्मिक और आस्था से जुड़े मुद्दों पर पुजारी के दृष्टिकोण को जानना है। खास तौर पर, वह सती प्रथा पर उनके विचार जानना चाहती है, जिसका उन्होंने पहले समर्थन किया था। पत्रकार पुजारी से पूछता है, *"मनुष्य का जन्म–मरण ईश्वर की इच्छा से चलता और समाप्त होता है। यदि पत्नी के मरने पर पति जीवित नहीं जलता तो पत्नी क्यों जलेगी?"* [367] यह सवाल सुनकर पुजारी स्पष्ट रूप से क्रोधित हो जाता है। वह सती प्रथा का बचाव करने और अपने रुख को मान्य करने के लिए विभिन्न प्राचीन धार्मिक ग्रंथों का हवाला देना शुरू कर देता है। पुजारी का नौकर फिर सती प्रथा का समर्थन करने वाले साक्ष्य के रूप में *'याज्ञवल्क्य स्मृति'* का हवाला देकर चर्चा में योगदान देता है। सेवक समझाता है, *"ये तो वेदों के समान है। यह देखिए ऋग्वेद के दशम मंडल के दूसरे सूक्त के बाइसवें तेईसवें दो मंत्र है कि जो स्त्री अपने पति के*

साथ सती होती है, वह माता–पिता और पति के कुल को तारती है।" [368]

प्राचीन काल की महिलाओं की तुलना में आधुनिक नारी में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। प्राचीन रीति–रिवाजों से प्रभावित होने के बावजूद, वह अब आधुनिक चुनौतियों को स्वीकार करने की क्षमता रखती है। दूसरे शब्दों में, आधुनिकता के संदर्भ में, वह सभी सीमाओं और सीमाओं को पार करते हुए एक दुर्जेय शक्ति के रूप में उभरने लगी है। फिर भी, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि सभ्यता की नई रोशनी ने महिलाओं को एक नई पहचान दी है, जिससे परिवार के भीतर उनकी प्रतिष्ठा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आज महिलाओं को 'फुट–शू' जैसे अपमानजनक शब्दों से पुकारना बर्बरता और अज्ञानता का प्रतीक माना जाता है। इन नई परिस्थितियों में, एक शिक्षित महिला अपनी जिम्मेदारियों को बड़ी योग्यता के साथ पूरा करने में पूरी तरह सक्षम है। 21वीं सदी के लगभग सभी लेखकों ने पारंपरिक मूल्यों और बाधाओं के खिलाफ रुख अपनाया है। उन्होंने उन मूल्यों का जमकर विरोध किया है, जो महिलाओं के विकास में बाधा डालते हैं और उनकी स्वतंत्रता और स्वायत्तता का हनन करते हैं।

6.7 निष्कर्ष

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में स्त्री विषयक चिंतन ने साहित्य के माध्यम से समाज में महत्वपूर्ण बदलाव लाने का कार्य किया है। इन लेखिकाओं ने न केवल स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को उजागर किया है, बल्कि उन्होंने समाज के पारंपरिक ढाँचों को चुनौती दी है और महिलाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रयास किया है।

महिला लेखिकाओं की कहानियों में आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रता, और आत्म–सम्मान जैसे विषय प्रमुखता से उभरकर आए हैं। इन लेखिकाओं ने अपने पात्रों के माध्यम से

महिलाओं की आकांक्षाओं, संघर्षों, और उपलब्धियों को बड़े ही संवेदनशीलता और गहराई से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियाँ समाज में महिलाओं की वास्तविक स्थिति को प्रदर्शित करती हैं और पाठकों को सोचने पर मजबूर करती हैं कि कैसे समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारने की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकते हैं। इसके अलावा, इन लेखिकाओं ने समाज में लैंगिक समानता और न्याय की आवश्यकता को भी रेखांकित किया है। उनकी कहानियाँ महिलाओं की आवाज़ को सशक्त बनाने और उनकी समस्याओं को विश्व मंच पर लाने का एक सशक्त माध्यम बनी हैं।

लेखिकाओं की कहानियों में स्त्री विषयक चिंतन ने न केवल साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के प्रयासों को भी बल दिया है। यह स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो आने वाले समय में और भी महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। इन कहानियों ने साबित कर दिया है कि साहित्य समाज का दर्पण है, जो बदलाव का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

अध्याय–7

उपसंहार

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में 21वीं सदी को महिला लेखिकाओं की सदी कहा जाता है। ऐतिहासिक रूप से, महिलाओं को पुरुषों के अधीन माना जाता रहा है, जो समाज के अलग और अक्सर दमनकारी नियमों के अधीन हैं। पुरुषों ने पारंपरिक रूप से कई तरह की स्वतंत्रता का आनंद लिया है, जबकि महिलाओं को गुलामी, अन्याय और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा है। यह पितृसत्तात्मक परंपरा सदियों से चली आ रही है, जिसने जीवन के कई क्षेत्रों में लैंगिक असमानताओं को कायम रखा है।

इस पुरुष–प्रधान समाज में, महिलाओं ने पुरुषों द्वारा उन पर लगाए गए उत्पीड़न और उत्पीड़न के खिलाफ अपनी चुप्पी तोड़नी शुरू कर दी है। उन्होंने कलम के रूप में तलवार उठाई है, अपने प्रतिरोध को साहित्य के माध्यम से दर्ज कराया है। अपनी असहमति व्यक्त करने वाली अग्रणी महिला लेखकों में कृष्णा सोबती, चंद्रकांता, ममता कालिया, सूर्यबाला, चित्रा मुद्गल और नासिरा शर्मा आदि शामिल हैं। इन लेखिकाओं ने हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, खासकर कहानी की शैली के माध्यम से, जिसे साहित्यिक अभिव्यक्ति के सबसे पुराने और सबसे गहन रूपों में से एक माना जाता है। कहानी शैली की जड़ें भारतीय संस्कृति में गहरी हैं, जिसकी उत्पत्ति 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश' जैसे प्राचीन ग्रंथों में देखी जा सकती है। इन शुरुआती रचनाओं ने भारतीय साहित्य में कहानी कहने की नींव रखी और कई समकालीन महिला लेखिकाओं ने इस परंपरा को जारी रखा है, कहानियों का उपयोग सामाजिक संदेश देने और प्रचलित मानदंडों की आलोचना करने के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में किया है। अपनी कहानियों के माध्यम से, उन्होंने

समाज में मौजूद विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक विसंगतियों पर प्रकाश डाला है।

21वीं सदी की प्रमुख महिला कहानीकारों ने साहित्य के व्यापक और विविधतापूर्ण क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन लेखिकाओं ने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज की जटिलताओं, स्त्री–जीवन की चुनौतियों, और समकालीन समय की सामाजिक–राजनैतिक मुद्दों को उजागर किया है। उनकी कहानियाँ न केवल साहित्य को समृद्ध करती हैं, बल्कि पाठकों के मन में विचारों की नई लहरें भी उत्पन्न करती हैं।

आज की महिला लेखिकाएँ विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक परिवेश से आती हैं और उनकी रचनाएँ इन विविधताओं को प्रतिबिंबित करती हैं। उनके लेखन में महिलाओँ की समस्याएँ, संघर्ष, और उपलब्धियों का यथार्थ चित्रण होता है। वे घरेलू हिंसा, लैंगिक असमानता, और सामाजिक प्रतिबंधों के विरुद्ध आवाज उठाती हैं। इनके लेखन में नारीवाद, स्वतंत्रता, और आत्मनिर्भरता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे प्रमुखता से उभरते हैं। इन लेखिकाओं की कहानियों में समकालीन समाज की विभिन्न समस्याओं, जैसे कि जातिवाद, वर्ग भेदभाव, और वैश्वीकरण के प्रभावों का भी सजीव चित्रण होता है। उनके लेखन में मानवीय संवेदनाओं, रिश्तों, और मानसिक संघर्षों की गहरी समझ दिखती है।

चित्रा मुदगल, ममता कालिया, मधु कांकरिया, चन्द्रकान्ता आदि जैसी लेखिकाओं ने अपने अद्वितीय लेखन–शैली और गहन विषयवस्तु से हिंदी साहित्य को नया आयाम दिया है। उनके लेखन ने साहित्यिक जगत में स्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका को पुनर्स्थापित किया है और भविष्य की लेखिकाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बना है। महिला कहानीकारों के योगदान को समझने से यह स्पष्ट होता है कि 21वीं सदी में साहित्य के क्षेत्र में महिलाओं

की भागीदारी और उनकी सृजनशीलता ने एक नई दिशा प्रदान की है।

21वीं सदी की प्रमुख महिला कहानीकारों का व्यक्तित्व और कृतित्व गहन संवेदनशीलता, सशक्त दृष्टिकोण, और अद्वितीय शैली का प्रतिफल है। इन लेखिकाओं ने अपने समय और समाज की वास्तविकताओं को गहराई से समझा और उन्हें अपनी रचनाओं में सजीव रूप में प्रस्तुत किया। उनकी कहानियाँ समाज की जटिलताओं, स्त्री जीवन की चुनौतियों, और समकालीन सामाजिक–राजनैतिक मुद्दों को उजागर करती हैं।

इन लेखिकाओं ने साहित्यिक क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनायी है। उनकी कहानियों में महिलाओं की समस्याएँ, संघर्ष, और उपलब्धियों का यथार्थ चित्रण होता है। ये कहानियाँ घरेलू हिंसा, लैंगिक असमानता, और सामाजिक प्रतिबंधों के खिलाफ आवाज उठाती हैं, और नारीवाद, स्वतंत्रता, और आत्मनिर्भरता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को प्रमुखता से उठाती हैं।

चित्रा मुदगल जी की कहानियाँ समाज के हाशिए पर खड़े लोगों की जिंदगी को उजागर करती हैं, जबकि चन्द्रकान्ता जी का लेखन स्त्री के आंतरिक मनोविज्ञान और सामाजिक बंधनों पर प्रकाश डालता है। मधु काँकरिया जी ने अपने लेखन में नारी–जीवन की विविधता और उसकी गहरी संवेदनाओं को बखूबी उकेरा है। इन लेखिकाओं की रचनाएँ न केवल साहित्य को समृद्ध करती हैं, बल्कि पाठकों के मन में विचारों की नई लहरें उत्पन्न करती हैं। उनकी लेखनी में समाज के विविध पहलुओं का प्रतिबिंब मिलता है और उनकी कहानियाँ पाठकों को सोचने पर मजबूर करती हैं।

इन महिला कहानीकारों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपनी अद्वितीय शैली, गहन संवेदनशीलता, और सशक्त दृष्टिकोण के माध्यम से साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। उनका लेखन साहित्य को न केवल समृद्ध करता है, बल्कि समाज में

बदलाव लाने का एक सशक्त माध्यम भी बनता है।

21वीं सदी की प्रमुख महिला कहानीकारों की रचनाएँ साहित्य में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। इन लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में सामाजिक अन्याय, भेदभाव, और स्त्री विमर्श के मुद्दों को प्रमुखता दी है। साथ ही, उनके लेखन में व्यक्तिगत संघर्ष, आत्म–खोज, और स्वाधीनता की कहानियाँ भी प्रमुखता से उभरकर आयी हैं।

इन लेखिकाओं की कहानियाँ सामाजिक समस्याओं और व्यक्तिगत अनुभवों का सजीव चित्रण करती हैं। वे घरेलू हिंसा, लैंगिक असमानता, और जातिवाद जैसे मुद्दों पर गंभीरता से विचार करती हैं। उनकी कहानियाँ समाज की कुरीतियों के खिलाफ एक सशक्त आवाज हैं, जो पाठकों को सोचने पर मजबूर करती हैं।

इन लेखिकाओं की रचनाएँ केवल सामाजिक मुद्दों तक सीमित नहीं हैं। उन्होंने व्यक्तिगत संघर्षों और आत्म–खोज की कहानियों के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को भी गहराई से समझा और प्रस्तुत किया है। उनके लेखन में स्त्रियों की आंतरिक भावनाओं, संघर्षों, और उनकी स्वाधीनता की चाह को बखूबी उकेरा गया है।

जया जादवानी, सूर्यबाला और अलका सरावगी जैसी लेखिकाओं की कहानियाँ पाठकों को एक नई दृष्टि देती हैं। वे समाज के विभिन्न पहलुओं पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्य को समृद्ध करती हैं, बल्कि समाज में बदलाव लाने का माध्यम भी बनती हैं। इन महिला कहानीकारों के लेखन ने साहित्य को एक नई दिशा दी है और पाठकों को विचारों की नई लहरों से अवगत कराया है।

21वीं सदी की इन महिला कहानीकारों का साहित्यिक योगदान आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज की धारणाओं को चुनौती दी है और साहित्यिक दुनिया में स्त्रियों के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त किया है।

उनकी कहानियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि स्त्री–लेखन की शक्ति और सामर्थ्य अनन्त है और वह समाज के हर क्षेत्र में परिवर्तन लाने में सक्षम है।

21वीं सदी की प्रमुख महिला कहानीकारों का परिचय और उनके कृतित्व का अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि साहित्य कैसे समाज का प्रतिबिंब होता है और कैसे लेखन के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है। इन लेखिकाओं का योगदान हमेशा साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में याद किया जाएगा।

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों का परिचय करने के पश्चात, यह स्पष्ट हो जाता है कि इन लेखिकाओं ने साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने न केवल साहित्यिक धारा को नया मोड़ दिया, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं को भी उजागर किया। उनकी कहानियों में सामाजिक, सांस्कृतिक, और व्यक्तिगत मुद्दों का प्रभावी चित्रण मिलता है, जिससे पाठक गहरे रूप से प्रभावित होते हैं।

चित्रा मुदगल जी ने अपने लेखन में सामाजिक यथार्थ को बड़े ही संवेदनशीलता से उकेरा है। उनकी कहानियों में निम्न वर्ग के संघर्ष, उनकी चुनौतियों और उनके जीने के अंदाज को देखा जा सकता है। 'भूख' जैसी कहानी में उन्होंने दलित समाज की पीड़ा और उनके संघर्ष को प्रमुखता से उभारा है। उनका लेखन सरल, सहज और संवेदनशील है, जो पाठकों के दिल में गहरी छाप छोड़ता है।

चित्रा मुदगल की कहानियों में समाज के विविध पहलुओं का सजीव चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने लेखन में विशेषकर नारीवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है, जिसमें महिलाओं की समस्याओं, उनकी आकांक्षाओं और उनके संघर्षों का वर्णन है। उनकी कहानियों में नारी चरित्रों की मनोदशा और उनकी संघर्षपूर्ण यात्रा का जीवंत चित्रण है।

मंजुल भगत की कहानियों में समाज के मध्यम वर्गीय जीवन का सजीव चित्रण

मिलता है। उनके लेखन में पारिवारिक संबंधों की गहराई और उनमें आने वाले उतार–चढ़ाव को बड़ी ही संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया गया है। उनके लेखन का मुख्य उद्देश्य समाज की जटिलताओं को सरल भाषा में प्रस्तुत करना और पाठकों को सोचने पर मजबूर करना है।

मंजुल भगत की कहानियाँ मानवीय संबंधों की गहराईयों को छूती हैं। उन्होंने अपने लेखन में परिवार, समाज, और व्यक्तिगत रिश्तों के बीच की जटिलताओं को बखूबी उकेरा है। उनके लेखन में एक प्रकार की सजीवता और मानवीयता है, जो पाठकों को उनके चरित्रों से जोड़ती है और उन्हें अपनी कहानियों के माध्यम से एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है।

मधु कांकरिया ने अपने लेखन में समाज के उपेक्षित वर्गों की कहानियों को प्रमुखता दी है। उनकी कहानियों में समाज के उन वर्गों की पीड़ा और संघर्ष का सजीव चित्रण मिलता है, जिन्हें अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। उनके लेखन में एक प्रकार की संवेदनशीलता और मानवीयता है, जो पाठकों को गहराई से प्रभावित करती है।

मधु कांकरिया की कहानियों में समाज के हाशिये पर खड़े लोगों की आवाज़ को प्रमुखता मिली है। उन्होंने अपने लेखन में उन लोगों की कहानियों को उजागर किया है, जो समाज के मुख्यधारा से अलग–थलग हैं। उनके लेखन में एक प्रकार की सजीवता और संवेदनशीलता है, जो पाठकों को उन चरित्रों के साथ जोड़ती है और उनके संघर्ष को समझने में मदद करती है।

जया जादवानी की कहानियों में आधुनिक समाज की जटिलताओं का सजीव चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने लेखन में समाज के विभिन्न पहलुओं को बड़े ही संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में मानवीय संबंधों की जटिलताओं और समाज की

वास्तविकताओं का प्रभावी चित्रण है।

जया जादवानी ने अपने लेखन में समाज की जटिलताओं और मानव–मन की गहराइयों को बखूबी उकेरा है। उनकी कहानियों में मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने लेखन में समाज के विभिन्न पहलुओं को बड़ी ही संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है, जिससे पाठकों को एक नया दृष्टिकोण मिलता है।

ममता कालिया की कहानियों में नारीवादी दृष्टिकोण प्रमुखता से देखने को मिलता है। उन्होंने अपने लेखन में महिलाओं की समस्याओं, उनकी आकांक्षाओं और उनके संघर्षों का सजीव चित्रण किया है। उनकी कहानियों में नारी चरित्रों की मनोदशा और उनकी संघर्षपूर्ण यात्रा का जीवंत चित्रण है।

ममता कालिया ने अपने लेखन में नारीवादी दृष्टिकोण को प्रमुखता दी है। उनकी कहानियों में महिलाओं की समस्याओं, उनकी आकांक्षाओं और उनके संघर्षों का सजीव चित्रण मिलता है। उनकी कहानियों में नारी चरित्रों की मनोदशा और उनकी संघर्षपूर्ण यात्रा का जीवंत चित्रण है।

चन्द्रकान्ता की कहानियों में भारतीय समाज की जटिलताओं का सजीव चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने लेखन में समाज के विभिन्न पहलुओं को बड़ी ही संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में मानवीय संबंधों की जटिलताओं और समाज की वास्तविकताओं का प्रभावी चित्रण है।

चन्द्रकान्ता ने अपने लेखन में समाज की जटिलताओं और मानव–मन की गहराईयों का सजीव चित्रण किया है। उनकी कहानियों में मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने लेखन में समाज के विभिन्न पहलुओं का यथार्थ स्वरुप प्रस्तुत किया

है, जिससे पाठकों को एक नयी चिन्तन दृष्टि मिलती है।

सूर्यबाला की कहानियों में समाज की जटिलताओं और मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने लेखन में समाज के विभिन्न पहलुओं को बड़ी ही संवेदनशीलता से चित्रित किया है। उनकी कहानियों में मानवीय संबंधों का जीवन्त प्रतिबिम्ब प्रस्तुत किया गया है। सूर्यबाला ने अपने लेखन में समाज की जटिलताओं के प्रत्येक पक्ष का हृदयहारी चित्रण किया है। उनकी कहानियाँ मानवीय संवेदनाओं का समृद्ध कोश लगती हैं।

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों का यह परिचय हमें यह बताता है कि इन लेखिकाओं ने साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने न केवल साहित्यिक धारा को नया मोड़ दिया, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं को भी उजागर किया। उनकी कहानियों में सामाजिक, सांस्कृतिक, और व्यक्तिगत मुद्दों का प्रभावी चित्रण मिलता है, जिससे पाठक गहरे रूप से प्रभावित होते हैं।

इन लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से समाज की जटिलताओं, मानवीय संवेदनाओं और नारीवादी दृष्टिकोण को प्रमुखता से उजागर किया है। उनकी कहानियों में समाज के विभिन्न वर्गों की पीड़ा और संघर्ष का सजीव चित्रण मिलता है, जिससे पाठकों को एक नया दृष्टिकोण मिलता है। यह कहा जा सकता है कि 21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से न केवल साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि समाज में भी एक महत्वपूर्ण बदलाव की नींव रखी है। उनके लेखन ने समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है और पाठकों को गहरे रूप से प्रभावित किया है। इन लेखिकाओं का योगदान साहित्यिक धारा में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ है, और उनकी कहानियों ने समाज में एक नई सोच और दृष्टिकोण को जन्म दिया है। इन लेखिकाओं की कहानियाँ केवल मनोरंजन के लिए नहीं हैं, बल्कि वे समाज के विभिन्न मुद्दों पर सोचने

और विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं। उनकी कहानियाँ हमें यह सिखाती हैं कि कैसे हम समाज की जटिलताओं को समझ सकते हैं और उनसे निपटने के लिए एक नया दृष्टिकोण अपना सकते हैं।

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों का परिचय हमें यह बताता है कि साहित्यिक क्षेत्र में उनका योगदान अनमोल है। उनकी कहानियाँ समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती हैं और पाठकों को एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। इन लेखिकाओं का लेखन केवल साहित्यिक धारा को नया मोड़ देने में ही सफल नहीं हुआ, बल्कि समाज में भी एक महत्वपूर्ण बदलाव की नींव रखी है। उनकी कहानियाँ समाज की जटिलताओं, मानवीय संवेदनाओं और नारी–जीवन की विभिन्न विडम्बनाओंवा को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करती हैं, जिससे पाठक गहरे रूप से प्रभावित होते हैं और एक नया दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं।

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं ने सामाजिक जीवन का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया है। मालती जोशी, कृष्णा अग्निहोत्री, मेहरुन्निशा परवेज, सुधा अरोरा, और अलका सरावगी जैसी लेखिकाएँ न केवल अपनी कहानियों के लिए प्रसिद्ध हैं, बल्कि उन्होंने सामाजिक मुद्दों पर गहरी समझ और संवेदनशीलता का परिचय भी दिया है।

मालती जोशी की कहानियाँ आमतौर पर भारतीय समाज की पारंपरिक धारणाओं और सामाजिक संघर्षों को उजागर करती हैं। उनकी रचनाएँ न केवल सामाजिक विडंबनाओं को स्पष्ट करती हैं, बल्कि महिला के सामाजिक और व्यक्तिगत संघर्षों को भी बारीकी से प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियों में भारतीय समाज की सामाजिक और पारिवारिक संरचनाओं का गहन विश्लेषण मिलता है, जो पाठकों को सोचने पर मजबूर करता है। उनकी लेखनी में सामाजिक असमानता, जातिवाद, और लिंग भेदभाव जैसी समस्याओं का

आलोचनात्मक विश्लेषण प्रमुख है।

कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियाँ विशेष रूप से महिलाओं के अनुभव और संघर्षों को ध्यान में रखते हुए लिखी गयी हैं। वे महिलाओं की स्वतंत्रता, समानता, और सामाजिक न्याय की बात करती हैं। उनकी कहानियों में पात्रों के माध्यम से जीवन–सन्देशऔर सुझाव पेश करती हैं। कृष्णा अग्निहोत्री की लेखनी में न केवल महिला पात्रों के आत्म–संघर्ष की कहानी होती है, बल्कि समाज में बदलाव लाने की भी एक प्रेरणा होती है।

मेहरुनिशा परवेज की रचनाओं में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधताओं के बीच का संघर्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उनके पात्र समाज में व्याप्त धार्मिक भेदभाव, सांस्कृतिक असहिष्णुता, और महिलाओं की स्थिति को उजागर करते हैं। उनकी कहानियों में एक ऐसा संवेदनशील दृष्टिकोण होता है जो समाज के विभिन्न हिस्सों की जटिलताओं को समझने में मदद करता है। वे समाज की विविधताओं और असमानताओं को रचनात्मक तरीके से पेश करती हैं, जिससे पाठक समाज की वास्तविकताओं से रूबरू हो पाते हैं।

सुधा अरोरा की लेखनी में मानवाधिकारों, खासकर महिलाओं के अधिकारों पर गहरा ध्यान दिया गया है। उनकी कहानियों में विशेष रूप से उन मुद्दों को उजागर किया गया है जो समाज में अक्सर अपेक्षित रह जाते हैं। वे सशक्तिकरण, समानता, और सामाजिक न्याय की महत्वपूर्ण बातें करती हैं, और अपने पात्रों के माध्यम से समाज के नैतिक और सामाजिक ढाँचे को चुनौती देती हैं। उनकी कहानियाँ उन समस्याओं को उठाती हैं जो समाज के विकास में बाधक बनती हैं और इन समस्याओं के समाधान के लिए पाठकों को प्रेरित करती हैं।

अलका सरावगी की कहानियों में शहरी जीवन की जटिलताओं और आधुनिक समाज की चुनौतियों को बखूबी प्रस्तुत किया गया है। उनकी लेखनी में सामाजिक और आर्थिक असमानताओं का गहन विश्लेषण मिलता है। अलका सरावगी की कहानियाँ अक्सर

भारतीय समाज की आधुनिक समस्याओं को छूती हैं, जैसे कि मानसिक स्वास्थ्य, परिवार की विघटन, और व्यक्तिगत पहचान की खोज। उनकी रचनाएँ समाज की समस्याओं पर एक नये दृष्टिकोण से विचार करने के लिए पाठकों को प्रेरित करती हैं।

ये सभी लेखिकाएँ अपनी–अपनी जगह पर समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने में सफल रही हैं। उनकी कहानियाँ न केवल साहित्यिक मूल्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे सामाजिक बदलाव और जागरूकता के लिए भी एक सशक्त माध्यम हैं। इन लेखिकाओं की रचनाएँ समाज की विविधताओं और जटिलताओं को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती हैं, और समाज में बदलाव लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनके कार्यों से यह स्पष्ट होता है कि साहित्य न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि वह समाज की समस्याओं को पहचानने और उनके समाधान की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इन लेखिकाओं की कहानियाँ समाज में व्याप्त असमानताओं और संघर्षों को उजागर करती हैं और पाठकों को सोचने, समझने, और सामाजिक बदलाव की दिशा में सक्रिय रूप से योगदान देने के लिए प्रेरित करती हैं। इनकी लेखनी में सामाजिक चिंता, संवेदनशीलता, और सृजनात्मकता का सुंदर संगम देखने को मिलता है, जो कि 21वीं सदी की साहित्यिक परंपरा को समृद्ध करता है।

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं के आर्थिक चिंतन का विश्लेषण किया गया है। चित्रा मुदगल, उर्मिला शिरीष, राजी सेठ, मृदुला गर्ग, मालती जोशी, और मंजुल भगत जैसी लेखिकाओं की कहानियों ने आर्थिक मुद्दों पर गहरी सोच और समझ को प्रकट किया है। ये लेखिकाएँ अपने साहित्यिक कार्यों के माध्यम से न केवल आर्थिक समस्याओं को उजागर करती हैं, बल्कि समाज की आर्थिक असमानताओं और उनके प्रभावों पर भी

गंभीर चिंतन करती हैं।

चित्रा मुदगल की कहानियाँ समाज की आर्थिक असमानताओं और वर्ग–संघर्षों पर गहराई से विचार करती हैं। उनके पात्र अक्सर आर्थिक तंगी, बेरोज़गारी, और वर्गीय भेदभाव का सामना करते हैं। मुदगल की रचनाओं में हमें भारतीय समाज की आर्थिक विडंबनाओं का एक यथार्थ चित्र देखने को मिलता है, जो समाज के विभिन्न वर्गों के बीच आर्थिक अंतर को स्पष्ट करता है। उनकी कहानियाँ पाठकों को समाज के आर्थिक ढाँचे की असमानताओं पर विचार करने और सामाजिक न्याय की दिशा में सक्रिय होने के लिए प्रेरित करती हैं।

उर्मिला शिरीष की कहानियाँ आर्थिक विषयों पर विशेष ध्यान देती हैं, और वे समाज के विभिन्न वर्गों के आर्थिक संघर्षों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती हैं। शिरीष की लेखनी में विशेष रूप से उन महिलाओं की कहानियाँ मिलती हैं जो आर्थिक कठिनाइयों का सामना करती हैं और अपनी स्थिति को बेहतर बनाने की कोशिश करती हैं। उनकी रचनाएँ आर्थिक स्वतंत्रता और सशक्तिकरण की महत्वपूर्ण बात करती हैं, और समाज में समानता के लिए एक आवाज उठाती हैं। उनकी कहानियों में आर्थिक असमानता की गंभीरता और उसके समाधान की दिशा में विचार किए जाते हैं।

राजी सेठ की कहानियाँ आर्थिक संकट और उसके सामाजिक प्रभावों को उजागर करती हैं। उनके पात्र अक्सर गरीबी, कर्ज, और आर्थिक अस्थिरता का सामना करते हैं, और उनकी कहानियाँ इन मुद्दों की जटिलताओं को बारीकी से दर्शाती हैं। सेठ की लेखनी में समाज के आर्थिक ढाँचे के अंतर्गत महिलाओं की स्थिति, उनके संघर्ष, और उनके सशक्तिकरण की कहानियाँ मिलती हैं। उनकी रचनाएँ समाज की आर्थिक असमानताओं के प्रति संवेदनशीलता और समाधान के सुझाव प्रदान करती हैं।

मृदुला गर्ग की रचनाओं में आर्थिक विषयों पर गहरा ध्यान दिया गया है। गर्ग की

कहानियाँ विशेष रूप से आर्थिक असमानताओं और उसके समाज पर प्रभावों पर प्रकाश डालती हैं। वे अपनी कहानियों के माध्यम से आर्थिक तनाव और उसके व्यक्तिगत और सामाजिक परिणामों का विश्लेषण करती हैं। मृदुला गर्ग की लेखनी में आर्थिक समृद्धि और विषमताओं के बीच के अंतर को उजागर किया गया है, जो पाठकों को उसकी गहराई को समझने में मदद करता है।

मालती जोशी की कहानियाँ भी आर्थिक चिंतन पर केंद्रित हैं। जोशी की लेखनी में आर्थिक संघर्ष, सामाजिक स्थिति, और उनके प्रभावों पर गहरी समझ मिलती है। उनकी कहानियाँ समाज के गरीब और मध्यम वर्ग के जीवन की कठिनाइयों को उजागर करती हैं, और आर्थिक असमानताओं के प्रति एक संवेदनशील दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। जोशी की रचनाएँ आर्थिक न्याय और सामाजिक सुधार की दिशा में विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं।

मंजुल भगत की कहानियाँ आर्थिक मुद्दों को सामाजिक और व्यक्तिगत दृष्टिकोण से पेश करती हैं। भगत की लेखनी में आर्थिक विषमताओं और उनके सामाजिक प्रभावों का गंभीर विश्लेषण मिलता है। उनकी कहानियाँ विशेष रूप से आर्थिक विषमताओं के चलते सामाजिक असमानताओं और संघर्षों को दर्शाती हैं, और समाज में समानता और न्याय की आवश्यकता पर बल देती हैं। उनकी रचनाएँ आर्थिक समृद्धि और सामाजिक सशक्तिकरण के बीच के अंतर्संबंधो को स्पष्ट करती हैं।

इन लेखिकाओं की कहानियाँ आर्थिक चिंतन के विविध पहलुओं को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती हैं। उनकी रचनाएँ समाज की आर्थिक असमानताओं, गरीबी, और आर्थिक संघर्षों को उजागर करती हैं, और इन समस्याओं के समाधान के लिए विचारशील दृष्टिकोण

प्रदान करती हैं। चित्रा मुदगल, उर्मिला शिरीष, राजी सेठ, मृदुला गर्ग, मालती जोशी, और मंजुल भगत की लेखनी समाज की आर्थिक विषमताओं और उनके व्यक्तिगत और सामाजिक प्रभावों पर गहरी सोच को प्रकट करती है।

इन लेखिकाओं की कहानियाँ न केवल आर्थिक मुद्दों की गंभीरता को दर्शाती हैं, बल्कि समाज में आर्थिक समानता और न्याय की दिशा में विचार करने के लिए पाठकों को प्रेरित करती हैं। उनके कार्यों में आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक सशक्तिकरण, और न्याय की महत्वपूर्ण बातें शामिल हैं, जो 21वीं सदी की साहित्यिक परंपरा को समृद्ध करती हैं। उनके आर्थिक चिंतन ने समाज की आर्थिक समस्याओं को उजागर किया है और समाधान की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में राजनीतिक चिंतन एक महत्वपूर्ण विषय है, जो हमें आधुनिक समाज की जटिलताओं और राजनीतिक परिदृश्यों को समझने में मदद करता है। इन लेखिकाओं ने अपनी कहानियों के माध्यम से न केवल व्यक्तिगत अनुभवों और सामाजिक मुद्दों को उजागर किया है, बल्कि उन राजनीतिक संरचनाओं और सत्ता प्रणालियों की भी आलोचना की है जो समाज के कमजोर वर्गों को प्रभावित करती हैं।

आधुनिक महिला लेखिकाएँ जैसे चित्रा मुदगल, मधु कांकरिया, जया जादवानी, और सूर्यबाला ने अपनी कहानियों में विशेष रूप से सामाजिक न्याय, समानता और मानवाधिकारों के मुद्दों को छेड़ा है। ये लेखिकाएँ अपनी लेखनी के माध्यम से सत्ता के दुरुपयोग, असमानता और सामाजिक भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाती हैं। उनका लेखन केवल व्यक्तिगत अनुभवों का प्रतिनिधित्व ही नहीं करता, बल्कि यह एक व्यापक

राजनीतिक और सामाजिक दृष्टिकोण को भी दर्शाता है।

इन लेखिकाओं के काम में अक्सर नारीवाद, जातिवाद, धर्म और असमानता जैसे मुद्दों की गहरी पड़ताल होती है। उनकी कहानियाँ समाज में मौजूद उन विषमताओं को उजागर करती हैं जो राजनीतिक निर्णयों और नीतियों का परिणाम हैं। चन्द्रकान्ता जी की कहानियों में अक्सर आदिवासी समुदायों के अधिकारों और उनके संघर्षों को प्रमुखता दी जाती है, जो राजनीतिक और आर्थिक निर्णयों से प्रभावित होते हैं।

21वीं सदी की महिला लेखिकाओं ने स्त्रीवाद को एक महत्वपूर्ण राजनीतिक चश्मा के रूप में उपयोग किया है। उनकी कहानियों में महिलाओं की स्थिति, अधिकारों की प्राप्ति और पुरुष–प्रधान समाज के खिलाफ संघर्ष को केंद्रित किया गया है। ये लेखिकाएँ महिलाओं के संघर्षों को न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि समाज के व्यापक राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में भी देखती हैं। उनकी कहानियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि व्यक्तिगत समस्याएँ अक्सर बड़े राजनीतिक और सामाजिक ढांचे का हिस्सा होती हैं।

आर्थिक असमानता और सामाजिक भेदभाव के मुद्दे भी इन लेखिकाओं के काम में प्रमुख रूप से उठाए गए हैं। इनकी कहानियाँ दिखाती हैं कि कैसे आर्थिक स्थितियाँ और सामाजिक वर्गीय भेदभाव लोगों की ज़िन्दगी को प्रभावित करते हैं। ये लेखिकाएँ न केवल सामाजिक असमानता की आलोचना करती हैं, बल्कि इसे दूर करने के लिए ठोस उपायों की भी सिफारिश करती हैं।

इन महिला लेखिकाओं की कहानियाँ अक्सर सरकारी नीतियों और राजनीतिक क्रियावली की आलोचना करती हैं। उनका लेखन राजनीति और शक्ति की जटिलताओं को उजागर करता है, और यह दर्शाता है कि कैसे राजनीतिक निर्णयों के कारण समाज के विभिन्न वर्गों पर प्रभाव पड़ता है। ये कहानियाँ न केवल वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य की

आलोचना करती हैं, बल्कि भविष्य के लिए बेहतर नीतियों और प्रथाओं की भी आवश्यकता पर जोर देती हैं।

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियों में राजनीतिक चिंतन एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली तत्व है। इन लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से समाज की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को उजागर किया है। उनकी कहानियाँ न केवल व्यक्तिगत संघर्षों का चित्रण करती हैं, बल्कि यह भी दर्शाती हैं कि ये संघर्ष व्यापक राजनीतिक और सामाजिक संदर्भ का हिस्सा हैं। इन लेखिकाओं का लेखन समाज के लिए एक महत्वपूर्ण दर्पण प्रस्तुत करता है, जो हमें हमारी सामाजिक और राजनीतिक वास्तविकताओं को समझने और सुधारने की दिशा में प्रेरित करता है।

इनकी कहानियों का राजनीतिक चिंतन हमें यह सिखाता है कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज की वास्तविकताओं की गहरी समझ और सुधार की दिशा में एक शक्तिशाली उपकरण भी हो सकता है। 21वीं सदी की महिला लेखिकाओं का यह योगदान साहित्यिक और सामाजिक दोनों दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है, और यह हमें भविष्य के लिए एक बेहतर और समान समाज की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

21वीं सदी में भारतीय साहित्य के परिदृश्य में महिला लेखिकाओं ने एक महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है। जया जादवानी, मालती जोशी, चन्द्रकान्ता, सूर्यबाला, मेहरुनिशा परवेज, नाशिरा शर्मा, और अलका सरावगी, जैसी लेखिकाओं ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। इन लेखिकाओं ने न केवल महिला अनुभवों की विविधता को प्रस्तुत किया है, बल्कि स्त्री विमर्श की नई धारा भी विकसित की है।

इन लेखिकाओं के कार्यों में एक प्रमुख विषय स्त्री की पहचान और स्वतंत्रता है।

जया जादवानी की कहानियाँ विशेष रूप से महिला पात्रों के आत्म–संघर्ष और स्वायत्तता की खोज पर केंद्रित हैं। उनकी कहानियों में महिलाएँ अपने अस्तित्व की पहचान करती हैं और पारंपरिक सामाजिक बाधाओं को चुनौती देती हैं। इसी प्रकार, मालती जोशी की रचनाएँ भी स्त्री की स्वतंत्रता और उनके अधिकारों की ओर इशारा करती हैं। उन्होंने उन सामाजिक दबावों को उजागर किया है जो महिलाओं को सीमित करते हैं और स्वतंत्रता की ओर उनके प्रयासों को बाधित करते हैं।

महिला लेखिकाएँ अपनी कहानियों में स्त्री के सामने आने वाली सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को भी प्रस्तुत करती हैं। चन्द्रकान्ता की रचनाएँ महिलाओं के जीवन में मौजूद सामाजिक बंधनों और पूर्वाग्रहों को बखूबी चित्रित करती हैं। उनकी कहानियों में महिलाएँ उन बाधाओं का सामना करती हैं, जो उनके स्वतंत्र विकास को रोकती हैं, और इस प्रक्रिया में वे अपने संघर्ष की गहराइयों को सामने लाती हैं। सूर्यबाला की कहानियाँ भी सामाजिक परिदृश्य में महिलाओं की स्थिति और उनके संघर्ष को दर्शाती हैं, और यह दर्शाती हैं कि कैसे सांस्कृतिक मानदंड महिलाओं के जीवन को आकार देते हैं।

इन लेखिकाओं ने स्त्री के अनुभव की विविधता को भी उकेरा है। मेहरुनिशा परवेज की कहानियाँ विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं के अनुभवों को सामने लाती हैं और सामाजिक ताने–बाने में उनकी स्थिति को चित्रित करती हैं। नाशिरा शर्मा ने भी इस दृष्टिकोण को अपनी रचनाओं में शामिल किया है, और उन्होंने महिला पात्रों के माध्यम से धार्मिक और सांस्कृतिक विविधताओं की जटिलताओं को उजागर किया है। अलका सरावगी की कहानियाँ विभिन्न वर्गों और पृष्ठभूमियों की महिलाओं के अनुभवों को समेटती हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि स्त्री विमर्श एक सार्वभौम मुद्दा है, जो समाज के सभी हिस्सों को प्रभावित करता है।

इन लेखिकाओं की रचनाओं में स्त्री की आध्यात्मिकता और मानसिकता की भी गहरी पड़ताल की गई है। उनकी कहानियाँ इस बात को स्पष्ट करती हैं कि कैसे महिलाएँ

अपनी आंतरिक शक्तियों और भावनात्मक जटिलताओं से जूझती हैं। जया जादवानी और सूर्यबाला की कहानियाँ विशेष रूप से स्त्री की मानसिक स्थिति और उसके आत्म-परिशोधन की प्रक्रिया को दर्शाती हैं। ये कहानियाँ इस बात की पुष्टि करती हैं कि महिलाएँ अपने भीतर की शक्ति को पहचानने और उसे प्रकट करने की यात्रा पर निर्भर करती हैं।

इन लेखिकाओं ने अपने नवीन दृष्टिकोण और भावनात्मक अनुभवों के माध्यम से स्त्री विमर्श को समृद्ध किया है। उनकी कहानियाँ पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती देती हैं और स्त्री के जीवन की वास्तविकताओं को प्रस्तुत करती हैं। यह दृष्टिकोण न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन के लिए भी एक प्रेरणा का कार्य करता है। इन लेखिकाओं के माध्यम से स्त्री के संघर्ष, उसकी आशाएँ, और उसकी आकांक्षाओं को समझने का एक नया तरीका मिलता है।

21वीं सदी की प्रमुख महिला लेखिकाओं की कहानियाँ स्त्री विषयक चिंतन की एक गहरी और व्यापक दृष्टि प्रदान करती हैं। जया जादवानी, मालती जोशी, चन्द्रकान्ता, सूर्यबाला, मेहरुनिशा परवेज, नाशिरा शर्मा, और अलका सरावगी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री के जीवन की विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। इन लेखिकाओं ने स्त्री के आत्म-संघर्ष, सामाजिक बाधाओं, विविधता, आध्यात्मिकता, और भावनात्मक अनुभवों को अपनी कहानियों में बखूबी प्रस्तुत किया है। उनके कार्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि साहित्य न केवल एक कला है, बल्कि यह समाज में परिवर्तन और जागरूकता का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। इन लेखिकाओं के योगदान से भारतीय साहित्य को स्त्री विमर्श की एक नई दिशा मिली है, और उनके कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर के रूप में प्रस्तुत होंगे।

सन्दर्भ सूचि

1. वनजा के.,(2016), “चित्रा मुदगलः एक मूल्यांकन”, पृष्ठ 183
2. वनजा के.,(2016), “चित्रा मुदगलः एक मूल्यांकन”, पृष्ठ 187
3. "पोस्ट बॉक्स नं. 203-नाला सोपारा को लेकर लेखिका चित्रा मुद्गल ने खोले अहम राज". *m.jagran.com* (हिंदी में). 18 फरवरी 2024.
4. वनजा के.,(2016), “चित्रा मुदगलः एक मूल्यांकन”, पृष्ठ 187 से 190
5. वनजा के.,(2016), “चित्रा मुदगलः एक मूल्यांकन”, पृष्ठ 186
6. वनजा के.,(2016), “चित्रा मुदगलः एक मूल्यांकन”, पृष्ठ 186
7. वनजा के.,(2016), “चित्रा मुदगलः एक मूल्यांकन”, पृष्ठ 187
8. वनजा के.,(2016), “चित्रा मुदगलः एक मूल्यांकन”, पृष्ठ 187
9. https://hi.wikipedia.org/wiki/मृदुला_गर्ग, 12 मार्च 2021
10. https://www.drishtiias.com/hindi/blog/mridula-garg-birthday-special (12 मार्च 2021)
11. https://leverageedu.com/blog/hi/mridula-garg/ (14 मार्च 2021)
12. https://vaniprakashan.com/author-details/5394-mridula-garg (18 मार्च 2021)

13. https://www.amarujala.com/kavya/halchal/mridula-garg-in-amar-ujala-kavya-shakhsiyat (18 मार्च 2021)
14. कालिया ममता, (1969), ”छुटकारा”, “लोक भारतीय प्रकाशन”, पृष्ठ 88
15. कालिया ममता, (1975), ”एक अदद औरत”, “लोक भारतीय प्रकाशन”, पृष्ठ 89
16. कालिया ममता, (2010), “कितने शहरों में कितनी बार”, “राज कमल प्रकाशन” पृष्ठ 102
17. कालिया ममता, (2010), “कितने शहरों में कितनी बार”, “राज कमल प्रकाशन” पृष्ठ 103
18. सम्मान समारोह, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, पृष्ठ 16
19. जादवानी जया, “मिठो पाणी खारो पाणी”, पृष्ठ 170
20. https://prayog.pustak.org/index.php/books/authorbooks/Jaya%20 Jadwani (18 मार्च 2021)

21. https://prayog.pustak.org/index.php/books/authorbooks/Jaya%20 Jadwani (18 मार्च 2021)
22. https://literatureinindia.in/parichay/urmila-shirish/ (25 मार्च 2021)
23. www.fromaajtak.in , (19 April 2019)
24. गोयनका कमल किशोर, “मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य”, पृष्ठ 5
25. गोयनका कमल किशोर, ”मृदुला गर्ग से साक्षात्कार” पृष्ठ 25
26. जगताप डॉ० मैना, “मंजुल भगत के कथा साहित्य में नारी”, पृष्ठ 20
27. गोयनका कमल किशोर, “मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य”, पृष्ठ 18
28. https://rajkamalprakashan.com/author/rajee-seth (23 मार्च 2021)
29. परवेज मेहरून्निसा, (1972), ”उसका घर”, “नेश्नल पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली” पृष्ठ 72
30. सिंह डॉ० मधुकर, “गर्दिश के दिन”, पृष्ठ 30
31. परवेज मेहरून्निसा, (2002), ”अकेला पलाश”, “वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली”, पृष्ठ 56
32. परवेज मेहरून्निसा, “आदम और हव्वा” पृष्ठ 7

33. कांकरिया मधु, (2012), “सृजन संवाद”,” प्रभात खबर” पृष्ठ 5

34. कावले डॉ० सुनीता, कथाकार मधु कांकरिया, पृष्ठ 19

35. कांकरिया मधु, (2012), “सृजन संवाद”,” प्रभात खबर” पृष्ठ 5

36. राजेन्द्र यादव, (1999), “हंस”, पृष्ठ 127

37. अनभै, सं० रतन कुमार पाण्डेय (अक्टूबर 2006), पृष्ठ 38

38. अलका सरावगी से साक्षात्कार के दौरान हुई बातचीत, दिनांक 18.02.2019, कोलकाता

39. राजेन्द्र यादव, (1999), “हंस”, पृष्ठ 65

40. सरावगी अलका, (2005), “कहानी की तलाश में”, ”राजकमल प्रकाशन” पृष्ठ vi

41. कन्हैय्यालाल नंदन, (1999), “गगनाँचल”, पृष्ठ 11

42. शर्मा नासिरा, “राष्ट्र और मुसलमान” पृष्ठ 173 से 174

43. बन्दे, (2020), ”सुधा अरोड़ा का जीवन परिचय एवं रचनाएं” पृष्ठ 18

44. चंद्रकांता, “मेरे भोज पत्र”, पृष्ठ 20

45. चंद्रकांता, “मेरे भोज पत्र”, पृष्ठ 34

46. अग्निहोत्री कृष्णा, “लगता नहीं है दिल मेरा”, पृष्ठ 13

47. अग्निहोत्री कृष्णा, “लगता नहीं है दिल मेरा”, पृष्ठ 37

48. मधुमती, (जून, 1997), पृष्ठ – 29

49. चौहान राजेंद्र सिंह, “मालती जोशी का कथात्मक साहित्य”, पृष्ठ 26

50. चौहान राजेंद्र सिंह, “मालती जोशी का कथात्मक साहित्य”, पृष्ठ 17

51. घुगे डॉ. विजय, “कहानीकार मालती जोशी”, पृ.12

52. जोशी मालती, “मध्यांतर”, पृष्ठ 25

53. सूर्यबाला, “यामिनी कथा”, पृष्ठ 36

54. शर्मा डॉ. सरला, “सूर्यबाला की उपन्यास विद्या का समग्र मूल्यांकन”, पृष्ठ 45

55. सूर्यबाला, “मानुषगंध”, पृष्ठ 138

56. पांडे राजेन्द्र प्रसाद, (मार्च 1996), “आजकल”, पृष्ठ 39

57. गुप्ता डॉ० रेणु, “हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी”, पृष्ठ 127

58. मुदगल चित्रा, “भूख”, पृष्ठ 12

59. मुदगल चित्रा, “भूख”, पृष्ठ 19

60. मुदगल चित्रा, “अपनी वापसी”, पृष्ठ 91

61. मुदगल चित्रा, “लपटें”, पृष्ठ 172

62. मुदगल चित्रा, ‘जिनावर’, पृष्ठ 65

63. मुदगल चित्रा, “ग्यारह लम्बी कहानियाँ”, पृष्ठ 134

64. मुदगल चित्रा, “भूख”, पृष्ठ 54

65. मुदगल चित्रा, “भूख”, पृष्ठ 87

66. मुदगल चित्रा, “भूख”, पृष्ठ 93

67. मुदगल चित्रा, “भूख”, पृष्ठ 78

68. मुदगल चित्रा, “भूख”, पृष्ठ 81

69. गर्ग मृदुला, “मृदुला गर्ग संकलित कहानियां”, पृष्ठ 152 से 153

70. गर्ग मृदुला, “मेरे देश की मिट्टी अहा”, पृष्ठ 05

71. गर्ग मृदुला, “संगति विसंगति 'किस्सा आज का'”, पृष्ठ 692

72. गर्ग मृदुला, “संगति विसंगति 'किस्सा आज का'”, पृष्ठ 691

73. गर्ग मृदुला, “मेरे देश की मिट्टी 'छलावा'”, पृष्ठ 29

74. गर्ग मृदुला, “मेरे देश की मिट्टी अहा–कानतोड उर्फ कर्णवीर”, पृष्ठ 37

75. गर्ग मृदुला, “सात कोठरी” पृष्ठ 720

76. गर्ग मृदुला, “नेति–नेति जूते का जोड़ गोभी का तोड़”, पृष्ठ 220

77. गर्ग मृदुला, “जीरो अक्स मृदुला गर्ग की संकलित कहानियां” पृष्ठ 140

78. दत्त प्रदीप, (2002), “भाषा सितम्बर”, पृष्ठ 148

79. गर्ग मृदुला, “साठ साल की औरत”, पृष्ठ 114

80. गर्ग मृदुला, “इक्कीसवी सदी का पेड़” पृष्ठ 166

81. गर्ग मृदुला, “इक्कीसवी सदी का पेड़” पृष्ठ 175

82. गर्ग मृदुला, “कलि में सत्”, “नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली” पृष्ठ 65

83. गर्ग मृदुला, “कलि में सत्”, “नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली” पृष्ठ 103

84. कालिया ममता, “ममता कालिया की कहानियाँ”, पृष्ठ 234

85. कालिया ममता, “ममता कालिया की कहानियाँ”, पृष्ठ 255

86. कालिया ममता, “ममता कालिया की कहानियाँ”, पृष्ठ 248

87. कालिया ममता, “ममता कालिया की कहानियाँ”, पृष्ठ 141

88. कालिया ममता, “ममता कालिया की कहानियाँ”, पृष्ठ 144

89. कालिया ममता, “ममता कालिया की कहानियाँ”, पृष्ठ 225

90. कालिया ममता, “ममता कालिया की कहानियाँ”, पृष्ठ 226

91. कालिया ममता, “ममता कालिया की कहानियाँ”, पृष्ठ 228

92. कालिया ममता, “ममता कालिया की कहानियाँ”, पृष्ठ 381 से 382

93. कालिया ममता, “ममता कालिया की कहानियाँ”, पृष्ठ 326 से 327

94. जादवानी जया, “मुझे ही होना है बार बार”,”वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली” पृष्ठ 13

95. जादवानी जया, “मुझे ही होना है बार बार”,”वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली” पृष्ठ 30

96. मेहरा डॉ दिलीप, पटेल डॉ प्रतीक्षा, “हिन्दी महिलाकथाकारों के साहित्य में नारी–विमर्श”, पृष्ठ 07

97. जादवानी जया, “मुझे ही होना है बार बार”,”वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली” पृष्ठ 49

98. जादवानी जया, “अंदर के पानियों में–कोई सपना काँपता है”, “वाणी प्रकाशन”, पृष्ठ 56

99. जादवानी जया, “अंदर के पानियों में–कोई सपना काँपता है”, “वाणी प्रकाशन”, पृष्ठ 16

100. जादवानी जया, “अंदर के पानियों में–कोई सपना काँपता है”, “वाणी प्रकाशन”, पृष्ठ 15

101. जादवानी जया, “मैं अपनी मिट्टी में खड़ी हूँ काँधे पे अपना हल लिये”, पृष्ठ 18

102. शिरीष डॉ० उर्मिला, “रंगमंच”, पृष्ठ 15

103. शिरीष डॉ० उर्मिला, "मुआवजा", पृष्ठ 77

104. शिरीष डॉ० उर्मिला, "पुनरागमन–जीत", पृष्ठ 64

105. शिरीष डॉ० उर्मिला, "निर्वासन", पृष्ठ 65

106. शिरीष डॉ० उर्मिला, "एक अकेली लड़की" पृष्ठ 15

107. शिरीष डॉ० उर्मिला, "धर्म अधर्म", पृष्ठ 15

108. भगत मंजुल, "समग्र कथा–साहित्य", पृष्ठ 105

109. भगत मंजुल, "समग्र कथा–साहित्य", पृष्ठ 206

110. भगत मंजुल, "समग्र कथा–साहित्य", पृष्ठ 46

111. भगत मंजुल, "समग्र कथा–साहित्य", पृष्ठ 78

112. भगत मंजुल, "समग्र कथा–साहित्य", पृष्ठ 120

113. भगत मंजुल, "समग्र कथा–साहित्य", पृष्ठ 252

114. सेठ राजी, "अंधे मोड़ से आगे", पृष्ठ 123

115. वारदा डॉ. विजया, "साठोतरी हिंदी कहानी और महिला लेखिकाएँ", पृष्ठ 70

116. सेठ राजी, "तीसरी हथेली", पृष्ठ 80

117. सेठ राजी, "तीसरी हथेली", पृष्ठ 29

118. केसर डॉ. कीर्ति, "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का समाज सापेक्ष अध्ययन", पृष्ठ 160

119. परवेज मेहरून्निसा, "आदम और हव्वा", पृष्ठ 14

120. केसर डॉ. कीर्ति, “स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का समाज सापेक्ष अध्ययन” पृष्ठ 72

121. परवेज मेहरून्निसा, “आदम और हव्वा”, पृष्ठ 83

122. परवेज मेहरून्निसा, “लाल गुलाब”, पृष्ठ 115

123. परवेज मेहरून्निसा, “गलत पुरुष”, पृष्ठ 114

124. परवेज मेहरून्निसा, “रिश्ते”, पृष्ठ 88

125. परवेज मेहरून्निसा, “गलत पुरुष”, पृष्ठ 30

126. कांकरिया मधु, “बीतते हुए”, पृष्ठ 76

127. कांकरिया मधु, “आर आसवो ना”, पृष्ठ 82

128. कांकरिया मधु, “चिडिया ऐसे मरती है”, पृष्ठ 17

129. www.shabdankan.com/2020/05/hindi-story-madhu-kankaria (10 मार्च 2023)

130. कांकरिया मधु, “नंदीग्राम के चहे”, पृष्ठ 46

131. कांकरिया मधु, “भरी दोपहरी के अँधेरे”, पृष्ठ 207

132. कांकरिया मधु, “युद्ध और बुद्ध”, पृष्ठ 18

133. सरावगी अलका, “कहानी की तलाश में”, पृष्ठ 10

134. सरावगी अलका, “कहानी की तलाश में” पृष्ठ 11

135. सरावगी अलका, “कहानी की तलाश में” पृष्ठ 34

136. सरावगी अलका, “कहानी की तलाश में” पृष्ठ 53

137. सरावगी अलका, “कहानी की तलाश में” पृष्ठ 91

138. सरावगी अलका, “कहानी की तलाश में” पृष्ठ 92

139. सरावगी अलका, “दूसरी कहानी”, पृष्ठ 15

140. सरावगी अलका, “दूसरी कहानी”, पृष्ठ 6

141. शर्मा नासिरा, “पत्थर गली” पृष्ठ 156

142. शर्मा नासिरा, “पत्थर गली” पृष्ठ 162

143. शर्मा नासिरा, “पत्थर गली” पृष्ठ 21

144. शर्मा नासिरा, “पत्थर गली” पृष्ठ 26

145. शर्मा नासिरा, “संगसार” पृष्ठ 47

146. शर्मा नासिरा, “इनसानी नस्ल”, पृष्ठ 62

147. शर्मा नासिरा, “इनसानी नस्ल”, पृष्ठ 65

148. शर्मा नासिरा, “इनसानी नस्ल”, पृष्ठ 13

149. शर्मा नासिरा, “इनसानी नस्ल”, पृष्ठ 19

150. शर्मा नासिरा, “दूसरा ताजमहल”, पृष्ठ 5

151. अरोड़ा सुधा, “रहोगी तो तुम वही”, पृष्ठ 57

152. अरोड़ा सुधा, “अन्नपूर्णा मंडल का अंतिम पत्र”, पृष्ठ 16

153. अरोड़ा सुधा, “काला शुक्रवार”, पृष्ठ 27

154. चन्द्रकान्ता, “अब्बू ने कहा था”, पृष्ठ 73

155. चन्द्रकान्ता, “अब्बू ने कहा था”, पृष्ठ 119

156. चन्द्रकान्ता, "सलाखों के पीछे", पृष्ठ 39

157. चन्द्रकान्ता, "सलाखों के पीछे", पृष्ठ 40

158. चन्द्रकान्ता, "ओ सोन किसरी", पृष्ठ 93

159. चन्द्रकान्ता, "ओ सोन किसरी", पृष्ठ 96

160. चन्द्रकान्ता, "दहलीज पर न्याय", पृष्ठ 33

161. चन्द्रकान्ता, "दहलीज पर न्याय", पृष्ठ 37

162. चन्द्रकान्ता, "लोगों के बीच", पृष्ठ 61

163. चन्द्रकान्ता, "लोगों के बीच", पृष्ठ 64

164. चन्द्रकान्ता, "रात में सागर", पृष्ठ 56

165. चन्द्रकान्ता, "रात में सागर", पृष्ठ 63

166. अग्निहोत्री कृष्णा, "दूसरी औरत", पृष्ठ 51

167. अग्निहोत्री कृष्णा, "गलियारे", पृष्ठ 137

168. अग्निहोत्री कृष्णा, "जिंदा आदमी", पृष्ठ 20

169. अग्निहोत्री कृष्णा, "विरासत", पृष्ठ 69

170. अग्निहोत्री कृष्णा, "विरासत", पृष्ठ 103

171. जोशी मालती, "औरत एक रात है", पृष्ठ 58

172. जोशी मालती, "औरत एक रात है", पृष्ठ 60

173. जोशी मालती, "औरत एक रात है", पृष्ठ 63

174. जोशी मालती, "औरत एक रात है", पृष्ठ 69

175. जोशी मालती, “औरत एक रात है”, पृष्ठ 22

176. जोशी मालती, “औरत एक रात है”, पृष्ठ 22

177. जोशी मालती, “मध्यांतर”, पृष्ठ 16

178. जोशी मालती, “मध्यांतर”, पृष्ठ 19

179. जोशी मालती, “मध्यांतर”, पृष्ठ 154

180. जोशी मालती, “मध्यांतर”, पृष्ठ 69

181. जोशी मालती, “मध्यांतर”, पृष्ठ 70

182. जोशी मालती, “रहिमन धागा प्रेम का”, पृष्ठ 49

183. जोशी मालती, “रहिमन धागा प्रेम का”, पृष्ठ 55

184. सूर्यबाला, “मेरा विद्रोह”, पृष्ठ 6

185. सूर्यबाला, “मेरा विद्रोह”, पृष्ठ 7

186. सूर्यबाला, “मेरा विद्रोह”, पृष्ठ 9

187. सूर्यबाला, “कंगाल”, पृष्ठ 67

188. सरस मनमोहन, “नया ज्ञानोदय”, पृष्ठ 18

189. सूर्यबाला, “सौगात”, पृष्ठ 67

190. सूर्यबाला, “संताप”, पृष्ठ 57

191. वाजपेयी नंद दुलारे, “हिन्दी साहित्यः रचना और विचार”, पृष्ठ 20

192. पाण्डेय मैनेजर, “साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका”, “हरियाणा साहित्य अकादमी”, पृष्ठ 13, 57

193. प्रसाद कालिका, सहाय राजबल्लभ, श्रीवास्तव मुकुन्दीलाल, "वृहत् हिन्दी कोश", पृष्ठ 1201

194. सुन्दरदास डॉ० श्याम, "हिन्दी शब्द सागर– दसवां भाग", पृष्ठ 4958

195. अज्ञेय, "सर्जना एवं सन्दर्भ", पृष्ठ 17

196. विद्याभूषण, सचदेव डी० आर०, "समाजशास्त्र के सिद्धान्त", पृष्ठ 65

197. विद्याभूषण, सचदेव डी० आर०, "समाजशास्त्र के सिद्धान्त", पृष्ठ 68

198. कांकरिया मधु, "और अन्त में ईशु" पृष्ठ 99

199. परवेज मेहरुन्निसा, "जीवनमंथन, समर", पृष्ठ 70

200. यादव राजेंद्र, "हंस", पृष्ठ 50

201. परवेज मेहरुन्निसा, "समर लोक", पृष्ठ 3 से 4

202. खान डॉ. सुरैया, "मंजुल भगत के कथा साहित्य में नारी", पृष्ठ 205

203. चंद्रकांता, "कथा सतीसर", पृष्ठ 356

204. उपाध्याय डॉ. मृत्युंजय, "हिंदी के आँचलिक उपन्यास", पृष्ठ 116

205. भस्मे डॉ. दिलीप, "नागार्जुन के आँचलिक उपन्यास", पृष्ठ 81

206. सिंह डॉ० वी०एन०, "समाजशास्त्र", पृष्ठ 60

207. धीरेन्द्र वर्मा, "हिन्दी साहितयकोश", पृष्ठ 449

208. गोयनका कमल किशोर, "मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य", पृष्ठ 311

209. सिंह नामवर, "कहानी नयी कहानी", पृष्ठ 19

210. सरावगी अलका, "एक ब्रेक के बाद", पृष्ठ 149

211. मुदगल चित्रा, "आदी–अनादि भाग–एक", पृष्ठ 60

212. मुदगल चित्रा, "भूख", पृष्ठ 19

213. दोषी एस.एल., जैन पी.सी., "समाजशास्त्र", "नई दिशाएँ", पृष्ठ 394

214. आलोचना, (अप्रैल–जून 1986), पृष्ठ 6–7

215. अग्निहोत्री कृष्णा, "टीन के घेरे", पृष्ठ 56

216. देवी डॉ० मीनू, "अला सरावगी के कथा साहित्य का सामाजिक अनुशीलन", पृष्ठ 198

217. अजूबा, "भगत मंजुल समग्र कथा साहित्य", पृष्ठ 304

218. कमल किशोर गोयनका, "मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य", पृष्ठ 589

219. त्रिपाठी डॉ० सत्यदेव, "सामाजिक विघटन", पृष्ठ 205

220. शिवस्वरूप सहाय, "कथा साहित्य में युगबोध", पृष्ठ 53

221. डॉ० मधुरेश, "हिन्दी कहानी अस्मिता की तलाश", पृष्ठ 114

222. मुदगल चित्रा, "पेंटिग अकेली है", पृष्ठ 63

223. मुदगल चित्रा, "पेंटिग अकेली है", पृष्ठ 23

224. राम आहूजा, "सामाजिक समस्याएँ", पृष्ठ 182

225. सरावगी अलका, "दूसरी कहानी", पृष्ठ 104

226. शिरीष उर्मिला, "गयारह लम्बी कहानियाँ", पृष्ठ 87

227. सेठ राजी, "सात लम्बी कहानियाँ", पृष्ठ 63

228. आप्टे वामन शिवराम, "संस्कृत हिन्दी कोश प्रथम", पृष्ठ 96 से 97

229. आप्टे वामन शिवराम, “संस्कृत हिन्दी कोश प्रथम”, पृष्ठ 82

230. तिवारी डॉ॰ भोलानाथ, “बृहत् पर्यायवाची कोश”, पृष्ठ 372

231. रामचन्द्र वर्मा, “मानक हिन्दी कोश”, पृष्ठ 181

232. आप्टे वामन शिवराम, “संस्कृत हिन्दी कोश प्रथम”, पृष्ठ 97

233. सरिता वशिष्ठ, “युगबोध और हिन्दी नाटक”, पृष्ठ 225

234. पानेरी डॉ॰ हेमेन्द्र, “स्वातंत्रोत्तर हिन्दी उपन्यास: मूल्य संक्रमण”, पृष्ठ 204

235. पानेरी डॉ॰ हेमेन्द्र, “स्वातंत्रोत्तर हिन्दी उपन्यास: मूल्य संक्रमण”, पृष्ठ 204

236. पानेरी डॉ॰ हेमेन्द्र, “स्वातंत्रोत्तर हिन्दी उपन्यास: मूल्य संक्रमण”, पृष्ठ 204

237. वर्मा धीरेन्द्र, “हिन्दी साहित्यकोश”, पृष्ठ 449

238. सरावगी अलका, “एक ब्रेक के बाद”, पृष्ठ 149

239. मुदगल चित्रा, “आदि–अनादि”, पृष्ठ 149

240. मुदगल चित्रा, “भूख”, पृष्ठ 13

241. मुदगल चित्रा, “भूख”, पृष्ठ 15

242. मुदगल चित्रा, “भूख”, पृष्ठ 25

243. मुदगल चित्रा, “मामला आगे बढ़ेगा अभी”, पृष्ठ 28

244. अस्थाना डॉ॰ ज्ञान, “हिन्दी कथा साहित्य, समकालीन संदर्भ”, पृष्ठ 29

245. सरावगी अलका, “एक ब्रेक के बाद”, पृष्ठ 150

246. मुदगल चित्रा, “चर्चित कहानियां”, पृष्ठ 107

247. मुदगल चित्रा, “पेंटिग अकेली है”, पृष्ठ 51

248. मुदगल चित्रा, “आदि–अनादि”, पृष्ठ 52

249. मुदगल चित्रा, “आदि–अनादि”, पृष्ठ 55

250. मुदगल चित्रा, “आदि–अनादि”, पृष्ठ 264

251. मुदगल चित्रा, “आदि–अनादि”, पृष्ठ 123

252. कालिया ममता, “दौड़”, पृष्ठ 40

253. सरावगी अलका, “जानकीदास तेजपाल मैनशन”, पृष्ठ 69

254. काँकरिया मधु, “दबी–दबी लहरें”, पृष्ठ 104

255. मुदगल चित्रा, “आदि–अनादि”, पृष्ठ 167

256. मुदगल चित्रा, “आदि–अनादि”, पृष्ठ 168

257. जैन डॉ० पुखराज, “आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएं”, पृष्ठ 128

258. शिरीष उर्मिला, “ग्यारह लम्बी कहानियाँ”, पृष्ठ 15 से 16

259. प्रियंवदा उषा, “कितना बड़ा झूठ–सुरंग”, पृष्ठ 73

260. मुदगल चित्रा, “भूख”, पृष्ठ 124

261. कालिया ममता, “उसका यौवन”, पृष्ठ 9

262. कालिया ममता, “उसका यौवन”, पृष्ठ 19

263. कालिया ममता, “चर्चित कहानियाँ”, पृष्ठ 28

264. कालिया ममता, “चर्चित कहानियाँ”, पृष्ठ 33 से 34

265. सरावगी अलका, “कोई बात नहीं”, पृष्ठ 25

266. सरावगी अलका, “एक ब्रेक के बाद”, पृष्ठ 115

267. सरावगी अलका, “दूसरी कहानी”, पृष्ठ 65

268. रावत चंद्रभान, खंडेलवाल डॉ. रामकुमार, “हिंदी कहानी, फिलहाल”, पृष्ठ 72

269. नारायण डॉ० इकबाल, “राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त”, पृष्ठ 47

270. वर्मा रामचंद्र, “मानक हिन्दी कोश”, पृष्ठ 414

271. नारायण डॉ० इकबाल, “राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त”, पृष्ठ 5

272. पाठक पंडित रामचंद्र, “आदर्श हिन्दी शब्दकोश”, पृष्ठ 538

273. पांडेय ममता, “राजनीति विज्ञान”, पृष्ठ 11

274. वर्मा श्यामलाल, “आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त”, पृष्ठ 94

275. गुप्त ज्ञानचन्द, “स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना”, पृष्ठ 13

276. कपूर ए०सी०, “राजनीति विज्ञान के सिद्धांत”, पृष्ठ 7

277. पाण्डेय ममता, “साणेत्तरी हिन्दी नाटक और राजनीति”, पृष्ठ 3

278. वर्मा श्यामलाल, “समकालीन लेखिका नासिरा शर्मा का कथा साहित्य”, पृष्ठ 96

279. रावत चंद्रभान, खंडेलवाल डॉ. रामकुमार, “हिंदी कहानी, फिलहाल”, पृष्ठ 72

280. गुप्त ज्ञानचन्द, “स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना”, पृष्ठ 27

281. डॉ० मंजुला गुप्ता, “हिन्दी उपन्यास: समाज और व्यक्ति का द्वन्द्व”, पृष्ठ 24

282. मुदगल चित्रा “लपटें”, पृष्ठ 35

283. मुदगल चित्रा “लपटें”, पृष्ठ 40

284. मुदगल चित्रा, “जिनावर”, पृष्ठ 18

285. मुदगल चित्रा, “जिनावर”, पृष्ठ 22

286. मुदगल चित्रा, “जिनावर”, पृष्ठ 23

287. मुदगल चित्रा, “जिनावर”, पृष्ठ 26

288. सेठ राजी, “अंतहीन”, पृष्ठ 120

289. शिरीष उर्मिला, “ग्यारह लम्बी कहानियाँ”, पृष्ठ 56

290. शिरीष उर्मिला, “ग्यारह लम्बी कहानियाँ”, पृष्ठ 59

291. दिनकर रामधारी सिंह, “संस्कृति के चार अध्याय”, पृष्ठ 715

292. शिरीष उर्मिला, “ग्यारह लम्बी कहानियाँ”, पृष्ठ 36

293. मुदगल चित्रा, “जिनावर”, पृष्ठ 35

294. मुदगल चित्रा, “जिनावर”, पृष्ठ 39

295. मुदगल चित्रा, “जिनावर”, पृष्ठ 36

296. मुदगल चित्रा, “आदि–अनादी”, पृष्ठ 172 से 173

297. हंस, (मई, 2020), पृष्ठ 89

298. कालिया ममता, “काके दी हट्टी”, पृष्ठ 28

299. परवेज़ मेहरुन्निसा, “पासंग”, पृष्ठ 104

300. परवेज़ मेहरुन्निसा, “पासंग”, पृष्ठ 103

301. परवेज़ मेहरुन्निसा, “पासंग”, पृष्ठ 105

302. परवेज़ मेहरुन्निसा, “पासंग”, पृष्ठ 106

303. मुदगल चित्रा, “आदि–अनादी”, पृष्ठ 37

304. मुदगल चित्रा, “आदि–अनादी”, पृष्ठ 175

305. मुदगल चित्रा, “आदि–अनादी”, पृष्ठ 23

306. कांकरिया मधु, “युद्ध और बुद्ध”, पृष्ठ 17

307. शर्मा नासिरा, “संगसार”, पृष्ठ 51

308. शर्मा नासिरा, “संगसार”, पृष्ठ 42–46

309. तिवारी ड़ी ड़ी, “हिंदी उपन्यास स्वतंत्रता संघर्ष के विविध आयाम”, पृष्ठ 68

310. सूर्यबाला, “सुनंदा छोकरी की डायरी, `साँझवाती`”, पृष्ठ 82

311. सूर्यबाला, “गीता चौधरी का आखिरी सवाल, `गृह प्रवेश`”, पृष्ठ 140

312. कालिया ममता, “चर्चित कहानियाँ”, पृष्ठ 35

313. कालिया ममता, “चर्चित कहानियाँ”, पृष्ठ 35

314. मुदगल चित्रा, “आदि–अनादी–3”, पृष्ठ 230

315. मुदगल चित्रा, “आदि–अनादी–3”, पृष्ठ 231

316. मुदगल चित्रा, “भूख”, पृष्ठ 121

317. शर्मा नासिरा, “कहानी संग्रह सबीना के चालीस चोर”, पृष्ठ 274

318. शर्मा नासिरा, “कहानी संग्रह इब्ने मरियम”, पृष्ठ 456

319. शर्मा डॉ. ओम प्रकाश, “समकालीन महिला लेखन”, पृष्ठ 27 से 28

320. शर्मा डॉ. ओम प्रकाश, “समकालीन महिला लेखन”, पृष्ठ 55

321. वर्मा महादेवी, “नये दशक में महिलाओं का स्थान”, पृष्ठ 13

322. डॉ. सानप शाम, “ममता कालिया के साहित्य में नारी चेतना”, पृष्ठ 14

323. डॉ. सानप शाम, "ममता कालिया के साहित्य में नारी चेतना", पृष्ठ 19

324. अग्रवाल डॉ. रोहिणी, "हिंदी उपन्यासों में कामकाजी महिला", पृष्ठ 10

325. रेणु गुप्ता, "हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी", पृष्ठ 60

326. परवेज मेहरुन्निसा, "अपने–अपने लोग, अम्मा", पृष्ठ 149

327. जादवानी जया, "अंदर के पानियों में कोई सपना काँपता है", पृष्ठ 98

328. जादवानी जया, "ये रात कितनी लंबी", पृष्ठ 197

329. मुदगल चित्रा, "जगदम्बा बाबू गांव आ रहे है", पृष्ठ 72

330. मुदगल चित्रा, "मामला आगे बढ़ेगा अभी", पृष्ठ 155

331. सलूजा शीला, सलूजा चुन्नी लाल, "कामकाजी महिलाऐं", पृष्ठ 29

332. अमर उजाला, (23 जुलाई 2006), पृष्ठ 10

333. रावत योजना, "स्त्री विमर्शवादी उपन्यासः सृजन और सम्भावना", पृष्ठ 7

334. चन्द्रकान्ता, "काली बर्फ", "ग्रन्थ अकादमी नई दिल्ली", पृष्ठ– 48

335. चन्द्रकान्ता, "सूरज उगने तक"," भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली", पृष्ठ 224

336. चन्द्रकान्ता, "सूरज उगने तक"," भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली", पृष्ठ 224

337. मुदगल चित्रा, "जगदम्बा बाबू गांव आ रहे है", पृष्ठ 19

338. मुदगल चित्रा, "चर्चित कहानियाँ", पृष्ठ 26

339. मुदगल चित्रा, "मामला आगे बढ़ेगा अभी", पृष्ठ 135

340. परवेज मेहरुन्निसा, "अयोध्या से वापसी", पृष्ठ 19

341. परवेज मेहरुन्निसा, "अयोध्या से वापसी", पृष्ठ 99

342. परवेज मेहरुन्निसा “आकाशनील”, पृष्ठ 17

343. कांकरिया मधु, “बीतते हुए”, पृष्ठ–37 से 38

344. मुदगल चित्रा, “जगदम्बा बाबू गांव आ रहे”, पृष्ठ 73

345. सेठ राजी, “स्त्री हु इसलिए”, पृष्ठ 118

346. जोशी मालती, “पूजा का फूल”, पृष्ठ 123

347. जोशी मालती, “छोटा सा मन बड़ा शा दुःख”, पृष्ठ 54

348. चन्द्रकान्ता, “ओ सोनकिसरी”, पृष्ठ 85

349. चन्द्रकान्ता, “गलत लोंगों के बीच”, पृष्ठ 34

350. चन्द्रकान्ता, “सूरज उगने तक”, पृष्ठ 224

351. चन्द्रकान्ता, “सूरज उगने तक”, पृष्ठ 224

352. गोयनका कमल किशोर, “मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य”, पृष्ठ 322

353. गोयनका कमल किशोर, “मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य”, पृष्ठ 322

354. गोयनका कमल किशोर, “मंजुल भगत समग्र कथा साहित्य”, पृष्ठ 488

355. चन्द्रकान्ता, “देहलीज़ पर न्याय”, पृष्ठ 122

356. चन्द्रकान्ता, “देहलीज़ पर न्याय”, पृष्ठ 123

357. मुदगल चित्रा “भूख”, पृष्ठ 61

358. मुदगल चित्रा “भूख”, पृष्ठ 70

359. कांकरिया मधु, “भरी दोपहर के अँधेरे”, पृष्ठ 61

360. कांकरिया मधु, “भरी दोपहर के अँधेरे”, पृष्ठ 63

361. कांकरिया मधु, “जलकुम्भी”, पृष्ठ 85

362. कालिया ममता, “बोलने वाली औरत”, पृष्ठ 37

363. जोशी मालती, “अंतिम संक्षेप”, पृष्ठ 127

364. जोशी मालती, “मोरी रंग दे चुनरिया”, पृष्ठ 12

365. अग्निहोत्री कृष्णा, “निलोफर”, पृष्ठ 170

366. अग्निहोत्री कृष्णा, “अभिषेक”, पृष्ठ 48

367. चन्द्रकान्ता, “काली बर्फ”, पृष्ठ 109

368. चन्द्रकान्ता, “काली बर्फ”, पृष्ठ 109